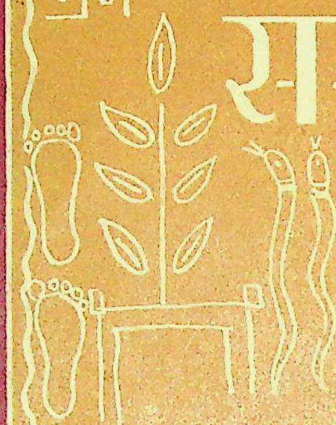
हमारे

संस्कार गीत





मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

ये गीत !

सीधे मर्म पर चोट करने वाले, हृदय में टीस पैदा करने वाले, पलकों को भिगोने वाले गीतों का बहुत बड़ा कोश हमारे लोक-साहित्य में भरा पड़ा है। कहीं-कहीं तो ये गीत इतने उत्कृष्ट और प्रभावशाली हो गये हैं कि हमारे रस-सिद्ध कवीश्वर भी उनसे ईर्ष्या कर सकते हैं। जीवन का कोई अंग नहीं है, भावना का कोई स्तर नहीं है, कल्पना का कोई सोपान नहीं है जिसे इन गीतों ने न छुआ हो। इस संकलन में संग्रहीत गीत इसी प्रोज्ज्वल परम्परा की कड़ी हैं।

अब तक ये संस्कार-गीत बूढ़ी दादी के गले में बसे रहे हैं। अब ये मुद्रित हो कर स्नेही पाठकों के सामने आ रहे हैं।

ये गीत सारगर्भित हैं, इनमें गार्हस्थ्य जीवन को पवित्र करने और सुन्दर बनाने की अद्भुत क्षमता है।

हमारे संस्कार गीत

हमारे संस्कार गीत

संग्रह

श्रीमती राजरानी वर्मा

संपादक

श्रीकृष्ण दास



मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

प्रकाशक :
मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद ।

मूल्य
सात रुपये, पचास नये पैसे

मुद्रक :
वीरेन्द्रनाथ घोष,
माया प्रेस प्राइवेट लिमिटेड,
इलाहाबाद ।

लोकगीतों के प्रथम उद्धारकर्ता

एवं

उन्नायक

स्वर्गीय रामनरेश त्रिपाठी

की पुण्य स्मृति में

चुटकी भर सेन्हुरा के कारन बाबा,
होय गयी कन्या पराई !

× × ×

सासु तो हैं मेरी सरसुति की धारा,
ससुरु सूरज की जोत !

× × ×

सरग तरैया केन गिनहइँ माता,
दुधवा उरिन कैसे होउँ !

भूमिका

'हमारे संस्कार गीत' श्रीमती राजरानी वर्मा द्वारा संग्रहीत विभिन्न संस्कारों से सम्बन्धित लोकगीतों का अनूठा एवं अभिनव संग्रह है। श्रीमती वर्मा ने गीतों का चुनाव करते समय उनके सौन्दर्य, रस-परिपाक एवं संगीतात्मकता का विशेष ध्यान रखा है। ये गीत विभिन्न अवसरों पर समवेत रूप में गाये जाते हैं। इनके कारण उन संस्कारों की पवित्रता और महत्ता को चार चाँद लग जाते हैं। ये गीत नारी हृदय की उपज हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। इसलिये इनमें रस है, भाव-प्रवणता है, करुणा है, विचारोत्तेजकता है, आह्लादित एवं विभोर कर देने की अद्भुत क्षमता है। सारे के सारे गीत एक विचित्र प्रकार की रसमयता से ओतप्रोत हैं। अतः पाठक को इन गीतों को पढ़ने और इनका रस लेने में एक नैसर्गिक सुख और आनन्द प्राप्त होता है।

हमारे समाज में, अगणित आधुनिक प्रवृत्तियों के आ जाने के बावजूद, पुराने संस्कारों के प्रति मोह एवं ममता अब भी है। इन संस्कारों के मूल्य अथवा महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। वैसे तो हमें लगभग अड़तालीस संस्कारों का पता चलता है और इनकी चर्चा अनेक रूपों में मिलती है; परन्तु इनमें मुख्य सोलह संस्कार ही हमारे समाज में प्रतिष्ठित हैं। ये संस्कार हैं--(१) गर्भाधान, (२) पुंसवन, (३) सीमन्तोन्नयन, (४) जात कर्म, (५) नामकरण, (६) निष्क्रमण, (७) अन्नप्राशन, (८) चूड़ाकरण, (९) कर्ण छेदन, (१०) विद्यारम्भ, (११) उपनयन, (१२) वेदारम्भ, (१३) केशान्त, (१४) समावर्तन, (१५) विवाह, और (१६) अन्त्येष्टि।

हारीत स्मृति के अनुसार दस संस्कार होते हैं। यथा-(१) विवाह, (२) गर्भाधान, (३) पुंसवन, (४) सीमन्तोन्नयन, (५) जात कर्म, (६) नामकरण, (७) अन्नप्राशन, (८) चूड़ाकरण, (९) उपनयन और (१०) समावर्तन। याज्ञवल्क्य के अनुसार आठ संस्कार होते हैं। यथा-(१) गर्भाधान, (२) पुंसवन, (३) फल स्थापन, (४) जात कर्म, (५) नामकरण, (६) प्राशन, (७) चूड़ाकरण और (८) स्नापन।

यदि इन समस्त संस्कारों का वर्गीकरण किया जाय तो इन्हें पाँच वर्गों में इस प्रकार विभक्त किया जा सकता है--(१) प्रागूजन्म संस्कार, (२) बाल्यावस्था के संस्कार, (३) शैक्षणिक संस्कार, (४) विवाह संस्कार, और (५) अन्त्येष्ठि संस्कार।

इन मुख्य संस्कारों के साथ-साथ अगणित उप-संस्कार भी प्रचलित हो गये और वे किसी न किसी रूप में हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में पाये जाते हैं। इनकी क्षेत्रीय विशेषता होती है, रंग होता है। इस प्रकार जहाँ एक ओर सार्वदेशिक रूप से इन संस्कारों में समानता पायी जाती है, वहीं स्थानीय विशेषताओं के जुड़ जाने तथा अनेक भेदों-उपभेदों के सम्मिलित हो जाने के कारण इनमें बहुरंगीपन आ जाता है। परन्तु इन सब में समान रूप से जो बात सर्वत्र पायी जाती है, वह है उनकी उदात्तता, मंगलमयता, सुरुचि एवं श्रीसम्पन्नता।

इन संस्कारों में सबसे अधिक हर्ष एवं प्रसन्नता के कारण होते हैं विवाह और पुत्र-जन्म से सम्बन्धित संस्कार। सबसे अधिक कारुणिक होता है बेटी की बिदाई का अवसर। इन अवसरों पर जो गीत गाये जाते हैं, उनमें जैसी रस-सृष्टि होती है, वह मात्र अनुभव-साध्य है, वह वर्णनातीत है।

बेटा विवाह के लिये चलने को उद्यत है। उस समय माँ कहती है---

तू त चलेउ पूता गौरी बिआहन,
दुधवा कै मोल कइ लेहु रे।

बेटा उत्तर देता है-

सरग तरइया माइ कब लौं गिनबइ,
दुधवा कै मोल कइसे होइ रे!

पुत्र-जन्म के हर्षोल्लास के वातावरण में जो गीत गाये जाते हैं, वे कितने सरस, कितने सार्थक होते हैं—

पूँछइँ सासु बड़इतिनि होरिल बड़ सुन्दर हो,
बहुअरि, न जानी माई के सँवारे त न जानी कोख गुना हो।

बहू जवाब देती--

न तौ माई के सँवारे से न तौ कोखि गुना हो,
सासु, पिया मोर तपव्रत कीन्हें त ओनके धरम गुना हो!

कन्या का विवाह हमारे समाज में पवित्रतम, महत्तम एवं सर्वाधिक करुण संस्कार माना जाता है–

नीर चुवत बाबा, नीर चुवत है,
नीर चुवत आधी रात हो।
अइसने बबइया के नींद परतु कइसे,
जेहि घर बेटी कुआँरि हो।

बाबा को नींद कहाँ पड़ती है ? वह बेटी का ब्याह रचाने के लिये अपना सब कुछ दाँव पर लगा देता है। बेटी का ब्याह होता है। वह माँ बाप की गोद छोड़कर, अपना घर-बार छोड़कर, अपनी सखी सहेलियों को छोड़कर, सर्वथा अपरिचित देश में, अपरिचित लोगों के बीच रहने के लिये चली जाती है। ऐसी कन्या के हृदय में उस समय क्या-क्या होता होगा, उसके दिल पर क्या-क्या गुज़रती होगी ?

बेटी ससुराल जा रही है। माँ दरवाज़े तक पहुँचा कर वहीं से खड़ी बेटी को बिसूर रही है। बाप गाँव के बाहर तक बेटी को पहुँचाने जाता है। रास्ते में बेटी बाप को सहेजती है–

बाबा निमिया क पेड़ जिनि काटेउ
निमिया चिरैया बसेर,
बलैया लेऊँ बीरन।
बाबा, धिटियन जिनि केउ दुख देय
बिटिया चिरैया की नाईं,
बलैया लेऊँ बीरन।
सब रे चिरैया उड़ि जइहैं
रहि जइहैं निमिया अकेलि,
बलैया लेऊँ बीरन।
सब रे बिटियवा जइहैं सासुर
रहि जइहैं माई अकेलि,
बलैया लेऊँ बीरन।

इस प्रकार के मर्म पर चोट करने वाले, हृदय में टीस पैदा करने वाले, पलकों को भिगोने वाले गीतों का बहुत बड़ा कोश हमारे लोक साहित्य में भरा पड़ा है। कहीं-कहीं तो ये गीत इतने उत्कृष्ट और प्रभावशाली हो गये हैं कि हमारे रससिद्ध कवीश्वर भी उनसे ईर्ष्या कर सकते हैं। जीवन का कोई अंग नहीं है, भावना का कोई स्तर नहीं है, कल्पना का कोई सोपान नहीं है जिसे इन गीतों ने न छुआ हो। इस संकलन में संग्रहीत गीत इसी प्रोज्ज्वल परम्परा की कड़ी हैं। अब तक ये गीत बूढ़ी दादी के गले में बसे रहे हैं। अब ये मुद्रित होकर स्नेही पाठकों के सामने आ रहे हैं। ये गीत सारगर्भित हैं, इनमें गार्हस्थ्य-जीवन को पवित्र करने और सुन्दर बनाने की अदभुत क्षमता है।

प्रस्तुत संग्रह में जो गीत सँजोये गये हैं वे कितने आकर्षक, मोहक, प्रेरक और सार्थक हैं! एक-एक गीत हीरे मोती की तरह चमकदार, मूल्यवान् हैं। श्रीमती राजरानी वर्मा ने ऐसा संग्रह प्रस्तुत करके हिन्दी साहित्य के कोश को समृद्ध बनाया है और मुद्रित लोक साहित्य की शोभा बढ़ायी है। ये गीत हमको हँसाते हैं, रुलाते हैं, आन्दोलित और करुणा-विगलित करते हैं, सोचने-विचारने, याद करने–बिसूरने के लिये विवश कर देते हैं। जो सहृदय है, जो संवेगशील है वह इन गीतों से प्रभावित होगा, इनके रस में डूब जायेगा, विभोर हो जायेगा।

—श्रीकृष्ण दास

अपनी बात

'हमारे संस्कार गीत' नाम से विभिन्न संस्कारों पर गाये जाने वाले गीतों का यह संग्रह अब प्रकाशित हो रहा है। इससे पहिले लोक गीतों के अनेक संग्रह एवं संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। परन्तु जहाँ तक मेरी जानकारी है, अपने प्रकार का यह सर्वथा नवीन प्रयास है। मुझे लोक गीतों से रुचि है, उन्हें संग्रहीत करने की मेरी बान पुरानी है और उन्हें गाने का भी अभ्यास है। स्वर्गीया श्रीमती कमला नेहरू की कृपा से मुझे राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने का अवसर मिला। इसके साथ ही गाँव-गाँव घूमने का भी सुयोग हुआ। तभी मुझे इन गीतों का चस्का लगा। और, अब तो ये गीत मेरे मन-प्राण के अविभाज्य अंग बन चुके हैं। मेरे पास इन गीतों का अच्छा खासा एक ख़जाना सा इकट्ठा हो गया है। उसी में से चुन कर ये गीत इस संग्रह में सँजोये गये हैं।

यह सही है कि मेरे पास लोक गीतों की एक निधि है। परन्तु यह भी सही है कि मैं यह संग्रह तैयार न कर सकती यदि मेरे स्वजन श्री श्रीकृष्ण दास पीछे पड़ कर यह काम मुझसे न करवा लेते। मेरी बेटियाँ मीरा और रूपरानी, बहू गिरिजेश नन्दिनी और सरोज और मेरे स्वजन डाक्टर लक्ष्मण दास, श्री परमानन्द, श्री शिवशंकर मिश्र आदि बहुत याद आ रहे हैं। इन्होंने नाना रूपों में मेरी सहायता की है। उनको मुझसे ही नहीं, इन गीतों से भी मोह है। और, मेरी ही तरह उनको भी यह लालसा थी कि इस संग्रह का प्रकाशन सुचारु रूप से हो। मुझे आशा है कि मेरी ही तरह उनको भी इस संग्रह के प्रकाशन से संतोष होगा। श्रीमती मालती तिवारी ने पाठशोध में मेरी सहयता की है और श्री सूर्यनारायण ने गीतों का परिचयात्मक अनुवाद किया है। मैं इन दोनों लोकगीतानुरागी स्वजनों को आशीर्वाद देती हूँ कि लोक-साहित्य एवं लोक-गीतों के प्रति इनका अनुराग उत्तरोत्तर बढ़ता जाय।

इस संग्रह के पहिले 'हमारी लोक कथायें' नाम से लोक कथाओं का मेरा एक संग्रह प्रकाशित हो चुका है और उसे लोकप्रियता भी प्राप्त हुई है। अब यह संग्रह पाठकों की सेवा में उपस्थित हो रहा है। मुझे आशा है कि मेरे इस सामान्य से प्रयास को भी प्रोत्साहन मिलेगा और लोक-गीतों के प्रति आस्था एवं स्नेह रखने वाले सुधीजन इसे अवश्य एक बार पढ़ने की कृपा

करेंगे। मेरा आग्रह है कि हमारी बहू-बेटियाँ अवश्य ही इस संग्रह के गीतों को पढ़ें और इनके रस एवं सौंदर्य का आनन्द लें। इनसे उन्हें प्रेरणा मिलेगी, अपने जीवन को सजाने-सँवारने का एक साधन मिलेगा। आधुनिक सभ्यता की तेज़ लू से इस समय हमारे पुराने संस्कारगत जीवन-मान झुलसते जा रहे हैं। जैसे हमारे सांस्कृतिक जीवन को ग्रहण सा लग गया है। परन्तु मुझे विश्वास है कि यह ग्रहण कटेगा और हमारे सांस्कृतिक जीवन का पूर्ण चन्द्र अपनी समस्त कलाओं के साथ निखरेगा। हमारी पीढ़ी का जीवन तो विदेशी सत्ता एवं उसके अशुभ प्रभावों से जूझने में ही कट गया। मगर हमारी वर्तमान और आगामी पीढ़ियों को निरभ्र आकाश के तले, मुक्त वातावरण में, स्वस्थ वायुमंडल में जीने, फलने-फूलने का अवसर मिलेगा। ये गीत उनके जीवन को अधिक मधुमय, अधिक मोहक, अधिक सार्थक बनायेंगे--ऐसा मेरा विश्वास है।

जब 'हमारी लोक कथायें' नाम से लोक कथाओं का मेरा प्रथम संग्रह प्रकाशित हुआ था तो श्री रामनरेश त्रिपाठी ने अयाचित ही मुझे अपना आशीर्वाद दिया था और अपनी प्रसन्नता प्रकट की थी। वह इस संग्रह को भी शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित देखना चाहते थे। परन्तु ऐसा नहीं हो सका। अब वह नहीं हैं। परन्तु इस संग्रह को उनका आशीर्वाद तो मिल ही चुका था।

मुझे लगता है कि इस संग्रह को देखकर अन्य लोकसाहित्य प्रेमी विद्वान भी इस ओर प्रेरित होंगे और निकट-भविष्य में ही इस प्रकार के अनेक संग्रह प्रकाश में आयेंगे और पाठकों का मनोरंजन करेंगे।

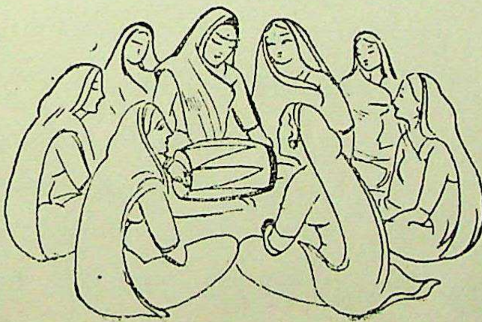
इसी विश्वास के साथ मैं यह संग्रह आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रही हूँ।

प्रयाग
होलिकोत्सव
२०-३-१९६२

—राजरानी वर्मा

विषयानुक्रम

हमारे संस्कार गीत



महारानी

तुम मेरी मन मोहनि अबला,
तुम मेरो मन मोहे हो माय !

तुमरी सरन मैया डगरा चलतु हैं,
घर आँगन न सोहाय हो माय।
मचिया बैठी मैं माता छोड़ेउँ,
लठिया ठेगत छोड़ेउँ बाप हो माय।

कँवरे लागि मँइ धनियाँ छोड़ेउँ,
गोद झडुलवा पूत हो माय।
राम रसोइया मँइ भाउज छोड़उँ,
तिलक संजोवत बीरन हो माय ।

लोग कुटुम परवरिया छोड़ेउँ,
रँहसत तोरे जग आयेउँ हो माय।
तुम मेरी मन मोहनि अबला,
तुम मेरो मन मोहेव हो माय ।

खोलो केवड़िया, दरस देउ अबला,
जात्री ठाढ़ दुआर हो माय।
जो मोरी अबला के अक्षत चढ़ावै,
सो रे मोतिन फल पावइ हो माय।

जो मोरी अबला के सेंदुरा चढ़ावै,
जनम जनम अहिबात हो माय ।
जो मोरी अबला के नरियर चढ़ावै,
सो रे पूत फल पावइ हो माय।

तुम मेरो मन मोहनि अबला,
तुम मेरो मन मोहेउ हो माय ।

दरसन से प्रसन्न यह अबला,
देउ विदा घर जाऊँ हो माय ।
तुमका नेवाजउँ, तुमरे जने का नेवाजउँ,
तुम हम पर दहिन-दयाल हो माय ।

तुम मेरो मन मोहनि अबला,
तुम मेरो मन मोहेउ हो माय !

माँ, तुमने मेरे मन को मोहित कर लिया है । तुम्हारी शरण में, मैं तुम्हारी राह पर आ रहा हूँ । मुझे अब अपना घर आँगन अच्छा नहीं लगता ।

मैंने मचिया पर बैठी हुई अपनी माँ छोड़ी, लाठी टेकता हुआ पिता, दरवाजे के बगल में खड़ी हुई पत्नी, गोद में खेलता हुआ दुलारा पुत्र, रसोई बनाती हुई भाभी और तिलक सजाता हुआ भाई छोड़ा । स्वजन-सम्बन्धी और कुटुम्बियों का परित्याग किया । सारे संसार का मोह त्याग कर प्रसन्नचित्त मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ ।

माँ, किवाड़ खोलो । मुझे अपना दर्शन दो । तुम्हारे मन्दिर तक यात्रा करके आया तुम्हारा पुजारी द्वार पर खड़ा है । जो मेरी माता को अक्षत चढ़ाता है, वह मोतियों का वरदान प्राप्त करता है । जो स्त्री सिंदूर चढ़ाती है, उसका सुहाग अचल हो जाता है । जो नारियल चढ़ाती है, उसे पुत्र फल प्रात होता है ।

माँ, प्रसन्नता पूर्वक अपना दर्शन देकर मुझे विदा करो । मैं तुम्हारी पूजा-अर्चना करता हूँ । तुम्हारे भक्तों की आराधना करता हूँ । तुम मेरी रक्षा करो, मुझ पर दया करो ।

(२)

जग तारनि माँ, कुल तारनि माँ,
मेरो मन, लोचै तेरे दरसन को ।

मैया के दुआरे एक हरिअर पीपर,
हहर-हहर हहराये हो माय ।
मेरो मन, लोचै तेरे दरसन को ॥

मैया के दुआरे एक गंगा बहत है,
लहर-लहर लहराये हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरे दरसन को॥

माया के दुआरे एक बजना बजत है,
झनन-झनन झहनाय हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरे दरसन को॥

माया के दुआरे एक होम होत है,
महर-महर मँहराय हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरो दरसन को॥

माया के दुआरे एक कोढ़िया पुकारै,
देउ काया, घर जाय हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरो दरसन को॥

माया के दुआरे एक अँधरा पुकारै,
देहु नयन, घर जाय हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरो दरसन को॥

माया के दुआरे एक बँझिनी पुकारै,
देउ बालक, घर जाय हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरो दरसन को॥

अंधे को आँखी मैया, कोढ़ी को काया,
बँझिनी बालक खेलावै हो माय।
मेरो मन, लोचै तेरे दरसन को॥

परिवार और समस्त संसार को पार उतारने वाली माँ, मेरा मन तुम्हारे दर्शन के लिये लालायित है।

माँ के दरवाजे पर एक हरा पीपल है। उसकी पत्तियाँ हवा से हहरा रही हैं।

माँ के दरवाज़े के नीचे से गंगा जी बहती हैं और उनका निर्मल जल द्वार तक लहरा रहा है।

माँ के दरवाजे पर झनन-झनन झंकार करता हुआ एक बाजा बज रहा है।

माँ के दरवाजे पर होम हो रहा है। सारा वातावरण उसकी महक से सुगन्धित हो रहा है।

माँ के दरवाजे पर एक कोढ़ी फरियाद कर रहा है। माँ, उसे नया शरीर दो, ताकि वह प्रसन्न होकर घर लौटे।

माँ के दरवाजे पर एक अन्धा पुकार रहा है। माँ, उसे नेत्र-दान दो, ताकि वह प्रसन्न मन अपने घर लौटे।

माँ के द्वार पर एक बंध्या स्त्री पुकार रही है। माँ, उसे पुत्र-प्राप्ति का वरदान दो।

माँ की कृपा से अन्धों को नेत्र, कोढ़ियों को नयी काया और बन्ध्या स्त्रियों को पुत्र प्राप्त होते हैं।

(३)

महरानी वरदानी कि जै-जै, विन्ध्याचल रानी ।

अरी माया, पहाड़ के ऊपर जहाँ मंदिर बना खासा,
उहाँ जग तारन का बासा।
मोरी महरानी बरदानी कि जै-जै विन्ध्याचल रानी।

अरी माया, चन्दन कौ चौकी,
चौकी में जड़े हीरा, चाभती पानों का बीड़ा ।
महरानी वरदानी कि जै-जै विन्ध्याचल रानी।

अरी माया, तरे बहे गंगा का निर्मल पानी,
नहाय मोरी आदि-जोति रानी ।
महरानी वरदानी कि जै-जै विन्ध्याचल रानी।

अरी माया इसर की कुइयाँ,
कुइयाँ में सरग पानी, भरें मोरी आदि-जोति रानी।
महरानी वरदानी कि जै-जै विन्ध्याचल रानी।

अरी माया के माखन कैसा, माखन में मिला पानी,
जाकी महिमा तीन लोक जानी।
महरानी वरदानी कि जै-जै विन्ध्याचल रानी।

अरी माया राम घर आये,
कर नौमी का असनान, धरि अष्टभुजी का ध्यान।
महरानी वरदानी कि जै-जै विन्ध्याचल की रानी।

वरदायिनी विन्ध्याचल महारानी की जय हो।

पर्वत की चोटी पर सुन्दर मन्दिर में महारानी का वास है। हीरों से जड़ी हुई चन्दन की चौकी पर आप आसीन हैं। मुँह में पान शोभा दे रहा है।

नीचे गंगा का निर्मल जल बह रहा है। आदि ज्योति महारानी उसी में स्नान करती हैं।

ईश्वर के कुँयें में स्वर्ग का पानी है। उसे आदि-ज्योति रानी भरती हैं।

वह पानी वैसा ही स्वादिष्ट है, जैसे मक्खन हो, उसकी महिमा तीनों लोक में फैली हुई है।

रामचन्द्र भी नौमी का स्नान करके ही अयोध्या लौटे थे। उन्होंने भी अष्टभुजा भवानी का ध्यान धारण किया था।

(भगवान् रामचन्द्र ने रावण-वध में आदि-शक्ति काली का ही सहारा लिया था। यदि माँ का प्रसाद और सक्रिय सहयोग उन्हें प्राप्त न होता तो उनको विजय प्राप्त करने में कठिनाई होती। दुर्गा-पूजा की परम्परा में षष्टी, सप्तमी, अष्टमी और नवमी का अधिक महत्व है। जिसमें नवमी के दिन देवी-पूजन की अतिशय महत्ता मानी जाती है। इस गीत में इसी परम्परा का हवाला दिया है और बताया गया है कि रामचन्द्र भी नवमी-पूजन के कारण विजयी हुये और विजयादशमी के उपरान्त अयोध्या लौटे!)

(४)

बाँका तुम्हारा नाम हो, बाँकी मोरी अबला!

काहे का मइया भवन बना है,
काहे धजा फहराय हो।
बाँकी मोरी अबला!

कंकड़-पथर मइया भवन बने हैं,
लाल धजा फहराय हो।
बांकी मोरी अबला !

काह ओढ़नियाँ काह घंघरिया,
काह सेंदूर भरे माँग हो ?
बाँकी मोरी अबला !

लाल घँघरिया मइया, लाल ओढ़िनया,
लाल सेन्दूर भरे माँग हो।
बांकी मोरी अबला !

खोलो केवड़िया, दरस देउ अबला,
जात्री खड़े हैं दुआर।
बांकी मोरी अबला !

काह देखि मइया मगन भई हैं,
काह देखि मुसुकानी ?
बाँकी मोरी अबला !

अन धन देखि मइया मगन भई हैं,
पूत देखि मुसुकानी।
बाँकी मोरी अबला !

माँ, तुम्हारा सुन्दर नाम है। तुम्हारे मन्दिर के सामने पुत्र की कामना लिये पुजारिन रमणी खड़ी है।

"किस चीज से माँ का मन्दिर बना है ? उस पर कैसी ध्वजा फहरा रही है ?"

"कंकड़-पत्थर से माँ का मन्दिर बना है। उस पर लाल रंग की ध्वजा फहरा रही है।"

"किस रंग का माँ ने लंहगा पहन रखा है और किस रंग की ओढ़नी ओढ़ रखी है ? किस प्रकार माँ का माँग भरा है ?"

"माँ ने लाल रंग का लँहगा और लाल रंग की ओढ़नी धारण की है। माँग में भी लाल सिन्दूर सुशोभित है।"

पुजारिन विनती करती है, "माँ, किवाड़ खोलकर दर्शन दो। यात्रीगण तुम्हारे द्वार पर खड़े हैं।"

"क्या देखकर माँ प्रसन्न हुई ? और क्या देखकर मुस्कुरा पड़ीं ?"

"अन्न-धन देखकर माँ प्रसन्न हुई और पुजारिन की गोद में पुत्र देखकर मुस्कुरा पड़ीं !"

(माँ के वरदान से पुत्र-प्राप्ति की कामना पूरी हो जाने के बाद पुजारिन पुत्र लेकर दर्शन के लिए जाती है।)

(५)

मैं कौने बहाने जाऊँ, मइया तोरे दरसन को !

हाँथे डलइया फूल की,
हाँ, मलिया बहाने जाऊँ।
मइया तोरे दरसन को।

हाथे बतासा चीनी का,
हाँ, हलुवइया बहाने जाऊँ।
मइया तौरे दरसन को।

हाथे गोला नारियल का,
पंसरिया बहाने जाऊँ।
मइया तोरे दरसन को।

हाथे दहेड़ी दही की,
ग्वालिनियाँ बहाने जाऊँ।
मइया तोरे दरसन को।

गोदी होरिलवा आपका,
दरसनवा बहाने जाऊँ।
मइया तोरे दरसन को।

हाथे में नेवज लपसी,
पुजवइया बहाने जाऊँ ।
मइया तोरे दरसन को ।

मैं कौने बहाने जाऊँ, मइया तोरे दरसन को !

माँ, किस रूप में, किस ढब से, किस वेश में मैं तुम्हारे दर्शन के लिये जाऊँ ?

माँ, हाथ में फूल की डाली लेकर माली के वेश में, बताशा लेकर हलवाई के वेश में, ध्वजा और नारियल लेकर पंसारी के वेश में, दही की दहेड़ी लेकर ग्वालिन के वेश में, गोद में पुत्र और साथ में पूरी चना और लपसी लेकर पुजारी के वेश में मैं तुम्हारे दर्शन के लिये जाऊँ ?

(देवी के मन्दिर में दर्शन करने के लिये भक्त जनता किन-किन रूपों में जाती है, इसी का एक चित्र इस गीत में दिया गया है ।)

(६)

नीमिया की डाली मइया पड़ा है हिंडोलवा,
कि लम्बे-लम्बे पेंग झूलें मोरी हो माय ।

झूलत-झूलत मइया होइ गईं पियासी,
कि ढूढ़े लाँगी मलिनी दुआर हो ना !

बाहर बाड़ी कि भीतर हो मलिनिया,
कि बूँद एक पनिया पिआव हो ना ।

कइसे के पनिया पियावउँ मोरी जननी,
कि मोरे गोदी बलका तुम्हार हो ना ।

बलका सोवावो मालिन चंदन खटोलना,
कि बूंद एक पनिया पिआव हो ना ।

एक हाथ लेउ मालिन सोने के घइलवा,
कि एक हाथ रेशमे का डोर हो ना ।

टूटी फूटि जइहैं मइया चन्दन खटोलना,
कि भुइयाँ लोटहिं बलक तोहार हो ना।

एक हाथ लीहिन मालिन गोदी क बलकवा,
कि दूसर हाथे गंगा जल पनिया हो ना।

पानी क पियासल पानी पियो मोरी जननी,
कि भरि मुख देउ असीस हो ना।

जैसे जैसे मालिन मोहि जुड़वायु हो,
कि वैसे वैसे धिया पतोहिया जुड़ाँय हो ना।

धिया बाड़ी ससुरे पतोहिया अपनी नैहर,
कि मइया केहि लेखे देइल असीस हो ना।

धिया बाढ़े ससुरे, पतोहिया अपनी नैहर,
कि मालिन जुगे जुगे बाढ़े तोर सोहाग हो ना।

जइसे तू मोरी मालिन हमइ जुड़वाइउ,
वइसे तोरी कोखिया जुड़ाय हो ना।

नीम की डाली पर झूला पड़ा है। माँ लम्बी-लम्बी पेंगें भरती हुई झूल रही थीं। जब झूलते-झूलते उन्हें प्यास लग गई तो मालिन के दरवाजे पर जाकर उससे पानी माँगा।

मालिन ने उत्तर दिया—"माँ, कैसे आपको पानी पिलाऊँ? गोद में मैं आपका दिया हुआ पुत्र लिये हूँ।"

माँ ने कहा—"मालिन, पुत्र को चन्दन के खटोले पर सुला दो। रेशम की डोरी से सोने के घड़े में पानी भर कर मुझे पिलाओ। माँ के वरदान से प्राप्त पुत्र को मालिन का मातृत्व अपने से अलग करने को तैयार न हो सका। अतः मालिन ने कहा—"माँ, चन्दन का खटोला टूट फूट जायगा और आप का पुत्र पृथ्वी पर लोटने लगेगा।" यह कह कर के मालिन ने एक हाथ में पुत्र को ले लिया और दूसरे हाथ में सोने के घड़े में गंगा जल ले कर देवी से बोली—"मां, पानी पिओ और प्रसन्न हो कर आशीर्वाद दो।"

पानी पीकर देवी ने आशीर्वाद दिया—"मालिन, जिस प्रकार तुमने मुझे शीतल किया है उसी प्रकार तुम्हारी पतोह और बेटी सुखी हों।" मालिन ने कहा माँ—"बेटी तो अपने ससुराल में है और पतोहू तो अभी अपने मैके में ही होगी। आप का यह आशीर्वाद यहां किसके लिये है। जल तो हमने पिलाया है।"

देवी ने और स्पष्ट कर कहा,—"तुम्हारी बेटी अपने ससुराल में फले फूले और पतोह अपने मैके में बढ़े और खिले। मालिन तुम्हारा सोहाग युग युग बना रहे। जैसे तुमने मुझे शीतल किया है उसी प्रकार तुम्हारी कोख भी शीतल हो। (तुम्हारी कुल परम्परा चलती रहे और सोहाग युग युग बना रहे इसी में तुम्हारे पति की अमरता है।)

(७)

आजु मोरी आनन्दी आनन्द करो!

आदि भवानी दुर्गा रानी,
तीन लोक जग जानी।
मेरी भोली अम्बे, तीन लोक जग जानी,
आजु मोरी आनन्दी आनन्द करो।

सिंह चढ़ी माया गरजत आवें,
लाल लंगूर अगुवानी।
मेरी भोली अम्बे, लाल लँगूर अगुवानी,
आजु मोरी आनन्दी आनन्द करो।

ठाढ़े दशरथ जी अरज करत हैं,
उनहूं की मनसा पूरन करो।
मोरी भोली अम्बे उनहूं की मनसा पूरन करो,
आजु मोरी आनन्दी आनन्द करो।

तीनों लोकों में प्रतिष्ठित, दुर्गा भवानी, आज तुम आनन्द करो!

सिंह के वाहन पर गर्जन करती हुई माँ आ रही हैं। उनके आगे-आगे लाल ध्वजा फहरा रही है।

माँ, राजा दशरथ तुम्हारे सामने खड़े होकर प्रार्थना कर रहे हैं। उनकी भी मनोकामना पूर्ण करो।

राजा दशरथ प्रत्येक उस व्यक्ति के प्रतीक हैं जो पुत्र की कामना लेकर माता के मन्दिर तक जाता है। माता विन्ध्येश्वरी उसकी मनोकामना पूरी कर देती हैं।

(गीत गाते समय परिवार के सभी लोगों का नाम दशरथ के स्थान पर बारी-बारी से लिया जाता है।)

(८)

लटकि रहे फुन्दना भवन में।

राजा दशरथ जी होम करत हैं,
देवी के अंगना भवन में।
रानी कौशल्या देई पूजन बैठीं,
गोद लिए ललना भवन में।

राजा रामचन्द्र होम करत हैं,
देवी के अंगना भवन में।
रानी सीतल देई पूजन बैठीं,
गोद लिये ललना भवन में।

लटकि रहे फुन्दना भवन में।

देवी के मन्दिर में झालर लटक रहे हैं, फूलों के गुच्छे लटक रहे हैं।

मन्दिर के आँगन में राजा दशरथ होम कर रहे हैं। गोद में पुत्र लेकर कौशल्या माता पूजा कर रही हैं।

राजा रामचन्द्र देवी के आँगन में हवन कर रहे हैं। रानी सीता गोद में पुत्र लेकर उनकी पूजा कर रही हैं।

(पुत्र-प्राप्ति के लिए देवी की पूजा की परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। प्रस्तुत गीत में दशरथ और कौशल्या तथा उनके बाद राम और सीता द्वारा देवी-पूजन की चर्चा करके इसी परम्परा की ओर संकेत किया गया है।)

माता जी को ध्यान मोरे मन ।
मइया जी को ध्यान मोरे मन ॥

सुरहिन गइया का गोबरा मंगाश्रो,
नित उठि अम्बे जी को भवन लिपाश्रो ।
माता जी को ध्यान मोरे मन ॥

सुरहिन गइया का घियना मँगावो,
नित उठि अम्बे जी का होम कराश्रो ।
माता जी को ध्यान मोरे मन ॥

कच्ची-पक्की कलियाँ तोरि मँगाश्रो,
नित उठि अम्बे जी का हार गुथाश्रो ।
माता जी को ध्यान मोरे मन ॥

मेवा मिठाई पकवान मँगाश्रो,
नित उठि अम्बे जी का भोग लगाश्रो ।
माता जी को ध्यान मोरे मन ॥

चुनि-चुनि कलियाँ सेज बिछाश्रो,
नित उठि अम्बे जी को सैन कराश्रो ।
माता जी को ध्यान मोरे मन ॥

मेरा मन माँ के ध्यान में लीन है ।

सुरही गाय का गोबर मंगाश्रो श्रौर नित्य प्रात:काल उठकर माँ का मन्दिर लीपो । कच्ची-पक्की कलियाँ तोड़ लाश्रो श्रौर नित्य उठकर माँ के लिये हार गूंथों । मेवा, मिठाई श्रौर पकवान लाकर माँ को भोग लगाश्रो । कलियाँ चुन-चुनकर सेज तैयार करो श्रौर माँ को उस पर आदर पूर्वक शयन कराश्रो ।

(प्रस्तुत गीत में देवी की सविधि पूजा का वर्णन किया गयाहै ।)

लौंगइ लौंग बसी मोरी अबला,
तेरा बगइचा लौंग में ।

के रे चढ़ावै मइया बेला मोगरा,
के रे चढ़ावै गुलाब ?

के रे चढ़ावै मइया धुजा नारियल,
के रे चढ़ावै मइया हार ?

माली चढ़ावै मइया बेला,मोगरा,
मालिन चढ़ावै गुलाब ।

माली चढ़ावै मइया धुजा नारियल,
मालिन चढ़ावै मइया हार ।

के रे माँगै मइया अनधन सोनवा,
के रे माँगै सोहाग ?

माली माँगै मइया अनधन सोनवा,
मालिन माँगै सोहाग ।

माँ, प्रत्येक लौंग में सुगन्ध की भाँति तुम्हारा वास है । लौंग के फूलों से भरी तुम्हारी बगिया है ।

माँ, कौन तुम्हें बेला, मोगरा चढ़ाता है ? कौन तुम्हें गुलाब का फूल चढ़ाती है ?

माली तुम्हें बेला मोगरा चढ़ाता है ! मालिन तुम्हें गुलाब का फूल चढ़ाती है ।

माँ, कौन तुम्हें ध्वजा और नारियल चढ़ाता है ? कौन तुम्हें हार चढ़ाती है ?

माली तुम्हें ध्वजा और नारियल चढ़ाता है, मालिन तुम्हें हार चढ़ाती है ।

माँ, कौन अनधन सोना की माँग करता है ? कौन सोहाग की माँग करती है ?

माली अनधन सोना की माँग करता है । मालिन अपने सोहाग की माँग करती है ।

(११)

जगदम्बे भवानी सरन भवन !

तुम देवी जालपा दुःख हरो बाल का,
अष्ठभुजी कल्यानी सरन भवन ।

गढ़ परबत पर बैठी मेरी अबला,
छाने दूध और पानी, सरन भवन ।

सोने के सिंहासन बैठी मोरी अबला,
चाभत माखन-मिसिरी, सरन भवन ।

मनमोहनी बलिजाऊँ तुम्हारी,
तीन लोक की हो रानी, सरन भवन ।

भवानी जगदम्बे, तुम्हारा मन्दिर संसार का शरणास्थल है ।

हे जालपा देवी, तुम सेवक का दुःख दूर करो। हे अष्टभुजा कल्याणी, तुम्हारा मन्दिर संसार का शरणास्थल है ।

पर्वत की चोटी पर तुम्हारा निवास है। तुम इतनी न्यायशील हो कि दूध का दूध और पानी का पानी कर देती हो ।

तुम स्वर्ण सिंहासन पर आसीन हो और माखन-मिश्री का भोग लगा रही हो ।

तुम मन को मोहने वाली हो। तीनों लोक की रानी हो। मैं तुम्हारी बलैया लेती हूं ।

(१२)

आयी हूं सरन तिहारी रे ।
मैया जै जै बोलो ॥

बेले क फूल मैया कैसे चढ़ाऊँ,
भँवरे ने दिया है जुठार रे ।

गंगा क नीर मैया कैसे चढ़ाऊँ,
मछली ने दिया है जुठार रे ।

गैया क दूध मैया कैसे चढ़ाऊँ,
बछड़े ने दिया है जुठार रे।

नेवज और लपसी मैया कैसे चढ़ाऊँ,
बालक ने दिया है जुठार रे।

सेंदुर औ चुनरी मैया कैसे चढ़ाऊँ,
तिरिया ने दिया है जुठार रे।

माँ, मैं तुम्हारी शरण में आई हूँ। तुम्हारी जै-जै कार मना रही हूं।

माँ, बेले का फूल तुम्हे कैसे अर्पित करूँ? बहुत संकोच हो रहा है, क्योंकि भौंरों ने एक बार इन फूलों का बास लेकर इन्हें जूठा कर किया है। गंगा जल चढ़ाते हुए भी लाज लग रही है, क्योंकि मछलियों ने इस जल को उच्छिष्ट कर दिया है। गाय का दूध है, किन्तु उसे भी तो बछड़े ने जूठा कर दिया है। नेवज और लपसी में नन्हें बच्चे ने मुँह लगा दिया है। रही सिन्दूर और चुनरी स्त्री के हाथ में पड़ जाने के कारण वह भी जूठी हो गई है। माँ, तुम्हीं बताओ किस सामग्री से तुम्हारी पूजा करूँ? कुछ भी तो अछूता नहीं, कुछ भी तो नितान्त पुनीत और पवित्र नहीं!

(प्रस्तुत गीत में पुजारिन के हृदय की निश्छलता और संकोच-शीलता देखते ही बनती है। वस्तुतः इस प्रकार का निरभिमान ही देवी का सर्वाधिक मूल्यवान निर्माल्य है।)

(१३)

जय जयन्ति देवी महरानी,
कल्यानी जय-जय स्यामा।
माथे उनके चन्दा विराजै,
सीस मुकुट अभिरामा।
कँहवा देवी को जन्म भयो है,
कँहवा है अस्थाना?
कँहवा देवी आपु बिराजें,
पूजत सकल जहाना?

हिमचल मैया जनम भयो है,
काली को अस्थाना।

कोट कँगूरे आपु बिराजै,
पूजै सकल जहाना।

महारानी जयन्ती देवी की जय हो! कल्याणी श्यामा देवी की जय हो।

कहाँ देवी का जन्म हुआ है और कहाँ उनका स्थान है? कहाँ देवी स्वयं विराजमान हैं और सारा संसार उनकी पूजा कर रहा है?

हिमालय पर्वत पर माता का जन्म हुआ है। काली की मूर्ति में आपका स्थान है। पर्वत के शिखर पर आप विराजमान हैं और सारा संसार आपकी पूजा कर रहा है।

(१४)

अवतार लिया माया ने, भोला के चरण में!

सीता को जीत लायी,
रावण को मार के।
पर्वत पै जाके बैठी हो,
कंसा को मार के।

बलिहारी तेरे छबि की,
गले मुन्ड माल है।
क्या ज्योति तेरे शीश पर,
मूरत विशाल है।

बैठी हो अपने मंदिर में,
करती हो अदालत।
आया जो तेरे धाम में,
देती हो पदारथ।

अवतार लिया माया ने, भोला के चरणमें!

माता पार्वती ने शंकर के चरणों में जन्म लिया। रावण का वध कर उन्होंने ही सीता को बन्धन-मुक्त किया।

कंस का विध्वंस कर तुम पर्वत पर विराजमान हो। कलकत्ते में काली के रूप में भक्त-गण तुम्हारी ही पूजा करते हैं।

मैं तुम्हारे चरणों में बलिहारी जाती हूँ।

मैं तुम्हारे रूप का क्या वर्णन करूँ! तुम्हारे कण्ठ में मुण्डमाल सुशोभित है। शीश पर प्रखर ज्योति प्रज्वलित हो रही है। आकार अत्यन्त विशाल है।

अपने मन्दिर में बैठकर तुम दरबार कर रही हो। जो तुम्हारे धाम में आता है, उसकी सम्पूर्ण कामनायें पूरी कर देती हो।

(१५)

मैं चौंरी डोलावऊँ दिन-रात, मैया तोर बलका भवन में!
मैया के अँग पर लाल घँघरिया, चुंदरी ओढ़ावउँ गोटेदार।
मैया की चौंरी पै नरियर का गोला, लालै ध्वजा फहराये।
कंकड़-पत्थर मैया तोरा भवनवाँ, हीरा जड़े चहुँ ओर।
मैया की लट मोतिन से गूंथी, लालै सिन्दूर भरी माँग।
मैया के अंग से जोति बरत है, दीवा जले सारी रात।
सबरे चढ़ावै फूलों का गजरा, बलका चढ़ावै दूधन की धार।

माँ, मैं तुम्हारी दासी हूँ। तुम्हारे मन्दिर में बैठकर मैं दिन-रात तुम्हें चँवर डुला रही हूँ और तुम्हारे बालक को मैंने तुम्हारे चरणों में लिटा दिया है।

तुम्हारे शरीर पर लाल लँहगा सुशोभित है। माँ, मैं तुम्हें लाल चूँदर से आवेष्ठित कर रही हूँ।

माँ की चौरी पर नारियल का गोला है। सामने लाल ध्वजा फहरा रही है।

कंकड़ पत्थर से माँ का मन्दिर बना है। चारों ओर उसमें हीरे जड़े हैं। उनकी लट मोतियों से गुंथी है। माँग में लाल सिन्दूर भरा है।

माँ के प्रत्येक अंग से ज्योति प्रज्वलित हो रही है। उनके मन्दिर में सारी रात दीपक जलता रहता है।

माँ, और सब तुम्हें फूलों की माला चढ़ाते हैं, यह बालक दूध की धार से तुम्हारा अभिषेक कर रहा है।

मइया मोरी कैसी बनी भोली-भाली !

काहे से मइया मन्दिर छवाऊँ,
काहे सजाऊँ तेरी डाली ?

पानन से मइया मन्दिर छवाऊँ,
फूल सजाऊँ तेरी डाली।

मइया के दुआरे एक फूली-फुलवारी।
फूल खिलै डाली-डाली।

मइयाके दुआरे एक गंगा बहत हैं।
आवै लहर बारा बारी॥

मेरी भोली-भाली माँ कैसी सुन्दर लग रही है !

माँ किससे तुम्हारा मन्दिर छवाऊँ ? किससे तुम्हारी डाली सजाऊँ ?

पान के पत्तों से तुम्हारा मन्दिर छवाऊँगी। फूलों से तुम्हारी डाल सजाऊँगी !

माँ के द्वार पर एक हरी भरी फुलवारी है। उसके वृक्षों की प्रत्येक डाल में फूल खिले हैं।

माँ के द्वार पर गंगा बह रही हैं। उनके जल में बारी-बारी से लहरें उठ रही हैं।

गोद भराई

मेरे अलबेले नाहा,
अब धर सिरहाने बाँहा।
मेरे बंस बढ़ावन नाहा,
गले बन्धन डालन हारा॥

जब पहला मास लागे,
तब फूलझरी मन लागे।
जब दूसर मास लागे,
तब पान पीक मन लागे॥

जब लागे हैं मास अढ़ाई,
पिया अन्न न भावे पानी।
जब तीसर मास जो लागे,
तब माटी मटिल मन लागे॥

जब चौथा मास जो लागे,
तब आम अमिल मन लागे।
जब पचवाँ मास जो लागे,
तब दूध दही मन लागे॥

जब छठवाँ मास जो लागे,
तब लड्डू में मन लागे।
जब सतवाँ मास जो लागे,
तब मेवा-मिठाई मन लागे॥

अठयें के सुरति बिसारो,
पिया सेज न आवन हारो।

जब नौवां मास जो लागे,
तब साध-सधुल मन लागे ।।

जब दसवाँ मास जो लागे,
तब भई होरिलवा की आसा ।
मेरे रामरतन के बाबा,
तेरे द्वारे पे नौबत बाजा ।।

मेरे रामरतन के ताऊ चाचा,
तेरे द्वारे पे पातुल नाचा ।
मेरे राम रतन की दादी,
तेरी अँगिन ढोल धमाकी ।।

गर्भवती पत्नी अपने पति से कह रही है—"हे मेरे वंश की वृद्धि करने वाले और मेरे कण्ठ में हाथ डालने वाले प्रियतम, मेरे सिरहाने अपनी बाँहें रख कर बैठो और मेरी सभी बातों को ध्यान से सुनो ।

पहला महीना लगने पर फूलझरी* की इच्छा होती है । दूसरा महीना आरंभ होने पर पान के लिये मन लालायित होता है । ढाई महीना बीत जाने पर अन्न-जल की इच्छा नहीं होती (भूख नहीं लगती) । तीसरा महीना लगने पर मिट्टी खाने की तबीयत होती है । चौथा महीना लगने पर आम और इमली की इच्छा होती है । पाँचवें महीने में दूध-दही के लिये मन मचलता है । छठे महीने में लड्डू और सातवें में मेवा-मिठाई की कामना होती है । प्रियतम, आठवें महीने का स्मरण न करो । तुम मेरी शैय्या पर अब न आ सकोगे । नवाँ महीना लगने पर मन में भाँति-भाँति की अभिलाषायें उमड़ने लगती हैं । दसवाँ महीना लगने पर पुत्र-जन्म की आशा पूरी हो जाती है । मेरे रामरतन (नवजात पुत्र) के बाबा, अब तुम्हारे दरवाजे पर आनन्द के बाजे बजेंगे । मेरे रामरतन के ताऊ और चाचा, अब तुम्हारे दरवाजे पर भाड़ नृत्य करेंगे । मेरे रामरतन की दादी अब तुम्हारे आँगन में ढोलक बजेगी ।

(इस गीत में इसी प्रकार परिवार के सभी व्यक्तियों और सम्बन्धियों का नाम लेकर गाया जाता है ।)

---

* एक प्रकार का आभूषण जिसे औरतें अपने कलाई में पहनती हैं ।

बाँसे करिल होइके निकरी हैं गोरी,
अंग पतर मुख ढुरहुरू गोरी।
अस गोरी हम कतहूं न देखा,
निकरी देखा बाप रामा खोरी॥

पैठत देखा ससुर रामा पँवरी,
हीरे-हीरे झीरे झीरे नदिया बहतु हैं।
जहवाँ दुलहे रामा सेज बिछावैं,
ढूरत ढुरत गोरी सेजे आयीं॥

सेजे चढन्ते पिया पूंछन लागे,
कौन नक्षत्र गोरी सिर से नहानी?
कौन नक्षत्र गोरी सेजे आइयु?

सूरुज नक्षत्र स्वामी सिर से नहाविउँ।
रोहनी नक्षत्र स्वामी सेजहिं आयी।

काहउ गोरी तुम्हैं काहे की साध?
पहिल साध मोरी सासु पुरइहैं।
हम रे ससुर से बात चलइहैं॥

और साध मोरी ससुरू पुरइहैं,
बाम्हन बोलाय के सगुन पूछइहैं।
और साध मोरी बाप पुरइहैं,
बैठ बजाज घरे कपड़ा चिरइहैं॥

और साध मोरा चाचा पुरइहैं,
दरजी बोलाय जोड़वा सिअइहैं।
और साध मोरी माया पुरइहैं,
कोहरा के चाका ऐसी पूड़िया पोअईहैं॥

और साध मोरी चाची पुरइहैं,
भैंसी के सींग ऐसा गूना पठइहैं।
और साध मोरी भाभी पूरइहैं,
गोतिनी बोलाय के लूगरा गोठइहैं ?

और साध मोरी बहिना पुरइहैं,
जौ गुलरिन का हार पठइहैं।
और साध मोरा भइया पुरइहैं,
लादि फांदि लैके नेवते अइहैं ॥

और साध मोरा स्वामी पुरइहैं,
आधे चौके हमइ बैठइहैं।
और साध मोरी ननद पुरइहैं,
अपने बीरन सँग गांठ जोड़इहैं ॥

और साध मोरा देवरा पुरइहैं,
काने लगाइ के किंगिरी बजइहैं।
किंगिरी बजावत मुंदरी जो पइहैं,
अपने भतिजवा के कठुला गढ़इहैं।

सासु कहइं बहु थोड़ा-थोड़ा दिहेव,
माया कहत बेटी भर-भर दिहेव।
थोड़ा-थोड़ा देबेउँ तौ गोत लजइहैं,
भर-भर देबो तो सासु रिसइहैं।

जेके बाबुल बैल भरि देइहैं......?

हे न्याह हे न्याह फूली है सास-ससुर की आसा।
फूली है माया बाबुल की आसा,
फूली है मेरे मन की आशा ॥

ओरियन-ओरियन बोलव कागा......!
कब मोरे अइहैं बाबुल की साधा ॥
साधुलिया मोरी सास पुरइहैं ॥

बाँस के करइल-सी एक गोरी बाहर निकली है। उसका पतला अंग है और गोला-चिकना मुँह। ऐसी सुन्दरी मैंने कहीं नहीं देखी थी। केवल अमुक पिता की गली में ही ऐसी गोरी दिखाई पड़ी। केवल अमुक ससुर के चौबारे में प्रविष्ट होती हुई ही ऐसी गोरी दिखाई पड़ी।

धीमे-धीमे नदी बह रही है। वहीं दूल्हे ने सेज बिछाई। मन्द गति से गोरी सेज पर आई। पति ने पूछा—"प्रिये, किस नक्षत्र में तुमने सिर धोकर स्नान किया? किस नक्षत्र में तुम मेरी शैय्या पर आई?

पत्नी ने उत्तर दिया—"प्रियतम, सूर्य नक्षत्र में मैंने सिर धोकर स्नान किया और रोहिणी नक्षत्र में मैं तुम्हारी शैय्या पर आई।

पति ने आगे पूछा—"प्रिये, बताओ, तुम्हारी क्या-क्या अभिलाषायें हैं?"

"प्रितयम, मेरी पहली साध मेरी सास जी पूरी करेंगी। फिर मेरे ससुर जी से बात चलायेंगीं और दूसरी इच्छा ससुर जी पूरी करेंगे। वे ब्राह्मण बुलाकर शकुन विचार करायेंगे। अगली साध मेरे पिता जी पूरी करेंगे। वे बजाज की दुकान में बैठकर कपड़े खरीदेंगे। उसके बाद की साध मेरे चाचा जी पूरी करेंगे। वे दरजी बुलाकर कपड़े सिलायेंगे। अगली इच्छा मेरी माता जी पूर्ण करेंगी। वे कुम्हार की चाक जैसे बड़ी-बड़ी पूड़ियाँ बनवायेंगी। अगली अभिलाषा मेरी चाची पूरी करेंगी। वे भैंसी की सींग जैसी गूनियाँ भेजेंगी। मेरी भाभी गोतनें बुलाकर लूगा गोठायेंगी। बहन जी जौ-गूलर का हार भेजेंगी। भाई बहुत से सर-सामानों के साथ न्यौता करने आयेगा। स्वामी मुझे अपने साथ लेकर चौक में बैठेंगे। ननद जी अपने भाई के साथ मेरी गाँठ जोड़ेंगी। देवर कान से लगाकर किंगिरी बजायेंगे। भेंट में उन्हें जो अँगूठी मिलेगी, उससे अपने भतीजे को कठुला हाथ का कंगन बनवायेंगे।

सास कहती हैं—"बहू थोड़ा-थोड़ा देना!" माँ कहती हैं—"बेटी हाथ भर-भर कर देना।"

"थोड़ा-थोड़ा दूँगी तो स्वजाति के लोग मुझे लज्जित करेंगे। भर-भर कर दूँगी तो सास जी रुष्ट होंगी। किन्तु मैं इतनी चिन्ता क्यों करूँ? मेरे बापू बैलों पर लदवा कर बहुत सारी वस्तुयें भेजेंगे।

"प्रियतम, सास-ससुर की इच्छायें पूरी हुई हैं। माँ-बाप की आशायें पूरी हुई हैं। मेरे मन की अभिलाषा पूर्ण हुई है।

मुँडेरों पर काग बोल रहा है। मेरे पिता द्वारा भेजी गई 'साध' कब आयेगी? कब सास जी मेरी साध पूरी करेंगी?

फुलझरिया मन लागे !
दूसरा मास जब लागे।
थूँक पिचिक मन लागे।

तीसरा मास जब लागे,
माटी मँगइबो कि नाहीं ?
साध पुराइबो कि नाहीं ?

जौ धनि तोंको साँची मैं जानों,
छोटा बीरन बुलाइये।
गढ़ मुलताने से माटी मँगाऊँ,
नवल धनि तेरी मैं साध पूराऊँ।

चौथा मास जब लागे,
खट रस में मन लागे।
आम मँगइबो कि नाहीं ?
इमिलीया मंगइबो कि नाहीं ?

जो धनि तोंको साँची मैं जानों,
छोटा बीरन बोलाइये।
गोले पेड़ से अमवा मँगाऊँ,
इमिलो बाग से मैं अमिली मँगाऊँ।
नवल धनि तेरी मैं साध पुराऊँ।

पंचवा मास जब लागै,
दूध मँगइबो कि नाहीं ?
दहिया मँगइबो कि नाहीं ?

जो धनि तोंको सांची मैं जानों,
छोटा बीरन बोलाइये।

गोली भैंस का दूध मँगाऊँ,
गुजर देस से दहिया मँगाऊँ।
नवल धनि तेरी मैं साध पुराऊँ।

छठवाँ मास जब लागे,
लड्डू मँगइबो कि नाहीं ?
साध पुरइबो कि नाहीं ?

जो धनि तोंको साँची मैं जानूं,
छोटा बीरन बुलाइये ?
बाबुल देस से लड्डू मँगाऊँ,
नवल धनि तेरी मैं साध पुराऊँ।

सतवाँ मास जब लागै।
मेवा मिठइया मन लागै,
मेवा मँगइबो कि नाहीं ?
मिठइया मँगइबो कि नाहीं,

जो धनि तोंको साँची मैं जानूं,
छोटा बीरन बुलाइये !
काबुल देस से मेवा मँगाऊँ,
कासी से मैं मिठइया मँगाऊँ।
नवल धनि तेरी मैं साध पुराऊँ।

अठवाँ मास जब लागै,
लील लिलागर मन लागै।
लील मंगइबो कि नाहीं ?

जो धनि तोंको साँची मैं जानूं,
छोटा बीरन बुलाइये।
गहरे रंग की लील मँगाऊँ,
नवल धनि तेरी मैं साध पुराऊँ।

नौवाँ मास जब लागे,
साध मँगइबो कि नाहीं।
गोद भरइबो कि नाहीं ?

जो धनि तोंको साँची मैं जानूं,
छोटा बीरन बुलाइये।
तेरे नइहर से मैं साध मँगाऊँ,
अपनी माया से मैं गोद भराऊँ।
नवल धनि तेरी मैं साध पुराऊँ।

दसवाँ मास जब लागे,
महल झरइबो कि नाहीं ?
पलंग बिनइबो कि नाहीं ?
पर्दा छोड़इबो कि नाहीं ?
दाई बुलइबो कि नाहीं ?

जो धनि तोंको साँची मैं जानू,
छोटा बीरन बुलाइये।
शीशेदार मैं महल झराऊँ,
रेशम डोर से पर्दा छुड़ाऊँ,
नेवाड़े बाध की पलंग बिनाऊँ,
गोदन बाग से दाई बुलाऊँ,
नवल धनि तेरी मैं साध पुराऊँ।

तिल से तेल, तेल से पीना, पिया आगे कहिहौं कहानी !

एक गर्भवती स्त्री किसी अन्य गर्भवती स्त्री और उसके पति के वार्तालाप को अपने पति के सामने दोहराती है और ब्याज से बता देती है कि वह स्वयं गर्भवती है। वह वार्तालाप इस प्रकार है —

मन में फुलझरी की अभिलाषा उत्पन्न हो रही है।

दूसरा महीना लगते ही पान की पीक जैसी तबियत होती है। मिचली आती है।

"प्रियतम, तीसरा महीना जब आरम्भ होगा, तब तुम मेरे लिये मिट्टी मँगाओगे या नहीं ? मेरी साध पूरी करोगे या नहीं ?"

"प्रिये, यदि तुम सच बोल रही हो तो छोटे भाई को बुलाना मैं उससे तुम्हारे लिये मुल्तान से मिट्टी मँगा दूंगा। नवेली प्रियतमे, तुम्हारी साध मैं पूरी कर दूँगा!"

"प्रियतम, चौथा महीना लगेगा। तुम मेरे लिये आम और इमली मँगाओगे अथवा नहीं ?"

"प्रिये, यदि तुम सच बोल रही हो तो तुम छोटे भाई को बुला देना मैं उससे तुम्हारे लिये गोले पेड़ से आम मँगा दूँगा। बाग से इमली मँगा दूँगा।

"पाँचवाँ महीना आरम्भ होगा। क्या तुम मेरे लिये दूध-दही नहीं मँगाओगे ?"

"प्राण, यदि तुम सच बोल रही हो तो छोटे भाई को बुला देना। मैं तुम्हारे लिये गोली भैंस का दूध मँगा दूँगा। गूजर देश से दही मँगा दूँगा।"

"छठा महीना शुरू होगा। तुम लड्डू मँगाओगे अथवा नहीं ?"

शुभे, यदि तुम सच बोल रही हो तो छोटे भाई से मैं तुम्हें काबुल के देश से लड्डू मँगा दूँगा!"

"सातवाँ महीना आयेगा, तो मेवा मिठाई की अभिलाषा होगी। मँगाओगे न ?"

"हाँ, मैं तुम्हें काबुल से मेवा मँगा दूँगा! काशी से मिठाई मँगवा दूँगा।"

"आठवें महीने में लील-लिलागार (नील से रंगी साड़ी) की इच्छा होगी।"

"गोरी, मैं तुम्हें अवश्य ही गहरे रंग की लील मँगा दूंगा!"

"जब नवाँ महीना लगेगा, तब और साध मँगाओगे या नहीं ?"

"प्रिये, यदि तुम सच बोल रही हो तो छोटे भाई से मैं तुम्हारे नैहर से साध मँगा दूंगा। अपनी माँ से गोद भरा दूंगा।"

"जब दसवाँ महीना आरम्भ होगा तो महल साफ कराओगे, पलँग बिनवाओगे, पर्दा लगवाओगे, दाई बुलाओगे, अथवा नहीं ?"

"अवश्य प्रिये, छोटे भाई को बुलाकर मैं शीशेदार महल साफ करा दूँगा, रेशम की डोरों का पर्दा तनवाऊँगा। निवाड़-बाध की पलँग बिनवा दूंगा। गोदन बाग से दाई बुला दूंगा।"

तिल से तेल निकलता है और तेल से पीना। मैं यह कहानी अपने प्रियतम को सुनाऊँगी।

ललना गनेश जी की, सरन मनाइये ।
ललना बिघन बिनासन, सरन मनाइये ॥

पहिला मास जब लागे,
हर्षित मन भये रे ।
ललना बिप्र बोलाये हँसि पूंछें,
कब की नहानी रे ॥

दुसरा मास जब लागे,
तो मन हर्षित भये रे ।
ललना अन्न बिरौना न सोहाई,
जियब हम कैसे रे ॥

तिसरा मास जब लागे,
पिंडुलिया मोरी कांपई ।
ललना अंग पियर मुख दूबर,
चोली-बन्द भरि आये रे ॥

चौथा मास जब लागे,
सासु से अरज करौं रे ।
सासू सीझल न जाये रसोंइयां,
ननद का बोलाओ रे ॥

पांचवा मास जब लागे,
देवरा से अरज करैं रे ।
देवरा सुतबौं मैं सेजिया तुम्हार,
तो बेनिया डोलउबऊँ रे ॥

छठवाँ मास जब लागे,
सइयां से अरज करैं रे ।
साहेब सुतबौ मैं सेजिया अकेल,
तो इतनी अरज मानों रे ॥

सतवाँ मास जब लागे,
सास हँसि पूंछैं।
बहुआ दहिना पाँव आगे परत,
होरिलवा का लच्छन रे॥

अठवाँ मास जब लागे,
आठों अंग भरि आये रे।
मोरी पहिरी चीर खुल जाई,
मैं फेरि-फेरि बाँधौं रे॥

नऊवां मास जब लागे,
ससुर हँसि पूछैं रे।
बहुआ कब तोरे होइहैं नन्दलाला,
मैं पटना लुटऊबौं रे॥

दसवाँ मास जब लागे,
दसो अंग भरि आये रे।
ललना प्रगटे हैं त्रिभुवन नाथ,
अयोध्या के नायक रे॥

जो यहि मंगल गावै,
और गाय सुनावै रे।
ललना कटइ जनम कर पाप,
सुनइया फल पावै रे॥

गणेश जी की शरण मनाओ। विघ्नों का विनाश करने वाले तथा धन-धान्य प्रदान करने वाले गणेश जी की शरण मनाओ।

पहला महीना प्रारम्भ होते ही मन पुलकित हो उठा। पण्डित बुलाकर पूछा जाने लगा—"स्नान की लग्न कब पड़ेगी?"

दूसरा महीना आरम्भ होते ही अन्न-जल से अरुचि होने लगी। भला मैं किस प्रकार जीवित रह सकूँगी?

तीसरा महीना लगते ही मेरी पिंडली काँपने लगी। शरीर पर पीलापन आ गया। चेहरा दुबला हो गया। चोली की बन्द तंग होने लगी।

जब चौथा महीना शुरू हुआ, मैं सास से बिनती करने लगी—"सास जी, मुझसे रसोई का काम नहीं होता। ननद को बुला लो।"

पाँचवाँ महीना लगने पर देवर से प्रार्थना करने लगी—"देवर, मैं तुम्हारी सेज पर शयन करूँगी, तुम मुझे पंखा डुलाओ!"

छठा महीना लगने पर स्वामी से विनय करने लगी—"प्रियतम, तुम मेरा इतना अनुरोध स्वीकार करो, अब मैं सेज पर अकेली ही शयन करूँगी।"

सातवाँ महीना लगने पर सास जी हँस-हँस कर पूछने लगी—"बहू, चलते समय तुम्हारा दाहिना पैर ही आगे पड़ रहा है। यह पुत्र-जन्म का शुभ लक्षण है।"

आठवाँ महीना लगने पर मेरे आठों अंग भर आए। पहनी हुई साड़ी खुल जाया करती है। मुझे बार-बार बाँधना पड़ता है।

नवाँ महीना लगने पर ससुर हँस-हँसकर पूछने लगे—"बहू, कब तुम्हारे पुत्र उत्पन्न होगा और मैं वस्त्र लुटाऊँगी?

दसवाँ महीना लगने पर दशों अंग भर आए। तीनों लोकों के स्वामी, अयोध्याधीश श्री राम ने अवतार लिया।

जो यह मंगल गीत गाते और गाकर सुनाते हैं उनके जन्म का पाप धुल जाता है और सुनने वालों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष आदि चारों फल प्राप्त होते हैं।

(२२)

पहला मास रुकुमिन,
कुंवर सच पायो।
रुकुमिन, फुलझरिया मन लागे,
तो आगम जनायो॥

दूसरा मास रुकुमिन,
कुँवर सच पायो।
रुकमिन, पान पिचक मन लागे,
तो आगम जनायो॥

तीसरा मास रुकुमिन,
कुँवर सच पायो।
रुकुमिन, माटी मटिल मन लागे,
तो आगम जनायो ।।

चौथा मास रुकुमिन,
कुँवर सचु पायो।
रुकुमिन, आम-अमिलिया मन लागे,
तो आगम जनायो ।।

पंचवा मास रुकुमिन,
कुँवर सच पायो।
रुकुमिन, दूध दही मन लागे,
तो आगम जनायो ।।

छठवां मास रुकुमिन,
कुँवर सच पायो।
रुकुमिन, लड्डू रे मन भावे,
तो आगम जनायो।

सतवां मास रुकुमिन,
कुँवर सच पायो।
रुकुमिन, मेवा मिठाई मन भावे,
तो आगम जनायो ।।

अठवां मास का नाम,
तो कबहुँ न लीजिये।
रुकुमिन, नील-नीलाम्बर मन लागे,
तो आगम जनायो।

नवां मास रुकुमिन पर,
जो न पूरी होई है।

रुकुमिन, साध-सधुलिया मन लागै,
तो आगम जनायो ॥

दसवां मास रुकुमिन,
कुँवर सच पायो।
रुकुमिन, भई है होरिलवा की आस,
तो आगम जनायो ॥

रुकुमिन, ऐसन भौजइया,
चौक चढ़ि बैठे।
अब सुभद्रा ऐसी ननदिया,
तो चुंदरी ओढ़ावें ॥

नाहीं तुहु ना करो भइया,
ऐ भइया ना करो।
भइया, भाभी का राम नेवाजै,
चौक चढ़ी बैठो ॥

पहिला महीना लगने पर रुक्मिणी देवी को गर्भ होने का विश्वास हो गया। उनका मन फुलझरी के लिए ललायित होने लगा।

उनको इस बात के लक्षण मिलने लगे कि सन्तति का जन्म होगा। दूसरे महीने में उन्हें खूब पान कूँचते रहने की साध होने लगी। तीसरे महीने में मिट्टी खाने की इच्छा होती। चौथे महीने में आम-इमली, पाँचवें में दूध-दही, छठे में लड्डू, सातवें में मेवा-मिठाई और आठवें में नील-नीलाम्बर की इच्छा होती। नवें महीने में उनके मन में भाँति-भाँति की अभिलाषायें उठने लगीं। दसवें महीने में पुत्र-जन्म की आशा पूर्ण हो गई। रुक्मिणी जैसी भाभी चौक में बैठी हैं। सुभद्रा जैसी ननद उन्हें ओढ़ा रही हैं। रुक्मिणी के साथ गाँठ जोड़ कर चौक में बैठते समय कृष्ण कुछ लज्जा का अनुभव करने लगे। सुभद्रा अनुरोध करने लगीं—"भाई, नहीं-नहीं मत करो भगवान् भाभी का कल्याण करें। तुम प्रसन्नता पूर्वक उनके साथ चौक में बैठो।"

काहे की पलंग, काहे का लगे पावा ?
काहे की पलंग में, टोंकि बिनावा ?
सोने के पलंग, रूपा लगे पावा।
गज-मोती पलंग टोंकि बिनावा ॥
दुइ-जन पहुँड़े हैं रतन उछाला !
रैन-सुहागिन भा भिनसारा।
लिहा है गर्भ श्रीराम अवतारा ॥
लिल्ली सी घोड़ीया पतल असवारा,
चले हैं कौन लाला बहिन लेनेहारा।
ठाढ़ी हैं बहन्दुल पाँवरी दुआरा,
कहाँ तुम चलेऊ भौज के कन्ता ॥
तुम्हरिन भाउज साधुल माँगै,
अच्छुन्न सैत चुन्दर उन माँगे।
जब नन्दोई जेवन बैठे;
तब ननदी हँसि बात चलावै।
तुम्हरिन सरहज साधो मांगै,
अच्छुन्न सैत चून्दर उन मांगे।
तब नन्दोइया जुलहवा के जाई;
हाथ जोड़ मुख बिनती कराई।
जुलहा भइया तुम बाबा हमारा,
खासा एक बिन देहू चौपारा।
रँगरेज भैया तुम चाचा हमारा।
चूनर रंग देओ बिधाता ॥
आस पास रंगेयो मोर की पाँखी,
बीचे में चौक चंडोल की पाती।

[४६

तब नन्दोइया कन्दुआ के जाई,
हाथ जोड़ मुख विनती कराई ॥

कन्दुआ हो भैया बाप हमारे,
लेडुवा बाँध देओ विधाता।

जोतेन गाड़ी किहेन पयाना,
छोड़ेन ननद रानी देस अयाना ॥

गावत बाजत नगर में पैठीं,
शंख बजावत अँगने में पैठीं।

आगे भौउज चौक बईठीं,
जब ननदी उनकी चुन्दरी ओढ़ाई ॥

चुन्दरी ओढ़ाई के लड्डू डारैं,
लड्डू डार के देत असीसा।

भाउज पूत जनैं दस बीसा,
जीओ मेरे बीरन लाख बरीसा !

कहाँ नन्दोई तोरी अकिल भुलानी,
बिन अच्छू मोहे चुन्दरी ओढ़ाई।

न चुन्दरी में अच्छू न मोती,
लाज करैं नन्दोइया के गोती।

लिहेन्ह ताली खोलेन केवाड़ी,
सोना लिहेन्ह जो बारा मासी ॥

जब नन्दोइया सोनरवा के जाई,
हाथ जोड़ मुख बिनती कराई।

सुनरा भैया तुम जीजा हमारे,
अच्छुअ रे बन देव बिधाता ॥

पटवा भैया तुम जीजा हमारे,
फूंदनिया बना देव बिधाता।

जौहरी भइया तुम फूफा हमारे,
मोती लड़ देश्रो बिधाता ॥

बहुत कई अच्छू बहुत के मोती,
चाहा करे नन्दोइया के गोती ।

जस-जस चुनरी उधरी करारी,
जब रे ससुर राजा धन बिलसाही ॥

जस-जस चुन्दरी लेत हिलोरा,
तब रे सास रानी बंटई तमोला ।

"किस चीज़ की पलँग बनी है । किस चीज़ के उसमें पाये लगे हैं ?"

सोने की पलँग है । चाँदी के उसमें पाये लगे हैं । गज-मुक्ताओं से उसे टाँका गया है । दो प्राणी लेटकर उस पर रत्न उछाल रहे हैं ।

रात्रि व्यतीत हुई । प्रभात की पुण्य बेला में श्रीराम ने अवतार लिया । झिल्ली घोड़ी पर पतली देहवाला अमुक भाई अपनी बहन लाने के लिये चल पड़ा है ।

बहन चौबारे के द्वार पर खड़ी है । भाई को आते देख कर पूछा—"भाई, तुम कहाँ जा रहे हो ?"

भाई ने उत्तर दिया—"बहन, तुम्हारी भाभी साधुल माँग रही है । अच्छी सी चूनर माँग रही है ।"

जिस समय ननदोई भोजन करने बैठा, ननद ने हँसते हुये चर्चा की—"तुम्हारी सरहज साधुल माँग रही है, अच्छी-सी चूनर माँग रही है ।"

ननदोइ जुलाहे के पास जाकर बिनती करने लगा—"भाई जुलाहे तुम मेरे पिता तुल्य हो । एक बढ़िया-सा चौपारा तैयार कर दो ।"

रंगरेज से कहा—"रंगरेज भाई, तुम मेरे चाचा के समान हो, जल्दी एक सुन्दर चूनर रंग दो ! किनारे-किनारे मयूरों की पंक्ति चित्रित करना और बीच में चौक बना देना ।"

कन्दुआ के घर जाकर ननदोई ने लड्डू बाँधने का आदेश दिया । ननद ने पति के साथ बैल गाड़ी में बैठ कर प्रस्थान किया । गाती बजाती हुई वह नगर में प्रविष्ट हुई । शंख बजाती हुई आँगन में पहुँची । सामने भाभी चौक में बैठी थी । ननद ने उसे चूनर ओढ़ा दी । सामने लड्डुओं की बँहगी रख

कर आशीर्वाद देने लगी—"भाभी, तुम दसों-बीसों पुत्रों को जन्म दो। मेरा भाई लाखों वर्ष तक जीवित रहे।"

भाभी बोली—"ननदोई, तुम्हारी अच्छी मति मारी गई है। तुम बिना अच्छू के ही मुझे चूनर ओढ़ा रहे हो। न तो चूनर में अच्छू है और न मोती।"

ननदोई के भाई-बन्धु उसे लज्जित करने लगे। उसने चाबी लेकर किवाड़ खोला और बारह मासा सोना निकाला। सोनार के पास जाकर उससे बिनती की—"भाई सुनार, तुम मेरे जीजा लगते हो। मेहरबानी करके एक अच्छू बना दो। पटहार के पास जाकर उसने फुंदनी बनवाई। जौहरी से मोती की लड़ी बनवाई। बहुत से अच्छू और बहुत से मोती लेकर ननदोई वापस लौटा। चुनरी देखते ही ससुर खुशी से नाच उठा। वह बहू की बलायें लेने लगा। ज्यों-ज्यों चूनर लहराती है, सास प्रसन्न मन सबको पान बाँटने लगती है।

(२४)

खट्टा न भावे मिट्ठा न भावे,
बैरो बैर............पुकारे!

मेरा मन ललचै बैरों को॥

जाइ कहो मोरे ससुरू के आगे,
कलकत्ते से बैर मगावैं।

मेरा मन ललचै बैरों को॥

जाइ कह्यो मोरे सासु के अगवाँ,
अगना में बैर लगावैं।

अरे खटमिठिया बैर लगावैं,
मेरा मन ललचै बैरों को॥

जाइ कहो मोरे नन्दी के अगवाँ,
नन्दोइया जी के अगवाँ।

कोई छकड़न लाद मंगावैं,
झरबेरी बैर पठावै।

मेरा मन ललचै बैरों को॥

जाइ कहो बहु बाबुल के अगवाँ,
ताऊ चाचा के अगवाँ।

धोती बेची पठावैं,
मेरा मन ललचै बैरों को॥

जाइ कहो बहु बुआ के अगवां,
लहँगा बेचि पठावैं।

आपन ओढ़नी बेचि पठावैं,
मेरा मन ललचै बैरौं को॥

जाइ कहो मोरे मइया के अगवां,
आपन धरती बेचि पठावैं।

आपन गिरही बेचि मगावैं,
मेरा मन ललचै बैरों को!!

गर्भावस्था में स्त्रियों का मन भाँति-भाँति की चटपटी चीजें खाने के लिये ललचाता है। एक गर्भवती स्त्री बेर के लिये मचल पड़ी है —

"खट्टा-मिट्ठा कुछ भी अच्छा नहीं लगता। मुझे बेर चाहिये। मेरा मन बेर के लिये ललच रहा है। जाकर मेरे ससुर जी से कहो कि आँगन में खट्टी-मिट्ठी बेर लगवा दें। ननद और ननदोई से कहो कि झरबेरी बेर छकड़ों पर लदवा कर भेज दें। बाबुल, ताऊ और चाचा से कहो कि धोती बेच कर मेरे लिये बेर भेजें। बुआ से जाकर कहो कि लहँगा ओढ़नी बेच कर मेरे लिये बेर भेजें। मेरी माँ से जाकर कहो कि वे धरती बेच कर, अपनी गृहस्थी बेच कर मेरे लिये बेर भेजें।

(२५)

ननद पूंछइ ठाढ़ि आँगन में,
सलोनी तुझे क्या-क्या भाता है ?
हरे डार का मेवा भावै,
खट्टरस और सलोना।

आर-पार की माछर भावे,
और ब्रिसेंधा नहिं भावे।

सास ससुर का राज भावे,
ननद-झगड़ा नहिं भावे।

ऊँची अटारी सेजा भावे,
अवर सवत नहिं भावे।

सलोनी तुझे क्या-क्या भाता है ?

ननद आँगन में खड़ी होकर भाभी से पूछ रही है—"मेरी सलोनी भाभी, तुम्हें क्या-क्या चीजें अच्छी लगती हैं ?"

भाभी उत्तर देती है—"मुझे हरी डाल का मेवा, खटरूस और सलोना अच्छा लगता है। आर-पार की मछली अच्छी लगती है लेकिन ब्रिसैंधा नहीं अच्छा लगता। अपने ससुर और सास का शासन प्रिय लगता है, लेकिन ननद का झगड़ा नहीं सुहाता। ऊँचे कोठे पर सेज बिछा कर सोना सुखद प्रतीत होता है किन्तु अपने ऊपर सौत का आना कभी भी नहीं सहन हो सकता।

———

जच्चाखाने का गीत

डगरा बहारत एक मोती जो पाया,
लैं मटकी मोती मूदिये हाँ......।

काहे की मटकी राजा, काहे का ढकना,
काहे का कसना कसाईये हाँ .....।
सोने की मटकी राजा रूपे का ढकना,
रेशम कसना कसाईये हाँ......।।

जो तुम भोले राजा,बन को सिधरिहो,
मैं धन कौने बेल साइयो हाँ......।
जो हम भोली रानी बनका सिधरबै,
धन खरचे गा मेरा वीरना हां......।।

एक लाख खर्चें राजा दुई रे बतावै,
यह मन हमें न पसिजिये हाँ......।
जो तुम भोली रानी धीया जनोगी,
धन खरचेगा मेरा वीरना हां......।।

जो तुम भोली रानी पूत जनोगी,
लिख परवाना भेजियो हाँ......।
चिठिया जो बांचे राजा मन में रहँसे,
घोड़े पर जीन कसवाइये हाँ......।।

ऊहाँ का उठिये राजा बन में आया,
बन के मोर चुराइये हाँ... ..।
ऊहाँ का उठिये राजा नगरों में आया,
लोग महाजन पुकारिये हाँ......।।

ऊहां का उठिये राजा ड्योढ़ी पर आया,
ड्योढ़ीदार पुकारिये हां......।

ऊहाँ का उठिये राजा आगन में आया
माया बहिन पहराइये हाँ......।

ऊहां का उठिये राजा सेजा पर आया,
धन पिया तुरत मँगाइये हाँ......।

ऐ मोरी भोली रानी पूत जनन्ती,
मटकी भर मोती धन क्या किया हो......?

ऐ मोरे भोले राजा पान पतलिया,
मुर मुरवा राजा—चुन चुनवा राजा ।
गरवा लगाय लेखा मांगियो हाँ......॥

अँजुली भर मोती ड्योढ़ीदार को दीन्हां,
लाले को दाई बुलाइये हाँ......।

अँजुली भर मोती दाई को दीन्हां,
लालन को नारा छिलाइये हाँ......॥

थाल भर मोती उपरोहित को दीन्हां,
लाल को रास गिनाइये हाँ......।

थाल भर मोती तोरी अम्मा को दीन्हां,
लाल को चेरूआ चढ़ाइये हाँ......॥

थाल भर मोती तेरी भाभी को दीन्हां,
लालन को पीपरी पिसाइये हाँ......।

थाल भर मोती तेरी बहन को दीन्हां,
लाल को छठिया धराइये हाँ......॥

दो चार मोती गवनहारी को दीन्हां,
लाल का रहस गवाइये हां...... ।

उठ धनि उठ धनि झगड़े को चलिये,
झांझ मरू के चौतरे हाँ .. ..॥

झांझ मऊ का एक भोला सा राजा,
घोड़े बैठाय राजा धन का बिलसव ।
यह दुई न्याऊ न कीजिये हाँ......॥

उठ धनि उठ धनि पहिनौ पटोरवा,
हम हारे तुम जीतिये हाँ......।

ऊहाँ का उठिये राजा आँगन में आया,
माया बहन उनकी पूछन लागे ।
देवरानी जेठानी पूछन लागे,
कौन हारा कौन जीतिये हाँ......?

अपने पिया की मैं करहूं बड़ाई,
हम हारे पिया जीतिये हाँ......।
जीता तो है अपने बाप का नन्दन,
हारी भडुये तेरी धीयरी हाँ......॥

मैं बलि मैं बलि कोंख छुलाछन,
हारा लाल जिताइये हाँ......।

रास्ते में झाड़ू लगाते हुये एक मोती मिल गया। उस मोती को मटकी में रख कर बन्द कर दिया ।

किस धातु की मटकी है ? किसका ढक्कन ? किस रस्सी से उसे बाँधा गया है ?

सोने की मटकी है। उस पर चाँदी का ढक्कन रखा है, फिर रेशम की डोरी से कस कर उसे बाँधा गया है ।

"भोले राजा, अगर तुम वन (परदेस) चले जाओगे, तो मैं कैसे अपना गुजर-बसर करूँगी ?"

"भोली रानी, जब मैं वन चला जाऊँगा तो यहाँ मेरा भाई धन खर्च करेगा।"

"प्रियतम, तुम्हारा भाई बहुत धूर्त है। एक लाख खर्च करने पर दो लाख बताता है। मेरा मन उस पर विश्वास नहीं करता।"

"भोली रानी, अगर तुम्हारे लड़की पैदा होगी तो मेरा भाई धन खर्च करेगा। किन्तु यदि तुम्हें पुत्र-लाभ हो तो मुझे पत्र लिखना।"

पत्र पढ़ कर प्रियतम बहुत प्रसन्न हुआ। घोड़े पर जीन कसा कर चल पड़ा। वहाँ से चल कर जंगल में आया। जंगल के मोरों को पकड़ लिया। वहाँ से चल कर प्रियतम नगर में आया। सेठ महाजनों को इकट्ठा किया। वहां से चल कर द्वार की देहरी पर आया। देहरी पर घर के लोगों को पुकारने लगा। फिर आंगन में आया। मां-बहन को गहने-कपड़े दिया। फिर सेज पर पहुँचा। पति-पत्नी में तकरार होने लगी। पति ने पूछा—"पुत्र पैदा करने वाली मेरी रानी, सटकी भर मोती तुमने क्या किया ?"

पत्नी बड़े प्यार से बोली—"मेरे भोले, पान जैसे पतले, सूखे मुँह वाले और चिड़चिड़े प्रियतम, मुझे गले लगा कर तुम मुझसे मोती का हिसाब लो।"

"एक अँजुरी मोती मैंने ड्योढ़ीदार को दिया। एक अँजुरी मोती दाई को दिया। पुत्र का नारा छिलाया। एक थाल मोती पुरोहित को दिया। पुत्र की राशि की गणना कराई। एक थाल मोती मां को दिया और उनसे पुत्र की अँजुरी भराई। एक थाल मोती तुम्हारी भाभी को दिया। उनसे पुत्र के लिये पिपरी पिसवाई। एक थाल मोती तुम्हारी बहन को दिया और उनसे पुत्र की छट्ठी करवाई। दो-चार मोती गीत गाने वाली स्त्रियों को दिया और पुत्र-जन्म पर मंगल-गान गवाया।"

पति बोला—"रानी चलो झांझ मऊ के राजा की अदालत में मैं अपना और तुम्हारा न्याय कराना चाहता हूँ !"

पत्नी ने उत्तर दिया—"स्वामी, झांझ मऊ का राजा बड़ा भोला है। वह क्या न्याय करेगा ? तुम अपना घोड़ा खूंटा से बँधवा दो और मुझ पर विश्वास करो। न्याय कराने की आवश्यकता नहीं है।"

पति प्रसन्न होकर बोला—"रानी, उठो ! तथा लँहगा पहनो। तुम जीत गईं। मैं तुमसे हार मान रहा हूँ।"

पति वहाँ से उठ कर आँगन में गया। माँ, बहन, देवरानी तथा जेठानी आदि बहू से पूँछने लगीं– "किसकी हार और किसकी जीत हुई ?"

बहू ने सब को उत्तर दिया—"मैं तो अपने स्वामी की ही बड़ाई करती हूँ। मैं हार गई, स्वामी जीत गये।"

बहू से सास कहती है कि वास्तविक विजेता तो अपने पिता का यह प्यारा पुत्र है। मेरे भँड़वे समधी की बेटी हार गयी, फिर भी मैं उसकी बलिहारी जाती हूँ, क्योंकि उसकी कोख शुभ लक्षणों से युक्त है। उसी के फल स्वरूप मेरा हारने वाला पुत्र जीत गया।

अब गढ़ले नगर का सोनार,
अरे मइया गढ़ले नगर का सोनार।
तो जच्चारानी खूब गढ़ा......,
अलबेलरि सोहागिन खूब गढ़ा ॥

अब रूप दिया भगवान,
अरी मइया रूप दिया भगवान।
तो जच्चा की माये जनी......,
अलबेलरि सोहागिन की माये जनी ॥

अब जैसे नरियर गोला,
अरी मइया जैसे नरियल गोला।
जच्चा रानी शीश बने......,
अलबेलरि सोहागिन शीश बने।

अब जैसे पूनो का चाँद,
अरी मइया जैसे पूनो कर चाँद।
सोहागिन के माँथ बने......,
अलबेलरि सोहागिन माँथ बने ॥

अब जैसे आमे की फाँकी,
अरी मइया जैसे आमे की फाँकी।
जच्चारानी आँख बनें......,
अलबेलरि सोहागिन आँख बने ॥

अब जैसे अनार का दाना,
अरी मैया जैसे अनार का दाना।
जच्चारानी दांत बने.. ...,
अलबेलरि सोहागिन दांत बनें ॥

अब जैसे गुलाबे का फूल,
अरी मैया जैसे गुलाबे का फूल ।
जच्चारानी ओंठ बने......,
अलबेलरि सोहागिन ओंठ बने ॥
अब जैसे समुन्दर सीपी,
अरी मैया जैसे समुन्दर सीपी ।
जच्चारानी कान बने......,
अलबेलरि सोहागिन कान बने ॥
अब जैसे सुगना के ठोंठ,
अरी मैया जैसे सुगना के ठोंठ ।
जच्चारानी नाक बने . ...,
अलबेलरि सोहागिन नाक बने ॥
अब जैसे रेशम का लच्छा,
अरी मैया जैसे रेशम का लच्छा ।
जच्चारानी केश बने......,
अलबेलरि सोहागिन केश बने ॥
अब जैसे फूलों की छड़िया,
अरी मैया जैसे फूलों की छड़िया ।
जच्चारानी हाथ बने......,
अलबेलरि सोहागिन हाथ बने ॥
अब जैसे पीपर का पात,
अरे मइया जैसे पीपर का पात ।
जच्चारानी गादी बनी......,
अलबेलरि सोहागिन गादी बनी ॥
अब जैसे मूँग की फलियाँ,
अरी मइया जैसे मूँग की फलियाँ ।

जच्चारानी अँगुली बनी......,
अलबेलरि सोहागिन अँगुली बनी।

अब जैंसे धोबी का पाट,
अरी मैया जैंसे धोबी का पाट।
जच्चारानी पीठ बने......,
अलबेलरि सोहागिन पीठ बने।

अब जैंसे केला के खम्भा,
अरी मइया जैंसे केला के खम्भा।
जच्चारानी जांघ बनी ....,
अलबेलरि सोहागिन जांघ बनी॥

अब जैंसे कँवल का फूल,
अरी मइया जैंसे कँवल का फूल।
जच्चारानी छाती बनी......,
अलबेलरि सोहागिन छाती बनी॥

अब घूम घुमैला है पेट,
अरी मैया घूम घुमैला है पेट।
तो सेल्ही अजब बने......,
अलबेलरि सोहागिन सेल्ही अजब बनी॥

अब भीतर हैं सुलतान,
अरी मैया भीतर हैं सुलतान।
तो फौज द्वारे खड़ी......,
अलबेलरि की फौज द्वारे खड़ी॥

बिन म्याने तलवार......,
अरी मैया बिन म्याने तलवार।
तो जच्चारानी खूब लड़ी......,
अलबेलरि सोहागिन खूब लड़ी॥

निकल पड़े सुलतान......,
अरी मैया निकल पड़े सुलतान।
तो फौज बिड़रे चली.....,
अलबेलरि की फौज बिड़रे चली॥
अब जच्चा ने खाया है पान,
अरी मैया खाया है पान।
तो चद्दर पीक पड़ी.....;
अलबेलरि की चद्दर पीक पड़ी॥
धोबिया लागे तेरा बाप,
अरी मैया धोबिया लागे तेरा बाप।
तो चद्दर कलप करी......,
अलबेलरि चद्दर कलप करी॥
अब इतना गाइ सुनाये,
अरी मैया इतना गाइ सुनाये।
जच्चारानी नाहीं धुलै......,
अलबेलरि सोहागिन नाहीं धुलै॥
होरिला हुआ चाँद-सूरज,
अरी मैया बेटा हुआ चाँद-सूरज।
तो बच्चा की माये जनी......,
अलबेलरि सोहागिन मात बनी॥
अब मोहर की थैली खोलो,
अरी मैया मोहर की थैली खोलो।
जच्चारानी नेग देवै......,
अलबेलरि सोहागिन नेग देवै॥
अब जीवे तेरा लाल,
अरी मैया जीवे तेरा लाल।
जच्चारानी बाँस बढ़े......,
अलबेलरि सोहागिन बाँस बढ़ै॥

जच्चा रानी का सौंदर्य अप्रतिम है। उनके एक-एक अंग से रूप बरस रहा है। लगता है, जैसे नगर के किसी चतुर स्वर्णकार ने उनकी रचना की है।

भगवान् ने जच्चा को अनुपम लावण्य प्रदान किया है। धन्य है उसकी सुहागिन जननी, जिसने उसे जन्म दिया।

जच्चा रानी का सिर नारियल के गोले की तरह सुघर और सुन्दर है। ललाट पूर्णिमा के चन्द्रमा की भाँति कान्तिमान है। आँखें आम की फाँक जैसी हैं। अनार के दानों की भाँति उसके दाँत हैं। गुलाब के फूल जैसे ओंठ और समुद्र की सीप जैसे कान हैं, तोते की टोंट जैसी नाक है। रेशम के लच्छों जैसे केश हैं। फूलों की छड़ी की तरह हाथ हैं। पीपल के पत्ते जैसी हथेलियाँ हैं। मूँगफली जैसी उँगलियाँ हैं। धोबी के पाट के समान पीठ है। कदली-खम्भ जैसी जाँघें हैं। कमल के फूल जैसे उरोज हैं।

जच्चा का पेट गोलाकार और चारों ओर से भरा पूरा है। नाभि की सुन्दरता और भी अधिक मनोरम है।

पेट के भीतर सुल्तान (बच्चा) है। दरवाजे पर सम्बन्धियों की सेना खड़ी है।

जच्चा रानी कैसी बहादुर है। बिना म्यान-तलवार के ही उसने जंग फतह की है। सुलतान (पेट का बच्चा) बाहर निकल आया (पैदा हो गया)। सम्बन्धियों की फौज तितर-बितर हो गई।

वह मुँह में पान कूँच रही है। चादर पर पान की पीक पड़ गई है। प्यारे बेटे, धोबी तुम्हारा बाप लगता है। वह चादर साफ कर देगा।

इतना गाकर सुनाया। फिर भी जच्चा रानी हिलती-डुलती नहीं।

जच्चा ने चन्द्रमा और सूर्य जैसे तेजवान् पुत्र रत्न को जन्म दिया है। मुहरों की थैली खोलकर जच्चा रानी सब को नेग दे रही हैं। सब आशीर्वाद देते हैं—"जच्चा रानी, तुम्हारे लाल की लम्बी उम्र हो। तुम्हारे वंश की वृद्धि हो।"

(२८)

कौन मास फूली करैली, कौने मास बहुआ गरभ से,
लाले हालरा!
सावन मास फूली करैली, भाँदों में बहुआ गरभ से।
लाले हालरा!

कोठे ऊपर कोठरी, नन्दा चढ़ी हैं झपट कै,
लाले हालरा !
भौजी काहे तोर मुँहना पियरान बा।
लाले हालरा !
काह कहूं मोरी ननदी, कहा नहीं मोसे जाय,
तोरे भइया मोरे आँचर में पीक डाला, लाले हालरा !
वह तो बन्शा बढ़ावन कइ डाला, लाले हालरा !
छोटकी ननदिया बड़ी हलबुलही, लाले हालरा !
वह तो बुढ़िया से जाइ लगावा, लाले हालरा !
बुढ़िया बड़ी हलबुलही रे, उ त बुढ़ऊ से जाइ लगावा,
बुढ़ऊ बड़े बुलबुलिया रे, वह तो पंडित को लागे बुलावा।
लठिया ठेगत आवइ पंडितवा, वह तो पोथी बिचारै,
बहुआ देखौ तुम्हारा रास गिनाउ रास कि,
लाले हालरा !
बहुआ बड़ी कुलच्छनी हो तुमरे होइहै बिटिया,
लठिया ठेगत पंडित घरवा न पहुँचै कि होरिला ने जन्म सुनाया,
ससुरू बड़े चालबजिया रे वह तो फेरि पंडित को बुलावा,
लाले हालरा !
लठिया ठेगत अरे आया बुढ़ौना रे, ओ तो पोथी भी साथ
लै आया, लाले हालरा !
चौका चढ़ि अरे बैठे बलय जी पंडित ने रास गिनाया,
तेरा होरिला हुआ सुलताना औ भागवाना।
बेटा रास गिनाई मोरा नेग पांच मोहर दिलवाना,
अरे भीतर से बहुआ बोली झड़प के सुन पंडित।
तब तो कहेव तोरे होइहैं धेरिया, लाले हालरा !
अरे हमरे बखरिया में कोदो के चाउरा, लाले हालरा !
अरे वोही बभनवा के नेग रे, लाले हालरा !
हमरे पेटरिया में फटही लुगरिया से वोही पंडित के देउ।

हमरे खजाने में खोटा रुपइया वही-बुढ़ौना क नेग रे,
लाले हालरा !
कोदो देउ बहू गइया-बछेरू तुम तो हो वंशा बढ़ावन।
फटही लुगरिया नउनिया क देउ, तुम तो हो बहुआ लखरनियाँ,
खोटा रुपइया रक्खो अपने पेटरिया, वह तो बिगड़े में आवे तेरे काम।
लाले हालरा !
बहू पाँच मोहर मेरा नेग, असरफ़ी दुई माँगौं,
लाले हालरा !
सभवा से आय ससुर कहन लागे, मेरी बहुआ तो है कुलतारन।
बहुवा देव तो होरिलवा खेलाई वहै दुलराई, लाले हालरा !
बहुवा देवौं मैं सरबस राज, लाले हालरा !
बहू देऊ न पंडित का नेग बुढ़ौना का जोग लाले हालरा !
पंडित क दीहिन हासिल घोड़ा पाँच मोहर उनका नेग,
लाले हालरा !
जुग-जुग जिओ जच्चा बच्चा जी जुग जीओ परिवार,
लाले हालरा।

किस महीने में करैली में फूल आये ? किस महीने में बहू ने गर्भ धारण किया ?

सावन के महीने में करैली में फूल आये। भादों में बहू ने गर्भ धारण किया।

कोठे पर एक कोठरी है। ननद झपट कर ऊपर पहुँची। गर्भवती भाभी से बोली—"भौजी, क्यों तुम्हारा मुँह पीला पड़ गया है ?"

"मेरी ननद, क्या बताऊँ ! कुछ कहते नहीं बन रहा है। तुम्हारे भाई ने मेरे आँचल पर पान की पीक का दाग लगा दिया। उन्होंने अपने वंश का गर्भ मुझे सौंप दिया।"

छोटी ननद बड़ी जल्दबाज है। बूढ़ी सास भी बड़ी जल्दबाज है। चटपट उसने बूढ़े ससुर को खबर दी। बूढ़े ससुर भी कम जल्दबाज नहीं। वे जाकर पण्डित बुला लाये, लाठी टेकता हुआ पण्डित आया। पत्रा खोलकर राशि और

नक्षत्र का विचार करने लगा। बहू से पूछा—"तुम अपनी राशि का नाम तो बताओ! देखूँ, तुम्हारे गर्भ में क्या है?"

पुरोहित ने भविष्य वाणी की--"तुम बहुत कुलक्षणी हो। तुम्हारे लड़की पैदा होगी।"

लाठी टेकते हुए पण्डित अपने घर तक नहीं पहुँच पाया था, तभी पुत्र का जन्म हुआ। ससुर बड़े चतुर हैं। उन्होंने फिर पण्डित को बुला भेजा। लाठी टेकता हुआ वृद्ध पण्डित पुनः पोथी-पत्रा साथ लेकर आया। पति पीढ़े पर बैठ गया। पण्डित ने राशि विचार किया। बताया—"तुम्हारा पुत्र बड़ा भाग्यवान् है। वह राजा बनेगा। और हाँ, राशि बताने के उपलक्ष्य में तुम मुझे पाँच मुहरें दक्षिणा में दो।"

भीतर से बहू तड़पकर बोली—"बूढ़े पण्डित सुन, उस समय तो तुमने बताया कि लड़की होगी। मेरे घर कोदो का चावल है। वही तुम्हें दक्षिणा में दिया जायेगा। पेटारी में फटी लुगरी है। खजाने में खोटा रुपया है। वही सब तुम्हें नेग में मिलेगा।" पण्डित ने उत्तर दिया—"बहू, कोदो का चावल गाय बछड़ों को दो। तुम तो वंश वृद्धि करने वाली हो। फटी लुगरी नाइन को दे दो। तुम तो लाखों की स्वामिनी हो। खोटा रुपया अपनी पिटारी में ही पड़ा रहने दो। कुसमय में काम देगा। तुम मुझे दक्षिणा में पाँच मुहरें और दो अशर्फियाँ दो।"

ससुर जी सभा से उठकर आये। बहू से विनती करने लगे--"मेरी बहू तो कुल को पवित्र करने वाली है। बहू, मैं पुत्र-जन्म के हर्ष में सबको नेग दूँगा। अपना सारा राज-खजाना बाँट दूँगा। बहू, तुम स्वयं ही प्रसन्न होकर पण्डित को दक्षिणा दो।"

पण्डित को नेग में एक हासिल घोड़ा और पाँच मुहरें मिलीं। प्रसन्न होकर उसने आशीर्वाद दिया—"जच्चा, बच्चा और परिवार के सभी प्राणी युग-युग जियें।"

(२६)

लागत मास असाढ़ पिंडुलिया मोरी काँपई हो,
ऐ हो लगि गै करैली में फूल मन ही मन बिहसई हो।
लालन-धनियां बोलावई अरे जाँघ बइठावई,
रनियां कौने भोजन कर साध कौन मन भावई हो?

सकल पदारथ मोरे घर एकहु न भावे रे,
राजा दाख बदाम छुहारा नारियल मन भावई हो।

लालन धनियाँ बोलावैं बहुत समझावई,
रनियाँ कौने पलंग कर साध कौन मन भावै हो ?

पलंगा तो ठीक चनन का बिनवा रेशम का,
गोदिया तो नीक तुम्हार सवत नहीं भावहिं हो।

लालन धनियाँ बोलायेन जाँघ बइठायेन हो,
रनियां कौने राज कर साध कौन मन भावन हो ?

राज तो नीक ससुर, कर अपनी सास कर,
राजा, कोट तो नीक देवर का झगड़ा ननद कर हो।

लालन धनियाँ बोलायेन जंघा बइठावई हो,
रनियाँ कौने चौक कर साध कौन मन भावै हो ?

चौक तो ठीक मोतिन कर, कलसा सोने कर हो,
गाठी तो नीक पुरुष कर, वेद पंडित कर हो।

लालन धनियाँ बोलायेन जँघा बइठायेन हो,
रनियाँ कौन रंगित कर साध कौन मन भावई हो ?

लहंगा तो नीक कसब कर, चुनरी कुसुम कर हो।
राजा अँगिया तो ठीक फुलझरिया बदरिया सुहावन हो॥

अषाढ़ मास लगते ही मेरी पिण्डली काँपने लगी। करइली में फूल आ गए। यह अत्यन्त शुभ लक्षण है। भीतर-ही-भीतर जच्चा बहुत पुलकित हो रही है।

पति ने पत्नी को पास बुलाया। अंक में बिठाकर पूछा—"रानी, तुम्हें किस भोजन की साध है ? तुम क्या पसन्द करोगी ? मेरे घर में सभी पदार्थ मौजूद हैं। क्या तुम्हें कुछ भी अच्छा नहीं लगता ?"

"प्रियतम, मुझे अनार, बादाम और नरियल अच्छे लगते हैं।"

पति ने आगे पूछा—"तुम कैसे पलंग पर शयन करना चाहती हो ?"

"पलंग चन्दन का होना चाहिए। वह रेशम की डोरियों से बिनी हो। प्रियतम, गोद तो तुम्हारी ही अच्छी लगती है। सवतों से मुझे बड़ा डाह होता है।"

"प्रिये, किसका शासन तुम्हें प्रिय है?"

"शासन अपने ससुर, सास और देवर का अच्छा लगता है और ननद की तकरार भली मालूम होती है।"

पति ने आगे पूछा—"कैसा चौक तुम्हें सुहाता है?"

"चौक मोतियों का हो। कलश सोने का हो। अपने पति की गाँठ अच्छी लगती है और पण्डित का वेदोच्चारण शोभा देता है।"

"रानी, तुम्हें किस रंग के कपड़ों की साध है?"

"प्रियतम, मुझे कसब का लहँगा अच्छा लगता है। कुसुम-रंग की चूनर प्रिय लगती है। बेल-बूटेदार अँगिया हो और इन समस्त वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होने पर बरसाती मौसम हो तब तो और ही अच्छा है।"

(३०)

अँगने में तुलसा लगायेऊँ माँगन एक मागेऊँ,
तुलसा हमरे सम्पति के साध सम्पति हम लेबई।

केहु के दिहृयो तुलसा सात-पाँच केहु के दुई चार,
तुलसा तुम्हरा मैं काह बिगाड़ेऊँ, होरिल नहिं पायेऊँ॥

तुमरइ पुरुष अधरमी, धरम नहिं जानइ हो।
बेड़ई अवधपुर की मइया बम्हन देखि दुलछैं।

सौ-साठ गइया मगावऊँ मैं अब ही संकलपऊँ,
दूधवा की खिरिया बनाऊँ मैं बम्हना जिवाऊँ॥

बाम्हन जेवइँ नहि पावंइ बहुआ गरभ से,
आठ मास नौ लागे, होरिल जनमे।

बजै लागी अनन्द बधइया गावइ सखी सोहर,
मचिये बैठी सासु त बहुआ अरज करै।

तुलसा दिहेन नन्दलाल मैं पियरी चढ़उबेऊँ,
एक हांथ लिहेन पियरिया दूसर हांथ नरियर।
बहुआ झपटि के चली मंदिरवा तुलसा चढ़ावईं,
पूजा-पाठि करि जब लौटीं तो तुलसा असीसैं॥
बहुआ, बाढ़इ तोरे माँग का सेंधुर जिऊई तोरा होरिल!

आँगन में मैंने तुलसी का बिरवा आरोपित किया। एक बरदान माँगा—"मां तुलसी, मुझे एक सम्पत्ति की कामना है। आपके आशीर्वाद से वह सम्पत्ति पाना चाहती हूँ। किसी को आपने-सात पाँच पुत्र दिए, किसी को दो-चार, मैंने क्या बिगाड़ा था कि मुझे एक भी पुत्र नहीं मिला?"

तुलसी ने उत्तर दिया—"तुम्हारा पति पापी है। धर्म करना नहीं जानता। अवध नगर की गायों को सताता है और ब्राह्मणों के साथ दुष्ट व्यवहार करता है।"

पत्नी ने प्रायश्चित स्वरूप निश्चय किया—"मैं अभी ही साठ सौ गायें मँगा कर गोदान करूँगी। दूध की खीर बनाकर ब्राह्मण को भोजन कराऊँगी।"

ब्राह्मण भोजन समाप्त भी नहीं कर सके थे कि बहू गर्भवती हो गयी थी। आठवें के बाद नवां महीना लगते ही पुत्र का जन्म हुआ। आनन्द के बाजे बजने लगे। सहेलियाँ सोहर गाने लगीं।

सास मचिया पर आसीन थी। बहू ने विनती की—"तुलसी की कृपा से ही मुझे पुत्र प्राप्त हुआ है। मैं उन्हें पियरी चढ़ाऊँगी।"

एक हाथ में पियरी और दूसरे हाथ में नारियल लेकर बहू पूजा के लिए तुलसी के मन्दिर की ओर चल पड़ी। पूजा समाप्त कर जब लौटने लगी तो तुलसी ने आशीर्वाद दिया—"बहू, तुम्हारी माँग का सिन्दूर बढ़े। तुम्हारा पुत्र चिरन्जीवी हो।"

(३१)

जौ मैं जनतिऊँ तहिया की बहुआ गरभ से,
अँगने में सोंठवा बोअउतिऊँ, खिड़िकिया में मधु पीपर।
घोड़नी का दँनवा दरइतिऊँ, भइसिया के खेहुड़,
चेरिया का गुड़ सोंठ बहुआ का मधु-पीपर॥
घोड़नी पैजानी घोड़ सरिया, भँइस कुस ढाभर,
चेरिया पैजानी बरोठवा, बहुआ गज ओबर।

घोड़वा पूतवा चढ़न के, भइंसी दूहन को,
चेरिया के पूतवा गुलाम, बहुआ राजबंशी ।।

सास कह रही है कि यदि मैं पहले से ही जानती होती कि बहू गर्भवती है, तो आँगन में सोंठ और खिड़की में मधु पीपर बुवाती।

घोड़ी के लिए दाना दरवाती। भैंस के लिए खेंहुड़ बनवाती। चेरी के लिए गुड़, सोंठ तथा बहू के लिए मधु-पीपर बनवाती।

घोड़ी ने घुड़सार में घोड़े को जन्म दिया, भैंस ने घास-फूस में प्रसव किया। दासी ने ओसारे में प्रसव किया और बहू ने सूतिका गृह में पुत्र को जन्म दिया।

घोड़ा मेरे पुत्र की सवारी के लिए है। भैंस दूध देने के लिए है। दासी मेरे पुत्र की गुलामी करने के लिए और बहू मेरी वंश-परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए है।

(३२)

चलौ न सखिया सहेली जमुना जल भरई,
जमुना का निरमल पानी कलश भरि लाई।
कोई सखी हाथ-मुख धोवई, कोई सखी जल भरईं,
कोई सखी ठाढ़ि तवाइं तिरिया एक रोवई हो ।।
कि तुम्हहि सास-ससुर दुःख कि नइहर दूर बसै,
कि तोर हरि परदेश कौन दुःख रोवऊ ?
ना मोरे सास-ससुर दुःख, ना नैहर दूर बसै,
ना मोरे हरि परदेश, कोखिया दुःख रोवऊँ ।।
न रोउ तिरिया तूं न रोऊ, जिया समझावऊ,
लै लेऊ हमरा होरिलवा, आपन कारि राखऊ।
नूनवा तो मिलइ उधार तेल व्योहारवा न,
सखिया कोखिया के कौन उधार, जबैं राम देइहैं तबे हम लेइई ।।
मोरे पिछवड़वा बढ़इया, वढ़इया मोर भइया,
भइया गढ़ि लावो काठे कै पुतरिया, मैं जिया समुझावउ।
तेलवा लगायों फुलेलवा खटोलवा सुतायों,
पुतरि तनी रोइ के सुनाओ, बंझिन घर सोहर हो ।।

सुनैं नगरिया के लोग बंझिन घर सोहर,
रनियाँ मैं तो काठे के पुतरिया कैसे रोइ के सुनावऊँ ।

तिरिया बगिया में जाइके आज सूरजा मनावऊ,
वहि तोहिं देइहैं होरिलवा तो जिअ्रा जुड़वायऊ ॥

सखी—सहेलियो, चलो न, यमुना जी से जल भर लायें। यमुना नीर बहुत निर्मल है। चलो घड़े भर लायें !

कोई सखी हाथ-मुँह धोने लगी। कोई पानी भरने लगी। कोई घाट पर ही खड़ी रहीं, किन्तु एक स्त्री फूट-फूट कर रोने लगी।

"क्या तुम्हें सास-ससुर का दुख है, अथवा नैहर दूर पड़ता है ? अथवा तुम्हारा पति परदेस गया है ? किस दुख से तुम रो रही हो ?"

"मुझे सास-ससुर का दुख नहीं है। नैहर भी दूर नहीं पड़ता। मेरा पति भी परदेस नहीं गया है। मैं केवल कोख के दुःख से रो रही हूँ।"

एक सखी बोली—"अरे स्त्री रो मत। धैर्य धारण कर। तू मेरा पुत्र ले। अपना ही समझ कर इसका पालन कर।"

स्त्री ने उत्तर दिया—"सखी, नमक तो उधार मिल जाता है। तेल भी व्यवहार में मिल जाता है। किन्तु, भला कोख का कैसा उधार ? जब भगवान् पुत्र देंगे, तभी लूँगी।"

पुत्रहीन अबला रोती हुई घर लौटी। बढ़ई को बुलाने लगी—"मेरे पिछवाड़े रहने वाले बढ़ई, तुम मेरे भाई हो। मेरे लिए लकड़ी की एक पुतली बना दो। उसी से बोध करूँगी।"

माँ ने पुतली को तेल लगाया। फुलेल लगाया। खटोले पर सुला दिया, उससे कहा—"पुतली, तनिक तुम शिशु की भाँति रोओ तो ! मुझ बाँझिन के घर में भी सोहर होने लगे। नगर-निवासी सुन लें कि मेरे घर में भी सोहर हो रहा है।"

पुतली बोली—"रानी, मैं तो काठ की बनी हूँ। भला कैसे अपना रोदन सुना सकती हूँ ? तुम बाग में जाओ। सूर्य भगवान की आराधना करो। वही तुम्हें पुत्र देंगे, जिससे कि तुम्हारा कलेजा शीतल होगा।"

(३३)

चन्दना काटौं मैं पलँगा बिनायेउँ रेशम डोर लगाइयां।
मैं वारी सैंया रेशम डोर लगाइयाँ ॥
सो पलंगा चढ़ि सोवैं कौन रामा नाजो डोलावइ रसबेनिया।
मैं वारी सैंया रेशम डोर लगाइयाँ ॥

हांथे की बेनिया भुइयां गिरी है आइ झमाके की निंदिया।
मैं वारी सैंया आइ झमाके की निंदिया॥
मांगे के होइ जो माँगो सोहागिन आज मांगन की है बेरिया।
मैं वारी सैयां आजु मांगन की है बेरिया॥
सास-ससुर का राज मांगै देवरा जेठानी की जोड़िया।
मैं वारी सैयां देवरा जेठानी की जोड़िया॥
छेज्जन-छज्जन लाल खेलैं आंगन-खेलैं मेरो भांजा।
मैं वारी सैयां आंगन खेलै मेरो भांजा॥
आवन-जावन नन्दी मांगइ इतना नन्दोइया मेरो पाहुना।
मैं वारी सैयां इतना नन्दोइया मेरे पाहुना॥
गौरी का सुहाग मांगई शिव-शंकर पति पाइयां।
मैं वारी सैयां शिव-शंकर पति पाइयां॥
इतना मँगन तुम मांगउ सुहागिन जो विधि पुरवै सो पाइयां।
मैं वारी सैयाँ जो विधि पुरवै सो पाइयां॥

चन्दन काट कर मैंने पलंग बनाया। रेशम की डोर लगवाई। उस पर लेट कर अमुक पति सो रहा है। प्रिया पंखा झल रही है। पत्नी को सहसा नींद आ गई। हाथ का पंखा जमीन पर गिर पड़ा।

पति बोला—"सुहागिन! तुम्हें जो माँगना हो, मांगो! आज माँगने की बेला है।"

"मैं सास-ससुर का राज चाहती हूँ देवर और जेठानी की जोड़ी चाहती हूँ। छज्जे-छज्जे पर मेरा पुत्र खेले, आँगन में भाँजा खेले। ननद आने-जाने का नेग माँगे। ननदोई मेरा पाहुना बन कर आवे। पार्वती माता का-सा सुहाग मिले और शंकर जैसा पति।"

"सुहागिन, इतने वरदान तुम माँग रही हो! विधाता यदि चाहेगा तो वह तुम्हें प्राप्त होगा।"

इस प्रकार संकेत पुत्र होने का वरदान मिल गया।

———

शिशु जन्म

जनमउ न जनमउ होरिलवा मोरे दुखिया घर,
उजड़ी नगरिया बसावउ हमंई जुड़वाउ हो।

कइसे क जनमउ मोरि मैया तोरे दुखिया घर,
टुटहे खटोलवा पौढ़इबिऊ, का गोहरइबिउ हो।

जनमउ न जनमउ होरिलवा मोरे सुखिया घर,
सोने का खटोलवा पौढ़उबै ललन कहि गाउब हो।

भोर होत पौ फाटत होरिला जनम लिये,
बाजै आनन्द बधइया, गावैं सखि सोहर हो।

एक उदास मां सन्तान की कामना करती है। वह कहती है मेरे होरिल, तुम मुझ दुखिया के घर जन्म लो। मेरे हृदय की उजड़ी नगरी को बसा दो और मेरे तन-मन को शीतल कर दो।

होरिल कहता है—मेरी मां, मैं तुम दुखिया के घर कैसे जन्म लूं ! तुम तो मुझे टूटे खटोले पर सुलाओगी और फिर मुझे यह भी पता नहीं कि तुम मुझे क्या कह कर पुकारोगी !

माँ ने जवाब दिया---मैं सुखिया हूं बेटे, तुम मुझ सुखिया के घर जन्म लो। मैं तुम्हें सोने के खटोले में सुलाऊँगी और तुम्हें ललन कह कर पुकारूँगी।

प्रातः कालीन अरुणिमा के छिटकते ही मां की कोख से बेटा पैदा हो गया, आनन्द की बधाइयां बजने लगीं और सभी सखियां मंगलमय सोहर गाने लगीं।

(३५)

नन्द महल आज बहुत अनन्द श्याम मनोहर गाइये !
काहे के हसुआ नारा छिनाऊँ, काहे के खप्पर नहवाइये ?
काहे के अँगौछा-अगोछौं अँग, काहे के पलन पौंढ़ाइये ?
सोने के हँसुआ मैं छीनँउ नारा, रूपे के खप्पर नहवाइये ॥

पीतम्बर अंग अगोंछौं सोने पाटे पलंग पौढ़ाइये,
घर मोरे सोहर पिया परदेश कैसे में रोचना पहुँचाइये।
नउवा अउ बरिया हे बेगि चलि आवउ,
पिया को मैं रोंचना पहुँचाइये ॥
नउवा जो रोचना दिया है लिलार,
रहस जानि चले राजा रामचन्द।
नउवा के दिहृयो हासिल घोड़,
बरिया के तोड़ा गढ़वाइये।
धन रे महल जहां बाजत ढोल,
धन रे सोहागिन जहाँ गाइये ॥

नन्द बाबा के घर में आनन्द मनाया जा रहा है क्योंकि आज श्याम पैदा हुये हैं। इसलिए सभी सखियां मिल कर बधाई के गीत गा रही हैं।

यशोदा जी कहती हैं—किस चीज़ के हसुआ से नारा काटा जाय ? किस धातु के बर्तन में बच्चे को नहलाया जाय ? किस कपड़े के गमछे से उनका तन पोंछा जाय ? किस चीज़ के बने पालने में उनको लेटाया जाय ? मैं सोने के हसुआ से उनका नारा काटूँगी और चांदी के बर्तन में उनको नहलाऊँगी। पीताम्बर से उनका तन पोछूँगी और सोने की पाटियों वाली पलंग पर उनको सुलाऊँगी।

इस हर्षोल्लास के बीच ही उनको याद आता है कि पति तो परदेश में हैं और घर में सोहर गाया जा रहा है। सोचती हैं पति के पास रोचना कैसे भेजूं ? फौरन कहती हैं—"हे नाऊ, बारी ! तुम लोग तुरन्त आओ। मैं अपने पति के पास पुत्र-जन्म का संदेश भेजना चाहती हूँ। तुम उसे लेकर फ़ौरन जाओ।"

नाई ने रामचन्द्र के (रामचन्द्र का अर्थ यहां पति है) माथे पर रोचना लगाया। वह बहुत प्रसन्न हुये। उन्होंने नाऊ को घोड़ा दिया और बारी को तोड़ा गढ़वा दिया और महल की ओर चल पड़े।

धन्य है वह घर जहाँ सोहर का ढोल बजता है और धन्य हैं वे सुहागिनें जो वहाँ जाकर सोहर गाती हैं।

(३६)

गोकुल बाजत बधइया तो नंद घर सोहर हो,
रामा जनमे हैं दीनदयाल दुवउ कुल राखन हो।

कपिला दूध दुहाएउ, ललन नहवाएउ हो,
पीत पीतम्बर अंग-अंगौंछेउ सिंहासन बइठाएउँ हो ॥

लालन पाँउ पैजनियाँ तो रुन-झुन बाजइ हो,
कमर करधनियाँ रतन जड़ाउ तो कठुला बिराजइ हो।

लालन नैन कजरवा बहुत निक लागइ हो,
दिया है बुआ सुभद्रा तउ रचि के सँवारेउ हो ॥

लालन झाँग - झँगुलिया बहुत निक लागइ हो,
रतन जड़ाऊ की टोपी छबि भल सोहइ हो।

लालन हाथ लकुटिया बहुत निक लागइ हो,
भाल तिलक भल सोहइ बहुत छबि लागइ हो ॥

भइया के प्रान अधार बहिनिया के बंधन,
अपने नंद बबा के नयनवा जुड़ावें हो !

मोर मुकुट पीताम्बर मुरली अधर पर हो,
रामा देखि मुरत मन भावइ बिसरि दुख जावइ हो।

जे यह मंगल गावँइ अरे गाइ सुनावँइ हो,
रामा कटि जैहैं जनम के पाप सुनवइया फल पावँइ हो।

गोकुल में बधाई बज रही है। राजा नन्द के घर में सोहर हो रहा है। दोनों कुलों के रक्षक, दीन दयाल भगवान् कृष्ण ने जन्म लिया है।

कपिला गाय के दूध से कृष्ण को स्नान कराया गया है। पीताम्बर से शरीर पोंछ कर उन्हें सिंहासन पर बिठाया गया। उनके पैरों में रुनझुन करते हुए नूपुर बज रहे हैं। कमर में रत्न जटित करधनी और गले में कठुला सुशोभित हो रहा है।

कृष्ण की आँखों में काजल बहुत सुन्दर लग रहा है। बुआ सुभद्रा ने इसे कलात्मक ढंग से लगाया है।

कृष्ण के शरीर पर झाँग और झँगुलिया बहुत सुन्दर लग रही हैं। सिर पर रत्न जटित टोपी की शोभा वर्णनातीत है।

कृष्ण के हाथ में लाल छड़ी बहुत अच्छी लग रही है। मस्तक पर तिलक की शोभा और भी अधिक मनोहारिणी है।

वह अपनी माँ के प्राणों के आधार हैं, बहन के स्नेह बन्धन में बँधे रहने वाले और बाबा नन्द के नेत्रों को अपरिमित शीतल प्रदान करने वाले हैं।

जो स्त्रियाँ यह मंगल-गीत गाती हैं और गा कर दूसरे को सुनाती हैं, उनके जन्म भर के पाप विनष्ट हो जाते हैं। सुनने वालों को भी इससे असीम फल प्राप्त होता है।

(३७)

केकरि ऊँची महलिया तउ मानिक दीप बरइ हो,
केकर रोवै होरिलवा तउ महलिया अनन्द भए हो ?
राजा दशरथ ऊँची महलिया, तउ मानिक दीप बरइ हो,
राजा दशरथ के रोवै होरिलवा, तउ महलिया अनंद भये हो ॥
केकरे पुतवा के पूत भयें, केकरे नाती भये,
केकरि धेरिया जुड़ानीं, तउ मानिक दीप बरइ हो ?
राजा दशरथ पुतवा के पूत भयें, कौसल्या देइ के नाती भयें,
राजा जनक धेरिया जुड़ानी, तउ मानिक दीप बरइ हो ॥
हँसि के उठा हइ बेटवना बिहँसि के पतोहिया,
खम्भा ओटे ठाढ़ी कौसल्या देई जनम सुफल भये हो।
भल किहयो बहुआ मोरी कि भल रे बेटवना हो,
मोरा दुनउँ कुल भयेनि अँजोर पितर सब तरि गये हो ॥
नेवतउ चांद सुरुजवा, नेवतउ सातउ बहिनिया हो,
रामा नेवतउ कुल परिवार तउ जगि मँई रोपउँ हो।
अब बाजन लागे बधइया, उठन लागे सोहर हो,
रामा दान करत राजा दशरथ तउ पुतवा के पूत भये हो ॥
जे यह मँगल गावँइ, अरे गाई के सुनावँइ हो,
रामा जुग-जुग जीवैं होरिलवा सुफल फल पावँइ हो।

किसके ऊँचे महल में मणियों के दीपक जल रहे हैं ? किसका पुत्र रो रहा है और कहाँ आनन्दोत्सव मनाया जा रहा है ?

राजा दशरथ के ऊँचे महल में मणियों के दीपक जल रहे हैं। उन्हीं का पौत्र रो रहा है और वहीं आनन्दोत्सव मनाया जा रहा है।

किसके पुत्र का पुत्र और किसका नाती पैदा हुआ है ? किसकी कन्या का हृदय शीतल हुआ है ?

राजा दशरथ के पुत्र (राम) का पुत्र और कौशल्या का नाती पैदा हुआ है। राजा जनक की कन्या (सीता) का हृदय शीतल हुआ है।

हँसते हुये राम खड़े हैं। आनन्द मग्न होती हुई सीता खड़ी हैं। खम्भे की आड़ में कौशल्या देवी खड़ी हैं। सब आज अपना जन्म सार्थक मान रहे हैं।

कौशल्या जी सीता से कह रही हैं—"बहू आज तुमसे बहुत उत्तम कार्य बन पड़ा है। मेरे पुत्र राम ने भी उत्तम कार्य सम्पादित किया है। मेरे दोनों कुल आज प्रकाशित हो उठे हैं और स्वर्ग लोक में पितरों को भी मुक्ति प्राप्त हो गई है।

चन्द्रमा और सूर्य को निमंत्रित करो। सातों बहनों के साथ दुर्गा माता को निमंत्रित करो। कुल और परिवार के समस्त सम्बन्धियों को बुलाओ। मैं आज यज्ञ का अनुष्ठान करूँगी।

बधाइयाँ बजने लगीं। सोहर गाये जाने लगे। राजा दशरथ नाती उत्पन्न होने के उछाह में सब को दान दे रहे हैं।

जो स्त्रियाँ यह मंगल-गीत गाती हैं, गाकर दूसरों को सुनाती हैं, उनकी सन्तानें दीर्घायु होती हैं और जीवन के सुन्दर फल उन्हें सुलभ होते हैं।

[यद्यपि दशरथ के जीवन-काल में और अयोध्या के राज-प्रासाद में सीता पुत्रवती नहीं हुई थीं, किन्तु लोक गीतों में इस प्रकार की कल्पनायें यों ही कर ली जाती हैं।]

(३८)

भँगिया के अमली महादेव, भँगिया भँगिया करैं।
भँगिया घोंटत अलसानी तउ छिन में बिकल भयें।
लाओ न हमरा बाघम्बर पाट–पटम्बर।
नन्दी बैल असवार चले हैं झारिखन्ड।
की भोला भँगिया चोरायेऊँ की भभूत गिरायेऊँ,
की भभूति गिरायेऊँ रे ?
कौन तपसिया में चूकेउँ, चले हो झारिखन्ड रे ?
ना गउरा भँगिया चोरायेउ न भभूतिया गिरायेउ।

भँगिया घोंटत अलसानिउँ, तो छिन में विकल भएउ रे।
तुम भोला जोगिया फकीर मरम नहिं जानउ।
गनपति लीन अवतार, तो छिन में विकल भएउँ,
छिन में विकल भएउँ रे।

भाँग के आदी भगवान् शंकर भाँग-भाँग चिल्ला रहे हैं। भाँग घोंटते समय पार्वती जी अलसा गयीं। भगवान् शंकर क्षण भर में ही विकल विह्वल हो उठे। क्रुद्ध होकर पार्वती से बोले—"मेरा व्याघ्र चर्म और पीताम्बर ले आओ। अब मैं अकेले झारखंड वन में चला जाऊँगा!"

पार्वती जी ने काँपते हुये पूछा—"भगवान्, मैंने भाँग चुरा ली अथवा मुझसे भभूत गिर पड़ी? मेरी कौन सी तपस्या खोटी पड़ गयी, जिसके कारण आप झारखण्ड चले जायेंगे?"

शंकर जी बोले—"पार्वती, न तो तुमने भाँग चुरायी और न तुम से भभूत ही गिर पड़ी। वास्तव में तुम भाँग घोंटते समय अलसा गयी और इसी कारण क्षण भर में ही मेरा मन क्षुब्ध हो गया है।"

पार्वती जी ने सफाई दी—"भोले शंकर, तुम जोगी-फकीर ठहरे। मर्म की बातों का तुम्हें तनिक भी ज्ञान नहीं है! तुम्हें जानना चाहिये कि मेरी कोख से अभी-अभी गणेश जी ने अवतार लिया है, इसीलिए एक क्षण मैं अलसा गयी थीं।"

(३९)

बन बीच बैठी मोरि सीता, चुवत ढुर हुर आँसू रे।
मोरी माया, ना कोऊ अब मोरे आगे, कोऊ पाछे रे।

उमड़ि-घुमड़ि पीर आवइ, कमर मोरि टूटत हो।
मोरी माया, विधि कर बांधी गठरिया, त कर कर टूटइ हो।

भोर होंत लोहा फाटत, होरिल मोरे जन्मेनि हो।
मोरे पूत तार उन दुनउ कुल डेहरी, अजोधिया नगरिया हो।

आवउ न बन की सखिया, वेगि चलि आवउ अंगन मोरे।
मोरी सखि गावहु मंगल चार ललन जी के जनमे रें।

निर्जन कानन में सीता जी अकेली बैठी हैं। उनके नेत्रों से आँसुओं की अविरल धारायें प्रवाहित हो रही हैं। वे सोचती हैं—"यहाँ मेरे आगे-पीछे कोई भी मेरी देख-भाल करने वाला नहीं है। उमड़-घुमड़ कर मेरे उदर में पीड़ा हो रही है। कमर टूटती जा रही है। ईश्वर द्वारा बाँधी हुई गाँठें एक-एक कर ढीली पड़ती जा रही हैं। यहाँ कौन मेरी रक्षा करेगा ? कौन मेरी नवजात सन्तति की देख भाल करेगा ?"

"प्रातःकालीन अरुणिमा के फैलते ही मेरी कोख से पुत्र का जन्म हुआ। मेरे पुत्र, तुम्हारे जन्म से मेरे पिता और ससुराल के दोनों कुल पवित्र हो गये। अजोध्या नगरी धन्य हो गयी।"

"वन की मेरी सहेलियों, आओ ! बहुत शीघ्र दौड़ कर मेरे पास आओ ! आज पुत्र रत्न प्राप्त कर मेरा हृदय गद्गद् हो उठा है। इस हर्षोल्लास की वेला में तुम सब मंगल गीतों से समस्त दिशाओं को गुंजित कर दो !"

मधु चटावन (४०)

नदिया तउ गहबरि भरि गयी सीता के रोये से हो,
बन पात सब झरि लागें तउ सीता के रोये से हो।

जउ हम होइति अजोधिया, सासु मोरि होतिंन हो,
लेतीं होरिलवा उठाई, त ऊ भुइयां नहिं लोटत हो।

जो हम होइति सासु की कोठरिया, त उ मधुवा चटउतिन हो,
बन बीच जनमे होरिलवा तो मधु नहिं पावहिं हो।

अब कइसे क मधुवा चटावऊँ, ओं लिखवाऊँ हो,
कइसे क करउँ अंजोरवा, होरिल मुख देखउँ हो।

रिम-झिम बरसत दइया, दमिनि चहुँ चमकइ हो,
मोरी सीता देखउ त सन्तति के मुंहवा होरिल बड़ सुन्दर हो॥

सीता जी अकेली निर्जन वन में हैं। इसी समय उन्होंने पुत्र-प्रसव किया है। आज वे अयोध्या के अपने राज-प्रसाद में होतीं तो न जाने क्या-क्या होता। अपनी असहाय दशा का स्मरण करते हुए उनके नेत्रों से आँसुओं की वर्षा होने लगती है। उन्हीं क्षणों का एक अत्यन्त मार्मिक और हृदयबेधी चित्र है—

सीता जी के रोने से अगम अथाह नदियाँ भर गईं। जंगल के वृक्षों के सारे पत्ते झड़ गए।

वे स्मरण कर रही हैं, यदि मैं अयोध्या में होती तो सास मेरे नवजात पुत्र को गोद में उठा लेतीं। वह इस समय की भाँति नंगी भूमि पर न लोटने पाता। मैं सास की कोठरी में होती तो वे पुत्र को मधु चटातीं। निर्जन कानन में मुझे पुत्र हुआ है। कहीं से मधु नहीं प्राप्त हो रही है। मैं कहाँ से मधु लाकर पुत्र के मुँह में चटाऊँ और 'ओम्' लिखाऊँ? चारों ओर अंधेरा है। किस तरह प्रकाश करूँ कि नवजात पुत्र का मुँह देख सकूँ!

रिमझिम मेघ बरस रहे हैं। चारों ओर बिजली चमक रही है। सीता, विद्युत् के क्षणिक आलोक में ही देखो न, तुम्हारा पुत्र कितना सुन्दर है।

सरिया (४१)

सरिया खेलन्ते कवन रामा, रानी के कवन रामा,
कहाँ सारी खेलिये मेरे लाल रे।
सरिया तो खेले अम्बा तरे अउर बिरिछ तरे,
क्या रैन सारी खेलिये मेरे लाल रे॥

सोर हुआ तेरी महल और रनवास में,
तो तुमहीं बोलाइये मेरे लाल रे।
तोरी धन बेदना मेरे लाल रे,
तो चिहुँक पड़े हैं मेरे लाल रे॥

सरिया तउ फेंकेनि अम्बा तरे अउर बिरिछ तरे,
तो चलि पड़े घर को हैं मेरे लाल रे।
सलोनी धनि का भा मेरे लाल रे,
कहउ धनि बेदना, मेरे लाल रे॥

लाज सरम की है बात सकुच की है बात,
तो मर्द आगे का कहूं मेरे लाल रे।
सजन आगे का कहूं मेरे लाल रे,
सो अब नाही मैं जिऊँ मेरे लाल रे॥

हम तुम अन्तरजामी कपट जिय नाहीं,
कहउ धनि बेदना, मेरे लाल रे।

कहउ समझाइ मेरे लाल रे,
कहउ जिय खोलि, मेरे लाल रे।।

बावइँ अँग मोर करकइ दहिन मोर सालइ,
मरलिउँ कमरिया की पीर।

तो दर्द नाहीं सहउँ रे मेरे लाल रे,
नवल दाई बोलावऊ मेरे लाल रे।।

दाई के गाँऊ न जानूं अरे नाउँ न जानूं,
सुघर दाई कहँवा बसे मेरे लाल रे।

चतुर दाई कहंवा बसे मेरे लाल रे,
नवल दाई कहँवा बसे मेरे लाल रे।।

पूँछउ भाई बहिनियाँ सग पितियनियाँ,
तो कुआँ पनिहारिनि मेरे लाल रे।

तो गाउँ के लोग से मेरे लाल रे,
चतुर दाई कहाँ बसे मेरे लाल रे।।

पूँछेनि माया बहिनिया सग पितियनियाँ,
तो कुआँ पनिहारिनि मेरे लाल रे।

सहरवा के लोग से मेरे लाल रे,
चतुर दाई कहँवा बसे मेरे लाल रे।।

ऊँच नगर पुर पाटन आले बांस छाजनि,
तो चन्दन वाके द्वारे पै मेरे लाल रे।

लाले जड़ाऊ द्वार हैं मेरे लाल रें,
चतुर दाई उहां बसे मेरे लाल रे ?

अगले के घोड़वा कवन रामा पाछे बीरन भइया,
नवल दाई लेने चले मेरे लाल रें।

सलोनी दाई लेने चले मेरे लाल रे,
लोना दाई लेने चले मेरे लाल रे ।।

किन मौरी टटिया उघारी पहरुवा जगाई,
कुकुर मेरो भूंकि रहे मेरे लाल रे ।
घोड़ा मेरो टाप धरे मेरे लाल रे,
तो सोवत जगाइये मेरे लाल रे ।।

हम तोरी टटिया उघारी पहरुवा जगाई,
तो लोना दाई चाहिये मेरे लाल रे ।
तो मोरी धनि बेदना मोरे लाल रे,
चतुर दाई चाहिये मेरे लाल रे ।।

तोरी धना हँथवा की साँकरि मुंहना की पातरि,
देवइ नहीं जानिये मेरे लाल रे ।
सो दाई माई नाहीं चलै मेरे लाल रे,
तो घर आपन जाइये मेरे लाल रे ।।

मोरी धनि हाँथ की दलेल मुंह मीठ बोलनि,
देवइ भल जानै मेरे लाल रे ।
आदर भल होई मेरे लाल रे,
तो दाई माई संग चले मेरे लाल रे ।।

सावन भादों की रात अंधेरी है रात,
पैदल दाई नाहीं चलै मेरे लाल रे ।
सो घोड़े असवार हौ मेरे लाल रे,
सो दाई माई नाहीं चले मेरे लाल रे ।।

घोड़ा तो है सौ साठ पिनक मेरे साथ,
मसाल लिये हाथ सुघर दाई संग चले मेरे लाल रे ।
लाख बचन किया मोल सबहिं को तौल,
सो दाई माई चल पड़ी मेरे लाल रे ।।

द्वारे पै आयी है दाई भई है अगवानी,
दाई धरै जब पाँव महल बिच सोर।

सो दाई रानी आवैं मेरे लाल रे,
सुघर दाई आवैं मेरे लाल रे॥

आवो जच्चा मेरे पास, दबाऊँ तेरा हाथ,
मलूंगी मैं पेट, देखूंगी तेरा होट।

तो भुइयाँ तेरे लोट पड़े नन्दलाल रे,
महल बिच सोर किया मेरे लाल रे॥

दाई तो देखसि पेट, मलेसि तब तेल,
बड़ी हैं हुसियार जनाया है पूत।

होरिलवा जनम लियो मेरे लाल रे,
दाई ने किया बकवास, मचाया है सोर॥

लगाया नहीं हाथ, दबाया नहीं पेट,
छिनरिया दाई क्या किया मेरे लाल रे।

तो सर मेरे दरद उठी मेरे लाल रे,
आगे मत जइयो, पीछे मत जइयो॥

महल न रहियो घर में न रहियो,
कुत्ता मेरा टाँग धरे मेरे लाल रे।

घोड़ा मेरा टाप धरे मेरे लाल रे,
आवेगी मेरी सास चलावे तेरे बाँस॥

आवेगा मेरा जेठ रखावे तेरा पेट,
जेठानी बन के जाइयो मेरे लाल रे।

छिनरिया बन के जाइयो मेरे लाल रे,
आवेगा मेरा बीर, चलावै तेरे तीर॥

आवेगा मेरा नाह करावै तेरा ब्याह,
सवत बन के जाइयो मेरे लाल रे।

पतुरिया बन के जाइयो मेरे लाल रे,
अँगन बरसा है मेंह भई है किचकादौ ।।
चहुँ दिसि दामिनि दमकी मेरे लाल रे,
सो दइया घनघोर है मेरे लाल रे।
अब दाई माई रपटि गईं मेरे लाल रे,
बहरे से आये हैं साजन पीछे बीरन भइया ।।
दस बांके साथ मसाल लिये हाथ,
सो झपटि उठाइहैं मेरे लाल रे।
अगौंछन पोंछि मेरे लाल रे,
तब तो कहेउ मोरे पूत कि अगरा गढ़ाय दैबो ।।
पाट गुहाइ दैबो, सबुज रंग चुंदरी, मेरे लाल रे,
दस मोहर तोरा नेग मधु की गगरिया तेरे साथ।
तो पीयत छकित भई मेरे लाल रे,
दाई का अगरा गढ़ाय देबो पाट गुहाय देबो ।।
दस मोहर तोरा नेग सबुज रंग चूंदरी
मेरे लाल रे,
मधु की गगरिया तोरे साथ तो पियत छकित
भई मेरे लाल रे ।।
हँसत घर जाइये मेरे लाल रे,
दाई ने दिया है असीस जिवे जगदीस ।।
जिवे तेरी जच्चा रानी जिवे तेरा लालना
मेरे लाल रे,
सोहागिन और जनो मेरे लाल रे,
तो फेरि बोलाइये मेरे लाल रे ।।
बाढ़े जच्चा तोरा बंस बढ़ै परवार,
तो कोठे ऊपर और चढ़ै मेरे लाल रे।
तो फेरि-फेरि पूत जनउ मेरे लाल रे,
तो लछिमिनि धेरिया जनो मेरे लाल रे ।।

पत्नी प्रसव-पीड़ा से छटपटा रही है और पति बेखबर होकर बाग में सरिया खेल रहा है। एक दूती उसे टोकती है—

"सरिया खेलने वाले अमुक बहू के अमुक स्वामी, तुम कहाँ सरिया खेल रहे हो ?"

पति उत्तर देता है—"मैं आम के वृक्ष के नीचे सरिया खेल रहा हूँ।"

दूती कहती है– "क्या सारी रात तुम सरिया खेलते रहोगे। तुम्हारे महल के रनवास में शोर हो रहा है। तुम्हारी बहू तुम्हें बुला रही है। वह प्रसव वेदना से बेहाल होकर चीख रही है।"

पति सरिया आम के पेड़ के नीचे फेंक कर तुरन्त घर पहुँचा। पत्नी से पूछा—"प्रिये तुम्हें क्या हो गया ? कैसी पीड़ा हो रही है ? मुझे बताओ।"

पत्नी बोली—"प्रियतम बड़े लाज-संकोच की बात है। पुरुष के सामने उसका ब्योरा कैसे बताऊँ। इतना तेज दर्द है कि शायद अब मैं जिन्दा नहीं रह सकूँगी।"

पति ने कहा—"प्रिये, मैं तुम्हारे भीतर की सब बातें जानता हूँ। मेरे और तुम्हारे बीच कोई दुराव या कपट नहीं है। तुम मुझसे अपनी पीड़ा का सच्चा हाल बताओ।"

"अच्छा, मैं समझाकर कह रही हूँ ! दिल खोलकर सब बातें बता रही हूँ। मेरा बाँया अंग फड़क रहा है, दाहिने में दर्द हो रहा है। कमर की पीड़ा जान लिए जा रही है। बड़ी असह्य हो रही है। तुम जल्द नयी दाई बुला दो।"

पति बोला—"मैं दाई का न तो गाँव जानता हूँ और न नाम। तुम्हीं बताओ, सुघर और चतुर दाई कहाँ रहती है ?"

पत्नी ने उत्तर दिया—"स्वामी, चतुर दाई का पता माँ, बहन, चाची, कुँये की पनिहारिनों और शहर के लोगों से पूछो। वही बतायेंगे। तुम्हें क्या यह नहीं मालुम की नगर में सुन्दर बाँसों से छाया हुआ एक ऊँचा मकान है। उसके दरवाजे पर चन्दन का वृक्ष है। हीरों से जड़ा हुआ दरवाजा है। उसी में चतुर दाई रहती है।"

आगे के घोड़े पर अमुक पति सवार है। पीछे के घोड़े पर उसका छोटा भाई है। वे नयी दाई बुलाने जा रहे हैं।

इन लोगों के पहुँचने पर दाई बोली—"किसने मेरी टटिया खोली ? किसने मेरे पहरेदारों को जगाया ? मेरा कुत्ता भूँकने लगा है। घोड़ा टापें मार रहा है, किसने मुझे नींद से जगाया ?"

अमुक पति ने उत्तर दिया—"मैंने तुम्हारी टटिया खोली। पहरेदारों को जगाया। लोना दाई, मैं तुम्हें साथ ले चलना चाहता हूँ। मेरी पत्नी प्रसव-पीड़ा से तड़प रही है। मुझे चतुर दाई की आवश्यकता है।"

दाई बोली—'तुम्हारी बहू थुरहँथी और मुँह की पतली है। देना-दिलाना नहीं जानती। इसीलिए मैं नहीं चलूँगी। तुम अपने घर लौट जाओ।"

उसे उत्तर मिला—"मेरी पत्नी बहुत दानशील और मधुर भाषिणी है। अच्छी तरह देना जानती है। तुम्हारा खूब आदर-सत्कार होगा। दाई माँ, तुम अवश्य मेरे साथ चलो!"

दाई ने आगे कहा—"हे घुड़सवार, सावन भादों की अँधेरी रात है। दाई पैदल नहीं चलेगी।"

पति ने उत्तर दिया—"मेरे पास साठ सौ का घोड़ा है। साथ में पीनक भी है। सुघर दाई हाथ में मशाल लेकर मेरे साथ चले।"

एक लाख का मोल-तोल करने के बाद दाई माँ चलने के लिए राजी हुई। दरवाजे पर आते ही उसका स्वागत किया गया। महल में उसके पाँव रखते ही शोर मच गया—"दाई रानी आ गई। सुघर दाई आ गई।"

जच्चा के पास जाकर वह बोली—"जच्चा, मेरे पास आओ, मैं तुम्हारा हाथ दबाऊँगी। पेट की मालिश करूँगी। तुम्हारा शरीर देखूँगी। देखो तुम्हारा नन्दलाल जमीन पर लोटने लगा है। महल में शोर करने लगा है।

दाई ने जच्चा का पेट देखा। नये तेल से उसकी मालिस की। तारीफ करने लगी—"जच्चा बड़ी होशियार है। इसने पुत्र को जन्म दिया है। मेरे लाल, पुत्र ने जन्म लिया है।"

पुत्र का जन्म हो जाने पर जब नेग देने की बात आई तो जच्चा दाई से ठिठोली करने लगी—„दाई ने सिर्फ बकवास की है। शोर मचाया है। इसने हाथ नहीं लगाया। पेट नहीं दबाया। हरजाई दाई ने भला क्या किया। इसे देख कर मेरे सिर में दर्द होने लगा है। तुम आगे पीछे मत जाना, महल और घर में न रहना। मेरा कुत्ता तुम्हारी टाँग पकड़ लेगा। घोड़ा लात मार देगा। मेरी सास आयेगी और बाँस से तुम्हारी मरम्मत करेगी। मेरा जेठ आयेगा और तुम्हारे पेट की रखवाली करेगा। तुम मेरी जेठानी बनकर जाना। सवत बन कर जाना। मेरा भाई आयेगा और तुम्हारे ऊपर तीर चलाएगा। मेरा स्वामी आकर तुमसे ब्याह करेगा। तुम मेरी सौत बनकर जाना। वेश्या बन कर जाना।"

आँगन में बादलों की वर्षा हुई। कीच-काच मच गई। चारों ओर बिजली चमकने लगी। घना अँधेरा छा गया। दाई मां आँगन में ही अड़ गई।

बाहर से पति आया और पीछे से उसका भाई। नौकर हाथ में मशाल लेकर आये। पति ने झपट कर उसको उठाया। रूमाल से उसका बदन पोंछा।

खिन्न दाई बोली—"मेरे बेटे, उस समय तो तुमने कहा कि अगेला गढ़ा दूंगा। पाट गुहा दूंगा और हरे रंग की चूनर दूँगा। दस मुहर और मधु का घड़ा मेरे नेग में तै हुआ था, जिसे पान कर मैं मस्त हो उठती।"

पति ने उत्तर दिया—"दाई के लिए मैं अगेला (कंगन) गढ़ा दूँगा। पाट गुहा दूंगा। दस मुहर और हरे रंग की चूनर दूँगा। साथ में मधु का घड़ा दूँगा, जिसे पीकर तुम मस्त हो जाओगी और हँसती हुई अपने घर लौटोगी।"

दाई ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया—"भगवान् तुम्हें सुखी रखें। जच्चा रानी, तुम्हारा पुत्र चिरायु हो। तुम्हारे और पुत्र हों, ताकि तुम मुझे फिर बुलाओ! तुम्हारे कुल और परिवार की वृद्धि हो। तुम्हारी कोठी और अधिक ऊँची हो। बार-बार तुम्हें पुत्र हो। लक्ष्मी जैसी कन्या उत्पन्न हो।"

(४२)

शिव चले झारीं खण्ड तो आगे मधुव्रत,
तो भँगियाँ के अमल पड़ी मेरे राम रे!
तोरी गौरा बेदना व्याकुल लोटन-पोटन करे,
तो शीश में दर्द उठी मेरे राम रे।

सुनत बचन शिव चिहुँके तो झपटि के धाये,
कहो गौरा बेदना मेरे राम रे।
बाँयें अँग मोरा साले दहिना मोरा करके,
मरलियू कमरिया की पीर मेरे राम रे।

ना मोर सासु ननदिया अरे नाहीं जेठनियां,
अरु माया मोरी दूर बसैं मोरे राम रे।
के मोरि लीपइ ओबरिया, को समझावै,
अब के मोरा दर्द हरे मेरे राम रे॥

तीनों लोक की जेठानी नित सुत जायो,
तो छिन में बिकल भइउ मेरे राम रे।
काँपत आकाश-पाताल अरु तीनौं लोक,
तो चमकत दामिनि मेरे राम रे।

जनमे हैं दीनदयाल के गणपति गणेश,
तो गरभ भरी गौरा मेरे राम रे।
बाजत ढोल मजीरा ढप-ढप डमरू,
तो मृदंग बोल उठे मेरे राम रे।

पड़ी नगाड़े पर चोट चहुँ दिसि सोर,
तो गनपत जन्म लियो मेरे राम रे।
आईं सब सखियाँ गानैं लागीं गरिया,
गौरा रानी मगन भईं मेरे राम रे।

गौरा ने खाया गुड़ सोंठ भइ मजबूत,
तो होरिला लइ लेट गईं मेरे राम रे।
होरिला दिया करतार तो बड़ेन के भाग,
तो हमरी कोखिया तरी मेरे राम रे।

शंकर जी भांग के नशे में मस्त झारखण्ड बन में चले जा रहे थे। किसी ने उन्हें सूचना दी—"भगवान्, आप की पार्वती प्रसव-वेदना से व्याकुल हो लोट-पोट रही हैं। उनके सिर में पीड़ा हो रही है।"

यह बात सुनते ही शंकर जी चौंक पड़े। दौड़ते हुए घर पहुंचे। पार्वती से पूछा—"बोलो, बोलो! कैसी पीड़ा हो रही है?"

पार्वती कहने लगीं—"मेरा बांया अंग दुख रहा है। दाहिने में चुभन हो रही है। कमर की पीड़ा से मैं मरी जा रही हूं। मेरे सास, ननद और जेठानी कोई नहीं है। माँ भी बहुत दूर रहती है, कौन मेरी ओबरी लीपेगी? कौन मुझे धीरज बँधायेगी? हाय राम! मेरी पीड़ा कौन दूर करेगा?"

शंकर जी ने आश्वासन दिया—"तुम तो तीनों लोक की माँ हो। नित्य अनेक पुत्रों को जन्म दिया है। क्षण में ही इस प्रकार क्यो व्याकुल हो रही हो?

आकाश, पाताल और पृथ्वी आदि तीनों लोक काँप रहे हैं। आकाश में बिजली चमक रही है। ऐसी ही घड़ी में शंकर जी के पुत्र गणेश का जन्म हुआ है। पार्वती गौरवान्वित हो उठी हैं। प्रभात काल के नव अरुणोदय में ढोलक, मँजीरा, डमरू और मृदंग आदि बाजे बजने लगे हैं। नगाड़े पर चोट पड़ी और चारों दिशाओं में शोर फैल गया कि गणेश जी ने जन्म लिया है। सहेलियाँ एकत्रित होकर 'सरिया' गाने लगीं। पार्वती जी पुलकित हो उठीं। गुड़ और सोंठ खाकर पार्वती हृष्ट-पुष्ट हो गईं और पुत्र को गोद में लेकर लेट गईं। मन में सोचने लगीं—"भगवान् ने बड़े भाग्य से मुझे पुत्र दिया। मेरी कोख पवित्र हो गई।"

पीपर (४३)

पिपरी मैं ना पिऊँ कड़ुवी लगे,
सैयां तुमसे कहूं मैं कड़ुवी लगे।
पिपरी हमारी सास ने भेजा,
अब ओही पियैं सैयां कड़ुवी लगे।

पिपरी हमारी जीजी ने भेजा,
अब ओही पियैं सैयां कड़ुवी लगे।
पिपरी पिलाने ससुर जी आये,
बूढ़े तुम क्या जानों कड़ुवी लगे।

पिपरी पिलाने जेठ ली आये,
ज़रा चख कर देखो कड़ुवी लगे।
पिपरी पिलाने ननद जी आयीं,
छिनरो दूरि हटो ओ कड़ुवी लगे।

पिपरी पिलाने बलम जी आये,
जरा होरिला को लो मैं पिपरी पिऊँ।

मैं पीपर नहीं पियूंगी। कड़वी लगती है। साजन, सच! पीपर बहुत कड़वी लगती है।

पीपर मेरी सास ने भेजी है। वही पियें। जीजी ने भेजी है, उन्हीं को मुबारक हो! मैं नहीं पियूँगी।

ससुर जी पीपर पिलाने आये हैं। बूढ़े बाबा, तुम क्या जानो ! पीपर बहुत कड़वी लगती है।

पीपर पिलाने जेठ जी आये हैं। जरा आप ही चख कर देखें, पीपर कितनी कड़वी लगती है।

पीपर पिलाने के लिये ननद जी आयी हैं। हरजाई, तू दूर हट, पीपर बहुत कड़वी लगती है।

पीपर पिलाने मेरे बालम आये हैं। भला अब क्यों नहीं पियूँगी ! तनिक मेरा बच्चा थाम लो, मैं पीपर पियूँगी !

(४४)

ऊँचे नगर पुर पाटन, आलें बांस छाजनि हो,
अरे बसि गये बनिया महाजन, पीपर महँग भई हो।

अँगने में ठाढ़ि बनिनिया सिपहिया एक आवत हो,
अरे सिपहिया देबइ सतरँगिया, बइठो मोरे अँगना हो।

केतने सेर बेंचउ पिपरिया, केतने सेर जायफर हो,
अरे केतने सेर लवँगिया, लवँगिया हम लेवइ हो।

बेचउँ असरफी सेर पिपरि, रुपैया सेर जायफर हो,
पाँचइ मोहर लवँगिया, तउ लवँग महंग भई हो।

की तोरि माया गरभ से, कि बहिनी गरभ से,
धनि बारह बरिस के उमरिया पीपर काउ करबेउ हो ?

माया की साध न जानउं बहिन परदेसिन हो,
अरे बारह बरिस के उमरिया तो राम नेवाजइँ हो।

लेवै अशरफी सेर पीपर, रुपैया सेर जायफर हो,
लेवै अनमोल लवँगिया, तो घर चलि आपन हो।

आनउ सोना सिलौटी, रूपे रँग लोढ़ा हो,
अरे भौजी, रगि-रगि पीसौं पिपरिया तो तुमका पियावउं हो।

पीपर कड़ुवी कसायल, अउर बकसायल हो,
जिभिया कमल कर फूल, पीपर हम न पीअब हो।

एतनो बचन जब सुनलीं, रस से बेरस भये हो,
घोड़े असवार भये धन, करबौं दूसर बियाह हो।

धरिन पगड़िया का फेंट, अंगरखा का कोरवा हो;
पीबौं मैं लाम्बे-लाम्बे घोंट, होरिलवा के कारन हो॥

लम्बे बाँसों से छाया हुआ ऊँचा नगर है। सेठ महाजन बस गए हैं, फिर भी पीपर महँगी हो गई है।

अपने आँगन में एक बानिन खड़ी है। एक सिपाही को आता देखकर बोली—"सिपाही मैं तुम्हारे लिए दरी बिछा दूँगी, तुम मेरे आँगन में बैठो!" सिपाही पूछता है—'कितने रुपये सेर तुम पीपर बेंचती हो और कितने रुपये सेर जायफल? और तुम लौंग का भी भाव बताओ। मैं लौंग खरीदूँगा।"

"अशर्फी सेर पीपर बेचती हूँ और रुपया सेर जायफल। पाँच मुहर में लौंग बेंचती हूँ। लौंग बहुत महँगी है। लेकिन पहले यह बताओ कि क्या तुम्हारी माँ गर्भवती है अथवा बहन? तुम्हारी उम्र तो बारह साल ही मालूम होती है। तुम पीपर क्या करोगे?"

खरीदने वाले बहू के देवर ने उत्तर दिया—"माँ की साध नहीं जानता, बहन दूसरे देश में रहती है। मेरी बारह साल की उम्र ही मुबारक हो। मैं अशर्फी सेर पीपर लूँगा। रुपया सेर जायफल लूँगा। अनमोल लौंग भी खरीदूँगा, तब अपना काम चलेगा।"

सब सामान खरीद कर देवर अपनी भाभी से बोला—"भाभी, सोने की सिलौटी और चाँदी का लोढ़ा ले आओ। खूब घिस कर पीपर पीसो और जच्चा को पिलाओ।"

बहू पीपर पीने से इन्कार करने लगी। पति के भी अनुरोध करने पर बोली—"पीपर कड़वी है। कसायल और बकसायल लगती है। स्वामी, मेरी जीभ कमल के फूल-सी कोमल है। मैं पीपर नहीं पियूँगी!"

यह बात सुन कर पति रूट हो उठा। घोड़े पर सवार होकर बोला—"प्रिये, तुम पीपर नहीं पियोगी, तो मैं अपना दूसरा ब्याह कर लूँगा।"

उसने सिर पर पगड़ी बाँधी, कुर्ता पहना। यह देखकर बहू तुरन्त पीपर पीने के लिये राजी हो गई। उसने प्रियतम् की पगड़ी और अंगरखे की कोर पकड़ कर आग्रह पूर्वक कहा—"प्रियतम्, पुत्र के कारण मैं बड़े-बड़े घूँटों से पीपर पियूँगी।"

केकरि ऊँची महलिया तउ मानिक दीप बरइ हो,
रामा केकरि नवल बुहरिया तउ लोट-पोट करइ हो।

राजा दसरथ ऊँची महलिया तउ मानिक दीप बरइ हो,
रामचन्द्र के रोवइ होरिलवा महलिया आनन्द भये हो।

कइ मन उपजी है सोंठि, तउ कइ मन पीपरि हो,
हमर लखपतिया रामचन्द्र पिपरि बनिज गयें हो।

आनउ सोन सिलउटी, रूपे रंग लोढ़उ हो,
भाभी रगि-रगि पीसउँ पिपरिया मँइ धन के पियावउँ हो।

मँइ भलि अपनी सासु की चेरुआ भरावइँ हो,
मँइ भली अपने ससुर की रासि गिनावइँ हो।

मँइ भलि अपनी जेठानी की बिरवा जोड़ावइँ हो,
मँइ भली अपने जेठ की पंच बटोरइँ हो।

मँइ भली अपने देवर की नउबति बजवावइँ हो,
मँइ भली अपने ननदोइया की टरिया बँधावइँ हो।

मँइ भली अपनी ननद की छठिया धरावइँ हो,
लीपि पोति चउक पुरवाइँ तउ मँगल गावइँ हो।

मचियइ बइठी जे सासु तउ बिनती बहुत करइँ हो,
बहुआ देबेउ मँइ सहस भंडार पियउ मधुपीपरि हो।

गुड़िया खेलन्ती ननदिया तउ बिनती बहुत करइँ हो,
भउजी देवेउँ मँइ भइया बोलाइ पियउ मधु पीपरि हो।

बाहर से आवँइ सइयाँ तउ विनती बहुत करइँ हो,
धन देवेउँ मँइ होरिला खेलाइ पियउ मधु पीपरि हो।

पीपरि कड़ुवी कसायलि अउ बकसायलि हो,
सइयाँ नैना बहइ जल नीर पीपरि मोर के पियइ हो।

एतनी बचन जब सुनेनि, रस से बेरस भये हो,
धन करबइ मँइ दूसर बियाह पिपरिया के कारन हो।
थाम्हेनि पगड़ी वह फेंट, अंगरखा जउ दाबेनि हो,
राजा पीवइ मँइ लम्बे-लम्बे घूंट सवति नहिं सहबइ हो।

किसका ऊँचा महल है, जिसमें माणिक-दीप जल रहे हैं! किसकी नवेली बहू जमीन पर लोट-पोट कर रही है?"

राजा दशरथ का ऊँचा महल है, जिसमें दिये की ज्योति प्रज्वलित हो रही है। रामचन्द्र का पुत्र रो रहा है और महल में आनन्दोत्सव की धूम मची है।

कितने मन सोंठ पैदा हुई है और कितने मन पीपर? हमारे लखपती राजा रामचन्द्र पीपर खरीदने गये हैं।

भाभी, सोने की सिलौटी और चाँदी का लोढ़ा ले आओ। खूब घिस कर मैं पीपर पीसूँ और बहू को पिलाऊँ।

मैं अपनी सास की बहुत प्रिय हूँ। वे पुत्र का चिल्लू भरा रही हैं। ससुर पण्डित बुला कर राशि की गणना करा रहे हैं। जेठानी पान के बीड़े लगा रही हैं और मंगल गीत गा रही हैं। जेठ जी स्वजनों को एकत्रित कर यज्ञ का अनुष्ठान कर रहे हैं। देवर नौबत बजवा रहे हैं और ननदोई टटिया बँधवा रहे हैं। ननद छट्ठी धरा रही हैं। मचिया पर बैठी हुई सास अनुरोध कर रही हैं—"बहू, तुम प्रसन्न होकर मधु-पीपर पियो, इस खुशी में मैं एक सहस्र कोष लुटा दूँगी।" चौबारे में बैठी हुई जेठानी अनुरोध कर रही हैं—"बहू, तुम प्रसन्न होकर मधु-पीपर पियो, मैं तुम्हें राम-रसोई दूँगी।" गुड़िया खेलती हुई ननद कह रही है—"भौजी, पीपर पियो, मैं अपने भाई को बुला दूँगी।" बाहर से आते हुये प्रियतम् अनुरोध कर रहे हैं—"प्रिये, मैं पुत्र खेलाऊँगा, तुम पीपर पी लो!"

"प्रियतम्, मेरे नेत्रों से आँसू बह रहे हैं। मैं कैसे पीपर पियूँ?"

यह बात सुन कर पति रुष्ट होता हुआ बोला—"प्रिये, यदि तुम पीपर नहीं पियोगी तो मैं दूसरा विवाह कर लूँगा।"

पति ने ज्यों ही पगड़ी उठाई और बगल में अँगरखा दबाया, पत्नी पानी-पानी हो गयी—"प्रियतम्, मैं लम्बे-लम्बे घूँटों से पीपर पियूँगी, किन्तु भला सौत का आना कैसे सह सकूँगी।"

मोरी छठिया कइ राति के रे बसै,
पिया छाये बिदेसवा केरे बसै।
जउ घर होतीं सासु हमारी,
देतीं चमाइनि सौर घर।।

जउ घर होते ससुरू हमार,
नौबति बाजति सौर घर।
जउ घर होते लक्षिमन देवरा,
बँसिया बजवतेनि सौर घर।।

जउ मइँ होतिउँ अजोध्या नगर में,
भाँटिन गावत सौर घर।
जउ मइँ होतिउँ राम महल में,
चेरिया जागत सौर घर।।

ना कोउ आगे, ना कोउ पाछे,
मोरी छठिया कइ रैन केरे बसै।
धीर धरत सीता नीर बहावैं,
मोरी उजड़ी नगरिया केरि बसै।।

लवकुस जनमे बीच जँगल में,
बन की चिरैया रैन बसै।।

सीता जी अकेली निर्जन बन में हैं। उनके पुत्र हुआ है। आज छट्ठी की रात है। किन्तु उनके पास रहने के लिए, उनके साथ जागने के लिए आज एक भी सगा-संबन्धी नहीं है। प्रस्तुत गीत में इसी कारुणिक स्थिति का चित्रण किया गया है।

छट्ठी की रात में मेरे साथ कौन रहे ? स्वामी विदेश में हैं। मेरे साथ कौन रहे ! यदि घर में मेरी सास होतीं तो वे सौर में चमाइन बुला देतीं। यदि घर में ससुर जी होते तो सौर में आज नौबत बजती। यदि घर में लक्ष्मण देवर होते तो वे अवश्य ही सौर में बाँसुरी बजाते। यदि मैं अयोध्या नगर में

होती, तो मेरी सौर में बैठकर भाँटिन गीत गाती। यदि मैं राम के महल में होती, तो मेरी दासी मेरे साथ सौर में जागरण करती। मेरे आगे-पीछे कोई भी नहीं। बिल्कुल अकेली हूँ। छट्ठी की रात में मेरे साथ कौन रहे? धैर्य धारण करती हुई सीता आँसू बहा रही हैं और आशा कर रही हैं कि मेरी उजड़ी नगरी फिर कभी बसेगी। जंगल में लव-कुश का जन्म हुआ है। वन की चिड़ियाँ ही रात में साथ देंगी।

मनरंजना (४७)

बीरन के घर लाला भये मनरंजा के लाल,
ननदी बधाव लै आईं मनरंजा के लाल।
छट्ठी दै ठाढ़ि भईं हो मनरंजा के लाल,
भाभी लाओ हमारा नेग मनरंजा के लाल ॥

नेग-जोग मोर नाहीं हो मनरंजा के लाल,
ननद लइजाओ होरिलवा उठाइ मनरंजा के लाल।
ननदी ले गयीं होरिलवा उठाइ मनरंजा के लाल,
मोर अहर-वहर जिउ होइ मनरंजा के लाल ॥

झपटि अटरिया चढ़ि गईं हो मनरंजा के लाल,
अपने साजन से बतियानीं हो मनरंजा के लाल।
ननदी ले गयीं होरिलवा उठाइ मनरंजा के लाल,
मोंसे ठाढ़े बइठि ना जाइ मनरंजा के लाल ॥

हे गयीं हो गयीं हो मनरंजा के लाल,
ननदी चलीं ससुरारि रिसाइ मनरंजा के लाल।
ननद दइ देउ होरिलवा हमार मनरंजा के लाल,
मुँह भरि माँगउ आपन नेग मनरंजा के लाल ॥

ननदी दे गई होरिलवा फेरि मनरंजा के लाल,
बीबी लेउ बैल की सींग मनरंजा के लाल।
सिंगिया तो भेजो अपनी माया बहिनि को,
मइँ तो लेउँ मोतिन कर हार मनरंजा के लाल ॥

पहिरि ओढ़ि के ठाढ़ि भई मनरंजा के लाल,
जुग-जुग जीवे कुल परिवार मनरंजा के लाल।
ओछे घर की छोकरी ना जाने मान मनरंजा के लाल,
मैं तो बखानूँ बीरन की बाँह मनरंजा के लाल ।।
जिनि राख्यो हमरा मान हो मनरंजा के लाल,
पाया मोतिन कर हार मनरंजा के लाल।
छठिया धराई नेग हो मनरंजा के लाल,
भौजी और जनो पूत हो मनरंजा के लाल ।।

भाई के घर पुत्र उत्पन्न हुआ है, ननद बधाव लेकर आई है। छठी देकर ननद खड़ी हो गई। भाभी से कहने लगी—"भाभी मेरा नेग दो।" भाभी ने उत्तर दिया—"ननद मेरे पास नेग वगैरह देने के लिए कुछ नहीं है। तुम यह बच्चा ही उठा ले जाओ।"

ननद बच्चा उठा ले गई। मेरा दिल घबड़ाने लगा। झपट कर मैं अटारी पर चढ़ गई। स्वामी से बताया—"ननद बच्चा उठा ले गई। न तो मुझसे खड़ा हुआ जाता है और न बैठा जाता है।"

इधर-उधर होती हुई ननद अपनी ससुराल के रास्ते पर चल पड़ी। भाभी अपना पुत्र माँगने लगी—"ननद, मेरा बच्चा देती जाओ। मैं तुम्हारा नेग दे रही हूँ।"

ननद महल में आकर बच्चा वापस कर गई। पुनः नेग माँगते समय भाभी उससे मजाक करती हुई बोली—"ननद, नेग के नाम पर तुम बैल की सींग लो।"

ननद ने उत्तर दिया—"भाभी बैल की सींग अपनी माँ और बहन के पास भेजो। मैं तो तुमसे मोतियों का हार लूँगी।"

ननद नेग के वस्त्राभूषण धारण कर खड़ी हुई और आशीर्वाद देने लगी—"भाई का परिवार युग-युग तक चिरंजीवी हो। मेरी भाभी तो ओछे घर की, लड़की है। वह मेरा आदर-सम्मान करना क्या जाने ? प्रशंसा के योग्य तो मेरा भाई है जिसने मेरा इतना मान किया है ! जिसने मुझे मोतियों की माला पहनाई है। भाभी, तुम और कई पुत्रों को जन्म दो ताकि मैं पुनः तुमसे छट्ठी का नेग माँगने के लिए आऊँ।"

गजमोहना

(४८)

फुलवा तो फूले फुलवरिया, मन मोरे बसि गये हो,
रामा, परि गये कृश्न जी के हँथवाँ, दिहेनि रानी रुकुमिनि हो।
ननद भउज मिलि बइठीं, एक मत कीहेनि हो,
भउजी जउ तोरे होइहइँ नन्दलाल तउ काउ हमइँ देबिउ हो?
मँइ बड़ी बोल बचन की, मुँहना की सांची रे ना,
ननदी करबइ तोरि बिदइया, जियरा मँइ खोलि के हो।
भोर होत, पउ फाटत, होरिला जनम भयें हो,
बाजै लागी आनन्द बधइया, गावइँ सखि सोहर हो?
हँकरउ न नगर के नउवा, बेगेहिं चलि आवउ हो,
रगि-रगि पीसउ हरदिया, रोचना पहुँचावउ रे।
रुकुमिनि देवी कर नइहर न जानेऊँ पुरुब पच्छिऊँ हो,
नाहीं जानेऊँ उत्तर दक्खिन, कवनि राह थामऊँ हो?
ना जानेऊँ भीखम दुवरिया, राजा कइ महलिया हो,
ना जानेऊँ भीखम चउपरिया, कवने रङ्ग ठाटरि हो।
लालहि लाल दरवजवा, लालइ मोहरवउ हो,
हाथी झूमहि दुवरवा, उहइ भीखम चउपरिया हो?
कँहवा से आयेउ नउवा, कहाँ तुहुँ आयउ हो,
रुकुमिनि के भये नन्दलाल, रोचना लइ आयेउँ हो।

[९७

दुधवा पखारउँ तोर पाउँ, घिउ गुर मुंह धरउँ हो,
घियना की पुरिया पोवावउँ, दुधवा कइ जाउरि हो।
नउवा बइठउ मोरि जेमनरिया, मँइ बेनिया डोलावउँ हो,
चलत वेरिया करउँ बिदइया, हँसत घर जाएउ हो।
नउवा के दिहें पांचउ जोड़वा, हाँथे का तोड़वउ हो,
भीखम दिहें गज मोहना, दिहेउ रानी रुकुमिनि हो।
रहिया में बसइँ सुभद्रा, नउवा नजर परी हो,
हमरे नइहर का नउवा, हियां कइसे आएउ हो।
कहँवा के तुहुँ नउवा, कवने गाउँ जाबेउ हो,
नउवाँ केकरे भयें नन्दलाल, रोचना लइ आयेउ हो ?
गोकुल का हम नउवा, अवध हम जाबइ हो,
रुकुमिनि के भयें नन्दलाल, रोचना लइके आएउं हो।
भल किहेउ मोरे नउवा, तउ भलहीं सुनाएउ हो,
दुधवा पखारउं तोर पाउं, घिउ गुर मुंह धरउं हो।
घियना कइ पुरिया बनावउं, दुधवा कइ जाउरि हो,
नउवा बइठउ मोरी जेवनरिया, बेनिया डोलावउं हो।
जेंइ-जेंइ नउवा ठाढ़ भयेऊ बहिनि बोलाएउ हो,
बहिनी करउ न मोरि बिदइया, हंसत घर लउटउं हो।
नउवा के दिहेनि पांचउ जोड़वा, हाँथे कर तोड़वउ हो,
अरजुन दिहेनि हासिल घोड़, हँसत नउवा घर गएउ हो।
सभवइं बइठे राजा अरजुन, सुभद्रा रानी बिनवइँ हो,
साहेब भउजी के भयें नन्दलाल, बधावा लइके जाबइ हो।
कइसन बाउरि मोरि धनिया, केन बउराएउ हो,
बिन रे बोलाए तुँहुं जाबेउ, आदर नाहीं पउबेउ हो।
बाजत आवइ बजना, एक सह नइयउ हो,
नाचत आवइ ननदिया, बीरन घर सोहर हो।

झपटिके उठें सिरी कृश्न, धाइके भीतर गये हो,
रनिया, आवत बाबा की दुलारी, गरभ जिनि बोलेउ हो।

रुकुमिनि निहुरि पइयाँ लागेउ, आदर भल कीहेउ हो,
अंग-अंग मउर बांधेउ, गरूहइ ओढ़ाएउ हो।

ननदी का मुंह बड़ ओछर, करेज मोर सालइ हो,
अस जिनि जानेउ मोरि भउजी की छूंछइँ आएउं हो।

भउजी अस्सी मोहर कर कठुलवा, बधाउ लइके आएउँ हो।

आवउ ननद गोसाईं, बड़ी ठकुराइनि हो,
ननदी लिझिया भरल मोर हाँथ, मंइ पइयाँ कइसें लागउं हो।

मोरि भउजी बड़ी टकुराइनि, अउर मिठ बोलनि हो,
भउजी मुँह मोर भरल तमोलवा, मँइ कइसे असीसउँ हो।

ननदी बइठउ पाटे के खटोलवा, भतिजवा खेलावउ हो,
ननदी हंथवा में कुछु रे धरावउ, कठुलवा गरे डारउ हो।

जउ मंइ भतिजवा खेलावउँ, हांथे पहिरावउँ हो,
भउजी गजमोहना मोर नेग, पहिरि घर जाबइ हो।

सोनवा तउ देबइ अढ़इया, रुपवा पसेरिनि हो,
ननदी एक नहिं देबइ गजमोहना, हमरे बाप कर हो।

ना मंइ पठएउँ नउवा, नाहीं भेजेउँ बरियउ हो,
ननदी, नाहीं मंइ पठएउँ बीरन तोर, कइसे के आइउ हो ?

देखइ आयउँ बाबा अमरइया, माया कइ रसोइयां जे हो,
भउजी, देखन आयेउँ भइया लरिकइया, अउ तोर करतब हो।

बाबा अमरइया मंइ लगाएउं, माया की रसोइयां मँइ रीन्हेउं हो,
ननदी, परि गये तिसर तोर नात, इहां कइसे आइउ हो ?

रोवइं सुभद्रा रसोइयां, बाबा की चउबरिया में हो,
माई निकरउ न राम रसोइयाँ, धिया के समुझावउ हो।

लाल पियर कइसे पहिरउँ, अपने बिरन घर हो,
गरुहरि गठरिया कइसे बान्हउँ, कोंछ कइसे दाबउँ हो।
जउँ मंइ होतेउँ बन की कोइलिया, बनहिं बन रहतेउँ हो,
मोरे बिरना बइठतेनि डरिया, मंइ कुहुकि सुनवतेउँ हो।

एक पग गइलीं सुभद्रा, दुसरे बन सासुर हो,
रामा, बिन रे मयरिया की धेरिया, रूठलि जाइ सासुर हो।

बहरे से आये सिरी कृश्न, धाइ के भितर गये हो,
धन काउ देइ किहिउ बिदइया, बहिनी सुभद्रा कइ हो ?

सोनवा तउ दिहेउँ अढ़इया, रुपवा पसेरिनि हो,
गरभ कइ माती ननदिया, माँगइ गजमोहन हो।

देउ न आंवा कइ रखिया, अउर भभुतियउ हो,
रूठलि बहिनिया के कारन, जोगिया मइँ होबेउँ हो।

रहिया चलत एक बटोहिया, पूछइँ सिरी कृश्न हो,
रामा, हँसत गयीं मोरि बहिनी की रोवत सासुर हो ?

काउ कहउँ सिरी कृश्न, कहत लाज लागइ हो,
रामा, बहिनी सुभद्रा के रोये, नदिया अगम भई हो।

हंकरउ न नगर के कँहरवा, बेगेहिं चलि आवउ हो,
रामा, चनन कइ डोलिया फनावउ, मँइ ननद मनावउँ हो।

गुल्ली डण्डा खेलत भयनवा, धाइ के भितर गएउ हो,
रामा, आवत बाटें मोरे मामा, अउर मोरि मामिउ हो।

कोखिया के जनमे न होतेउ, तउ खलरी खिंचवतेउं हो,
रामा, अपनेहिं कोखिया के जनमें तउ बोल अस बोलउ हो।

झपटि के चढ़ी हैं अटरिया, झरोखवन चितवैं हो,
आवत मोरि भउजइया, पिछवां बिरन भइया हो।

हंकरउ न नगर के सोनरवा, बेगेहिं चलि आवउं हो,
रामा, सउ साठि गढ़उ गजमोहना, पंवरी बिछावउ हो।

अउजी चढ़ी मोरि आवइं, नेवछावरि नउवा मांगइ हो,
एतना गजमोहना तेरे ननदी कि पांवरि मोरि दिहिउ हो,
एक गजमोहना के कारन, बिरना जोगिया किहेउ हो।
एतना गजमोहना मोरि ननदी, तउ कवने अरथ कर हो।
एक गजमोहना मँइ पउतिऊं, नगर देखवतिउं हो,
सात बिरन कइ बहिनिया, मान नहिं जानेउ हो।
जे यह मंगल गावइं, गाइ के सुनावइं हो,
कटै जनम कर पाप, सुनवइया फल पावइं हो।

फुलवारी में फूल खिल गये। उन्हें देखकर मेरा मन लालायित हो उठा। रुक्मिणी रानी ने कृष्ण जी के हाथ में फूल दिया।

ननद और भाभी ने मिलकर सलाह की। ननद ने पूछा—"भाभी, तुम्हें पुत्र होगा तो मुझे क्या दोगी?"

भाभी ने उत्तर दिया—"ननद, मैं अपनी बात की बड़ी पक्की हूँ। मैं हृदय खोलकर तुम्हारी विदाई करूँगी।"

प्रभात का अरुणोदय होते ही पुत्र का जन्म हुआ। आनन्द की बधाइयां बजने लगीं। सखियाँ सोहर गाने लगीं। भाभी नाई को पुकारने लगी—"नगर के नाई, तुम कहाँ हो? घिस-घिस कर हल्दी पीसो और रोचना ले जाओ।"

नाई ने कहा—"मैं नहीं जानता कि रुक्मिणी का नैहर किस ओर है? राजा भीष्म का दरबार मुझे नहीं मालूम है।"

रानी ने बताया—"लाल रंग का दरवाज़ा है। लाल रंग के किवाड़े लगे हैं। दरवाज़े पर हाथी झूम रहे हैं। वही राजा भीष्म का दरबार है।"

राजा भीष्म के दरबार में पहुँचने पर नाई से पूछा गया—"नाई तुम कहाँ से आये हो? कहाँ आये हो? किसके घर में पुत्र हुआ है? जिसका रोचना तुम ले आए हो?"

"गोकुल का मैं नाई हूँ। अवध में आया हूँ। रुक्मिणी ने पुत्र को जन्म दिया है। वहीं से रोचना ले आया हूँ।"

"दूध से तुम्हारा पाँव धोऊँ। तुम्हें खाने के लिए घी गुड़ दूँ। तुम्हारे लिए घी की पूड़ी बनवाऊँ। दूध की खीर बनवाऊँ। तुम रसोई में बैठो। मैं तुम्हें पंखा झलूँ। चलते समय तुम्हें खुशी-खुशी विदा करूँ।"

नाई को पांचों पोशाकें दी गईं। हाथ का तोड़ा दिया गया। राजा भीष्म ने गजमोहना देकर कहा कि इसे रुक्मिणी रानी को देना।

सुभद्रा रास्ते में ही थीं। उन्होंने नाई को देख लिया। उससे पूछा—"तुम तो मेरे नैहर के नाई हो। यहाँ कैसे आये हो? किसके पुत्र हुआ है जिसका तुम रोचना ले आये हो।"

नाई ने उत्तर दिया—"गोकुल का मैं नाई हूँ। अवध में आया हूँ। रुक्मिणी ने पुत्र को जन्म दिया है। वहीं से रोचना ले आया हूँ।"

"नाई, तुमने अच्छा किया। अच्छी बात सुनाई। मैं दूध से तुम्हारा पैर धोऊँगी। तुम्हें घी-गुड़ खिलाऊँगा। घी की पूड़ियाँ बनवाऊँगी। दूध की खीर बनवाऊँगी। तुम रसोई में बैठो। भोजन करते समय तुम्हें पंखा झलूँगी।"

भोजन के पश्चात् नाई चलने के लिये तैयार हुआ। बहन को बुलाकर कहा—"बहन, मेरी विदाई करो, ताकि मैं प्रसन्न-चित्त घर वापस लौटूँ।"

नाई को पाँचों पोशाकें दीं। हाथ का तोड़ा दिया। अर्जुन ने हासिल घोड़ा दिया। हँसता हुआ नाई घर चला।

सभा में राजा अर्जुन बैठे थे। रानी सुभद्रा विनय करने लगीं—"प्रियतम, भाभी के पुत्र हुआ है। मैं बधावा लेकर जाऊँगी।" अर्जुन बोले—"रानी, तुम कितनी पगली हो! किसने तुम्हें पागल कर दिया है! बिना निमंत्रण ही तुम जाओगी तो तुम्हारा आदर-सम्मान नहीं होगा।"

शहनाई बज रही है। ननद नाचती हुई आ रही है। भाई के घर में सोहर हो रहा है। कृष्ण जी झपट कर उठे और दौड़ते हुए भीतर पहुंचे। रुक्मिणी से बोले—"रानी, मेरे पिता की दुलारी बेटी आ रही है। कोई घमण्ड की बात मत बोलना। झुककर पाँव छूना। उसका खूब आदर करना। उसके सिर पर मौर बाँधना। अच्छे वस्त्र ओढ़ाना।"

रानी बोली—"ननद की बातें मेरे हृदय में चुभ जाती हैं।"

ननद ने कहा—"भाभी, ऐसा मत समझना कि मैं खाली हाथ आई हूँ। मैं बधाव में अस्सी मुहर का कठुला ले आई हूँ।"

"ननद रानी, आओ। तुम मेरे लिए पूज्य हो। किन्तु, मैं किस प्रकार तुम्हारा चरण स्पर्श करूँ? मेरे हाथ में उबटन की लीझी लगी है।"

ननद ने उत्तर दिया—"भाभी, तुम बड़ी ठकुरानी हो। मधुर भाषिणी हो। मेरे मुँह में पान भरा है। मैं तुम्हें किस प्रकार आशीर्वाद दूँ?"

"ननद, तुम पाट के खटोले पर बैठो और अपना भतीजा खेलाओ। उसके हाथ में कुछ पहनने के लिये देना। गले के लिये कठुला देना।"

ननद बोली—"भाभी, यदि मैं भतीजा खेलाऊँगी और उसे हाथ में आभूषण पहनाऊँगी तो नेग में तुम्हें गजमोहना देना होगा, जिसे पहनकर मैं अपने घर जाऊँगी!

भाभी ने उत्तर दिया—"ननद, मैं अद्दइया भर सोना दूंगी। पसेरियों चाँदी दूँगी, किन्तु गजमोहना नहीं दूँगी, क्योंकि यह मेरे पिता का दिया हुआ है।"

"न तो मैंने नाई भेजा था और न बारी। तुम्हारे भाई को भी नहीं भेजा था। फिर तुम क्यों बिना बुलाए ही चली आई?"

"भाभी, मैं तो अपने पिता की फुलवारी, माँ की रसोई, भाई का लड़कपन और तुम्हारा करतब देखने आई हूँ।"

"बाबा की अमराई और माँ की रसोई तो अब मेरी है। तुम्हारा तो अब तीसरा नाता हो गया है। तुम क्यों यहाँ आई हो?"

माँ की रसोई और पिता के चौबारे में सुभद्रा विलाप करने लगीं—"माँ, तुम रसोई से निकलकर अपनी बेटी को क्यों नहीं समझातीं? अपने भाई के घर में मैं किस प्रकार लाल-पीले वस्त्र पहनूं? माँ, अपने आँचल से तुम मेरे लिये भारी गठरी बाँधो!

"यदि मैं बन की कोयल होती तो जंगल-जंगल में रहती। मेरा भाई पेड़ की डाल के नीचे बैठता और मैं उसे कुहुक कर अपनी आवाज़ सुनाती।"

सुभद्रा एक क़दम आगे बढ़ीं। दूसरे बन में उनकी ससुराल थी। बिना माँ की बेटी होने के कारण वह रूठ कर ससुराल चली जा रही थीं।

बाहर से कृष्ण जी आए। दौड़ते हुए भीतर पहुँचे। रुक्मिणी से पूछने लगे—"रानी, तुमने बहन सुभद्रा को क्या विदाई दी?"

रुक्मिणी ने उत्तर दिया—"मैंने अद्दैया भर सोना दिया। पसेरी भर चाँदी

दी। किन्तु घमण्ड से मतवाली ननद मुझसे गजमोहना माँग रही थी। मैं उसे नहीं दे सकी।"

कृष्ण बोले—"मुझे आवां की राख और भस्म दो। अपनी बहन के रूठ जाने के कारण मैं योगी बन जाऊँगा।"

रास्ते में एक बटोही जा रहा था। श्री कृष्ण ने उससे पूछा—"भाई, मेरी बहन अपनी ससुराल हँसती हुई गई अथवा रोती हुई?"

बटोही ने उत्तर दिया—"कृष्ण जी, क्या बताऊँ! बताते हुये शरम लग रही है। सुभद्रा के रोने से गहरी नदियाँ बह चलीं।"

रुक्मिणी को भी बड़ा पश्चात्ताप हुआ। वह भी चलने की तैयारी करने लगीं—"नगर के कहारों, शीघ्र आकर चन्दन की पालकी सजाओ। मैं अपनी ननद को मनाने जाऊँगी!"

भान्जा गुल्ली-डण्डा खेल रहा था। दौड़कर भीतर खबर दी—"माँ, मेरे मामा और मामी आ रहे हैं!"

सुभद्रा रुष्ट होकर बोलीं—"तुम यदि मेरी कोख से न उत्पन्न हुए होते तो तुम्हारी खाल खिंचवा लेती। मेरी ही कोख से उत्पन्न होकर ऐसी बात कह रहे हो!"

वह झपट कर कोठे पर चढ़ गई। खिड़की से देखा, उनके भाई और भाभी आ रहे थे। वह तुरन्त सुनार को बुलाने लगीं—"नगर के सुनार, जल्द आओ! साठ सौ गजमोहन तैयार करो और उन्हीं का पायन्दाज़ बनाकर बिछाओ! मेरी भाभी आ रही है। नाई को न्योछावर देना होगा!"

यह देखकर भाभी बोली—"ननद, तुम्हारे पास तो इतने गजमोहने हैं कि उनका पायन्दाज़ बिछवा दिया है, किन्तु एक ही गजमोहन के कारण तुमने अपने भाई को योगी बना दिया!"

ननद ने उत्तर दिया—"भाभी, इतने गजमोहने मेरे किस काम के हैं? तुम्हारा दिया हुआ मैं एक भी गजमोहन पाती तो उसे सारे नगर में दिखाती! मैं सात भाइयों की बहन हूँ, किन्तु तुमने मेरा मान नहीं समझा, मेरा आदर नहीं किया!

जो स्त्रियाँ यह मंगल गीत गाती हैं, इसे गाकर दूसरों को सुनाती हैं, उनके जीवन के पाप विनष्ट हो जाते हैं और सुनने वालों की भी सारी मनोकामनायें पूर्ण हो जाती हैं।

(४६)

बीरन के घर लाला भये हैं।

नन्दा बधाव लै आयीं भउज मोरी,
चुनरी पहिनाओ भउज मोरी।

भइया हमारे मुखहूं न बोलें,
मैं काहे को आयी भउज मोरी।

भीतर बिरना होरिलवा खेलावैं,
बाहर ननद हैं ठाढ़ी भउज मोरी।

अस जिनि जानेउ भउजी हमारी,
छूछे ननद चलि आयी भउज मोरी।

अस्सी मोहर का कठुला मेरा,
अस्सी नगद लै आयेउँ भउज मोरी।

आओ ननदिया, बैठो मोरे अँगना,
होरिला को लेउ खेलाइ ननद मोरी।

जो तुम होतिउ सासु की जाई,
बिन रे बोलाये काहे आइउ ननद मोरी।

अस जिन जानेउ भउजी हो मोरी,
लेने-देने को आयउँ भउज मोरी।

लाख टका का घर-त्रर छोड़ेउँ,
करतब तोर देखन आयेउँ भउज मोरी।

छठिया धराई मैं टठिया लेबेउँ,
आँख रँगाई कटोरा भउज मोरी।

सैंया चढ़न को घोड़ा लेबेउँ,
पाँव दबन को चेरी भउज मोरी।

टठिया तो अइहैं, सास लै जइहैं,
ननदी कटोरा लै जाउ ननद मोरी।

कटोरा तो देउ भाभी अपने नउन को,
उबटन पिसाई का नेग हो भउज मोरी।

अपनी ननद को चुनरी रंगाऊँ,
झाझेमऊ की साड़ी ननद मोरी।

खड़े-खड़े पहिनावें बीरन भइया,
मैं रे बहिन बलिहारी भउज मोरी।

जोड़ा तो लोरैं भाभी आड़ो-माड़ो,
भौंरा लोरैं फुलवारी भउज मोरी।

मेरे बीरन लोरैं सेज-सुपेती,
मैं रे बहिन बलिहारी भउज मोरी। १

भाई के घर पुत्र हुआ है। ननद बधाव लेकर आई है। भाभी से कह रही है—"तुम पुरस्कार में मुझे चुनरी पहनाओ। मेरा भाई तो यह भी नहीं पूछ रहा है कि मैं यहां क्यों आई हूँ।"

भाई घर के अन्दर बच्चा खेला रहा है, ननद बाहर खड़ी है।

"भाभी, ऐसा मत समझना कि ननद खाली हाथ ही आई है। मैं अस्सी मुहर का कठुला ले आई हूँ और अस्सी रुपया नक़द भी ले आई हूँ।"

"ननद, आओ, मेरे आँगन में बैठो। लो, बच्चा खेलाओ। यदि तुम मेरी सास की असली बेटी होतीं, तो मेरे घर बिना निमंत्रण के ही क्यों आतीं।"

ननद ने उत्तर दिया—"भाभी, मुझे ऐसा मत समझो। मैं यहाँ कुछ लेने-देने आई हूँ। लाख रुपए का अपना घर और स्वामी छोड़कर मैं तुम्हारा करतब देखने आई हूँ। छट्ठी धराई में मैं तुमसे थाली लूँगी और बच्चे की आँख में काजल लगाने के बदले में कटोरा लूँगी। अपने स्वामी की सवारी के लिए एक घोड़ा लूँगी और पैर दबाने के लिए दासी लूँगी।"

भाभी बोलीं—"ननद, थाली तो मेरी सास ले जायँगी। तुम बस कटोरा ही ले जाओ !"

ननद ने उत्तर दिया—"भाभी, कटोरा तो तुम अपनी नाउन को उबटन पिसाई के नेग में दे देना।"

भाभी मुस्कराकर बोलीं—"मैं अपनी ननद के लिए अवश्य ही चूनर रंगा दूँगी। उसके लिए झाफ्रेमऊ की साड़ी भी मँगा दूंगी।"

भाई खड़ा होकर बहन को चुनरी पहना रहा है और उसकी बलायें ले रहा है।

ननद पुलकित होकर आशीर्वाद दे रही हैं—"भाभी, मण्डप में जोड़ा शोभा देता है। फुलवारी में भौंरा अच्छा लगता है और धवल शैया पर मेरा भाई सुशोभित होता है। मैं बार-बार उसकी बलायें ले रही हूँ।"

पालना

(५०)

पालना ले लो मोल जच्चारानी,
अपने होरिलवा के जोग जच्चारानी।

काहे का तेरा बना पालना,
काहे लागी डोर जच्चारानी ?

अगर चनन का बना पालना,
रेशम लागी डोर जच्चारानी।

घड़ी एक झूलैं लाल पालना,
घड़ी दादी की गोद जच्चारानी।

बुआ झुलावैं मंगल गावैं,
बार बार बलिहारी जच्चारानी।

पालना बेचने वाली पुकार कर कह रही है—"जच्चारानी, अपने पुत्र के योग्य पालना खरीद लो।"

जच्चा पूछती है—"मेरा पालना किस काठ का बना है और उसमें किस सूत की डोरियाँ लगी हैं ?"

"मेरा पालना अगर चन्दन का बना है और उसमें रेशम के सूत की डोरियाँ लगी हैं। तुम इसे ख़रीद लो। थोड़ी देर तक बच्चा पालने पर झूलेगा और थोड़ी देर तक वह दादी की गोद में रहेगा।"

बच्चे की बुआ उसे पालने पर झुलाती हुई मंगल गीत गा रही हैं, बार-बार बच्चे की बलायें ले रही हैं।

(५१)

झुला दो माई श्याम ललन पालना,
काहे का तेरा बना पालना,
काहे लगे फुंदना ?

अगर चनन का बना पालना।
रेशम लगे फुंदना।

कौन गुजरिया की नज़र लगी है,
रोवन लागे ललना।
राई नोन मैं ललना उतारौं,
खेलन लगे ललना।

एक गोपी यशोदा माँ से कह रही है—"माई यह लो, मैं पालना ले आई हूँ। तुम इसे ख़रीद लो और साँवले श्याम को इसी में बिठा कर झुलाओ!"

"तेरा पालना किस लकड़ी का बना है और उसमें किस सूत के फुंदने लगे हैं?"

"माई, मेरा पालना अगर चन्दन का बना है और उसमें रेशम के फुंदने लगे हैं।"

झूलते-झूलते बालकृष्ण रोने लगे। यशोदा माँ घबरा गईं—"किस छबीली नारी की नज़र लग गई, जिसके कारण मेरा बच्चा रोने लगा?"

मैंने सरसों और नमक उतारा। नज़र का रोग दूर हो गया। बच्चा पुनः हँसता हुआ खेलने लगा।

झुनझुना

(५२)

झुन झुना गढ़ि लाई मनिहारिन।

हीरा लाल सबूजे रंग को,
बिच-बिच कंकड़ डाली मनिहारिन।
जब यह भुनभुना बाजन लागे,
दादी बलइया ले मनिहारिन॥

जब यह लटुआ चटकन लागे,
जब यह भँवरा गूंजन लागे।
नानी मुगल घर जाये मनिहारनि,
मामी मौसी हमारे घर आवे मनिहारिन।

मनिहारिन झुनझुना बनाकर ले आई। लाल और हरे रङ्ग के हीरों का झुनझुना बनाया है। बीच-बीच में कंकड़ की गोलियाँ भरी गई हैं।

बच्चे के हाथ में झुनझुना बज रहा है। बच्चे की दादी उसकी बलायें लेती हैं और आनन्द-विह्वल होकर मज़ाक के स्वर में कहती हैं कि जब यह लट्टू चटकने लगे, जब यह भौंरा गुंजार करने लगे तो बच्चे की नानी जहाँ पराए घर चली जाय, वहाँ उसकी मामी और मौसी हमारे घर में आकर बच्चे की बलायें लें।

बधइया

(५३)

राज घरे ननदी लाई रे बधइया।
पहली बधइया दुवरवा पै बाजी,
बाबू का जियरा हुलसै।
दुलारी धिया आय गयीं लै कै बधइया॥

दुसरी बधइया अँगनवाँ में बाजी,
मइया का जियरा हुलसै।
धिया मोरी आय गयीं लैके बधइया ॥

तिसरी बधइया बरोठवा में बाजी,
भइया का जियरा हुलसै।
बहिन मोरी आय गयीं लैके बधइया ॥

चौथी बधइया ओबरिया में बाजी,
भाभी का जिया घबड़ान।
लूटन हमें आय गयीं लैके बधइया ॥

पँचईं बधइया पलँगिया पे बाजी,
होरिलवा का जियरा हुलसै।
बुआ मोरी आय गयीं लैके बधइया ॥

पुत्र-जन्म के समारोह में बहू की ननद अपनी ससुराल से 'बधाई' लेकर आती है। उसी अवसर का एक गीत है—

राजा के घर ननद बधाई लेकर आई है। पहली बधाई दरवाज़े पर बजी। पिता का हृदय पुलकित हो उठा। उसे ज्ञात हो गया कि दुलारी पुत्री बधाई लेकर आ गई।

दूसरी बधाई आँगन में बजी। माँ हर्ष-विभोर हो गई। उसे तुरन्त ध्यान आया—"मेरी बेटी बधाई लेकर आ गई।"

तीसरी बधाई बरोठे में बजी। भाई यह जानकर गद्‌गद् हो गया कि बहन बधाई लेकर आ गई है।

चौथी बधाई ओबरी में बजी और लोग उसकी ध्वनि से हर्षित हुए। किन्तु भाभी को तो ननद को नेग देना था, इसलिए उसका दिल घबड़ाने लगा। उसे ख़्याल आया—"ननद बधाई लेकर हमें लूटने के लिए आ गई।"

पाँचवीं बधाई ज़च्चाखाने के पलँग पर बजी। नवजात पुत्र किलकारियाँ मारने लगा। उसे यह जान कर बड़ी खुशी हुई कि मेरी बुआ बधाई लेकर आ गई।

(५४)

आजु मोरे लीपन-पोतन ललन अन्न-प्रासन,
ललन अन्न-प्रासन हो ।

सासु नेवतेउ अरिगन-परिगन, नइहर सासुर,
अउर अजियाउर हो ।

आये हैं नइहर सासुर अउर अजियाउर लोग कुटुम,
अरे लोग कुटुम हो,

ननदी एक नहीं आये बीरन, जिया मोरा कल्पत
जिया मोरा कल्पत हो ।

द्वारे पर बाजत नौबत, बीरन मोरे आये,
आँगन मोरे आये हो ।

सासु अँगने में चौक पुरावौ ललन अन्न प्रासन,
ललन अन्न प्रासन हो ।

कपिला दुधवा दुहाएउँ साठी के चाउर,
साठी के चाउर हो ।

बहुवा कोछे में लेउ ललनवाँ मइँ जाउर चटावउँ,
मइं जाउर चटावउँ हो ।

बहू हर्ष-विभोर होकर कह रही है—"आज मेरे घर में, मेरे आँगन में लिपाई-पुताई हो रही है । आज मेरे लाल का अन्न-प्राशन है । आज वह पहली बार अन्न ग्रहण करेगा ।"

"सास ने समस्त सम्बन्धियों, स्वजातियों, नैहर, ससुराल और मेरे अजियाउर तक के लोगों को निमन्त्रित किया । हर जगह के सभी कुटुम्बी और सम्बन्धी आए, एकत्रित हुए । लेकिन ननद, अकेला मेरा वह भाई नहीं आया, जिसके लिए मेरे प्राण दुखी हैं, आकुल हैं ।"

"द्वार पर नौबत बज रही है। मेरा भाई आ गया, मेरे आँगन में मेरा भाई आ गया।"

"सास, आँगन में चौक पुराओ, आज मेरे लाल का अन्न प्राशन है।" सास ने उत्तर दिया—"बहू! मैंने कपिला गाय का दूध दुहाया है। साठी के चावल की खीर बनवायी है। तुम गोद में पुत्र को लो, मैं उसे खीर खिलाऊँगी। आज लाल का अन्न-प्रासन है, मैं उसे खिलाऊँगी!"

सोहर

(५५)

पनवाँ बिरौना एक सुन्दर,
देखत सुहावन हो।
पनवाँ चढ़ि गये ससुरु महलिया,
तउ लागत सुहावन हो।
सेइ पान खाएनि कवन रामा,
दँतुली रचावइँ हो।
पीक डारइँ बहुरिया के अँचरा,
तउ देखत सुहावन हो।
मचियइ बइठी हैं सासु तो,
बहुवा अरज करइँ हो।
बहुवा कवन रचेस तोर अँचरा,
तउ देखत सुहावन हो ?
काउ कहउँ सास कहत लाज लागइ,
सासु तोर पूत छैल चिकनियाँ।
अँचरा पीक डारइँ,
तउ देखत सुहावन हो।
मोर पूत बसइँ आनन्द बन;
तुम धउराहर हो।

बहुश्रा कवन छयल चित लायेउ,
तउ गरभ जनायेउ हो ?

तोर पूत बसइं आनन्द बन,
हम धउराहर हो ।
सासु, भौंरा भेलष धइ आवइं,
मँइ गरभ जनायेउँ हो ?

मोरे पिछवारे पटहरवा, लागउ मोरे बीरन,
पटहर रेसम डोरिया जे आनउ ।
मँइ चोरवा फँसावउँ,
सासु के देखावउँ हो ।

मोर पूत गया क गजाधर,
प्रयाग बेनी माधो हो ।
बहुश्रा, मोर पूत सबका दुलरवा,
ढीलेनि अंग बाँधेउ हो ।

का करउँ गया के गजाधर,
प्रयाग बेनी माधो से ।
सासु का करउँ सबका दुलरुवा,
करेजे बोली सालइ हो ।

तब तउ बन्हतेऊ मँइ ढीले अंग,
अउर फूलेनि अंग हो ।
सासु अब मैं बान्हउँ पारी लाइ,
छोड़ाए नहिं छूटइँ, भगाये नहिं भागइ ।

पान का एक सुन्दर बिरवा है । देखने में बहुत भला लगता है । उसकी बेल ससुर के महल के ऊपर तक चढ़ गई ।

अमुक पति ने वह पान खाया । उसके दाँत रंग उठे । बहू के आँचल पर उसने पान का दाग डाल दी। देखने में पान का दाग बहुत सुन्दर लग रहा है ।

मचिया पर बैठी हुई सास बहू से पूछ रही है—"बहू तुम्हारे आँचल पर यह कैसा रंग पड़ गया है?"

"सास जी, क्या बताऊँ! कहते हुए शरम लग रही है। आप के छैल-छबीले पुत्र ने मेरे आँचल पर पान का दाग़ डाल दी है।"

सास बोली—"बहू, मेरा पुत्र तो आनन्द वन में रहता है। और तुम धौरहरे में रहती हो। साफ साफ बताओ! किस पराए व्यक्ति से प्रीति जोड़कर तुमने गर्भ धारण किया है?"

"सास जी, यह सच है कि हम दोनों अलग-अलग हैं। तुम्हारा पुत्र आनन्द वन में है और मैं धौरहरे में हूँ, किन्तु वह भौंरे का वेश बना कर मेरे पास आता है और मैंने उसी का गर्भ धारण किया है।"

इसके बाद बहू पटहार को बुलाती हुई कहने लगी—"मेरे पिछवाड़े रहने वाले पटहार भाई, तुम रेशम की डोरी ले आओ। मैं चोर फँसा कर उसे अपनी सास के सामने हाजिर करूँगी।"

सास बोली—"बहू, मेरा पुत्र उतना ही महिमावान् है जितने कि गया के गदाधर और प्रयाग के बेणी माधव भगवान् हैं, वह सबका प्रिय और स्नेह-पात्र है। उसे तुम यदि बाँधती हो, तो ढीली रस्सी से ही बाँधना।" बहू ने उत्तर दिया—"सास जी, भले ही वह गया का गदाधर और प्रयाग का वेणीमाधव है, भले ही सबका स्नेहपात्र है, लेकिन मैं क्या करूँ? मुझसे आपका ताना नहीं सहा जाता।"

"पहले तो मैं इसे ढीली और हलकी रस्सी से ही बाँधती, लेकिन अब तो अपनी सेज की पाटी से इस तरह कसकर बाँध दूँगी कि छुड़ाने पर भी नहीं छूट सकेगा, भगाने पर भी नहीं भाग सकेगा।

(५६)

जियरा खोलि के माँगउ ननदी,
मन चाहै सो आजु माँगउ ननदी।

बरतन न माँगो, मोरे चौके का सिंगार है,
बरतन में से करछुल देबइ,
खोरिया लेबइ काटि।

हण्डा न माँगो, घिरौंची का सिंगार है,
हण्डा में से गगरा देबइ,
पेंदा लेबइ काटि।

गहना न माँगो, डिब्बे का सिंगार है,
गहना में से अरसी देबइ,
छल्ला लेबइ काटि।

साड़ी न माँगो, तोरी भाभी के जोग है,
साड़ी में से साया देबइ,
सबहीं लेबइ काटि।

सेजा न माँगो तोरे भइया के जोग है,
सेजा में से पलँगा देबइ,
भिनगा लेबइ काटि।

गइया न माँगो, तोरे भतिजवा के जोग,
गइया का दुहइया मेरी ननदी का यार।

घोड़ा न माँगो, तोरे बीरन के जोग हैं।
घोड़े का सईस, मेरी ननदी का यार।

बच्चा पैदा होने पर उसकी बुआ, अर्थात् बहू की ननद का नेग सबसे बड़ा होता है। लेन-देन में ननद और भाभी की छेड़-छाड़ मशहूर है। वह कुछ माँगती है, भाभी देने से इन्कार करती है। आखिर आसानी से मिल जाने वाली चीज़ की कीमत भी तो नहीं समझी जाती। प्रस्तुत गीत में ननद और भाभी की एक ऐसी ही रस-पूर्ण नोक-झोंक देखने लायक है।

बहू कह रही है—"ननद, तुम दिल खोलकर माँगो। जो इच्छा हो, वह ले लो लेकिन, तुम बर्तन मत माँगना, क्योंकि वे मेरी रसोई के शृंगार हैं। बर्तनों में तुम चाहो तो एक करछुल ले लो, परन्तु कटोरा नहीं मिलेगा।

"हण्डा मत माँगना, क्योंकि मेरी घिरौंच की वही शोभा है। हाँ, चाहो तो गगरा ले लो, लेकिन उसका पेंदा मैं निकाल लूँगी।

"गहने मेरे डिब्बे के सिंगार हैं, अतः उन्हें मत माँगना। वैसे तुम एक आरसी ले सकती हो, लेकिन छल्ला नहीं पाओगी।

"साड़ी मत माँगो। वे बस मेरे ही पहनने लायक हैं। लेकिन मैं तुम्हें साया दे दूँगी, बाकी और कुछ नहीं पाओगी।

"सेज मत माँगो, वह तुम्हारे भाई के सोने लायक है। तुम्हें खाली पलँग दे दूँगी, लेकिन झिनगा नहीं दूँगी।

"गाय मत माँगो, उसका दूध तुम्हारा भतीजा पियेगा। गाय का दुहने वाला मेरी ननद का यार लगता है।"

"घोड़ा मत माँगो, उस पर तुम्हारा भाई चढ़ेगा। घोड़े का साईस मेरी ननद का यार है।"

(५७)

पनवँइ अस गोरी पातरि, कुसुम रंग सुन्दरि,
चढ़ि गयीं ऊँची अँटरिया, झरोखवन चित गएउ हो।

झपटि के उतरीं अँटरिया, आँगन बिच ठाढ़ि भयीं,
सासु तोर पूत ठाढ़ पिछवरवा, हेलिनिया से बिहँसइ हो।

हँसि-हँसि हेलिनि बोलावइँ, बिहँसि बात पूछइँ,
हेलिनि, कौने रस भोरएउ पिउ मोर;
कौने रस राखेउ, कवने बिधि राखेउ हो?

हँसि-हँसि बोलइ हेलिनिया, सुनउ रानी बतिया,
बहुवा फूलन सेजिया दसाएउँ, नयन रस राखेउँ हो;
बहुवा हँसि-हँसि बेनिया डोलाएउँ, नयन रस लोभी हो।

एतनी बचन जब सुनेनि, सासु के बोलावइँ रे,
सासु तोरी जे बहुवा गरभ से, गरभ जनाएउ हो;
सासु पियवा के आनउ बोलाइ, ससुरके जनावउ हो।

बहरे से आयें कवन रामा, धनिया बोलावइँ हो,
रनिया सूनि बाटइ मोरि गजओबरि, एक होरिल बिन हो।

भोर होत पउ फाटत, होरिला जनम भयें,
ननदी देउ न बिरना जगाइ, सुनइँ घर सोहर हो।

पान जैसी पतली और फूल जैसी सुन्दर बहू ने कोठे पर चढ़कर खिड़की के रास्ते से कुछ देखा। झपट कर वह नीचे उतर आई और आँगन में पहुंच कर सास से शिकायत करने लगी—"सास जी, आपका पुत्र पिछवाड़े खड़ा होकर हेलिन से हँस रहा है और नेत्रों से उसके रूप रस का पान कर रहा है।"

बहू ने हेलिन को बुलाकर हँसते हुए उससे पूछा—"हेलिन, भला बता! किस प्रकार तूने मेरे स्वामी को फुसलाया, किस प्रकार उसे अपने पास रखा और कैसा उसका स्वागत-सत्कार किया?"

हेलिन ने हँसते हुए उत्तर दिया—"बहू मैंने उनके लिए फूलों की सेज तैयार की, अपने नेत्रों का रस पान कराया, हँस-हँस कर उन्हें पंखा झला। मेरी भी आँखें उनके रूप पर लुब्ध थीं।"

यह बात सुनकर हेलिन ने घर की सास को बुलाया और उससे कहने लगी—"सास जी, आपकी बहू का पेट गर्भ से भारी हो आया है। इसके स्वामी को सूचित करो, इसके ससुर को खबर दो।"

बाहर से अमुक पति आया। पत्नी को बुलाकर गोद में बिठा लिया। और कहने लगा—"रानी, कोई पुत्र न होने से मेरा राज्य एकदम सूना लगता है।"

प्रभात का नव अरुणोदय होते ही घर में पुत्र ने जन्म लिया। बहू ननद से कहने लगी—"मेरी ननद, जाकर अपने भाई को जगा दो, प्रसन्न होकर वे सोहर सुनें। घर में बच्चा पैदा हुआ है।"

(५८)

चन्दा तउ लागइ मोर भइया, बदरिया मोरि बहिनी रे,
बदरी जाइ बरसउ वोहि देश, जहाँ साजन भीजइँ हो।

भिजत-भिजत जब आयें डेउढ़िया के ठाढ़ भये,
रानी, खोलि देतिउ चनन केवरिया, पैतनवाँ के सोउब हो।

की तुँहुँ चोर, पहरुवा, की चोरवा के भइया रे,
राजा की तुहुँ होरिला के बाप, पैंतनवा मोरे सोउबेउ हो?

न हम चोर, पहरुवा, न चोरवा के भइया रे,
धनियाँ हम तउ होरिलवा के बाप, पैंतनवाँ तोरे सोउब हो।

एक तउ साँकरि खटिया, दुसरे गोदी ललना,
सइयाँ लइ लेतेउ मूठी भर पुवरवा, ओसरवा डासि सोवउ हो ।

पुरुबू पछिउँ कइ बयरिया, पुवरवा उड़ि जइहइँ,
धनियाँ, खोलि देतिउ चनन केवरिया, होरिलवा मुख देखिति हो ।

एक पाँउँ धरेनि डेहरिया, दुसर गज ओबरि हो,
तीसर पाँउँ धरेनि सेजरिया, मुरूगवा बोली बोलइ हो ।

रहु-रहु बइरी मुरूगवा, डखनवा तोर तोरउं, केसरि नोचउँ,
मुरगा, बरिस-बरिस कइ कुफुतिया, पिया नाहीं सुनइ पायें हो ।

चन्दा मेरा भाई है । बदली मेरी बहिन है ।

"बदली, मेरी बहिन, जाकर उस देश में बरसो जहाँ मेरा प्रियतम भींग जाये ।

भींगते-भींगते पति घर लौटा । द्वार पर खड़ा होकर बोला—"मेरी रानी, चन्दन के किवाड़े खोलो । मैं तुम्हारे पैंताने सोऊँगा ।"

भीतर से पत्नी ने पूछा—"क्या तुम चोर हो, या पहरेदार अथवा चोर के भाई हो ? अथवा क्या तुम पुत्र के पिता हो, मेरे प्रियतम, जो कि इतनी रात आकर मेरे पैंताने सोना चाहते हो ?"

"न तो मैं चोर हूँ और न पहरेदार ! चोर का भाई भी नहीं हूँ । मेरी पत्नी मेरी रानी, मैं तो पुत्र का पिता हूँ । अपना पुत्र देखने आया हूँ, तुम्हारे पैंताने सोने आया हूँ ।"

पत्नी आगे बोली—"एक तो सँकरी चारपाई है, दूसरे गोद में पुत्र लिए हूँ । साजन, तुम मुट्ठी भर पुआल ले लो और ओसारे में बिछाकर सो रहो ।"

पति ने उत्तर दिया—"रानी, पूरब और पच्छिम की तेज हवायें चल रही हैं । पुआल बिखर कर उड़ जायेंगे । तुम चन्दन के किवाड़ खोल दो, ताकि मैं बच्चे का मुँह देख लूँ ।"

पति ने एक पाँव देहरी पर रखा दूसरा गजओबरी में और तीसरा सेज पर । इतने में ही मुर्गा बाँग देने लगा ।

"रुको, रुको, मुर्गे ! मैं तुम्हारे पंख तोड़ दूँगी, कलँगी नोच डालूँगी । बरसों की अपनी कोफ्त अभी मैं प्रियतम को नहीं सुना पायी । थोड़ी देर तक और चुप रहो, तब बोलना, तब भोर होने की सूचना देना ।"

(५९)

जउ मइँ जनतेउँ ए दइया, राम जनम होइहइँ,
करतेउं मँइ राम कइ बरहिया, इन्द्र बोलवतेउं हो।
इन्द्र के हांथे अमरित फहवा, होरिला अमर करतेनि हो।

एक फूल फूलइ बनारस, दुसर फूल गोकुल,
तीसर फूल फुलवरिया, चउथ मोरे आँचर हो।
इन चारिउ फुलवा जउ पउतिउँ, हरवा गुंथवतिउं,
देतिउं ललन पहिराइ, तउ सब जग मोहत हो।

जे यहि मँगल गावइँ, गाइ के सुनावइं,
जनम-जनम अहिबात, तउ पूत फल पावइं हो।

यदि मैं जानती कि श्री राम जन्म लेंगे, तो अवश्य हीं उनकी बरही करती, इन्द्र को निमंत्रण देकर बुलाती। वे अमृत का फाहा लेकर आते और मेरे पुत्र को अमर कर देते।

एक फूल बनारस में खिलता है। दूसरा गोकुल में, तीसरा फुलवारी में और चौथा फूल मेरे आँचल में खिलता है। अगर मैं इन चारों फूलों को पाती तो इनका हार गुंथवा कर पुत्र को पहनाती, सारा संसार उसे देखकर प्रसन्न होता।

जो नारियाँ यह मंगल गीत गाती हैं और गाकर सुनाती हैं, उनका जन्म भर अहिवात बना रहता है और उन्हें पुत्र,फल प्राप्त होता है।

(६०)

ननदिया न आवै मोरे अंगना,
हमारे घर लाला हुए।

सासु जी का नउवा, जेठानी का बोलउवा।
ननदिया के एको न बोलउवा,
हमारे घर लाला हुए।

सासु जी का पियरी, जेठानी के चुनरी,
ननदिया का एको नहिं लत्ता,
हमारे घर लाला हुए।

सास जी का मोहर, जेठानी के असरफी,
ननदिया का एको नहिं पैसा,
हमारे घर लाला हुए।

सास जी का लड्डू, जेठानी को पेड़ा,
ननदिया को एको नाहीं गट्टा,
हमारे घर लाला भये।

सास जी को डोलिया, जेठानी को डंड़िया,
ननदिया को एको नाहीं खच्चड़,
हमारे घर लाला भये।

सास जी का दिया मेरे घर में रहेगा,
जेठनिया का अदला-बदला,
ननदिया का दिया नाहीं लौटे,
हमारे घर लाला भये।

पुत्र-जन्म का उत्सव है। सारे सगे-सम्बन्धी एकत्रित हैं, किन्तु ननद अभी तक अपनी ससुराल से नहीं आई। भाभी का मन उसके लिए आकुल-व्याकुल हो रहा है।

मेरे घर में पुत्र हुआ है, लेकिन ननद अभी तक मेरे आँगन में नहीं आई। सास जी के लिए नाई भेजा गया। जेठानी को बुलाया गया, लेकिन ननद को बुलाने के लिए कोई नहीं गया।

सास को पियरी दी गई। जेठानी को चुनरी दी गई। लेकिन ननद को कोई भी कपड़ा नहीं दिया गया।

सास को मुहर और जेठानी को अशरफी दी गई, किन्तु ननद को एक भी पैसा नहीं दिया गया। सास को लड्डू और जेठानी को पेड़ा दिया गया। ननद को एक गिट्टी भी नहीं मिली। सास को डोली और जेठानी को पालकी दी गई, परन्तु ननद की सवारी के लिए कोई खच्चर भी नहीं दिया गया।

सास को जो कुछ दिया गया, वह तो मेरे घर में ही रहेगा। जेठानी का अदला-बदला होता रहेगा। उनकी चीजें मेरे घर आती रहेंगी और मेरी उनके घर जाती रहेंगी। लेकिन ननद को तो जो कुछ दिया जाता है, वह फिर वापस नहीं मिलता। वस्तुतः वही तो वास्तविक दान होता है।

(६१)

ननद मोरी आय गई सोना चिरइया,
आवौ ननद जी बैठो अँगन मोरे,
आज झगड़ने की बेला।

हाँथे का भाभी कंगना लेबइ,
सइयां गले का तोड़ा,

पहिरन का भाभी साड़ी लेबइ।
सइयाँ का पाँचों जोड़ा।

चढ़ने का भाभी डोला लेबइ,
सइयां चढ़न का घोड़ा।

ऐतना मांगन मांगौ मोरी बीबी,
भइया करिहैं बिदइया,
ननद मोरी आय गइ सोना चिरइया।

पहिरि ओढ़ि ननदी घर का सिधारैं।
जुग-जुग जीवें मोरा भइया?

सोने की चिड़िया जैसी मेरी ननद आ गई।

"ननद, आओ, मेरे आँगन में बैठो। आज मुझसे तुम्हें तकरार और ठनगन करने की शुभ घड़ी आई है।"

ननद कहती है—"भाभी, मैं तुमसे अपने हाथ के लिए कंगन लूँगी और अपने स्वामी के गले के लिए तोड़ा लूँगी। अपने पहनने के लिए साड़ी लूँगी और अपने स्वामी के लिए पाँचों पोशाकें लूँगी। अपनी सवारी के लिए तुमसे पालकी लूँगी और अपने पति के लिए एक घोड़ा लूँगी। इतनी चीजें

मैं तुमसे माँग रही हूँ। इन सब के साथ भैया मेरी अच्छी तरह से बिदाई करेंगे।

पहन-ओढ़ कर, भाई को युगों तक जीने का आशीर्वाद देते हुए, ननद ने अपनी ससुराल के लिए प्रस्थान किया।

(६२)

चाहे गुस्सा करो, ननद न बोलउबैं।

ननदी अइहैं गहना मांगिहैं।
चाहे गुस्सा करो, एक छल्ला न देबैं।

तुम गुस्सा करो, एक छल्ला न देबो।
हम गुस्सा करबई, कँगन लैके जाबैं।

ननदी अइहैं, साड़ी माँगिहैं।
चाहे गुस्सा करो, एक लत्ता न देबैं।

तुम गुस्सा करो, एक लत्ता न देबो।
हम गुस्सा करबैं, सालू लैके जाबैं।

ननदी अइहैं, बरतन माँगिहैं।
चाहे गुस्सा करौ, एक लोटिया न देबैं।

तुम गुस्सा करौ, एक लोटिया न देबो।
हम गुस्सा करबैं, सागर लैके जाबैं।

नेग नहीं देबो, होरिल लै जइहैं।
हमार मन होय, सेजिया नहिं अउबैं।

पुत्र जन्म के अवसर पर पत्नी अपने पति से कह रही है—"प्रियतम, भले ही तुम नाराज़ हो जाओ, लेकिन मैं ननद को अपने घर नहीं बुलाऊँगी। ननद आयेंगी तो गहने माँगेंगी। लेकिन मैं उन्हें एक छल्ला भी नहीं दूँगी।"

पति ने उत्तर दिया—"तुम रूठ होकर एक छल्ला भी नहीं दोगी, लेकिन मैं कंगन लेकर अपनी बहन के पास जाऊंगा।"

"ननद आयेंगी तो साड़ी माँगेगी, तुम भले ही अप्रसन्न हो जाओ, किन्तु मैं एक लत्ता भी नहीं दूँगी।"

"रानी, तुम एक लत्ता भी नहीं दोगी, किन्तु मैं उसके लिए सालू लेकर जाऊँगा।"

"ननद आने पर बर्तन मांगेंगी, लेकिन मैं उन्हें एक लुटिया भी नहीं दूँगी।"

"प्रिये, तुम एक लुटिया भी नहीं दोगी, किन्तु मैं उसके लिए सागर लेकर जाऊँगा। तुम मेरी बहन को नेग नहीं दोगी तो वह बच्चा उठा ले जायगी और मैं तुमसे रुष्ट होकर तुम्हारी सेज पर भी नहीं आऊँगा।"

(६३)

नदिया के घाटे एक तिरिया, केवटा-केवटा करइ हो,
केवटा, नइया लगउतेउ पार, नइहर हम जाबइ हो।

की दुख बाटइ सासु का, की सइयाँ तोर दूरि बसइ हो,
तिरिया कवने दुखन चलि आइयु, नइहर बाट ताकेउ हो ?

नाहीं दुख सासु कर, नाहीं सइयां दूरि बसइ हो,
केवटा कोखिया का दुख मोहिं दारुन, नइहर बाट ताकेउँ हो।

सासु के लागउ झुकि पइयां, ननद के कलेवा देउ हो।
तिरिया सइयाँ की साजउ सेजरिया, होरिल तोरे होइहँ हो।

आठ महीना नउ बीते, होरिल घर जनमें,
बाजे लागीं अनन बधइया, उठन लागे सोहर हो ?

नदी के तट पर खड़ी एक स्त्री केवट को पुकार रही है—"केवट भाई, नाव उस पार ले चलो, मैं अपने नैहर जाना चाहती हूँ।"

केवट ने पूछा—"स्त्री, क्या तुम अपनी सास के कारण दुखी हो; अथवा तुम्हारा पति परदेस में रहता है? किस दुख से तुम नैहर जाना चाहती हो, वह तो बहुत दूर है!"

स्त्री ने उत्तर दिया—"न तो मुझे सास का दुख है, और न मेरा पति ही मुझसे दूर रहता है। मेरे केवट, मैं सन्तानहीन हूँ। मुझे केवल कोख का

दुख है। इसीलिए अब नैहर में जाकर वहां योगिनी का बाना धारण कर लूँगी।"

केवट ने समझाया—"भोली स्त्री, तू झुककर अपनी सास के चरणों का स्पर्श कर। ननद को प्यार से कलेवा खिला और अपने स्वामी के लिए सेज रचा। तुम्हारे अवश्य ही पुत्र होगा।

आठवें के बाद नवां महीना बीतते ही घर में पुत्र ने जन्म लिया। द्वार पर आनन्द की बधाइयां बजने लगीं और आंगन में सोहर गाया जाने लगा।

(६४)

सुगना तउ बोलइ पिंजरवा, कगा अँटरिया बोलइ हो,
सुगना तउ बोलइ हरिहर, कागा बोलइ पिया-पिया हो।

की मोर आवइ बिरनवाँ, की सइयाँ कइ पाती आवइ हो,
कागा कवनिनि बोल तुहूं बोलउ, बोलिया सुहावनि हो ?

नाहीं तोर आवइ बिरनवा, न सइयाँ की पाती आइव हो,
बहुआ, आजु के नवयें महिनवाँ, होरिल तोरे होइहँइ हो।

काहें कटु बोली तुहुँ बोलउ, बोलन नाहीं आवइ हो,
कागा, जनम कइ दुखी मोरि कोखिया, होरिल कइसे होइहँइ हो ?

तोरे होइहइँ होरिलवा, काउ हमुइँ देबिउ, कवने रंग भोजन,
बहुआ होरिला देखि भूलि जाबेउ, गरब भरि जाबेउ हो।

सोने रूप टोंटवा मढ़उबइ, मोतिया चुनउबइ हो,
कागा, दूध-भात तोर भोजन, कटोरवा में देबइ हो।

जुग-जुग जीवइ तोरा होरिला, अमर होइ सेन्हुर हो,
बहुवा, बाढ़इ नइहर-सासुर, अमवा अमिलिया जस हो।

तोता पिंजड़े में बोलता है और काग अटारी पर।
तोता राम-राम बोलता है और काग पिया-पिया बोलता है।

"मेरे काग, क्या मेरा भाई आने वाला है, अथवा प्रियतम का पत्र मिलने वाला है ? तुम कौन-सी बोली बोल रहे हो ? बोलने और सुनने में यह बहुत सुहानी लग रही है।

"न तो तुम्हारा भाई आ रहा है और न प्रियतम की पाती ही आ रही है। बहू, आज के नवें महीने तुम पुत्र को जन्म दोगी!"

"काग, तुम क्यों ताना मार रहे हो? बात कहने का ढंग भी, तुम्हें नहीं आता। मेरी कोख तो जन्म से ही दुखी है, फिर भला पुत्र कैसे पैदा होगा?"

काग ने आगे पूछा—"अच्छा, यदि तुम्हारे पुत्र हुआ तो मुझे क्या दोगी? किस प्रकार का भोजन दोगी? बहू, तुम तो पुत्र का मुँह देखते ही गर्व से भर जाओगी।"

बहू ने उत्तर दिया—"काग, यदि मेरे पुत्र होगा तो तुम्हारी चोंच सोने से मढ़ा दूँगी, तुम्हें मोतियाँ चुगाऊँगी और कटोरे में दूध-भात खिलाऊँगी।"

काग ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया—"बहू, तेरा पुत्र युगों तक जीवित रहे, तुम्हारे माँग का सिन्दूर बना रहे और तुम्हारे नैहर और ससुराल का आम और इमली की भाँति विस्तार हो।

(६५)

सोवत रहलेउँ अँटरिया, सपन एक देखेउँ हो,
सासु सपने का करउ बिचार, सपनवाँ बड़ अवगुन हो।

बँम्हना तउ देखेउँ निसरत, गइया के बेंढ़त हो,
सासु, अमवाँ तउ देखेउँ बउरत, अमवाँ फल लागत हो।

चुप रहु बहुवा, तूं चुप रहु, बैरिनि नाहीं सुनइँ हो,
बहुवा, सुनि के सपनवाँ सिहइहइँ, सपनवाँ बड़ शुभकर हो।

बँम्हना तउ अहेनि नरायन, गइया तोरी लछिमी,
बहुवा, अमवाँ तउ तोर सन्तति, सन्तति सुख पाएउ हो।

भोर होत पउ फाटत, होरिला जनम भयें हो,
बाजै लागीं अनन बधइया, उठन लागे सोहर हो।

बँम्हना के दिहेउँ हीरा मोतिया, गइया के सोन खुर हो,
सखिया अमवाँ बउर दूध सींचउ, बहुतइ सुहावन हो।

एक बहू अपनी सास से एक स्वप्न का वर्णन कर रही है—

"मैंने अटारी पर सोते समय एक स्वप्न देखा ! सास जी, आप इस स्वप्न का विचार करें । यह तो बहुत अशुभ था, बहुत अवगुण पूर्ण था ।

"मैंने एक ब्राह्मण को निकल कर गायों को रोकते हुए देखा । एक आम के पेड़ को बौराते हुए, उसमें फल लगते हुए देखा ।"

सास बोली—"खामोश रह, बहू ! कोई बात मत कर । कहीं बैरिनें न सुनने पायें । वे यह सपना सुनेंगी तो इससे बड़ी डाह करने लगेंगी, शाप देने लगेंगी । तुम्हारा स्वप्न बहुत शुभ है, बहुत गुणकारी है । ब्राह्मण तो स्वयं नारायण भगवान् थे और गाय लक्ष्मी थीं, और मेरी बहू, आम तुम्हारी सन्तति था । तुम्हें सन्तान-सुख प्राप्त होगा, पुत्र का फल मिलेगा ।"

नव विहान के स्वर्णिम अरुणोदय में पुत्र ने जन्म लिया । आनन्द के बधाव बजने लगे । सखियाँ सोहर गाने लगीं ।

सहेलियाँ बहू से कहने लगीं—"सखी, ब्राह्मण को हीरे-मोतियों का दान दो । गाय का खुर सोने से मढ़ा दो और आम के बौर को दूध से सींचो । बहुत शुभ हुआ है, बड़ी सुन्दर और सुहानी बेला आई है ।

लोरी (६६)

आ री निंदरिया तूं प्यारी निंदरिया !
ललना की अँखियों पे छा री निंदरिया,

गगन मँडल से चंदा बुलावे,
तारों से खेले तेरी निंदरिया,
ललना की अँखियों पे छा री निंदरिया ।

आ री निंदरिया तूं आ री निंदरिया !
पलना झुलत राम निदिया न आवे,
भर लेत गोदी में दशरथ की रनियाँ,

ललना के नैनों में छा री निंदरिया ।
आ री निंदरिया तूं प्यारी निंदरिया !

आ, प्यारी नींद, तू मेरे लाल की आँखों पर छा जा !

आकाश-मण्डल से तुझे चन्द्रमा बुला रहा है । तू तारों से खेल रही है । प्यारी नींद, तू नीचे आ और मेरे लाल की आँखों में वास कर !

राम पालने में झूल रहे हैं। उन्हें नींद नहीं आ रही है। दशरथ की रानी कौशल्या राम को अपनी गोद में भर लेती हैं। उनके लिए निद्रा का आह्वान् करती हैं।

(६७)

झरवइया बुलाउ, अरी बैंदा बुलाउँ,
मोरे लालन को टोना लगो।

ना लालन सोने लाली पलंगिया, ना मैया गोद री,
टोना लगो, हेरी टोना लगो।

गोकुल नगरिया से आयी छोकरिया ललना लेगयी उठाय री,
टोना लगो, हेरी टोना लगो।

अरी सखी, ओझा बुलाओ, वैद्य बुलाओ। मेरे लाल को टोना लग गया है। न तो वह लाल पलँग पर सोता है और न माँ की गोद में ही उसे नींद आती है। अवश्य ही किसी ने जादू-टोना कर दिया है। इसीलिये नींद नहीं आ रही है।

गोकुल नगर से एक लड़की आई। वह मेरे लाल को उठा ले गई। (यहाँ गोकुल की लड़की से निद्रा का ही तात्पर्य है।)

(६८)

आ जा री निंदिया, निद्रा बन से,
मेरा मुन्ना सोवे छनिक भर में।

तोसक तकिया पटने से,
आ जा री निंदिया निद्रा बन से।

मुन्ना आवे ननियउरे से,
दादी खेलावे अजियउरे से!

आ जा री निंदिया निद्रा बन से,
मेरा मुन्ना रोवे छनिक भर में।

प्यारी नींद, मैं तुझे बुला रही हूँ। तू निद्रा बन से आ, ताकि मेरा लाल क्षण भर में सो जाय।

मैंने पटने से तोशक और तकिया मँगाया है। उस पर मेरा लाल लेटा है। प्यारी नींद, तू आ और मेरे मुन्ने की आँखों में विश्राम कर।

मुन्ना ननिहाल से लौटा है। दादी अजियाउर में उसे खेला रही है। प्यारी नींद, तू आ और मेरे मुन्ने को सुला दे!

(६६)

मोरा मुन्ना, मोर मुन्ना का करऽले,
तिसिया के तेल में फुलेल खेलऽले।
माछर को मार-मार घर भरऽले,
दुशमन की अंखियाँ धमक गइले।
खेल-कूद मुन्ना जब थकि गइले,
मइया की गोद में सूत गइले।
आजी दादी की गोद में सूत गइले,
हाँ जी बुआ की गोद में सूत गइले॥

मेरा मुन्ना क्या कर रहा है?

मेरा प्यारा मुन्ना तीसी के तेल में फुलेल खेल रहा है। मच्छरों को मार-मार कर घर में उनका ढेर लगा रहा है। उसे देखकर दुश्मनों की आँखें फूटी जा रही हैं।

खेल-कूद से मुन्ना थक गया। वह चुपचाप माँ की गोद में सो गया, आजी और बुआ की गोद में सो गया।

मुन्डन

सभवा में बइठे कवन रामा, धनिया अरज करइ,
साहेब झालरि छेंके है लिलार, झलरिया अब मुड़ावउ !
कइसे मुड़ावउँ झलरिया, झलरिया झलरिया करउ,
रनिया, एक बहिनि बिनु कइसे झलरिया मँइ मुड़ावउँ रे ?
बरिया त भेजेउँ अधि रतिया, नउवा तउ भोरहीं हो,
गरब कइ माती ननदिया, अबहुँ नाहीं आवइ रे ।
कइसे क आवइ बहिनिया रे, है लखपतिया रे,
सात बीरन कइ बहिनिया तउ गरब की माती रे !
सोने-रूपे लावउ रे डोलिया, मँइ ननद मनावउँ,
झलरिया मोरी रोपइँ, परछि देखावइँ रे ।
अब सात बीरन की बहिनिया तउ अहइ हरजाई रे,
ननदी बहुतइ हलफ के होरिलवा झलरिया मोरी रोपउ रे ।
जउ भउजी बार परिछिहौं, परिछ देखावउँ रे,
भउजी लेबई चनन कर हार, मोहर दस नेग हो ।
भउजी येहि रे भतिजवा के भये कुछउ नहिं दीहिउ रे ।
जउ तुहुँ ननदी बार परिछिहउ परिछि के देखइतेउ,
ननदी, दुइ रे टका तोर नेग, परैया दुइ चाउर रे !
सोने के खड़उँवा बीरन भइया, खुटुर-खुटुर करँइ हो,
मोरी सात बीरन की बहिनिया, आदर हम करबई हो ।
लेउ न बहिनी अरे लहरा पटोर, बहनोइया हासिल घोड़ रे,
बहिनी, लेउ न कपिला गाइ भयनवाँ के खातिर रे ।
लहर-पटोर पहिनि बहिनी, दिहेनि असीस, बढ़इ तोर बंस,
जुग-जुग जियइ मोरा बीरन भइया अउर भतिजवउ रे ।
अब अम्मर होई सोहाग, भउज रानी बंस बढ़ई !

सभा में अमुक पति बैठा है। उसकी पत्नी निवेदन कर रही है—"स्वामी, बालक के सिर के बालों की लटों ने उसका माथा छेंक रक्खा है। लटों का अब मुण्डन करा दो!"

पति उत्तर देता है—"रानी, बालक के सिर के बालों की लटों का मुण्डन कैसे कराऊँ? बहन तो अभी तक आई ही नहीं। उसके बिना मुण्डन-संस्कार किस प्रकार सम्पन्न होगा?"

पत्नी कहती है—"स्वामी, मैंने आधी रात को ही अपनी ननद को बुलाने के लिये बारी को भेजा, सुबह होते ही नाई को भेजा, किन्तु गर्व से मतवाली ननद अभी तक नहीं आई!"

"प्रिये, बहन भला किस प्रकार आये? वह लखपती ससुर के घर में ब्याही गई है। सात भाइयों की अकेली बहन है, इसीलिये इतना अधिक गर्व करती है।"

पत्नी कहती है--"सोने की पालकी ले आओ। मैं अपनी ननद को मनाने जाऊँगी। वे आकर मुण्डन के अवसर पर मेरे लाल की लटें अपने आँचल में रोपेंगी, वही मेरे पुत्र के बाल परछेंगी!"

ननद अपनी ससुराल से भाई के घर आ गई। भाभी पहुँचते ही उसे छेड़ने लगी—"ननद, सात भाइयों की बहन होने पर भी तुम बड़ी हरजाई हो! जल्दी आओ! मेरा लाल बड़ी मान-मनौती का है। तुम उसकी लटें अपने आँचल में रोपो!"

ननद कहती है—"भाभी, यदि मैं बाल परछूँगी तो नेग में तुमसे एक चन्दन का हार और दस मुहरें लूँगी; क्योंकि इस भतीजे के जन्म पर तुमने मुझे कुछ भी नहीं दिया है।"

भाभी बोली—"ननद, अगर तुम बाल परछोगी तो दो टका और दो परई चावल ही तुम्हारा नेग होगा। इससे अधिक और कुछ नहीं मिलेगा।"

सोने का खड़ाऊँ पहने हुए खटपट करता हुआ भाई आँगन में आया, अपनी बहन को मनाता हुआ बोला—"हम सात भाइयों की यह इकलौती बहन है। मैं इसका यथोचित आदर सम्मान करूँगा। बहन, मैं तुम्हें पहनने के लिये लहँगा और साड़ी दूँगा। अपने बहनोई को चढ़ने के लिये हासिल घोड़ा दूँगा और भांजे को दूध पीने के लिये एक कपिला गाय दूँगा!"

लहँगा और साड़ी पहन कर बहन ने प्रसन्नतापूर्वक आशीर्वाद दिया—"मेरा भाई चिरंजीवी हो, मेरे भतीजे की भी बड़ी लम्बी उम्र हो। भाभी का सुहाग अमर रहे और उसके परिवार की निरन्तर वृद्धि हो!"

अँगने में ठाढ़े हैं कवन रामा, झलरी-झलरी करैं हो,
अब है कोई सहरवा के नायक, झलरिया मुड़ावइ हो।
हम तोरे बाबा कौन रामा सहरवा के नायक झलरी मुड़ावउँ हो,
बेटा, सोने-रूपे लोइया गढ़वावउँ, झलरिया तोरि मुड़ावउँ हो।
सोने के खड़उवाँ पहिने कवने रामा, खुटुर-खुटुर चलत हो,
मइया बहिनी के लेउ बुलाइ, झलरिया मोरी रोपइँ हो।
नउवा तउ भेजेउँ रतिगर, बरिया भोरहें में रे,
बेटा, आवइ न धेरिया हमारी, तो गरब की माती रे,
देउ न धन ढुँढ़िया, अउ पियरी गहवर त बहिनी बोलावउँ रे,
सोने-रूप डँड़िया बहिनिया आवत सोरहो बजन से रे।
आवहु ननद गोसाईं, अँगन मोरे बैठउ, झलरिया मोरी-रोपउ रे,
ननदी, लेउ न अपनी मजुरिया, अढ़इया दुई चाउर रे।
जउ भउजी मैं बार परिछिहेउँ, परिछि देखावउँ रे,
भउजी पाँच मोहर मोर नेग, मजुरिया हम लेवइ रे।
हड़पि-तड़पि बोली भउज रानी, सुनउ न ननद छिनरउ हो,
ननदी, मोहरा भँजाइ करउँ नेवछावरि, भतिजवा के ऊपर हो।
अस-तस जिनि जानेउ भउज रानी, भतिजवा बहुते हलफ कर हो,
भउजी, मोहरा करब नेवछावरि, तबहूँ न मोल चुकइ हो।
कँगना की जोड़ी पछेलिया, ननद मोरी पहिनइ, हँसत घर जाइ हो,
ननदी भरि मुख देहु असीस, झलरिया मोरी रोपउ हो।

आँगन में खड़ा अमुक बालक सबसे पुकार-पुकार कर कह रहा है कि जो कोई शहर का नायक हो वह आकर मेरे केशों का मुण्डन करा दे!

उसका आजा उत्तर देता है—"मैं, तुम्हारा अमुक पितामह, शहर का नायक हूँ। बेटा, मैं सोने का अस्तुरा गढ़ाऊँगा और तुम्हारे केशों का मुण्डन कराऊँगा!"

सोना का खड़ाऊँ पहन कर चलता हुआ अमुक भाई अपनी माँ से कहता

है—"माँ, बहन को बुला लो, वे मुण्डन के समय केश अपने आँचल में रोपेंगी !"

माँ कहती है—"बेटा, रात रहते ही नाई भेजा, बड़े भोर में ही बारी को रवाना किया, किन्तु गर्व से मतवाली मेरी बेटी अभी तक नहीं आई !"

पति अपनी पत्नी से कहता है—"प्रिये, मुझे ढूँढ़ी और चटक रंग की पियरी दो। सोने की पालकी पर सोलहों बाजों के साथ मैं अपनी बहन को घर ले आऊँगा !"

ननद आई, भाभी उसका स्वागत करती हुई बोली—"ननद रानी, आओ, मेरे आँगन में बैठकर अपने भतीजे का केश आँचल में लो और मज़दूरी के रूप में दो अढ़ैया चावल ले लो !"

ननद उत्तर देती है—"भाभी, केश बटोरने पर तुमको नेग में मुझे पाँच मुहरें देनी पड़ेंगी। मैं और दूसरी मज़दूरी नहीं लूँगी !"

भाभी तड़प कर बोली—"ननद, ऐसा ही है तो तुम पाँच मुहरें भुना कर भतीजे के नाम पर न्योछावर करके बाँट दो।"

ननद ने जवाब दिया—"भाभी, तुम कुछ ऐसा-वैसा मत समझना। मेरा भतीजा बड़ी मान-मनौती के बाद पैदा हुआ है। उसके ऊपर मैं मुहरें निछावर कर दूँगी। तब भी उसकी क़ीमत नहीं अदा होगी।"

भाभी प्रसन्न होकर बोली—"ननद रानी, एक जोड़ी कंगन और पछेला पहन कर तुम हँसती हुई घर जाना। आज मेरे पुत्र के केश रोप कर उसे मुक्त-कण्ठ से आशीर्वाद दो !"

(७२)

छोटइ पेड़ कदम कर, पतवन झापस,
तेहि तर ठाढ़ी कवनि देई देवा मनावइँ हो।
जौ तुम बरसउ देवा, पटुक मोरी भीजइ, सासु मोरी खीझइँ हो,
देवा, तबहूँ न गये बिन रहबइ, बीरन घर मूड़नि हो।
अँगना बटोरत चेरिया त बाप की नउनिया रे,
चेरिया लेउ न लाल पियरिया भउज आँगन सोहर रे।
आगे-आगे आवत भयेनवा, पाछे ननद मोरी
अब लाले घोड़ है मोरा साजन, सोरहौ बजन से हो।

अब मोरे होइगा है मूड़न, अउर कन-छेदन हो,
बेटी अस गज गहिरे के माती, अँगन मोर नहिं आइउ रे।
की मइया भेजेउ नउवा रे, की भेजेउ बरिया रे,
माया की भेजेउ पिठिया के बीरन, गरभ मोरा देखेउ रे ?
बरिया त भेजेउँ भोरहीं, नउवा सगुन लेइ,
बेटी, भेजेउँ बँभना बेटवना, धिया मोरी आवइ हो।
जौ मोरी होतिउ मैया अरे दुख मोरा बुझतिउ हो,
मैया होइ गइउ मयरिया, दरद नहिं बूझउ रे।
सभवा से आये हैं बाबा अरे बेटी समझावत रे,
बेटी लेउ न आपन नेग हँसत घर जाउ रे।
सभवा से आयें बीरन भइया, बहिनी बोलावत रे,
बहिनी लेउ न आपन नेग भतिजवा कइ मूड़नि रे।

घने पत्तोंवाला छोटा-सा कदम का पेड़ है। अमुक देवी उसके नीचे खड़ी होकर देवताओं का स्मरण करती हुई कहती हैं--"भगवान्, चाहे तुम जितना भी पानी बरसो, भले ही मेरी साड़ी भींग जाय और मेरी सास मुझ पर क्रोध करे, तब भी मैं अपने भाई के घर जाने से बाज नहीं आऊँगी। उसके घर में मुण्डन है। मैं अवश्य ही जाऊँगी !"

एक दासी आँगन में झाड़ू लगा रही थी। स्त्री उससे बोली--"दासी, लाल पियरी ले आओ। मेरी भाभी के आँगन में सोहर हो रहा है। मैं वहाँ जाऊँगी !"

ननद को दूर से आती हुई देख कर भाभी बोली—"आगे-आगे भांजा आ रहा है। पीछे-पीछे मेरी ननद आ रही है। लाल घोड़े पर मेरा स्वामी आ रहा है और सोलहों बाजे बज रहे हैं।"

बेटी के घर आने पर उसकी माँ उलाहना देती हुई बोली--"बेटी, मेरे घर में मुण्डन और कर्ण-छेदन-संस्कार पूरे हो गये। किन्तु तुम इतनी मानवती हो कि मेरे आँगन में नहीं आई !"

बेटी ने उत्तर दिया--"माँ, न तो तुमने नाई भेजा और न बारी। मेरे भाई को भी तुमने मुझे बुलाने के लिये नहीं भेजा, फिर क्यों मेरे गर्व और मान का उलाहना दे रही हो !"

माँ ने सफ़ाई दी—"बेटी, मैंने सबेरे ही बारी को भेजा। नाई को भी शकुन देकर रवाना किया और फिर ब्राह्मण के लड़के को भेजा, ताकि तुम यहाँ आ सको !"

बेटी ने जवाब दिया—"यदि तुम मेरी असली माँ होतीं तो मेरा दुःख समझ सकतीं, किन्तु सौतेली माँ होने के कारण मेरी पीड़ा का तुम्हें किस प्रकार बोध हो सकेगा?"

सभा से आकर पिता बेटी को समझाने लगा—"बेटी, तुम अपने सारे नेग लो और हँसती हुई घर जाओ!"

सभा से आकर भाई बोला—"बहन, तुम अपने नेग लो, आज तुम्हारे भतीजे का मुण्डन हुआ है!"

(७३)

मैं पानी भरूँ हलकोरि, रेशम की डोरियाँ,
सोने के घयलवा जब सोहै रे, जब पातरि तिरिया होइ।
पातरि तिरिया जब सोहै रे, जब गोदी होरिलवा होय।
गोदी होरिलवा जब सोहै रे, जब गंगा पै मुँडन होय।
गंगा पै मूँड़न जब सोहै रे, जब छोटकी ननदिया होय।
छोटकी ननदिया जब सोहै रे, जब हाँथे में कंगन होय।
सोने के कंगना जब सोहै रे, जब सोनरा खसम तोरा होय।
सोनरा खसम भाभी जब सोहै रे, जब हिजड़ा बीरन तोरा होय।

मैं रेशम की रस्सी से डभकोर कर पानी भरूँगी!

सोने का घड़ा तब अच्छा लगता है जब उसे हाथ में लेनेवाली कामिनी पतली और छरहरे बदन की हो!

पतली कामिनी तब अच्छी लगती है जब उसकी गोद में बच्चा हो!

गोद का बच्चा तब अच्छा लगता है जब गंगा के तट पर उसका मुण्डन हो!

गंगा तट पर बालक का मुण्डन उस समय अच्छा लगता है जब साथ में छोटी ननद हो!

छोटी ननद उस समय शोभा देती है, जब उसके हाथ में कंगन हो!

भाभी ननद से कहती है—"ननद, सोने का कंगन उस समय शोभा देता है, जब तुम्हारा ब्याह सोनार के साथ कर दिया जाय!"

ननद उत्तर देती है—"भाभी, सोनार के साथ मेरा ब्याह तब अच्छा लगेगा, जब किसी हिंजड़े को तुम अपना भाई बना लो!"

(७४)

जौ पूत रहिहैं बार और गभुवार,
खेतवन गोहुँवा बोवावइँ, बाबा तुम्हार।
खेतवन गोहुँवा बोवावइँ, चाचा तुम्हार।
उड़त चिरइया नाहीं पकड़इँ, बाप तुम्हार,
सँकरी गलिया नहिं जइहैं, बाप तुम्हार।
जौ पूत रहिहैं बार और गभुवार,
नित कइ सोहरिया पोवावइँ, दादी तुम्हार
मोटी-मोटी पुड़िया पोवावँइ, चाची तुम्हार।
बड़े-बड़े लेड़ुवा बँन्हावँइ, बुआ तुम्हार,
सोने-रूपे लोइया जे लेइहैं, बुआ तुम्हार।
अँगने में झगड़ा पसारउँ, बुआ तुम्हार।
जौ पूत रहिहैं बार और गभुवार।
सोने-रूपे छुरवा गढ़इहइं, नाना तुम्हार।
हउदन पियरी रँगइहइं, नानी तुम्हार।
पहिली चउक लइ के अइहइँ, मामा तुम्हार।

माँ अपने पुत्र से कह रही है—"बेटा, यदि तुम्हारे सिर पर घने और घुंघराले बाल रहेंगे, तो तुम्हारे बाबा खेत में गेहूँ बोवायेंगे, तुम्हारे चाचा खेत में गेहूँ बोवायेंगे। तुम्हारे पिता उड़ती हुई चिड़िया को नहीं पकड़ेंगे। तुम्हारे पिता सँकरी गली में नहीं जायेंगे!"

"बेटा, तुम्हारे सिर पर घुंघराले बाल रहेंगे, तो तुम्हारी दादी नित्य नई पूड़ियाँ बनवायेंगी। तुम्हारी चाची मोटी-मोटी पूड़ियाँ बनवायेंगी। तुम्हारी बुआ बड़े-बड़े लड्डू बँधायेंगी! तुम्हारी बुआ सोने और चाँदी की लोइयाँ ले आयेंगी। आँगन में तुम्हारी बुआ खूब झगड़ा करेंगी!"

"बेटा, अगर तुम्हारे सिर पर घुंघराले बाल रहेंगे, तो तुम्हारे नाना सोने और चाँदी के छूरे गढ़ायेंगे। तुम्हारी नानी हौदों में पियरी रँगायेंगी। तुम्हारे मामा पहली चौक की पियरी और भेंट लेकर आयेंगे।"

सरग भबन्तुलि चिरई, सरब गुन आगरि,
चिरई, जँहँ पठवउँ, तँहँ जाउ, नेवत दइ आवउ हो !
सभवइँ नेवतेउ ननदोइया, रसोइयाँ ननद रानी,
छुटे बन्द नेवतेउ भयनवाँ, तीनिउँ जन आवँइ हो।
घोड़वा जउ आवइ ननदोइया, डँड़िया ननद रानी,
छुटे बन्द आवइ भँयनवाँ, मँड़ौना मोर भरि गये हो।
आवउ ननद गोसाइँ, बड़ी हो ठकुराइनि,
ननदी बइठउ न माँझ मँड़वना, झलरिया मोरि पोरवउँ।
जउ भउजी झालरि पोरवउँ, अँचरा परीछउँ,
पाँच मोहर मोर नेग, अढ़इया दुइ चाउर हो,
भितरा से बोलइँ भउज रानी, गुधुन - गुधुन करइँ,
ननदी, एक टका तोरा नेग, परइया दुइ चाउर हो।
सभवा से उठे हैं बिरन भइया, हड़पि - तड़पि बोलइँ,
बहिनी पाँच मोहर हम देब, अढ़इया दुइ चाउर हो।

बहू आकाश में उड़नेवाली एक चिड़िया से निवेदन कर रही है—"चिड़िया, तुम सभी गुणों में पारंगत हो। मैं तुम्हें जहाँ भेजूँ वहाँ जाकर निमंत्रण दे आओ।"

"सभा में जाकर तुम मेरे ननदोई को निमंत्रण देना। रसोई में मेरी ननद को और छुटे बन्दवाले भांजे को निमंत्रण देना और कहना कि तीनों लोग एक साथ आयें !"

"घोड़े पर बैठ कर मेरा ननदोई आ रहा है। पालकी में बैठ कर ननद रानी आ रही हैं। छुटे बन्द वाला भांजा आ रहा है। सब के आने से मेरे आँगन में भीड़ लग गई है।"

"ननद रानी, आओ मेरे मंडप में बैठ कर झालर रोपो !"

ननद कहती है—"भाभी, यदि मैं झालर रोपूँगी और आँचल में उसे परछूँगी तो पाँच मुहर और दो अढ़ैया चावल मेरा नेग होगा !"

भीतर से भाभी भुनभुनाती हुई कह रही है– "ननद, तुम इतना क्यों माँग रही हो ? एक टका और परई-भर चावल ही तो तुम्हारा नेग होता है !"

यह बात सुनने पर सभा से उठ कर भाई तड़पता हुआ कह रहा है-- "बहन, तुम घबराना नहीं। तुम्हारे नेग के रूप में मैं पाँच मुहरें और दो अढ़ैया चावल तुम्हें दूँगा।"

(७६)

ऐपन कर अस लेड़ुवा, ननदिया के पठएउँ,
ननदी मसकि के बइठीं मोर लेड़ुवा, आँगन नहिं आवइँ हो !
मचियह बइठीं हैं सासु तउ बिनवइँ दुलहिन देई,
सासु केसे मँइ झलरी पोरवावउँ, ननद नहिं आवँइ ?
की बहुवा पठएउ नउवा, की रे बहुवा बरिया,
बहुवा की बेदनइता बिरनवाँ, गरब तुहुँ उलपेउ ?
नउवा मँइ पठएउँ नेवत लइके, बरिया सनेस लइके,
सासु लिल्ले घोड़ी सइयाँ असवार, तबहुँ नहिं आवइँ !
घोड़वइ आवइ ननदोइया, डँड़िया ननद रानी,
गंगा-जमुनी का पड़ा है ओहार, ननद मोरी आवइँ !
आवउ न ननद गोसाइँ, बड़ी हो ठकुराइनि,
ननदी बइठउ न माँझ मँड़ौना, झलरिया मोरि परछउ हो।
जउ मँइ जनतेउँ बतिया, भउज बैना उटकइ,
मँइ तउ बड़े बड़े लेंड़ुवा बँन्हवतिउँ, बैना तोर फेरतिउँ !

मचिया पर बैठी हुई सास से बहू निवेदन कर रही है--"मैंने ननद को ऐपन का लड्डू भेजा, लेकिन वे उसे चुपचाप खाकर अपने घर में ही बैठी रहीं, मेरे आँगन में नहीं आयीं। अब मैं किससे पुत्र की झालर पोरवाऊँगी ?"

सास ने पूछा--"बहू, तुमने नाई, बारी या स्नेही भाई को उसे बुलाने के लिये भेजा था या यों ही उसके दम्भ का उलाहना दे रही हो ?"

बहू ने उत्तर दिया--"नाई निमंत्रण लेकर और बारी संदेशा लेकर गया था। लिल्ली घोड़ी पर बैठकर मेरा स्वामी भी उन्हें बुलाने गया था। तब भी वे नहीं आयीं।"

थोड़ी देर के बाद ही बहू ने देखा कि घोड़े पर उसका ननदोई आ रहा है। पालकी में ननद आ रही है। उसकी पालकी में गंगा-जमुनी रंग के परदे लगे हैं।

ननद का स्वागत् करती हुई बहू बोली--"ननद रानी, आओ, मेरे मंडप में बैठो और अपने भतीजे की झालर परछो।"

भाभी द्वारा उपहार के लिये उपालम्भ दिये जाने पर ननद बोली--"भाभी, यदि मुझे पहले से मालूम होता कि तुम मेरी भेंट का उलाहना दोगी तो मैं बड़े-बड़े लड्डू बाँधती और तुम्हारी भेंट के उत्तर में ढेर का ढेर बायन लेकर आती।"

(७७)

सोने के खड़उवाँ बिरन भइया, चुटुर-चुटुर चलइँ हो,
कहाँ बसइँ बहिनी कवनि देई, झलरिया मोरि परछइँ ?
जउ भइया झालरि परछउँ, परछि के देखावउँ,
भइया सोने का कँगनवाँ हम लेब, झलरिया तोरि परछब हो।
अइसी हठीली ननदिया, हमइँ नहिं भावइ,
ननदी एक टका तोर नेग, परइया दुइ चाउर हो !
सभवाँ से उठे हैं बिरन भइया, हड़पि - तड़पि बोलइँ,
बहिनी सोने का कँगनवाँ हम देब, झलरिया मोरि परछउ।
गरुहे सजनवाँ का पूत तउ गरुहरि बचन बोलइ,
वहि हरजोतवा कइ धेरिया, हलुकी बचन बोलइ।
की बहिनी पहिरउ सुआ सारी, की बहिनी रातुल,
बहिनी की तुम लहर-पटोर, झलरिया मोरि परछउ।
ना भइया पहिरब सुआ सारी, ना भइया रातुल,
भइया पहिरब हरदी पियरिया, झलरिया तोरि परछब।

सोने का खड़ाऊँ पहन कर अमुक भाई खटर-पटर चलता हुआ पुकार रहा है--"मेरी अमुक बहन कहाँ है ? शीघ्र आकर मेरे मंडप में झालर परछे !"

बहन कहती है--"भाई, यदि मैं झालर परछूँगी तो तुमको मुझे सोने का कंगन देना पड़ेगा।"

बहू हस्तक्षेप करती हुई बोली--"ऐसी झगड़ालू ननद मुझे अच्छी नहीं लगती। एक टका और परई भर चावल ही तो उसका नेग होता है।"

सभा से उठ कर भाई आया। बहू को फटकारता हुआ बहन को आश्वासन देने लगा--"बहन, तुम झालर परछो! मैं तुम्हें सोने का कंगन दूँगा!"

ननद अपनी भाभी को उलाहना देती हुई बोली--"देख भाभी, बड़े बाप का बेटा हमेशा बड़ी बातें ही बोलता है, लेकिन तुम हलवाहे की पुत्री होने के कारण हमेशा कंजूसी की बातें करती हो।"

भाई ने बहन से पूछा--"बहन, बताओ, हरे रंग की साड़ी, रातुल अथवा लहँगा धोती में तुम क्या लेना पसन्द करोगी?"

उसने उत्तर दिया--"भाई, न तो मैं हरे रंग की साड़ी लूँगी और न मुझे रातुल की ही अभिलाषा है। मैं तो झालर रोपने के बदले में तुमसे केवल एक पीली पियरी ही पाना चाहती हूँ।"

(७८)

झबरे-झबरे बाल होरिलवा के,
भुवरे-भुवरे बाल होरिलवा के,
कुरता चूमौं, टोपी चूमौं,
और चूमौं गोरे गाल होरिलवा के।
चटुवा चूमौं, झुनझुना चूमौं,
और चूमौं गोरे गाल होरिलवा के।
जब लालन के मूड़न होइहैं
बाबा पटना लुटावैं होरिलवा के।
जब लालन आँगन में खेलिहैं,
दादी बलि-बलि जाये रे होरिलवा के।

बच्चे के झबरे-झबरे बाल हैं, भूरे-भूरे बाल हैं।
मैं उसके कुरते, टोपी और गोरे गाल का चुम्बन लूँगी!
मैं उसके चटूटू और झुनझुने को चूमती हुई बार-बार उसके गोरे गाल का चुम्बन लूँगी!

मेरे लाल का जब मुण्डन होगा, तो उसके बाबा वस्त्र लुटायेंगे। मेरा लाल जब आँगन में खेलेगा, तो दादी उसकी बलैया लेंगी।

(इसी प्रकार परिवार के सभी स्त्री पुरुषों का नाम लेकर गाया जाता है)

(७९)

माया बहिनि मोरि कतहूँ देखिउ,
मोर अरसी का फुलवा, झालर साँवर हो?

देखेउँ मँइ देखिउँ, आजा बाबा चौपारि,
सब दादी औ पुरखिनि आरती उतारि।

आरती उतारन ठाढ़ी, बलि बलि जाँय,
तुँहुँ जीवो कवन लाल, लाख बरीस।

बहू अलसी का फूल खोजती हुई परिवार की सभी स्त्रियों और अपनी सगी सहेलियों से पूछ रही है—"मेरी माताओं और बहनों, क्या कहीं आप लोगों ने मेरा साँवला और लहराता हुआ अलसी का फूल देखा है?"

सब बताती हैं—"हाँ, हाँ! मैंने आजा और बाबा के चौबारे में तुम्हारा अलसी का फूल देखा है। दादी और परिवार की बड़ी-बूढ़ियाँ उसकी आरती उतार रही हैं। आरती उतारती हुई दादी बलैया ले रही हैं। आशीर्वाद दे रही हैं—"अमुक लाल, तुम लाख बरस तक जीते रहो!"

(इसी प्रकार परिवार की समस्त स्त्रियों के नाम के साथ यह गीत गाया जाता है।)

(८०)

अरे अरे नउवा बढ़इते, आँगन मोरे आवउ,
नउवा सोने रुपे छुरवा निकारउ, कवन लाल मूड़नि हो।
जउ मँइ छुरवा निकारउँ, कवन लाल मूड़नि,
रानी, लेबेउँ मँइ हाँसिल घोड़, हाँथ कर तोड़उ हो।

गम करु नउवा रे गम करु, नहछू बटोरउ,
नउवा देवइ मँइ हाँसिल घोड़, रहँसि घर जाएउ हो।
बाढ़इ रानी तोर नइहर, बाढ़इ तोर सासुर,
रानी बाढ़इ तोरि गोदी का होरिलवा, नउवा जे घोड़ चढ़इ।

माँ अपने पुत्र के मुण्डन के लिये नाई को पुकारती हुई कह रही है--"हे भाई नाई, मेरे आँगन में आओ। सोने और चाँदी का छूरा निकालो और मेरे अमुक लाल का मुण्डन करो!"

नाई कहता है--"रानी मैं अपने पारिश्रमिक के रूप में एक हासिल घोड़ा और हाथ का छल्ला लूँगा, तब मुण्डन करूँगा!"

"धैर्य रक्खो, मेरे नाई, तुम पहले नहछू बटोर लो, फिर मैं हासिल घोड़ा भी तुम्हें दूँगी और तुम हँसते हुए अपने घर जाओगे!"

नाई आशीर्वाद देता हुआ कह रहा है--"रानी तुम्हारे मायके और ससुराल की वृद्धि हो। तुम्हारे उस पुत्र की लम्बी उम्र हो, जिसके मुण्डन में मुझे घोड़ा चढ़ने को मिला!"

(८१)

झालरि आम अमिलिया, झलरिया जवा कर खेत,
झलरिया जगि रोपउ।
काहेनि पोरवेउ कवने लाल, काहेन पोरवेउ झालरि,
झलरिया जगि रोपउ?
घिउ गुर पोरवेउँ कवन लाल, तेल फुलेल लइ झालरि,
तोहरिनि झालरि कवन लाल, भँवर जाइ बइठइ हो।
निसरु निसरु लोने भँवरा, तोरि रितु आयी नेचकइ।
सभवा बइठें आजा-बाबा, कवन लाल झगड़ा पसारइँ,
मुड़ावउ बाबा झालरि, छेंके लिलार सब हो।
मचियइ बइठीं आजी-चाची, कवन लाल झगड़ा पसारइँ,
मुड़ावउ दादी झालरि, छेंके लिलार सब हो।
मोटी-मोटी पुरिया पोवावउ, मुड़ावउ दादी झालरि।

मचियइ बइठीं बुआ जीजी, कवन लाल झगड़ा पसारइँ,
मुड़ावउ बुआ झालरि, मोतीचूर लड़ुवा बँधावउ हो।
मचियइ बइठीं नानी मामी, कवन लाल झगड़ा पसारइँ,
मुड़ावउ नानी झालरि, हउदन पियरी रंगावउ,
सोने रुपे छुरवा गढ़ाउ, मुड़ाउ मामी झालरि हो।

माँ अपने पुत्र के बालों की लटों की प्रशंसा करती हुई कह रही है—"केश की लटें आम और इमली की भांति हैं, जौ के खेत की भांति हैं। मैंने इनके लिये आज यज्ञ का अनुष्ठान किया है!"

एक सखी पूछ रही है—"क्या खिलाकर तुमने पुत्र को बड़ा किया? किस प्रकार केश की लटों का पोषण किया?"

"अमुक लाल को मैंने घी-गुड़ खिलाकर बड़ा किया। तेल और फुलेल से केश की लटों का पोषण किया!"

"अमुक लाल, तुम्हारे केशों में एक भौंरा बड़े मज़े में बैठा है!"

"सुन्दर भौंरे, बाहर निकल आओ। अब तुम्हारी ऋतु का अन्त निकट आ गया है। अब तुम्हारे जाने का समय बिल्कुल पास आ गया है।"

सभा में सभी आजा बाबा बैठे हैं। अमुक पुत्र झगड़ रहा है—"बाबा, मेरे केश का मुण्डन करा दो। इसने मेरा माथा छेंक रखा है।"

मचिया पर आजी और चाची बैठी हैं। अमुक पुत्र झगड़ रहा है—"दादी, मेरा केश मुँड़ा दो। मेरे लिये मोटी-मोटी पूड़ियाँ बनाओ और मेरा मुण्डन करा दो!"

मचिया पर बैठी हुई बुआ और जीजी से भी बालक मचल कर कह रहा है कि, "मेरा मुण्डन करा दो और मेरे लिये मोतीचूर के लड्डू बनाओ!"

मचिया पर बैठी हुई नानी और मामी से भी बालक कह रहा है—"नानी, मेरा मुण्डन करा दो और हौदों में पियरी रंगाओ। सोने और चाँदी का छूरा गढ़ाओ और मेरी लटों का मुण्डन करा दो!"

(८२)

अरे अरे दादी सेतुआ करउ, चाची गठरी करउ,
कासी बनारस जावइ, उहीं करबइ मूँड़नि हो।

काहे के पोता सेतुआ करउँ, काहे के गठरी करउँ,
बाबा तुमरे लखपतिया, घर हीं मुँड़नि करइँ हो ।
चाचा तुम्हारे लखपतिया, घर हीं मुँड़नि करइँ हो ।
अरे अरे मामा सेतुआ करउ, मामी लेंड़ुवा करउ,
कासी बनारस जाबइ, उँहइँ मुँड़नि करब हो ।
काहे के बेटा सेतुआ करउँ, काहे के लेंड़ुवा करउँ,
बाबू तुम्हारे लखपतिया, घर हीं मुँड़नि करइँ हो ।

अपने केशों के मुण्डन के लिये आकुल बालक परिवार के सभी सम्बन्धियों से कह रहा है—"मेरी दादी, सत्तू तैयार करो। मेरी चाची, गठरी बाँधो। मैं काशी जाऊँगा, वहीं अपना मुण्डन कराऊँगा !"

दादी कहती है—"नाती, तुम क्यों सत्तू तैयार करने की बात कहते हो ? क्यों गठरी बाँधने की बात करते हो ? तुम्हारे बाबा लखपती हैं। वे घर में ही तुम्हारा मुण्डन करायेंगे ! तुम्हारे चाचा लखपती हैं। वे घर में ही तुम्हारा मुण्डन करायेंगे।"

बालक यही बात मातृ-पक्ष के सम्बन्धियों अर्थात् मामा और मामी से भी कहता है और उनसे भी उसे यही उत्तर प्राप्त होता है।

बरुआ

(८३)

माधइ बरुआ सेइ चले, बइसाख पहुँचे,
मँइ तोंसे पूछउँ ए बरुआ, तुहुँ जाबेउ कवन घर हो ?
जाबेउँ मँइ जाबेउँ सेओहि घर, जहाँ बाबा कवन रामा हो,
आपन बेद पढ़इहइँ, पण्डित हमइँ करिहइँ हो ।
अपनिनि पँतिया बइठइहइँ, हमइँ उत्तिम करिहइँ हो।
अपनेनि कान्हें का जनेवना, हमइँ बाम्हन करिहइँ हो।
भीख दे माता असीस ले, मँइ तउ बरुआ बराम्हन हो,
मोतियन थार भरउबइ, भिखिया उठि डारब हो ।
अमवाँ की नइयाँ पूत बउरउ, अमिलिया एस लागउ हो,
पुरइनि अस पूत पुरवउ, कमल अस बिहँसउ हो !

कोई बालक अपने यज्ञोपवीत संस्कार के लिये उतावला हो रहा है। वह कहता है कि माघ का महीना बीत गया। वैसाख का महीना भी आ पहुँचा। अब मैं विश्राम नहीं करूँगा!

उसकी माँ पूछती है—"ब्रह्मचारी, मैं जानना चाहती हूँ कि तुम कहाँ के लिये चल पड़े हो?"

वह उत्तर देता है—"माँ, मैं वहाँ जाऊँगा, जहाँ अमुक नाम के बाबा रहते हैं। वे मुझे अपना वेद पढ़ाकर पण्डित बना देंगे। अपनी पंक्ति में बिठाकर वे मुझे पवित्र कर लेंगे और अपने कन्धे का जनेऊ पहनाकर मुझे ब्राह्मण बना लेंगे।"

"माँ, तू मुझे भिक्षा दे और मेरा आशीर्वाद ले। मैं ब्रह्मचारी ब्राह्मण हूँ।"

माँ कहती है—"पुत्र, मैं मोतियों से थाल-भर कर तुम्हें भिक्षा दूँगी। आम के वृक्ष की भांति तुम में बौर लगे। इमली की भांति तुम्हारा विस्तार हो। पुरइन की तरह तुम पूर्ण रहो और कमल की भांति सदैव हँसते रहो।"

(८४)

तीरेनि तीरे बरुआ फिरइँ, केउ पार लगवउ हो,
पठइ देउ बाबा कवन राम, नावरि चढ़ि आवउँ हो।

ना मोरे नाउ नेवरिया, नाहीं घर केवट,
जेकेर जनेवना कइ साध, पँवरि धाइ आवइ हो।

भीजइ मोर आटुल-पाटुल, पाउँ महावरि हो,
भीजइ मोर चन्दन-बन्धन, कान्हें कर जनेवनउ हो!

ब्रह्मचारी बालक नदी के किनारे-किनारे घूम रहा है। नदी पार उतरने के लिये दूसरों से सहायता की याचना कर रहा है—"अमुक बाबा, नाव भेज दो। मैं नाव में बैठकर उस किनारे आ जाऊँ!"

बाबा उत्तर देता है—"न तो मेरे पास नाव या डोंगी है और न कोई केवट। जिसे यज्ञोपवीत लेने की इच्छा हो, वह तैर कर इस किनारे चला आये!"

ब्रह्मचारी कहता है—"मेरा उत्तरीय भींग जायगा। पैरों की महावर छूट

जायगी। ललाट का चन्दन छूट जायगा और कन्धे का जनेऊ भी भींग जायगा।"

(इसी प्रकार परिवार के सभी सम्बन्धियों का नाम लेकर यह गीत गाया जाता है।)

(८५)

ऊँच ओसार नवल घर, जहाँ खम्भ खोदावल हो,
खम्भा ओट दादी कवनि देई, पिया से अरज करइँ हो।

सुनउ पिया सुनउ पिया पण्डित, बरुआ दइ देतेउ हो,
सुनउ धन, सुनउ धन सुन्दरि, बरुआ कुछु चाहित हो।

चाहित चन्दन-बन्धन, पाँचउ रतन पदारथ हो,
चाहित धोती अँगौछा, दस बाम्हन भोजन हो।

नये घर का ऊँचा ओसारा है। वहाँ एक खम्भा गड़ा है। उसकी ओट में अमुक दादी खड़ी हैं। वे अपने पति से विनती कर रही हैं—"स्वामी, बालक का बरुआ दो!"

दादा उत्तर देते हैं—"रानी, बरुआ के लिये अनेक सामग्री की आवश्यकता पड़ेगी। उसके लिये चन्दन, मूँज के बन्धन, पाँचों रत्न पदार्थ और धोती तथा अँगौछे की आवश्यकता है। इसके साथ ही दस ब्राह्मणों को आमंत्रित कर उन्हें भोजन भी कराना होगा।"

(इसी प्रकार परिवार के सभी सम्बन्धियों का नाम लेकर यह गीत गाया जाता है।)

(८६)

जेहि बन सिकिया न डोलइ, बघवा न गरजइ हो,
सेहि बन पइठे कवन बाबा, काटइँ परस डण्डा हो।

मोरे घर तपसी कवन राम, ओन्हइ चाही परस डण्डा हो,
हमरे दुलरुवा के जनेउ, ओन्हइँ चाही मिरिग छाला हो,

जिस बन में (हवा के अभाव में) एक पत्ता भी नहीं डोलता और बाघ भी नहीं गरजता है, उसी बन में पिता पलाश का दण्ड काटने के लिये और मृगछाला खोजने के लिये चल पड़ा।

वह कहता है कि मेरे पुत्र का जनेऊ होने वाला है। उसके लिये पलाश-दण्ड की आवश्यकता है। उसके लिये मृग चर्म का प्रबन्ध करना है।

यज्ञोपवीत के अवसर पर ब्रह्मचारी को पलाश का दण्ड धारण करने के लिये तथा मृगछाला पहनने के लिये दिया जाता है। इस गीत में इसी रीति का संकेत किया गया है।

(८७)

कुइयाँ जगत पर मुँजिया क थन्हवाँ, जहँवा कवन लाल नहाइँ हो,
कोरवा के दुलहे राम मचलि कहतु हैं, बाबा, हम लेबइ पियरी जनेउ हो,
झारेनि पोंछेनि जाँघ बइठाएनि, पोता हम देबइ सोने का जनेउ हो,
पोता हम देबइ मूँजे का जनेउ हो !

कुएँ की जगत पर मूँज का एक थान है। अमुक बालक वहाँ स्नान कर रहा है। अपने पितामह की गोद में बैठा हुआ दूल्हा मचल-मचल कर कह रहा है—"बाबा, मैं पियरी और जनेऊ लूँगा !"

पितामह ने धूल पोंछ कर उसे गोद में बिठाते हुए कहा—"नाती, मैं तुम्हें सोने का जनेऊ दूँगा, मैं तुम्हें मूँज का जनेऊ दूँगा !"

(८८)

जेठ तपइ दुपहरिया, सिर घाम लगतु हइँ हो,
मँड़ए में ठाढ़ कवन राम, सिर घाम लगतु हइँ हो।
अरे अरे बाबा कवन राम, सोन-छत्र धरावनु हो,
मँड़ए में ठाढ़ दुलहे राम, सिर घाम लगतु हइँ हो।
अरे अरे आजी कवन देई, सिर आँचर डारउ हो,
मोरे घर तपसी कवन राम, सिर घाम लगतु हइँ हो।

आँगन में पुत्र का यज्ञोपवीत हो रहा है। गरमी की तेज धूप उसके

सुकुमार शरीर पर पड़ रही है। स्त्रियों का वात्सल्य फौवारे की जल-धाराओं की भांति सहसा फूट पड़ता है--

जेठ की दुपहरी तप रही है। अमुक बालक मण्डप में खड़ा है। उसके सिर पर धूप पड़ रही है। हे अमुक पितामह, उसके सिर पर सोने का छत्र तनवा दो! हे अमुक दादी, उसके सिर पर अपना आँचल फैला दो। मेरे घर में अमुक दूल्हे ने तपस्वी का वेश धारण किया है। उसके सिर पर धूप लग रही है।

(इसी प्रकार परिवार के सभी स्त्री पुरुषों का नाम लेकर यह गीत गाया जाता है।)

(८९)

अरे अरे आजी सेतुआ करउ, अउर लेड़ुन करउ,
बेद पढ़न हम जाबइ, कासी - बनारस हो।
काहे के पूत सेतुआ करइँ, काहे के लेड़ुवा करउँ,
बाबा तुम्हारे हैं पण्डित, घरहिं पढ़ावइँ हो।

ब्रह्मचारी बालक विद्याध्ययन के लिये काशी जाने की तैयारी कर रहा है। घर के सभी सम्बन्धियों में वह कहता है--"दादी, सतुवा तैयार करो, लड्डू और मठरी तैयार करो। मैं वेद पढ़ने के लिये काशी जाऊँगा!"

दादी उत्तर देती है--"बेटा, सतुआ और लड्डू तैयार करने की क्या आवश्यकता है? तुम्हारे पितामह विद्वान् और पंडित हैं। वे तुम्हें घर पर ही सारे वेद पढ़ा देंगे!"

(इसी प्रकार परिवार के सभी सम्बन्धियों के नाम के साथ यह गीत गाया जाता है।)

जनेऊ

(९०)

सभवइ से आए हइँ दसरथ, रनियाँ अरज करइँ हो,
साहेब बारेहिं बाटें मोर राम, जनेवना के भूखल हो,

एक हाथ लिहेनि हर बैल, दुसरे कपास लिहेनि हो,
रनियाँ, चलउ न गोंइड़ी कियरिया, कपास हम बोउब हो।

झुकि झुकि बोवइँ कपसिया, अँगुरियन फाँस गड़ी हो,
रनियाँ दुधवन सींचउँ खेत, अँगुरियन पीर मिटइ हो।

हरियरि पतियन बीच, कपास मोरि खिलि आई,
दइया दूध बरन है कपास, नजर केउ न लावइ हो।

ककही जे अवटइँ कपास, सुमित्रा हाँथ पूनी बरइँ,
राम, कातइँ, कौसिल्या रानी सूत, जनेवना के खातिर हो।

आधे आँगन बइठे हैं गुरु जन, आधे वशिष्ट मुनि,
चउके प बइठे चारिउ भइया, जनेवना करावइँ हो।

राजा दशरथ के राजसभा से उठकर रनवास में आने पर रानी कौशल्या उनसे निवेदन करने लगीं—"राजन् मेरे राम अभी क्वांरे ही हैं। उनका यज्ञोपवीत करने का समय आ गया है।"

एक हाथ में हल और दूसरे हाथ में कपास लेते हुए राजा दशरथ बोले—"रानी मेरे साथ निकटस्थ खेत में चलो। हम लोग कपास बोयेंगे।"

रानी कौशल्या झुक-झुक कर कपास बो रही थीं। उनकी उँगली में फाँस चुभ गयी। दशरथ बोले—"रानी, मैं दूध से यह खेत सिंचाऊँगा। फिर तुम्हारे हाथ में फांसें नहीं चुभ सकेंगी।"

हरे-हरे पत्तों के बीच कपास के फूल खिल आये। उनमें दूध जैसे सफेद सफेद रेशे पड़ने लगे। कपास के फूल बहुत सुन्दर लग रहे हैं। बचाना है, उन्हें कहीं कोई नज़र न लगा दे।

कैकेयी कपास ओट रही हैं। सुमित्रा जी अपने हाथ से पूनियाँ बना रही हैं और यज्ञोपवीत तैयार करने के लिये कौशल्या जी (तकली पर) सूत कात रही हैं।

आधे आँगन में बड़े-बड़े सम्बन्धी जन बैठे हैं। आधे भाग में वशिष्ट महाराज विराजमान हैं और राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न आदि चारों भाई यज्ञोपवीत कराने के लिये चौक में बैठे हुए हैं।

ब्याह के समय के स्तुति-गीत

गलियइ गलिया फिरइँ भवानी, खोरिया खोरिया पूछइँ बात,
केकरे दुलरुवा कइ इहाँ जगि रोपी, हम जगि देखन जाब !

दशरथ राम दुलरुवा कइ इहाँ जगि रोपी, हम जगि देखन जाब।

आवउ भवानी, बइठउ मोरे अँगना, देबइ सतरँगिया बिछाइ,
घिउ गुर कइ मइया होम करउबइ, मोरि जगि पूरन होइ।

दहिया दहेड़ी मइया अँगने धरउबइ, मोरि जगि पूरन होइ,
सोने के कलसवा पर दियना बरउबइ, मोरि जगि पूरन होइ,

भवानी गली-गली घूम रही हैं। बाट-बाट के लोगों को बुला कर पूछ रही हैं—"यहाँ किसके पुत्र के विवाह का यज्ञ हो रहा है ? मैं यह यज्ञ देखने जाऊँगी !"

"क्या यहाँ दशरथ के पुत्र राम के विवाह का यज्ञ हो रहा है ? मैं यह यज्ञ देखने जाऊँगी !"

"भवानी, आप आयें। मेरे आँगन में बैठें, आपके आसन के लिये मैं सतरंगी दरी बिछा दूँगी। घी और गुड़ का होम कराऊँगी। आपकी कृपा से मेरा यज्ञ पूरा हो !"

"माँ, दही की दहेड़ी आँगन में रखूँगी। स्वर्णकलश पर दीपक जलाऊँग। आपको कृपा से मेरा यज्ञ पूर्ण हो !"

(९२)

गावउँ माता रे गावउँ भवानी, लेउँ सातउँ बहिनी कर नाउँ,
तोहरी सरन मइया मँइ जगि रोपेउँ, मोरि जगपूरन होइ।

गावउँ मँइ माता रे, गावउँ भवानी, लेउँ विंध्याचल कर नाउँ,
तोहरी सरन मइया मँइ जगि रोपेउँ, मोरि जगि पूरन होइ।

गावउँ मँइ माता रे, गावउँ भवानी, लेउँ सीतला मइया कर नाउँ,
तोहरी सरन देबी मँइ जगि रोपेउँ, मोरि जगि पूरन होइ।

माता का नाम लेकर गा रही हूँ। भवानी का नाम लेकर गा रही हूँ।

सातों बहनों का नाम ले रही हूँ। माँ, आपकी शरण में मैंने यज्ञ का अनुष्ठान किया है। आपकी कृपा से मेरा यज्ञ पूर्ण हो!

(इसी प्रकार देवी के विभिन्न नामों से उनकी अस्तुति की जाती है।)

चौक का गीत

(९३)

चारि चउक मँइ देखेउँ, चारिउ सोहावनि,
पँचईं चउक मँइ देखेउँ, दसरथ आँगन हो,
सेहि चौक बइठे राजा रामचन्द्र, रानी सितल देईं,
रनियाँ पूजइ लागीं गउरी गनेस अउ लछिमी नरायन।
पूजि पाटि जब लउटीं, खुसी भये नरायन,
रनियाँ बाढ़इ तोरे माँग का सिंदूर, जियइ तोर लालन।

चार चौकें मैंने देखीं। चारों सुन्दर थीं। पाँचवीं चौक मैंने राजा दशरथ के आँगन में देखी। वहाँ राम और सीता वर-वधू के रूप में समासीन हैं। रानी (कौशल्या) पार्वती, गणेश और लक्ष्मी नारायण की पूजा कर रही हैं। पूजा समाप्त कर ज्यों ही चलने को हुईं, नारायण ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया—"रानी, तुम्हारे माँग का सिन्दूर अमर हो! तुम्हारा पुत्र चिरंजीवी हो!".

(९४)

सभवइ बइठे राजा दशरथ, सीता अरज करइँ हो,
ससुर, नइहर नउवा के पठवउ, पियरिया लइके आवइ।
नइहर - नइहर जिनि करउ, नइहर दूरि बसइ,
बिरना बिदेस बसइ।
बहुवा घरहीं में पियरी रँगउबइ, पहिरि चौक बइठिउ हो,
तोहरी पियरिया सासु निति कइ, निति उठि पहिरब,
ससुरू, भइया कइ पियरिया अलफ कइ, पहिले चउक कइ हो।

सभा में राजा दशरथ बैठे थे। सीता ने उनसे प्रार्थना की—"राजन्, मेरे मायके की पियरी लाने के लिये नाई भेजिये!"

दशरथ ने उत्तर दिया—"बहू, तुम अपने नैहर की बात क्यों कर रही हो? वह तो बहुत दूर है। तुम्हारा भाई भी परदेस में रहता है। मैं तुम्हारे लिये घर में ही पियरी रँगा दूँगा। वही पहन कर तुम चौक में बैठना!"

सीता बोलीं—"आपकी रँगाई पियरी तो नित्य ही पहनती हूँ, किन्तु पहली चौक में तो भाई की ही पियरी पहनी जाती है।"

(६५)

पहिली चउक के अवसर, पियरिया नहिं भेजइँ,
बहुवा पथरा कइ तोरि मइया, पथरवा के बीरन रे!
बहुवा बेंचतेनि नाक-नक बेसरि, बाबा कर डिहवा,
बिरन तोर अउतइ, पियरिया लियउतइ रे।
नइहर न भेजेउ नउवा, नाहीं अरे बरिया,
सासु नहिं लिखि भेजेउ पतिया, बिरन कइसे आवइ।
सासु सात समुन्दर पार नइहर, बिरन कइसे आवइ हो?
सरग चिरइया अरे भेजतिउ, पवन कइ धेरिया,
बहुवा, भेजि देतिउ कारी बदरिया, बदरिया तोरि साथिनि।
बिरन तोर अउतइ, गठरिया दुइ लउतइ,
बहुवा, देखि के जियरा जुड़ातइ, पियरिया एक गहबरि हो।
सरग उड़न्ती चिरइया, अकसवा उड़ि जातिउ,
अरे बदरी तउ लागउ मोरि बहिनी, तनिक चलि आवउ रे!
बदरी बरसउ न जाइ मोरे नइहर, भइया के कोंछवा रे,
बिरन मोर अउतइ, पियरिया लइ गहबरि हो।
बेंचेनि ढाल तरुवरिया, बाबा कर डिहवा रे,
बेंचेनि आपनि पगड़िया, आउर नक - बेसरि रे,
बहिनी पहिरउ हँसि के पियरिया, बिरन तोर लाएउ,
सासु पहिरावइ रे।

हँसि के जे पहिरउ पियरिया, बिहँसि मुख बोलउ,
बहुवा, बाढ़इ निति तोर नइहर, अमवा जस बउरइ हो।

चौक पूजते समय बहुयें नेहर से भाई की लाई हुई पियरी ही पहनती हैं।

पूजा का अवसर निकट आ गया, किन्तु एक बहू का भाई अभी तक पियरी लेकर नहीं आया। उसकी सास उसे ताना मार रही है—"पहली ही चौक का अवसर है, किन्तु पियरी नहीं भेज रहे हैं। बहू, तुम्हारी माँ पत्थर की है। तुम्हारा भाई पत्थर का है। उसे चाहे अपनी बहू की नकवेसर या पिता की जमीन वेचनी पड़ती, किन्तु पियरी खरीद कर अवश्य ही ले आना था।"

बहू बोली—"आपने मेरे मायके न तो नाई भेजा और न बारी। एक चिट्ठी भी नहीं दी। मेरा भाई कैसे आये? सात समुद्र पार मेरा नैहर है। इतनी दूर से वह कैसे पियरी लाकर मुझे पहनाये?"

सास ने उत्तर दिया—"बहू, तुम आकाश में उड़ने वाले किसी पक्षी अथवा पवन दूती को भेज देती। काली बदली तो तुम्हारी बहन है। उसी को भेज देती। तुम्हारी माँ गहबर रंग की पियरी रंगाती। भाई लेकर आता। मैं उसे देखकर प्रसन्न होती।"

विवश बहू सबसे प्रार्थना करने लगी—"आकाश में उड़ने वाले पक्षी, तुम तनिक और दूर जाओ! काली बदली, तुम तो मेरी बहन हो, मेरे नैहर जाकर मेरे भाई के कोठे पर बरसो। मेरे भाई को सूचना दो कि वह गहबर रंग की पियरी लेकर आये!"

भाई ने ढाल-तलवार बेच दी। पिता की जमीन, अपनी पगड़ी और बहू की नकवेसर बेच दी। पियरी लेकर बहन के पास आया। उससे बोला—"बहन, प्रसन्न होकर पियरी पहनो। तुम्हारा भाई ले आया है न? तुम्हारी सास अपने हाथ से तुम्हें पहनायेंगी।"

सास प्रसन्न होकर बोली—"बहू, तुम पुलकित होकर पियरी पहनो। तुम्हारे नैहर का भाग्य उदित हो। आम के वृक्ष की भांति उसका प्रसार और विस्तार हो।"

(९६)

के मोरे नेवतइ अरिगन, राज दुवरिया रे,
के नेवतइ सातउ बीरन, जेन कइ दुलारी मँइ हो।

तोरे पिछवरवा जे नउवा, लागइ तोर बीरन,
हरदी कइ गँठिया जउ देतिउ, नेवति जग आवत हो।
बइठउ बिरन मोरे मँड़ए, माई कइ हाल बतावउ,
कइसे क भउजी अउ बहिनी, गउवाँ के लोग सब हो ?
कइसे क जीयत बाबा हैं, कइसे क बछरू-बखार रे,
सात समुन्दर पार बियहेउ, खबरिया नहिं पूँछउ रे।
माई तउ दिहिनि सात पियरी रे, भउजी जे चूनरि,
बाबा दिहेनि मोहर-कठुला, बेटी के खातिर रे।
हँसि के पहिरउ पियरिया, विहँसि मँइ लउटउँ,
माई जोहत होइहइँ राह, भउज मोंहि परखइँ हो।
हँसि के पहिरिनि पियरिया, कठुला हबेल रे,
जुग-जुग जियइ मोर बिरना, लाज मोरि राखेउ हो !
मान कइ पियरिया निति आवइ, भतिजवा का नेग।

बहन अपने भाई का स्मरण करती हुई कह रही है—"कौन मेरे स्वजन सम्बन्धियों और राजद्वार को निमंत्रित करे ? कौन मेरे उन सात भाइयों को निमंत्रण दे, जिनकी मैं बहन हूँ ?"

एक सखी सलाह देती है—"तुम्हारे पिछवाड़े नाई का लड़का रहता है। वह तुम्हारा भाई लगता है। उसे हल्दी की गाँठ और रंगा हुआ चावल दो। वह जाकर सब को निमंत्रण दे आयेगा !"

बहन का भाई उसके घर आ गया। मण्डप में बिठाकर वह उससे अपने मायके की कुशल छेम पूछने लगी—"भाई, माँ का क्या हाल है ? बाबा कैसे जी रहे हैं ? पशुओं और बछड़ों आदि का क्या हाल है ? तुमने सात समुन्दर पार मेरा ब्याह किया और कभी सन्देश भेजने की भी परवाह नहीं की !"

भाई उत्तर देता है—"बहन, माँ ने तुम्हारे लिए सात पियरियाँ भेजी हैं। भाभी ने अनेक चून्दर दिये हैं, और बाबा ने मुहर का कठुला भेज कर कहा है कि इसे मेरी बेटी को समझा बुझाकर दे देना ! तुम प्रसन्न होकर लाल पियरी पहनो और मैं भी हँसता हुआ घर वापस जाऊँ, क्योंकि माँ मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी, भाभी मेरी बाट जोह रही होगी।"

बहन ने पुलकित होकर लाल पियरी पहनी। हर्षित होकर गले में कठुला धारण किया और गद्गद् कंठ से भाई को आशीर्वाद देने लगी—"मेरी लाज रखने वाले भाई, तुम युगों तक जीते रहो। मेरे भतीजे के नेग के रूप में इसी प्रकार नित्य मान की पियरी लाते रहो।"

नेवता

(९७)

अरे अरे कारी कोइलिया, अँगन मोरे आवउ,
कोइलरि आजु मोरे पहिलइ बियाह, नेवत दइ आवउ।
नेवतेउ अरिगन, नेवतेउ परिगन, माई कर नइहर मोर ननियाउर,
कोइलरि, एक जिनि नेवतेउ बीरन, जेनसे मँइ रूठलि हो।
सासु भेंटइँ आपन बीरन, ननद आपन भइया,
कोइलरि मोरि छतिया भहराइ, मँइ केहि धाइ भेंटउ हो?
अरे अरे कारी कोइलिया, अँगन मोरे आवउ,
कोइलरि, फेरि से नेवतउ बीरन, अउर भउज रानी हो!
कोइलरि आजु मेरे पहलइ चउकिया, चउक नहि आवइँ हो।
अँगना वटोरत चेरिया, वावा कइ लउड़िया,
चेरिया देखि आवउ बिरना डगरिया, कतिक दूरि बाटेनि हो?
आगे - आगे आवइ ढुंढ़िया, पियरी गहाबरि,
रानी लिल्ली घोड़ी आवइ तोर बिरना, डँड़िया भउज रानी हो।
अरे - अरे सासु गोसाईं, बड़ी ठकुराइनि,
सासु, कँहवाँ उतारउँ ढुंढ़िया तउ पियरी गहाबरि हो?
सासु कँहवाँ बइठावउँ बिरन भइया, अउर भउज रानी हो?
सासु, कँहवाँ बइठावउँ भतिजवा, वहुत मोर दूलभ रे?
अँगना उतारउ ढुंढ़िया, पियरी गहावरि,
ओबरी बइठावउ भवज रानी, सभवा बिरन आपन हो,
बहुवा कोंछवा उठावउ भतिजवा, बहुत तोर दूलभ रे।

हँसि के पहिरउँ पियरिया, बिहँसि मुख बोलउँ,
सासु, भर मुख देउ असीस, सुफल फल पावउँ।
अमवाँ की नइयाँ बाढ़इ बीरन, अमिलिया जस छिछड़इ,
बहुवा, गंगा कइ धार बनि असीसउँ, दिनइ दिन बाढ़इ हो।

एक बहू कोयल को सम्बोधित कर उससे अपने सम्बन्धियों को निमंत्रण दे आने का निवेदन करती हुई कहती है--"हे काली कोयल, मेरे आँगन में आओ, आज मेरी पहली चौक का शुभ अवसर है, तुम जाकर मेरे सभी सम्बन्धियों को निमंत्रण दे आओ!"

"प्यारी कोयल, तुम सभी स्वजनों और कुटुम्बियों को, माँ के नैहर और मेरे ननिहाल के समस्त सम्बन्धियों को निमंत्रण देना, किन्तु केवल मेरे भाई को मत बुलाना, क्योंकि मैं उससे रुष्ट हूँ!"

"सास अपने भाई से मिल रही हैं। ननद अपने भाई को भेंट रही हैं। किन्तु प्यारी कोयल, मेरी छाती फटी जा रही है! मैं किसकी अगुवानी करूँ? मैं किसे दौड़कर भेटूँ?"

"हे काली कोयल, मेरे आँगन में आओ। पुनः जाकर मेरे भाई और मेरी भाभी को निमंत्रण दे आओ। आज मेरी पहली चौक का अवसर है। अगर मेरा भाई नहीं आयेगा, तो किस प्रकार मेरा अनुष्ठान पूरा होगा?"

आँगन में झाड़ू लगाती हुई दासी को सम्बोधित कर बहू कहने लगी--"हे मेरे ससुर की चेरी, जाकर मेरे भाई का रास्ता देख आओ! मेरा भाई आ रहा है!"

दासी उसे बताती है--"रानी, आगे-आगे कँहार बँहगी पर ढूँढ़ी और चटक पियरी लेकर आ रहे हैं। लिल्ली घोड़ी पर बैठ कर तुम्हारा भाई आ रहा है और पीछे-पीछे पालकी में तुम्हारी भाभी आ रही है!"

बहू अपनी सास से पूछती है--"सास रानी, मैं कहाँ ढूँढी और चटक पियरी उतारूँ? कहाँ अपने भाई को बिठाऊँ? कहाँ अपनी भाभी को और कहाँ अपने बहुत दिन पर आने वाले भतीजे को स्थान दूँ?"

सास कहती है--"आँगन में ढूँढी और गहबर पियरी उतारो! ओबरी में अपनी भाभी को बिठाओ। सभा में अपने भाई को स्थान दो और लाडले भतीजे को अपने गोद में उठा लो!"

बहू आगे कहती है—"सास जी, मैं पुलकित होकर पियरी पहनूँगी। प्रसन्न होकर तुमसे बातें करूँगी। हृदय खोलकर तुम मेरे भाई को आशीर्वाद दो, ताकि मेरी सारी मनोकामनाएँ भली भांति पूर्ण हों!"

सास अपनी बहू के भाई को आशीर्वाद देती हुई कहती है—"बहू, आम की तरह तुम्हारे भाई की वृद्धि हो, इमली के पेड़ की तरह उसके यश का विस्तार हो। मैं गंगा की धारा की भांति आशीर्वाद दे रही हूँ, तुम्हारे भाई की दिन प्रतिदिन उन्नति हो!"

माटी खनाई

(९८)

सोने क फरुहा, रूपेन बेंट लाग रे,
सासु धिया मिलि माटी खनइँ रे।
केकरि लिल्लिनि घोड़िया, हरियरि दूब चरइ,
केकर दुलरू दमाद, लगाम लिहे?
कवन लाल लिल्लिनि घोड़िया, हरियरि दूब चरइ,
ओनहीं कर दुलरू दमाद, लगाम लिहे।
देउ न भोजइतिनि मोर नेग, लेउ मटिया अँचरा पसारि,
आजा बाबा आये हैं, घोड़िया लगाम लेन रे।
दुलहिनि पूत बहुवार, तउँ माटी भरइँ रे।
हँसि-हँसि पूछइँ दुलरू दमाद रे,
सरहज आवउ न मोरि सुख सेज रे!

सोने का फावड़ा है। चाँदी की उसमें बेंट लगी है। सास जी उससे मिट्टी खोद रही हैं।

"किसकी लिल्ली घोड़ी हरी दूब चरती है? किसका दुलारा दामाद अपने हाथ में उसकी लगाम थामे है?"

"अमुक लाल की लिल्ली घोड़ी हरी दूब चर रही है। उन्हीं का दुलारा दामाद अपने हाथ में उसकी लगाम थामे है!"

सहेलियाँ अपना नेग माँगती हुई कह रही हैं—"सखी हमारा नेग चुकाओ!"

सास उत्तर देती है—"लो न! आँचल फैला कर ढेर की ढेर मिट्टी ले लो!"

सभी आजा बाबा घोड़ी की लगाम लेने आये हैं। सब दुलहिनें और पुत्र बधुयें मिट्टी भर रही हैं।

दामाद अपने साले की पत्नी से मजाक करता हुआ कह रहा है-- "सरहज, मेरी सुख-शैया पर कभी शयन करने के लिये आओ!"

(९९)

लीपि लेउ चौपरिया दुल्हन देई,
पोति लेउ चौपरिया दूल्हन देई।
लीपन बैठीं कवनि देई, अँगुरी में,
गड़ गई लकड़िया दुल्हन देई,
कौनी हरजोतवा की बाटी छोकरिया,
कौन सजन की बाटी दुल्हन देई?
वही धरिकरवा की बाटी छोकरिया,
वही गरुये सजन की बाटी दुल्हन देई।
बोलावो आपन बपवा, निकाले लकड़िया,
नाहीं तो फँसी रहि जाई दुल्हन देई।

"दूल्हन, तू चौपारी की लिपाई-पुताई कर ले!"

अमुक देवी चौपारी लीप रही थीं। उनकी उँगली में लकड़ी धँस गई है!

"दूल्हन किस हलवाहे की लड़की है? कैसे पति की पत्नी है?"

"वह हरकारे की लड़की है। मूढ़ पति की पत्नी है?"

"दूल्हन, अपने स्वामी को बुलाओ, वही लकड़ी निकालेगा, वरना वह फँसी की फँसी ही रह जायगी!"

कलसा

(१००)

आधे तलवना में नाग बइठे, आधे में नागिनि बइठीं,
तबहूँ तलवना न रातुल, एक कमल बिनु रे।

आधे अँगनवाँ में गोत बइठे, आधे में गोतिनि बइठीं,
तबउ न मँड़वना रातुल, एक ननद बिनु रे।
आवउ न ननद गोसाईं, बड़ी ठकुराइनि,
ननदी बइठउ न मोरे अँगनवाँ, कलस मोर गोंठउ।
जउ भउजी कलसा मँइ गोंठउँ, गोंठि देखावउँ,
भउजी पाँच मोहर मोर नेग, पसेरी दुइ चाउर रे।
भितरा से बोलीं भउज रानी, सुनउ मोरि ननदी,
ननदी, एक टका तोर नेग, परइया एक चाउर रे।
भउजी तुहँइँ, मोरि भउजी, तुहँइँ ठकुराइनि,
भउजी रहिया कर भुखल भयनवाँ, भोजन कुछ देतिउ,
ननदी तुहँइँ मोरि ननदी, बड़ी ठकुराइनि,
ननदी बइठउ राम रसोइयाँ, भयनवाँ जेंवाँवउ,
तुँहउँ कुछु चाखउ रे।
पहिला बरवा निकारिन, फुफुनिया चोराइनि,
बरवा गिरि गवा माँझ मँड़वनाँ, गोतिनि सब देखइँ रे।
तब तउ कहेउँ सिर साहेब, ननद जिनि नेवतउ,
ननदी अवतइ बरवा चोराइनि, मँड़वना मोर भाँड़िनि रे,
तब तउ कहेउँ मोरि रनियाँ, जगि जिनि रोपउ,
मोरे पिठिया पर की बहिनिया, मँइ कइसे न नेवतउँ रे?

तालाब के आधे भाग में नाग बैठे हैं। आधे में नागिनें बैठीं हैं। फिर भी वह कमल के अभाव में सुन्दर नहीं लगता।

आँगन के आधे भाग में गोत्र जाति के लोग बैठे हैं। आधे में गोतिनें बैठी हैं। फिर भी ननद के बिना मण्डप शोभा नहीं देता।

बहू ननद से कहती है—"ननद रानी, आओ! मेरे मण्डप में बैठकर कलसा गोंठो!"

ननद कहती है—"भाभी, यदि मैं कलसा गोंठूँगी तो पाँच मुहर और दो पसेरी चावल मेरा नेग होगा!"

भीतर से भाभी बोलीं--"ननद, तुम पाँच मुहरें क्यों माँगती हो ? एक टका और एक परई चावल ही तो तुम्हारा नेग होता है !"

"भाभी, तुम बड़ी ठकुरानी समझी जाती हो। तुम्हारे भांजे को रास्ते से ही भूख लगी है। उसे कुछ खाने को दो !"

भाभी उत्तर देती है--"ननद, तुम रसोई में चलकर बैठो। मैं भांजे के साथ तुम्हें भी भोजन कराऊँगी !"

ननद ने पहला बाल लेकर उसे अपनी साड़ी में चुरा लिया था। असावधानी से सहसा वह मण्डप में गिर पड़ा। सब गोतिनें देखकर हँसने लगीं।

बहू अपने पति से शिकायत करने लगी--"प्रियतम, मैं पहले से ही कह रही थी कि ननद को मत बुलाओ। उसने आते ही बाल चुरा लिया और मेरा मंडप भ्रष्ट कर दिया !"

पति ने उत्तर दिया--"रानी, मैं तो तुम्हें कह रहा था कि यज्ञ का अनुष्ठान मत करो किन्तु जब तुमने ऐसा किया ही तो मैं अपनी सहोदरा बहन को भला निमंत्रण क्यों न देता ?"

सिलपोहना

(१०१)

सिल चटकत है, सिल मटकत है,
समधी के देखि बिरावत है।
पठै देउ सब आजा बाबा हथिनियाँ,
चढ़ि के आवैं सब गोतिनियाँ।
दरवजवा में अटकी है हथिनियाँ,
अँगनवा में सब गिरी हैं गोतिनियाँ।
सिल चटकत है, सिल मटकत है,
समधी के देखि बिरावत है।
सिल पोहो दुलहन देई आपनि,
माँझ मँड़वना बैठे हैं कौन रामा,
लोढ़वा पकड़े घूमा-फेरी करैं,
तम्बुआ ताने सिल पोहत हैं,

हेलिन धेरिया सिल पोहत हैं,
राजा - बेटा सिल पोहत हैं।

सिल चटक रही है। नखरे दिखा रही है। समधी को देखकर उसका मुँह चिढ़ा रही है।

आजा बाबा को भेज दो। वे हाथियों पर चढ़कर आयें, सब गोतिनें आयें।

हाथियों का सिर दरवाजे में अटक गया। आँगन में सब गोतिनें गिर पड़ीं।

दूल्हन देवी, तुम सिलपोहना करो।

अमुक राम मंडप के बीच में बैठे हैं। लोढ़ा पकड़ कर वे उसे घुमा-फिरा रहे हैं। आँगन में तम्बू तान कर वे सिलपोहना कर रहे हैं।

हेलिन की लड़की (पत्नी) सिलपोहना कर रही है। राजा-बेटा (पति) सिलपोहना कर रहा है।

नहान

(१०२)

कवन राम सगरा खोदावइँ, घाट बँन्हावइँ,
कवन राम सगरा नहाइँ, सब जग देखइ हो,
बाबा राम सगरा खोदावइँ, बाप घाट बँन्हावइँ,
दुलहे राम सगरा नहाइँ, सब जग देखइ हो।
के छोड़इ छल्ला मुनरिया, के छोड़इ मोहर,
के छोड़इ रतन-पदारथ, सूप भरि जाइ हो,
बुआ छोड़इँ छल्ला मुनरिया, दादी छोड़इँ मोहर,
मामा छोड़इँ रतन-पदारथ, सूप भरि जाइ हो।
हँसि बोलइ कँहरा कइ धेरिया, बिहँसि बोलइ कँहरा,
जुग-जुग जीवें दुलहे राम, दुलहिनि सुहागिनि हो।

किसने तालाब खुदाया ? किसने घाट बँधाया ? कौन तालाब में सब के सामने स्नान कर रहा है ?

अमुक पितामह ने तालाब खुदाया। अमुक पिता ने घाट बँधाया। अमुक दूल्हा सब के सामने स्नान कर रहा है।

न्योछावर के समय सूप में कौन छल्ला और मुँदरी छोड़ रही है? कौन मुहर डाल रही है, और कौन रत्न पदार्थ दे रही है?

बुआ छल्ला और मुँदरी छोड़ रही है। दादी मुहर और माँ रत्न पदार्थ डाल रही है। पूरा सूप भर गया है।

कँहार की लड़की (पत्नी) हँसती हुई कह रही है। कँहार (पति) बिहँसता हुआ बोल रहा है—"दूल्हा युगों तक जीता रहे, दूल्हन सदा सुहागिन बनी रहे!"

नेछू-नहान

(१०३)

तोरी चुटकी कटावै नउनिया रे,
जौ मोरा टेढ़ा महाउर रे।

तोरी नथुनी उतारौं भोजइती रे,
जौ मोरा खोटा रुपइया रे।

तोरी चुटकी कटावौं नउनिया रे,
जौ मोरा टेढ़ा महाउर रे।

तोरी झुलनी लेबइ दादी रे,
जौ मोरा खोटा रुपइया रे।

बहू महावर लगवाते समय नाइन से परिहास कर रही है—"नाइन, यदि मेरा महावर टेढ़ा होगा तो मैं तुम्हारी उँगलियाँ कटवा लूँगी।"

नाइन उत्तर देती है—"मालिकिन, मेरा रुपया अगर खोटा होगा तो मैं तुम्हारी नथ उतरवा लूँगी!"

(अन्य नामों के साथ भी यही पंक्तियाँ बार-बार दुहराई जाती हैं।)

(१०४)

राम दुवारे एक हरियर पीपर, अछल-बिछल होइ गइ डार,
तेहि तर राम जी हथिया सजावइँ, लछिमन सजावइँ आपन घोड़।
बेरिया की बेर तोहइँ बरजउ लछिमन, हमरी बरतिया जिनि जाउ,
हमरी बरतिया बहुत दिन लागइ, मरि जाबेउ भूख-पियास।
भुखिया सहबेउँ, पियसिया सहबेउँ, सहबेउँ भुभुरी अउ घाम,
सीता भउज के बियहि लइ अउबेउँ, देखबेउँ जनक - दरबार।
हँथिया सजि गये, घोड़वा सजि गये, सजि गये नगरिया के लोग,
हमरे राम जी कर ब्याह जनकपुर, हम जगि देखन जाब।

राम के दरवाजे पर हरे पीपल का पेड़ है। उसकी डालें इधर-उधर फैली हैं। राम उसके नीचे अपना हाथी सजा रहे हैं। लक्ष्मण अपना घोड़ा सजा रहे हैं। लक्ष्मण को बरजते हुए राम कहते हैं--"भाई लक्ष्मण, तुम मेरी बारात में मत चलो। बहुत दिन लगेंगे। तुम्हें बड़ी भूख प्यास सहनी पड़ेगी।"

लक्ष्मण उत्तर देते हैं--"मैं भूख सहूँगा, प्यास सहूँगा। रास्ते की गरम धूल और धूप सहूँगा। और इस तरह सीता भाभी को ब्याह लाऊँगा। राजा जनक का राजद्वार भी देख लूँगा।"

हाथी सज गये। घोड़े सज गये। नगर के सब लोग सज कर तैयार हो गये। सब के मन में लालसा और उछाह है--"जनकपुर में हमारे राम जी का ब्याह है। हम सब देखने चलेंगे।"

(१०५)

पतिया लिखि एक भेजइँ जनक जी, दिहेउ रामा जी के हाँथ रे,
धरती क भरवा हरउ मोरे राम, धनुषा करउ दुइ खण्ड रे।
पतिया बाँचत रामा हँथिया सजावइँ, घोड़ा सजावइँ चारिउ बीर,
रथ चढ़ि पहुँचे हइँ राजा रे दशरथ, नगर उड़ावत धूरि रे।

तोरउँ धनुहियाँ, हरउँ गरुअइया रे, लेउँ सीतल देई का दान,
हमरी पगिया ऊँची रे करतेउ, सीता क लेतेउ बियाहि ।
धनुषा उठाइ राम देखइउ न पायँनि, नउ खण्ड कइ दिहेनि डारि,
सीता देई सकुचत पग भुइँ डारत, सखियन लिहे जयमाल ।
दशरथ गरवा मिलत हैं जनक जी, सुनउ समधी बात हमारि,
सीतल धेरिया अलफ सुकुँवारी रे, राखेउ जिअरा के बीच ।

राजा जनक ने पत्र लिख कर भेजा--"इसे राम के हाथ में देना। कहना राम, धनुष तोड़कर धरती का बोझ हल्का करो !"

पत्र बाँचते ही राम ने हाथी सजाया। चारों भाइयों ने घोड़े सजाये। रथ में बैठकर राजा दशरथ भी नगर में पहुँच गये। आसमान में धूल उड़ने लगी। दशरथ ने राम से कहा--"धनुष तोड़कर धरती का भार उतारो और बदले में सीता का दान ग्रहण करो। सीता से ब्याह कर मेरी भी पाग ऊँची करो।"

धनुष उठा कर राम ने देखा भी नहीं कि उसके नौ टुकड़े हो गये। सीता सकुचाती हुई आगे बढ़ती हैं। सखियाँ हाथ में जयमाल लिये हैं। जनक जी दशरथ को गले लगाते हुए कहते हैं--"हे समधी, मेरी बात सुनिये। सीता बेटी बड़ी सुकुमार है। उसे अपने कलेजे के बीच में ही रखियेगा !"

(१०६)

मचियेइ बैठी हैं रानी कौसिल्या देई, मोतियन चुवैं नैना आँसु रे,
धिक् मोरे जनम रे एकहू न सारथ, जेहि घर राम कुँवार रे ।
बाउर हौ तुम बाउर रनियाँ, केहि तोरा हरले है ज्ञान रे,
एक दिन झंखेउ रानी राम जनम के, अब झंखेउ राम बियाह रे।
झीना-झीना कपड़ा पहिने राजा दशरथ, घोड़ पीठ भयें हैं सवार रे,
जाइ के उतरे जनक जी के द्वारे, रिखि आगे खबर जनाउ रे।
पाँउ पखारत राजा जनक जी, कहऊ अजोध्या के हाल रे,
हमरी नगरिया कुशल है राजन, अपनी कहउ कुशलात रे ।
राजपाट सब कुछु बाटइ मोरे रे, औ हैं कन्या मोरी चारि रे,
जेहि घर कन्या कुँवारी बिराजइँ, तेहि किन पूँछवु हाल रे ।

चारि बेटवने हैं मोरे जनक जी, हैं चारिउँ बार कुँवार रे,
हँसि खेलि धेरिया बियाह रचावउ, हम लेवइ चारिउ बियाहि रे।

रानी कौशल्या मचिया पर बैठी हैं। आँखों से मोतियों जैसे आँसू टपक रहे हैं--"धिक्कार है ! मेरे जीवन में कुछ भी सार्थक नहीं हुआ। राम अभी तक क्वांरे पड़े हैं।"

सहेलियाँ समझाती हैं--"रानी, तुम तो बावली हो गई हो। एक दिन राम के जन्म के लिये तरस रही थी, अब राम के ब्याह के लिये चिन्तित हो !"

झीने-झीने कपड़े पहन कर राजा दशरथ घोड़े की पीठ पर सवार हो गये। जाकर राजा जनक के दरवाजे पर उतरे। ऋषि ने जाकर खबर दी। पाँव धोते हुए राजा जनक कहते हैं--"कहिये, अयोध्या का क्या हाल है ?"

"राजन्, हमारी नगरी में सब कुशल है। आप अपनी कुशलता कहें।"

राजा जनक बोले--"राज-पाट मेरे सब कुछ है। चार कन्यायें भी हैं। लेकिन जिस घर में कन्याएँ क्वाँरी हों, उसका आप भला क्या हाल पूछते हैं ?"

दशरथ ने उत्तर दिया--"जनक जी, मेरे चार बेटे हैं। चारों अभी क्वांरे हैं, आप हँसी खुशी अपनी कन्याओं का ब्याह रचायें। हम चारों को ब्याह लेंगे।"

(१०७)

ऊँची बखरिया कइ ऊँची अटरिया, खिरकी लगी हैं दुइ चारि रे,
तहवइँ बैठी हैं माया कौसल्या देई, को करे राम के बियाह रे।
सोने के खरउवाँ आये हैं दशरथ, सुनउ रनिया बचन हमारि रे,
राजा जनक जी की सीता कुँवारी, हम रचबइ उनहीं से ब्याह रे।
हासिल घोड़ चलें राजा दशरथ, पहुँचे जनकपुर जाइ रे,
लाल परेउँना द्वारे पर टाँगा रे, लेत है सीता राम नाम रे।
पनिया पिये पर बैठे राजा दशरथ, कहउ अजोध्या के हाल रे,
हमरी नगरिया कुशल सब बाटइ, कुशल चाही हमका तुम्हारि रे।
काज परे हम आये हैं द्वार रे, सुनउ ठाकुर बात हमारि रे,
तुम घर बाटीं बारी सीतल देई, हम घर हैं राम कुँवार रे।
ना घर नुनवा रे, ना घर तेलवा, ना घर कोठिलवा मोरे धान रे,

चुल्हवा धरन नहिं आवैं समधिन देई कैसे क रचउं बियाह रे।
हम देबइ नुनवा रे, हम देबइ तेलवा रे, भरि देबइ कोठिला में धान रे,
हँसि खेलि सीता का व्याह रचउ रे, हँसत अयोध्या क जाउँ रे।

ऊँची बखरी की ऊँची अटारी है। दो चार खिड़कियाँ लगी हैं। वहीं बैठी हुई माता कौशल्या सोच रही हैं—"राम का कौन ब्याह करेगा !"

सोने का खड़ाऊँ पहने राजा दशरथ आये—"रानी, मेरी बात सुनो। राजा जनक की सीता क्वाँरी है। हम उसी से ब्याह रचायेंगे।"

लाल घोड़े पर सवार होकर राजा दशरथ जनकपुर पहुँचे। दरवाजे पर लाल चिड़िया टँगी है। वह सीता राम का नाम ले रही है। पानी पीने के लिये राजा दशरथ बैठे तो जनक जी ने पूछा—"कहिये, अयोध्या का क्या हाल है ?"

दशरथ बोले—"हमारी नगरी में सब कुशल है। हमें तो आपकी कुशलता चाहिये। काम पड़ने पर हम आपके दरवाजे पर आये हैं। आप मेरी बात सुनें। आपके घर में सीता क्वाँरी है। हमारे घर में राम क्वांरे हैं।" (दोनों का ब्याह रचा दो)।

जनक बोले—"घर में न नमक है, न तेल। कोठिले में धान भी नहीं है। समधिन चूल्हा रखने भी नहीं आतीं। मैं भला कैसे ब्याह रचाऊँ ?"

दशरथ ने उत्तर दिया—"मैं नमक दूँगा। तेल दूँगा। कोठियों में धान भरा दूँगा। आप हँसी खुशी सीता का ब्याह रचायें। जिससे मैं हँसता हुआ अयोध्या जाऊँ।"

(१०८)

बरिया की बेर तोहिं बरजउँ दुलहे राम, बिन्द्रहिबन जिनि जाउ,
बिन्द्रहिं बन में मेघ गरजत हैं, भिजिहइँ कटक तोहारि रे।
भिजिहइँ हाथी, भिजिहइँ घोड़ा रे, भिजिहइँ दुलहे क चन्दन घेवार रे,
भिजिहइँ डँड़िया, भिजिहइँ डोलिया रे, भिजिहइँ चारिउ कँहार।
भिजिहइँ जमवा रे, भिजिहइँ जोड़ा रे, भिजिहइँ पटुका तोहारि रे,
भिजिहइँ दुलहिनि देइ के लहँगा चुनरिया, भिजिहइँ सेन्दुर भरि लिलार

भिजिहइँ जनिया, भिजिहइँ बजनिया, भिजिहइँ सगरी बरात रे,
भीजि जइहइँ दुलहे राम माई कइ कोखिया, जेन तोहइँ दिहेनि अवतार।

"दूल्हे, तुम्हें बार-बार बरजती हूँ। वृन्दावन मत जाना। वृन्दावन में मेघ गरजते हैं। तुम्हारी सेना भींग जायेगी। हाथी भींगेंगे, घोड़े भींगेंगे। घयौरा हुआ चन्दन भींगेगा। डाँडी और डोली भींगेगी। चारों कँहार भींगेंगे। जामा भींगेगा, जोड़ा भीगेगा। तुम्हारी पटुक भींगेगी। दूल्हन की लहँगा-चुनरी भींगेगी और माथे का सिन्दूर भी भींग जायगा। नौकर और बाजेवाले भींगेंगे। सारी बारात भींग जायगी, दूल्हे, तुम्हारी उस माँ की कोख भी भींग जायगी, जिसने तुम्हें जन्म दिया।"

(१०९)

धनुष उठाइ अरे लीपत सीतल देई, परि गइ जनक जी केइ दीठि रे,
जे मोरे धनुका कइ हरइ गरुवइया, सेहि संग बेटी क बियाह रे।
पतिया लिखि-लिखि भेजइँ नगर में, सुनहु न राज दुआर रे,
टुटत धनुष मोरी बेटी क ब्याह रे, हरहु न संकट हमार रे।
सभवइ बैठे हैं गुरु बशिष्ठ जी, बगल में लछिमन राम रे,
नैनन सैन से दिहेनि असिसिया, सुनहु न बचन हमारि रे।
लेहु धनुहिया खण्ड दुइ करउ रे, हरहु जनक जी के भार रे,
ब्याहि सीतल जी जाहू अवधपुर, जग में करउ उपकार रे।
तुम्हरी बचन गुरु सिर मोरे माँथे, मैं हरउँ संकट भार रे,
हरहु न धनुका की अरे गरुवइया, मैं करउँ खण्ड दुई डारि रे।

धनुष उठाकर सीता जी लीप रही थीं। राजा जनक की दृष्टि पड़ गई। (उन्होंने उसी क्षण प्रतिज्ञा की)—"जो मेरा धनुष उठा लेगा, वही मेरी बेटी के साथ ब्याह करेगा।"

नगर-नगर उन्होंने पत्र लिख कर भेज दिया—"राजाओ, सुनो! धनुष टूटने से ही मेरी बेटी का ब्याह होगा। तुम सब मेरा संकट दूर करो!"

गुरु वशिष्ट सभा में बैठे हैं। बगल में राम और लक्ष्मण हैं। नेत्रों के संकेत से आशीर्वाद देते हुए वशिष्ट बोले—"मेरी बात सुनो! धनुष

उठाकर टुकड़े-टुकड़े कर डालो और जनक जी का बोझ हल्का कर दो। सीता को ब्याह कर अयोध्या ले आओ और संसार का उपकार करो।"

राम ने उत्तर दिया—"गुरुदेव, आपका वचन मेरे सिर माथे है। मैं संकट-भार दूर करूँगा। आप धनुष का भारीपन दूर करें। मैं उसके दो टुकड़े कर डालूँगा।"

(११०)

बरहइ बरिस के हैं हमरे राम जी, सीता बियाहन जाइँ रे,
दुलकत घोड़वा चढ़े हैं लछिमन, कलगीं सँवारत चारिउ बीरा।
जाइ के पहुँचे जनकपुर नगरी, गगन उड़ावत धूरि रे,
नगर अयोध्या से आयी बरतिया, सौ-साठ आवत हज़ार रे।
कहँवाँ उतारउँ आदल-बादल, कहँवाँ बधावउँ हाँथी-घोड़,
कहँवाँ बइठावउँ मँइ समधी सजन के, कहँवाँ मँइ दुलरू दमाद रे।
बगिया उतारउ आदल-बादल, खेतवा बँधावउँ हाँथी-घोड़ रे,
अँगना बइठावउ समधी सजन के, कोहबर दुलरू दमाद रे।
रतन-पदारथ समधी क देबई, धिया का दुलरू दमाद रे,
हाँथ जोड़ि के बिनती करब हम, सुनउ समधी अरज हमारि रे।

हमारे राम बारह वर्ष के हैं। वे सीता से ब्याह करने जा रहे हैं। लक्ष्मण दुलकते घोड़े पर सवार हुए। लटें सँवार कर भाई लोग तैयार हो गये। आसमान में धूल उड़ाते हुए सब लोग जाकर जनकपुर नगरी में पहुँच गये।

जनक जी सोच में पड़ गये—अयोध्या नगर से बारात आई है। साठ सौ हजार (असंख्य) बराती आ रहे हैं। यह आदल-बादल मैं कहाँ उतारूँ? हाथी घोड़े कहाँ बँधवाऊँ? स्वजन समधी और दुलारे दामाद को कहाँ बिठाऊँ।

"बाग में आदल-बादल उतारो। खेतों में हाथी घोड़े बँधाओ। आँगन में स्वजन समधी को और कोहबर में दुलारे दामाद को बिठाओ।"

समधी को रत्न पदारथ दूँगा। दुलारे दामाद को अपनी कन्या दूँगा और हाथ जोड़कर उनसे बिनती करूँगा कि, "हे समधी, आप मेरी अरज सुनें!"

(१११)

चारिउ भइया घोड़वा कुदावइँ, मलिनी अहेरेक जाइँ रे,
जाइ के पहुँचे जनकपुर नगरी, सीता रखावइँ फुलवारि रे।

केकरि हौ तुम बारी कुँवारी, अरे केकरि रखावउ फूलवारि रे,
राजा जनक जी की बारी कुँवारी, रिषी कइ रखावउँ फूलवारि रे।

जौ तुम राजा जनक की धेरिया रे, बैठउ न बगल हमारि रे,
कइसे क बइठउँ रामा तुम्हरी बगलिया, अबही मँइ कन्या कुँवारि रे।

सोने के थाल कलस भरि पानी, कुस लइ देइहइँ दान रे,
सोने के मुँदरिया लइ बाप संकलपइँ, तब बइठउँ बगल तुम्हारि रे।

चारों भाई घोड़े कुदाते हुए जनकपुर नगरी में पहुँचे। सीता फुलवारी की रखवाली कर रही थीं। राम ने पूछा—"तुम किसकी क्वाँरी बेटी हो? किसकी फुलवारी की रखवाली कर रही हो?"

सीता ने उत्तर दिया--"राजा जनक की क्वांरी बेटी हूँ। ऋषि की फुलवारी की रखवाली कर रही हूँ।"

"अगर तुम राजा जनक की बेटी हो, तो मेरी बगल में बैठो न!"

"राम, तुम्हारी बगल में कैसे बैठूँ? अभी तो मैं क्वाँरी कन्या हूँ! सोने की थाल होगी। कलसा भर पानी होगा। कुश लेकर दान करेंगे। सोने की अँगूठी लेकर पिता जी संकल्प पढ़ेंगे। तब मैं तुम्हारी बगल बैठूँगी।"

(११२)

एक कियरिया में धनुका-मँड़ुवा, एक कियरिया धनियाँइ दूब रे,
एक कियरिया दुलहे गोपाल राम, घड़िया घड़ी चढ़इ रूप।

की रे दुलहे राम बिधि के सँवारे, की तोहइँ गढ़लेउ सोनार,
की रे दुलहे तुहुँ सँचवा के ढारे, घड़िया घड़ी चढ़इ रूप।

ना मँइ दुलहिन देई बिधि कर सँवारा, नहिं मोहिं गढ़लेउ सोनार,
माया जसोदा देई अस कइ सँवारइँ, घड़िया घड़ी चढ़इ रूप।

एक क्यारी में धनुका मँड़वा है। एक क्यारी में धनिया और दूब है। एक क्यारी में दूल्हे गोपाल जी हैं। घड़ी-घड़ी उनका रूप चढ़ रहा है।

"दूल्हे, क्या तुम्हें राम ने सँवारा है। या किसी सुनार ने गढ़ा है। या तुम साँचे में ढले हो, जिससे घड़ी-घड़ी तुम्हारा रूप चढ़ रहा है?"

"दूल्हन जी, न तो मुझे राम ने सँवारा है, न किसी सुनार ने गढ़ा है। मात' यशोदा देवी ने इस तरह सँवारा है कि घड़ी-घड़ी मेरा रूप चढ़ रहा है।"

(११३)

नगर अजोधिया कइ साँकरि गलिया, दुबिया छिछिड़ गइ बाट,
हरियरि दुबिया मँइ दुधवा सिंचावउँ, सेहि बाट जाइ बरात।
दुबिया कचरि राम चले ससुररिया, नयना चुवत दूनउँ आँसु,
अचरा पसारि माया दुबिया सिंचावउ, मोरे बूते चलि नहिं जाइ।
सेहि बाट नगरी बहिनी कवनि देई, बिरना जोहत ठाढ़ बाट,
घमवा नेवारि भइया जाउ ससुररिया, भुभुरी जरत तोर पाँउ।
कइसे क घमँवा नेवारउँ मोरि बहिनी, जानो अहइ बड़ी दूरि,
हरियरि दुबिया कचरि मँइ आयेउँ, भुभुरी जरत नहिं पाउँ,
की तोरी दूलभ बहिनी रे दुलहे, की दूलभ तोरि ससुरारि,
कवने दुखन दुलहे चलेउ दुवरिया, भुभुरी जरत दूनउँ पाँउ।
नाहीं दुलभ मोरि बहिनी कवनि देई, नाहीं दूलभ मोरि ससुरारि,
दूलभ अहइ मोरि माया कइ कोखिया, जे न मोहिं दिहेनि अवतार।

अयोध्या नगर की सँकरी गली है। उस राह पर हरी-हरी दूब फैली हुई है। रानी कौशल्या कहती हैं—"हरी दूब का मैं दूध से सिंचन कराऊँगी। उसी रास्ते से मेरे राम की बारात जायेगी।"

दूब कुचलते हुए राम अपनी ससुराल चले। उनके दोनों नेत्रों से आँसू टपक रहे हैं। माता कौशल्या से वे निवेदन करते हैं—"माँ, अंचल फैलाकर दूब का सिंचन कराओ। इस पर चलने में मुझे कष्ट हो रहा है।"

उसी रास्ते में अमुक बहन का घर है। भाई को जाता हुआ देखकर वह

कहती है—"हे भाई, धूप निवार कर ससुराल जाना। गरम-गरम धूल से तुम्हारे पैर के तलुवे जल रहे हैं।"

भाई उत्तर देता है—"बहन, मैं धूप निवारने के लिये किस प्रकार रुकूँ। रास्ता बहुत लम्बा है, बहुत दूर जाना है। मैं तो हरी हरी दूब पर चल कर आ रहा हूँ, मेरा पैर किस प्रकार जलेगा?"

दूल्हे से मार्ग की कोई स्त्री पूछती है—"हे भाई दूल्हे, क्या तुम्हारी बहन दुर्लभ है, अथवा ससुराल? किस विपत्ति के कारण तुम ग्रीष्म की दोपहरी में चल पड़े हो? गरम धूल से तुम्हारे पैर जल रहे होंगे?"

दूल्हा उत्तर देता है—"न तो मेरी अमुक बहन ही दुर्लभ है और न मेरी ससुराल ही। मेरे लिये अलभ्य तो वस्तुतः मेरी उस माँ की गोद है जिसने मुझे जन्म दिया है।"

तिलक

(११४)

बहरे से आये हैं राम जी, मुनुन-मुनुन करइँ,
माया अँगने में चउक पुरावउ, ससुर मोर आवत हो।
हँसि के बोली, हैं माया, बिहँहि के बहिनिया,
बेटा, चन्द्र-सुरुज मँइ उरेहउँ, तिलक चढ़वावउ हो।
आधे अँगने ससुर-गोत, आधे में बाप-गोत,
बिचवा में बइठे बेटा राम, तिलक चढ़वावइँ हो।
पाँच गाँठि लीहेनि हरदी, पाँचइ सोपरिया,
राम, लेउ न आखत-नरियर, तिलक चढ़वावउ हो।
हँसि के लिहेनि तिलकिया, बिहँसि मुख बोलइँ,
सारे लेबइ तोरि बहिनिया, बहिनि तोरि सुन्दरि हो।

रामचन्द्र बाहर से लौटे। भुन-भुनाते हुए बोले—"माँ, आँगन में चौक रचाओ। मेरे ससुर जी आ रहे हैं।" माँ हँसती हुई, बहन बिहँसती हुई बोलीं—"बेटा, चौक में मैं चन्द्रमा और सूर्य का चित्र बनाऊँगी। तुम तिलक कराओ!"

आँगन के आधे भाग में श्वसुर-गोत्र के लोग बैठे हैं। आधे में पिता के

पक्ष के लोग बैठे हैं। बीच में प्रिय पुत्र विराजमान है। उसका तिलक हो रहा है।

हल्दी की पाँच गाँठें ली गयीं। पाँच ही सुपारियाँ भी ली गयीं। पुरोहित जी बोले—"राम, हाथ में अक्षत और नारियल लो। बढ़कर माथे पर तिलक कराओ।"

प्रसन्न मुद्रा में राम ने तिलक कराया। पुलकित भाव से बोले—"साले भाई, तुम्हारी बहन बहुत सुन्दर है। मैं उसके साथ ब्याह करूँगा!"

बड़ी घोड़ी

(११५)

घोड़ी तो एक अलबेली रे बन्ने,
राज दुवारे है ठाढ़ी रे बन्ने,
ना खर खाइ न पानी पियइ रे,
ना आसन वह लेवे रे बन्ने,
दादी वलि - बलि जाय रे बन्ने,
दूध कटोरन पियो रे बन्ने,
चाभत नागर पान रे बन्ने,
सर अलबले का सेहरा बन्ने,
कलँगी में अजब बहार रे बन्ने,
माया बलि-बलि जाइ रे बन्ने,
अंग केसरिया जामा रे बन्ने,
नागफनी वाके बन्द रे बन्ने,
कान सूरत की मोती रे बन्ने,
कंगन में लाल बनी है बन्ने,
बुआ वलि-वलि जाय रे बन्ने,
पाँव मखमल का जूता रे बन्ने,
मेंहदी लाल गुलाल रे बन्ने,
इंठ सोहै काबुल का घोड़ा,

दूल्हन का डोला सजाव रे बन्ने,
बहिनी बलि-बलि जाय रे बन्ने,

एतना पहिनि दूल्हा सजि चले बन्ने,
चारि जन हैं परिवार रे बन्ने,

बहिनी, बुआ औ, मौसी रे बन्ने,
चौकी दूल्हे की माई रे बन्ने,

हटिया में राई मँहग भई बन्ने,
द्वारे सजन हैं ठाढ़े रे बन्ने,

बहिनी तुम्हारी राज दुलारी,
राई - नोन उतारेगी बन्ने,

बलैया लेइँ मिथिला की नारी रे बन्ने।

एक अलबेली घोड़ी है। राजद्वार पर खड़ी है। न तृण खाती है, न जल पीती है और न आसन ही लेती है। प्यारे बन्ने दादी तुम्हारी बलैया लेती है।

बन्ने ने कटोरों दूध पिया है। नागर पान चबा रहा है। सिर पर अलबेला सेहरा है। कलँगी की निराली शोभा है। प्यारे बन्ने, माँ तुम्हारी बलैया लेती है।

देह पर केसरिया रंग का जामा है। नागफनी के उसके बन्द हैं। कान में सूरत का मोती है, कंगन में लाल कनी लगी है। प्यारे बन्ने, बुआ तुम्हारी बलैया लेती है।

पैर में मखमल का जूता है। मेंहदी और लाल गुलाल रचे गये हैं। नीचे काबुल का घोड़ा फब रहा है। दूल्हन का डोला सजा हुआ है। प्यारे बन्ने, बहन तुम्हारी बलैया लेती है।

इतना पहन कर दूल्हा चला है। चार प्राणी उसके परिवार में हैं—बहन, बुआ, मौसी और चौथी दूल्हे की माँ।

हाट में सरसों महँगी हो गई है। द्वार पर सगे-सम्बन्धी खड़े हैं। तुम्हारी राजदुलारी बहन राई-नोन उतारेगी। प्यारे बन्ने, मिथिला की नारियाँ तुम्हारी बलैया लेती हैं।

(११६)

ठुमुकि घोड़ी नाचै महराजा,
दूल्हे के घर नाचै हो महराजा,
घोड़िया ने खाया खाँड़ चिरौंजी,
पान कूंचे नागर ओ महाराजा।
जामा भी पहने, जोड़ा भी पहने,
रेशम पटुका डाले महराजा।
घोड़ी के कान सूरत की मोती,
कंगन में लाल लगाये महाराजा।
आँखों में काजल, माथे पै चंदन,
कलँगी सँवारे हो महाराजा।
घोड़िया के सर पर सेहरा सोहै,
पावों में लाली लगावे महाराजा।
घोड़िया के संग में नाजो का डोला,
परदा जरी का ओ महाराजा।
चूंदर सजी है ओ महाराजा।
माँग सेंदुरा भरी ओ महाराजा।

घोड़ी ठुमुक कर नाचती है। दूल्हे के घर में नाचती है। घोड़ी खाँड़-चिरौंजी खाती है। नागर पान कूचती है। जामा और जोड़ा भी पहनती है। ऊपर रेशम का पल्लू डालती है। कान में सूरत का मोती है। कंगन में लाल जड़े हैं। आँखों में काजल और माथे पर चन्दन है। सुन्दर कलँगी सँवारती है। घोड़ी के सिर पर सेहरा सुशोभित हो रहा है। पैरों में लाली लगी है।

घोड़ी के साथ नाजो (दूलहन) का डोला है। ज़री का परदा लगा है। सुन्दर चूँदर सज रही है और माँग में सिन्दूर भरा है।

(११७)

आँगन में नाचै घोड़ी हमारी,
घोड़िया के गले में हैकल सोहै,

कंठा बनी तोरी घोड़ी है चारी।
घोड़िया के अँग पर मखमल का परदा,
सितारों जड़ी आज घोड़ी हमारी।
घोड़िया के अंग पर दूल्हा सोहै,
दूल्हन का डोला ले आवो मेरी सखिया।
जब घोड़िया नाचै दूल्हन के अँगना।
फुलों की वर्षा करे बनवारी।

हमारी घोड़ी आँगन में नाच रही है। उसके गले में हैकल शोभा दे रही है। गले में खूबसूरत कण्ठा है।

घोड़ी के अंग पर मखमल का परदा है। सितारों से जड़ी आज वह हमारे आँगन में नाच रही है।

घोड़ी के अंग पर दूल्हा सुशोभित हो रहा है। हे सखियो, दूल्हन का भी डोला ले आओ। हमारी घोड़ी आज आँगन में नाच रही है।

घोड़ी जब दूल्हन के आँगन में नाचती है तो फूलों की वर्षा करती है।

(११८)

घोड़ी मोरी ठाढ़ी जमुनिया बाग।
बन्ना के अँग केसरिया जामा,
बन्ना तेरे पटुका में अजब बहार।
बन्ना के हाँथों में कंगन सोहै,
बन्ना तेरी अँगूठी में अजब बहार।
बन्ना तेरे पाँवों में मोजा सोहै,
बन्ना तेरे मेहन में अजब बहार।
बन्ना के सर पर सेहरा सोहै,
बन्ना तेरे झालर में अजब बहार,
बन्ना के माथे चन्दन भल सोहै,

वन्ना तेरे काजल में अजब बहार।
बन्ना के संग में नाजो का डोला
बन्ना वाके परदे में अजब बहार,

मेरी घोड़ी जामुन के बाग में खड़ी है।

बन्ना के अंग पर केसरिया रंग का जामा है। बन्ना, तेरे पटुका की निराली ही शोभा है।

बन्ना के हाथ में कंगन शोभा दे रहा है। तेरी अँगूठी की बड़ी अनूठी सुन्दरता है।

बन्ने के पैरों में मोजे हैं। मेहन की निराली वहार है।

बन्ना के सिर पर मौर सजा है। झालर की शान के क्या कहने?

बन्ने के माथे पर धवल चन्दन चार चाँद लगा रहा है। काजल की खूबसूरती का क्या बखान किया जाय!

बन्ने के साथ में जानो (दूल्हन) का डोला है। उसके परदे की छटा बड़ी निराली है।

मेरी घोड़ी जामुन के बाग में खड़ी है।

(११९)

लाल लाल घोड़ी आई है।
बाहर घोड़ी आई है।
फागुन तेरे मौसम में।
क्या सेहरा सोहै तुमको,
कलगी लाल लगायी है।
क्या जामा सोहै तुमको,
बन्दों में लाल लगायी है।
क्या सेहरा सोहै तुमको
चुन्ने में लाल लगायी है।
क्या कँगना सोहै तुमको,

पहुँची में लाल लगायी है।
क्या घोड़ा सोहै तुमको,
चाबुक में लाल लगायी है।
क्या डोला सोहै तुमको,
परदे में लाल लगायी है।

लाल-लाल रंग की सुन्दर घोड़ी आयी है। बाहर घोड़ी खड़ी है। तुम्हारे मौसम में फागुन के महीने की श्री सुषमा है।

कैसा मौर तुम्हारी शोभा बढ़ा रहा है। तुमने लाल रंग की कितनी सुन्दर कलँगी लगायी है।

तुम्हारी देह पर चित्ताकर्षक जामा शोभा दे रहा है। उसके बन्दों में लाल जड़े हैं।

सुन्दर सेहरा है। चुन्ने में भी लाल जड़े हैं।

हाथ में कंगन पहन रखा है। पहुँची में लाल जड़े हैं।

कितने बढ़िया घोड़े पर तुम सवार हो। चाबुक में लाल लगी है।

बहुत सुन्दर डोला तुम्हारे साथ सजा है। डोले के परदे में लाल लगी है।

तुम्हारे मौसम में फागुन के महीने की श्री सुषमा है।

(१२०)

घोड़ी मेरी लाल भरी,
हाँ गुलाल भरी,
बँछेड़ी घोड़ी रंग में भरी,
हाँ री सखी रंग में भरी।
घोड़िया तुम्हारे बाबा सजावें,
आरत लिए हैं दादी खड़ी,
हाँ माता खड़ी ओ बुआ खड़ी,
बुआ तुम्हारी कोहबर सजावें,

झालर लगाने फूफा खड़े,
हाँ रे जीजा खड़े औ नाना खड़े।
अंग तेरे केसरिया जामा,
सर पै मौरा सजे,
हाँ रे सेहरा सजे,
नैना काजर माथे चन्दन लगे।
घोड़िया तुम्हारी दूल्हन खड़ी,
हाँ नाजो खड़ी वो तो हीरा जड़ी,
वो तो खूब सजी हाँ नाजो खड़ी।

मेरी घोड़ी लाल रंग में रँगी-चुंगी है! उसकी देह पर गुलाल भी लगी है। हाँ री सखी, बचकानी घोड़ी मन मधुर रंगों से रंजित है।

यह घोड़ी तुम्हारे दादा सजा रहे हैं। दादी आरती लेकर खड़ी हैं। माँ और बुआ भी खड़ी हैं।

तुम्हारी बुआ कोहवर सजा रही है। झालरें लगाने के लिये फूफा जी खड़े हैं। पास में जीजा और नाना भी खड़े हैं।

सुन्दर दूल्हे, तुम्हारे शरीर पर केसरिया रंग का जामा है। सिर पर मौर सजा है। देखो न, सेहरा भी सजा है। आँखों में काजल लगा है और माथे पर चन्दन।

अरी प्यारी घोड़ी, देख, तेरी बगल में दूल्हे की दूल्हन भी तो खड़ी है! कितनी सुन्दर है, जैसे अंग-अंग में हीरे जड़े हों! खूब सजी-सँवरी दूल्हन खड़ी है।

मेरी घोड़ी लाल और गुलाल से रंजित है।

(१२१)

अलबेली घोड़ी जनकपुर ठाढ़ि,
रँगराती घोड़ी जनकपुर ठाढ़ि।
घोड़िया मेरी खाए दूध - जलेबी,
कूँचे मुँह में नागर पान।

अंग सोहै तरकस की जोड़ी,
मौरा लगे वाके मोती हजार ।
हेंठ सोहे काबुल का घोड़ा,
मेंहदी ओहके लाल गुलाल ।
संग सोहै तेरे नाजो का डोला,
जनकपुर दुलारी के नैन बिसाल ।

सुन्दर और रंग-रंजित घोड़ी जनकपुर नगरी में खड़ी है ।

मेरी घोड़ी दूध और जलेबी खाती है । मुँह में नागर पान चबाती है ।

उसके शरीर पर तरकश की जोड़ी सुशोभित है । माथे पर जो मौर है, उसमें हज़ारों मोती गुंथे हैं ।

उसकी बगल में काबुली घोड़ा खड़ा है । वह मेंहदी और लाल गुलाल से रँगा और सजाया गया है ।

तुम्हारे साथ लाडली दूल्हन की पालकी है । जनक दुलारी बहू की बड़ी-बड़ी आँखें हैं । हाँ री सखियों, उनकी आँखें बहुत बड़ी-बड़ी हैं ।

(१२२)

घोड़िया का चढ़ने वाला बन्ना जुग-जुग जिये ।
सिर सोहै अलबेले का सेहरा,
कलँगी सँवारन वाला जुग-जुग जिये ।
अंग सोहै केसरिया बाना,
बन्द सँवारन वाला जुग - जुग जिये ।
कान सोहै सूरत का मोती,
चुन्नी सँवारन वाला जुग - जुग जिये ।
हाँथों में सोहै जड़ाऊ कंगन,
पहुँची सँवारन वाला जुग - जुग जिये ।
पाँव सोहै मखमल का जूता,
मेहन्दी सँवारन वाला जुग - जुग जिये ।
हेंठ सोहै काबुल का घोड़ा,

चाबुक सँवारन वाला जुग-जुग जिये।
संग सोहै हरियाला डोला,
जोड़ी को बिहँसन वाला जुग-जुग जिये।

घोड़ी की सवारी करने वाले मेरे बन्ने (दूल्हे) की बड़ी लम्बी उम्र हो।

उसके सिर पर सुन्दर सेहरा शोभा दे रहा है। ज़ुल्फ़ें सँवारने वाले मेरे बन्ने की बड़ी लम्बी उम्र हो।

शरीर पर वह केसरिया रंग का जामा पहने है। बन्द सँवारने वाले मेरे बन्ने की बड़ी लम्बी उम्र हो।

वह कानों में सूरत के मोती पहने है। दुपट्टा सँवारने वाले मेरे बन्ने की बड़ी लम्बी उम्र हो।

हाथों में वह जड़ाऊ कंगन धारण किये हुए है। पहुँची सँवारने वाले मेरे बन्ने की बड़ी लम्बी उम्र हो।

[इसी प्रकार दूल्हे के पूरे साज-सिंगार का वर्णन करते हुए उसे दीर्घायु होने के शुभ आशीर्वाद दिये जाते हैं।]

(१२३)

बनों के बीच घूमै घोड़िया रे,
द्वारे पै नाचै घोड़िया रे।
बन्ना के बाबा लखपतिया रे,
वही खरीदें घोड़िया रे।
एक लख माँगे, सवा लख देवें,
दादी खरीदें घोड़िया रे।
आरती उतारें माता तुम्हारी,
बुआ बलैया लेवें घोड़िया रे।
जामा तुम्हारे जीजा पहनावें,
सेहरा बँधावें घोड़िया रे।
राई औ नोन तेरी बहिनी उतारें,
भाभी बलैया लेवें घोड़िया रे।

नेग चार सब दादा दिया है,
नानी गवावैं घोड़िया रे।
मामी तुम्हारी बलि-बलि जावैं,
भैना नचावै घोड़िया रे।

एक घोड़ी जंगल-जंगल घूम रही है। दरवाज़े पर आकर नाच रही है। (बड़ी क़ीमती है। है कोई उसे ख़रीदने वाला ? क्यों नहीं!) बन्ने (दूल्हे) के पितामह लखपती आदमी हैं। वे ही यह घोड़ी खरीदेंगे।

घोड़ी बेचने वाला एक लाख माँगता है। वे सवा लाख रुपये दे रहे हैं। दादी घोड़ी ख़रीद रही हैं।

माँ घोड़ी की आरती उतार रही है। बुआ बलैया ले रही हैं। तुम्हारे जीजा जामा पहना रहे हैं। सिर पर पाग बाँध रहे हैं। बहन राई-नमक उतार रही है। भाभी बलैया ले रही हैं।

दादी परिजनों को पुरस्कार बाँट रही हैं। नानी घोड़ी गवाती हैं।

तुम्हारी मामी बलैया लेती हैं। भांजा घोड़ी की सवारी कर उसे शान से नचा रहा है।

(१२४)

बन्ने प्यारे की घोड़िया उदास खड़ी,
उदास खड़ी, हाँ गुमान भरी;
बन्ने प्यारे की घोड़िया उदास खड़ी।
ना घोड़िया पहिने जामा रे जोड़ा,
ना घोड़िया सिर पै सेहरा धरी।
ना घोड़िया पहिने कानों में कुण्डल,
ना घोड़िया कंगन हाँथ धरी।
ना घोड़िया आँखों में काजल डाले,
ना घोड़िया मुख में तमोल भरी।
ना घोड़िया लेवे काबुल का घोड़ा,

ना घोड़िया चाबुक हाँथ धरी।
ना घोड़िया लेवे नाजो का डोला,
ना घोड़िया जावे ससुर की गली।
दादी औ बाबा घोड़िया मनावें,
घोड़िया पै माता बलि बलि गयी।

प्यारे बन्ने की घोड़ी उदास मुद्रा में खड़ी है। हाँ, अहंकार में भरी, उदास मुद्रा में खड़ी है।

न तो वह जोड़ा-जामा पहनती है। न सिर पर सेहरा रखती है। कानों में कुण्डल और हाथों में कंगन भी नहीं पहन रही है।

न तो आँखों में काजल लगाती है। न मुँह में पान लेती है।

काबुल का घोड़ा भी वह नहीं ले रही है। हाथ में चाबुक नहीं थाम रही है।

देखो तो, घोड़ी दूल्हन की पालकी भी नहीं ले रही है! ससुराल भी नहीं जा रही है।

दादी, बाबा, माँ सब घोड़ी की मनुहार कर रहे हैं। तब भी प्यारे बन्ने की घोड़ी उदास खड़ी है।

बन्ना

(१२५)

बन्ने पर जदुवा न कोइ डालो,
ललले पर नैना न कोई डालो।
लाओ सखी काजल की डिबिया,
राम जी का नैना सँवारूँ।
मिथिलापुर की नारी सयानी,
आपन नना आपै सम्हालो।
चढ़े विमान जनकपुर आये,
अवध बरतिया साथ हैं लाये।

बेटा ब्याहन दशरथ जी आये,
बर की गगरिया साथ में लाये।

चारों भैया मंडप में आये,
सीता बन्नी ब्याहन को आये।

मेरा बन्ना (दूल्हा) इस समय सजा-सँवारा बहुत सुन्दर लग रहा है। कोई उस पर जादू टोना न करे। कोई उसे नज़र न लगाये।

हे सखी, काबुल की डिबिया लाओ। मैं ज़रा अपने राम की आँखें सँवार दूँ। जनकपुर की स्त्रियाँ बहुत चतुर हैं। तुम सब स्वयं ही अपनी-अपनी आँखें सँभालो।

विमान में बैठकर सब लोग जनकपुर पहुँचे। अयोध्यावासियों की बारात भी साथ ले गये। वहाँ शोर हो गया—"राजा दशरथ अपने पुत्रों का ब्याह कराने आये हैं। साथ में वर का कलसा भी ले आये हैं।"

चारों भाई विवाह मंडप में पहुँचे। वे सीता बहू से ब्याह करने आये हैं।

(१२६)

बन्ना बन्ना मत करो सासु,
अब तो बन्ना मेरा है।

बन्ना बन्ना मत करो ननदी,
अब तो साजन मेरा है।

ओदे से जब सूखे करना,
तब तो बन्ना तेरा था।

सेज ऊपर ऊधम मचाये,
अब तो बन्ना मेरा है।

रोवे कलेवा माँगे बन्ना,
तब तो बन्ना तेरा था।

दोने पर वह दोना लेवे,
अब तो बन्ना मेरा है।

तख्ती ले जब पढ़ने जावे,
तब तो बन्ना तेरा था।
बैठ कचहरी हुकुम चलावे,
अब तो बन्ना मेरा है।

सहेलियाँ हास्य-विनोद में सास से वधू के पक्ष की बातें कह रही हैं—"सास जी, बन्ने (दूल्हे) को अब आप अपना मत समझें। अब तो वह मेरा (बहू का) हो गया। ननद जी, तुम भी उसे अब अपना भाई मत समझो। अब तो वह मेरा साजन बन गया है।"

(बचपन में जब वह बिस्तर पर टट्टी पेशाब कर देता था, तब) गीले स्थान से हटाकर सूखे स्थान पर सुला देने के लिये तो तुम्हारा (माँ का) था, किन्तु अब तो वह मेरा बन गया है और मेरे साथ शैया पर आनन्द-केलि करेगा।

जब वह रो-रोकर कलेऊ माँगता था, तब तो तुम्हारा था, किन्तु अब वह मेरा हो गया है और मैं उसे पत्ते के दोनों में मिठाइयाँ भर-भरकर खिलाऊँगी।

बन्ना जब (छोटा था और) बगल में तख़्ती दबाकर पढ़ने जाता था, तब तो तुम्हारा था, किन्तु अब वह मेरा बन गया है और सभा में बैठकर सरदार की तरह नौकरों-चाकरों पर शासन चलायेगा।

(१२७)

सखी कैसे सजे हैं आज हरी बन्ना।
सिर पर उनके मुकुट बिराजे,
कँलगी में लागे लाल रोचना।
कानों में कुण्डल, सूरत का मोती,
लरिया लगी श्याम हैं जड़ी मणियाँ।
अंग प्रभू के केसरिया जामा,
बन्दा लगे सखी नागफनियाँ।
पावों में उनके नूपुर सजे हैं,
घूँघुर लगी वहके लाल कनियाँ।

संग में उनके राधे का डोला,
परदा लगे ओंहमे मखमलिया।
गोपी गोपाल सब नाचन लागे,
सखी हरी जी की देखो चतुरइया।

[कृष्ण विवाह के समय विविध आभूषणों से सुसज्जित हैं। उनके साथ राधा की पालकी भी सजी है। इस समय उनकी शोभा देखते ही बनती है। उसी का वर्णन है—]

हे सखी, देखो, इस समय कृष्ण ने कैसा श्रृङ्गार किया है! वे कितने सुन्दर लग रहे हैं। उनके सिर पर मुकुट सुशोभित है। कलँगी में लाल रोचना लगा है। कानों में कुण्डल और सूरत के मोती धारण किये हैं। बालों की लटों में मणियाँ जड़ी हैं।

कृष्ण के शरीर पर केसरिया रंग का जामा है। उसमें नागफनी के बन्दे लगे हैं। उनके पैरों में नूपुर हैं। लाल कनी के घूँघुर हैं।

उनके साथ में राधिका रानी की पालकी है। पालकी में मखमली पर्दे लगे हैं। गोप-गोपियाँ आनन्दोत्सव मना रहे हैं। हे सखी, देखो कृष्ण कितने चतुर हैं!

(१२८)

कौने बन ऊगे हो मौरी के गोफवा,
कौने दिसि ऊगे चाँद सुरुजवा?
गोकुल बन ऊगे हो मौरी के गोफवा,
पुरुब दिसि ऊगे चाँद सुरुजवा।
गोफवा तोरन जसुमति गईं फुलवरिया,
नीर बहत माई बिछुड़त कन्हैया।
मौरा बँधावे हरि गये फुलवरिया,
रोवत-रोवत जसुदा के फटे छतिया।
अँचरा पकड़ि परभू दुधवा पियत हैं,
कबहूँ न बिसारिउ मोंहि महतरिया।

"किस जंगल में मौरी के कोपल उत्पन्न होते हैं ? किस दिशा से चन्द्रमा और सूर्य उदित होते हैं !"

"पूर्व दिशा से चन्द्रमा और सूर्य उदित होते हैं। और गोकुल के वन में मौरी के कोपल उत्पन्न होते हैं।"

यशोदा माता मौरी के कोपल तोड़ने बाग में जाती हैं। कृष्ण मथुरा जाते हैं। अतः उनके वियोग-दुःख से उनकी आँखों से आँसू टपक रहे हैं।

कृष्ण मौर बँधवाने के लिये बाग में गये। रोते-रोते यशोदा माता की छाती फट रही है।

यशोदा माता का अंचल पकड़ कर दूध पीते हुए कृष्ण निवेदन करते हैं—"माँ, मुझे कभी विस्मृत मत कर देना !"

(१२९)

आज मेरे लालन बन्ना बनेंगे ।
ससुरू तुम्हारे बन्ना है लखपतिया,
सासु गंगा जी की धारा बन्ना।
साला तुम्हारा बन्ना अहइ तीरबजवा,
सरहज तुम्हारी बाँकी गुजरिया।
बैन बोलन को सखियाँ मिलेंगी,
पंखा झलन को दासी रे बन्ना !
लाली पलँगिया साजेगी साली,
गलवा लगन को बन्नी रे बन्ना !

आज मेरा प्यारा बेटा बन्ना बनेगा। हाँ, सखी, आज मेरा लाडला बेटा दूल्हा बनेगा।

बन्ने, तुम्हारे ससुर बहुत बड़े धनी हैं। सास गंगा की धारा के समान (निर्मल और उदार) हैं।

तुम्हारा साला बड़ा बहादुर तीरबाज है। सरहज (साले की पत्नी) गुजरिया की तरह बाँकी और नवेली है। तुम्हारे विनोद के लिये सहेलियाँ मिलेंगी। पंखा डुलाने के लिये दासियाँ मिलेंगी। साली तुम्हारे लिये पलँग सजायेगी और कण्ठ से आलिंगन करने के लिये तुम्हें दूल्हन मिलेगी।

बन्ना मैं तो नाम सुन कर आई ।

बन्ना तेरे बाबा की ऊँची महलिया,
बन्ना मैं तो नीचे - नीचे आई ।

बन्ना तेरे दादी का नखरा भारी,
बन्ना मैं तो उनसे बढ़ कर आई ।

बन्ना तेरे बाबू की ऊँची महलिया,
बन्ना मैं तो नीचे-नीचे आई ।

बन्ना तेरे अम्मा का नखरा भारी,
बन्ना मैं तो उन से बढ़ कर आई ।

बन्ना तेर भाई की ऊँची महलिया,
बन्ना मैं तो नीच - नीचे आई ।

बन्ना तेरे भाभी का नखरा भारी,
बन्ना मैं तो उनसे बढ़ कर आई ।

प्रस्तुत गीत में दूल्हे की ससुराल और उसके अपने परिवार के वैभव का वर्णन किया गया है । कहा गया है कि उसके ससुर का बड़ा ऊँचा महल है । उसकी दादी बहुत नख़रेबाज़ है । बाप, भाई आदि की भी ऊँची-ऊँची कोठियाँ हैं और माँ, भाभी आदि बहुत नखरेबाज़ हैं ।

(१३१)

मेरा छोटा - सा बन्ना बन्नी को लेने जाय रे,
जरा देखना, हो जरा देखना ।
जब बन्ना पहुँचा ससुरू दुवरिया,
ससुरू लिए हैं अगवानी ।
जब बन्ना पहुँचा मण्डप के नीचे,
साला लिए हैं जै माला ।

जब बन्ना पहुँचा कोहबर के भीतर,
साली खेलावे उनको पासा।
जब बन्ना पहुँचा लाली पलँगिया,
बन्नी लिए हाथ बिरवा।

मेरा छोटा सा बन्ना (दूल्हा) बन्नी (दूल्हन) लेने जायगा। उस वक्त ज़रा देखना क्या-क्या होगा?

बन्ना जिस समय अपने ससुर के दरवाज़े पर पहुँचेगा, वे उसका स्वागत करेंगे। जब विवाह मंडप में जायगा तो साला उसे जयमाल पहनायेगा। कोहबर में साली उसके साथ पासा खेलेगी।

बन्ना जब आमोद कक्ष में लाल पलंग पर पहुँचेगा, तो बन्नी हाथ में पान का बीड़ा लिये खड़ी होगी।

(१३२)

घबड़ाना मत बन्ने, शरमाना मत बन्ने,
मैं तो न्याय करूँगी, हाँ न्याय करूँगी।
तेरे बाबा का खाट मैं द्वारे करूँगी,
तेरी दादी से दो दो बातें करूँगी।
वो तो एक कहें मैं तो चार कहूँगी,
उनकी धोती के मैं दो टूक करूँगी,
उनकी धोती की मैं तो रूमाल करूँगी।
तेरे बाबू का खाट मैं तो द्वारे करूँगी,
तेरी अम्मा की बात मैं तो नहीं सहूँगी।
वह एक कहें मैं तो चार कहूँगी,
उनके लहँगे कामैं तो नेफा खोलूँगी,
गर ज्यादा बोलें तो झाड़ू मारूँगी।
तेरे बीरन का खाट तेरे बाग रहेगा,
तेरी भाभी का नखरा कौन सहेगा?

सैंया वो तो घरफुकनी बड़ी कुटनी है,
देवर रखनी है, बड़ी जिभचटनी है।

सैंया उनके साथ में कैसे रहूँगी ?
सैंया तेरा खाट मेरे महलों रहेगा !

बन्ना पाँव दबाऊँ मैं तो सेज सजूँगी,
जरा पंखा झलो सर तेल मलो।

मैं राज रजूँ तुम सेज सजो,
बन्ना घूँघट खुले मैं तो गरवा लगूँगी।

दूल्हन अपने दूल्हे से विनोद कर रही है--"बन्ने, तुम्हें घबड़ाने और शरमाने की जरूरत नहीं। मैं जो कुछ करूँगी, वह अच्छा ही करूँगी ! तुम्हारे दादा की चारपाई मैं दरवाज़े पर फेंक दूँगी और दादी से मेरी खूब नोंक-झोंक होगी। वे मुझे एक बात कहेंगी तो मैं उन्हें चार बातें सुनाऊँगी। उनकी साड़ी फाड़कर मैं उससे अपने लिये रूमाल बना लूँगी।

"तुम्हारे बाप की चारपाई भी मैं बाहर कर दूँगी और तुम्हारी अम्मा की एक भी बात नहीं सुनूँगी। एक की चार सुनाऊँगी। उनके लहँगे की बन्द तोड़ डालूँगी और अगर ज़्यादा बड़-बड़ करेंगी तो झाड़ू मार कर दूर कर दूँगी।

"तुम्हारा भाई भी घर में नहीं सोने पायेगा। उसकी चारपाई बाग में चली जायगी और तुम्हारी भाभी का भी नखरा मुझसे नहीं सँभाला जायगा ! वे घर में फूट पैदा करती हैं। बहुत चुगली करना आता है उन्हें ! देवर से गुप्त सम्बन्ध रखती हैं और ज़बान की बड़ी चटोरबाज़ हैं। प्रियतम, भला उनके साथ मेरा कैसे निर्वाह होगा !

"प्रियतम, तुम्हारी पलँग मेरे महल में होगी। मैं तुम्हारा पैर दबाऊँगी। शैया पर तुम्हारे साथ शयन करूँगी। तुम्हें पंखा डुलाऊँगी। सिर में तेल की मालिश करूँगी। मैं राजसुख का भोग करूँगी। तुम मेरी शैया के शृङ्गार बनोगे। ज्योंही तुम मेरा घूँघट खोलोगे, मैं तुम्हारे गले से लग जाऊँगी।"

(१३३)

बन्ने पर नजरा न कोई डारो।
मिथिलापुर की नारी सयानी,
अपने नैना आप सँभालो !
लाओ री कोई काजर की डिबिया,
राम के दोनों नैना सँवारो।
माता उनकी आरती साजें,
बहना राई - नोन उतारें।
चढ़ि के विमान जनकपुर आये,
सिय बनरी को ब्याहन आये।
धनि जननी धनि माता कौसल्या,
राम सिया बर पायो।
जो यह राम का बनरा गावें,
तन, मन, धन सब वारें।

बन्ना इस समय बहुत सुन्दर लग रहा है। कोई उसे नज़र मत लगाओ। जनकपुर की चतुर स्त्रियों, अपने-अपने नेत्रों की तुम सब स्वयं ही रक्षा करो।

अरे, कोई काजल की डिबिया तो ले आओ। मैं राम के नेत्र आँजन दूँ। उनकी माता आरती सजा रही हैं। बहन राई-नमक उतार रही है।

राम विमान में बैठकर सीता से ब्याह करने जनकपुर गये। धन्य है माता कौशल्या की कोख कि उन्हें राम जैसा पुत्र और सीता जैसी बहू मिली। राम के ब्याह से सम्बन्धित इस गीत को जो गाते हैं, वे धन्य हैं। मैं उन पर अपना तन-मन और धन निछावर कर दूँगी।

मौरी

(१३४)

मलिया बुलाओ, मलिया बुलाओ
मेरे लाल की मौरी गूँथे, मेरे ललन का सेहरा गूँथे,

ना मलिया घर में, ना मलिया बाग में,
ना मलिया बन्ने के द्वार।
मलिया तो माँगे सखी महला-दुमहला,
मालिन माँगत है सुहाग।
मौरी तुम्हारी मालिन लाखों में एक है,
हीरा जड़ी अरे मौरी बनाव।
मौरी गुथाँय बन्ने सासुर चले हैं,
नाजो का डोला लै आव।
हँसि-हँसि के पूछें माता तुम्हारी,
कैसी ललन ससुराल।
सासू तो हैं मेरी सरसुति की धारा,
ससुरू सुरुज की जोत।
पालि-पोसि बेटा बड़ा किया है,
दुधवा पियायो अनमोल।

दूल्हे की माँ उसकी मौरी गुंथाने के लिये उतावली होती हुई कह रही है—"जल्द माली को बुलाओ! वह आकर मेरे बेटे की मौरी गूँथे, मेरे लाल का सेहरा तैयार करे!"

"न माली घर में है, न बाग में और न बन्ने के दरवाज़े पर, कोई उसे खोज कर ले आये ताकि वह जल्द मौरी तैयार करे!"

"हे सखी, माली तो नेग में महले-दुमहले माँग रहा है! मालिन सुहाग माँग रही है!"

"मालिन, तुम्हारी मौरी बहुत सुन्दर बनी है। लाखों में एक है। इसमें चमकते हुए हीरे जवाहरात जड़े हैं!"

"मौरी गुंथा कर बन्ना ससुराल जा रहा है। वह अपने साथ दूल्हन की पालकी ले आयेगा!"

ससुराल से लौटने पर दूल्हे की माँ हँसती हुई पूछती है—"बेटा, तुम्हें अपनी ससुराल कैसी लगी?"

दूल्हा अपनी ससुराल की प्रशंसा करता हुआ कहता है—"माँ, मेरी सास

सरस्वती की धारा के समान हैं और ससुर सूर्य की ज्योति की भांति चमकने वाले अत्यन्त प्रतापी और वैभव सम्पन्न हैं।"

माँ कहती है—"बेटा, मैंने तुम्हारा पालन-पोषण कर तुम्हें बड़ा किया। तुम्हें अपनी छाती का अनमोल दूध पिलाया, किन्तु मुझे भुला कर एक दिन में ही तुम अपनी सास और ससुर की इतनी प्रशंसा करने लगे!"

दूध का मोल

(१३५)

मोरे दुधवा का लालन मोल करो।

तुम तो चले बेटा ससुरू दुवरिया,
मइया की कोखिया का मान करो।

नौ रे महीना बेटा कोखिया में राखेउँ,
दसयें महिनवा दिहेउँ अवतार।

सात सोत बेटा दुधवा पियायेउँ,
कबहूँ न दुलछेउँ तुहैं मेरे लाल।

ना देखेउँ लालन भुखिया पियसिया,
ना देखेउँ लालन नयनवा की नींद।

सासू का अँचरा पकरि पूता माँगेउ,
आपनि धेरिया देइहइँ बियाहि।

पुत्र दूल्हा बनकर बारात के साथ ससुराल जा रहा है। माँ की असीम ममता सावन के बादलों की तरह उमड़ आती है। वह बेटे से अपने दूध का मूल्य माँगती हुई कहती है—"बेटा, मेरे दूध का मूल्य चुकाते जाओ, मेरे दूध की क़ीमत अदा करते जाओ! अब तो तुम अपने ससुर के द्वार पर जा रहे हो। अपनी माँ की कोख का मान कर लो, अपनी माँ का ऋण चुकता कर दो! नौ महीने मैंने तुम्हें अपने पेट में रखा! दसवें महीने में तुम्हारा जन्म हुआ। सात स्रोतों का तुम्हें दूध पिलाया। कभी भी तुम्हारा निरादर नहीं किया। मैंने अपनी भूख और प्यास की परवाह नहीं की। अपनी नींद की

चिन्ता नहीं की। आज तुम चले जा रहे हो, मुझसे दूर हो रहे हो, मेरे दूध का मोल चुकाते जाओ!"

"बेटा, अपनी सास का आँचल पकड़ कर यह बातें कहना! वे तुम्हारे साथ अपनी बेटी का ब्याह कर देंगी!"

(१३६)

तूँ तउ चलेउ पूता सीता बियाहन
कइ लेतेउ दुधवा क मोल!

आठ मास नउ कोखिया में राखेउँ
दसवें महिनवा दिहेउँ अवतार,
सात सोत पूता दुधवा पियाएउँ,
दुधवा उरिन कइसे होउ?

सरग तरइया केन गिनिहइँ माता,
दुधवा उरिन कइसे होउँ.
सीता बियहि लइ अउबइ माता,
चरन पखारइँ दूनउ जून।

दूल्हे को विदा करती हुई उसकी माँ कह रही है—"बेटा, तुम तो सीता के साथ अपना ब्याह करने जा रहे हो, मेरे दूध का मूल्य चुकाते जाओ, मेरा अकूत ऋण अदा करते जाओ!"

"आठ-नौ महीने तुम मेरे गर्भ में रहे। दसवें महीने में तुम पैदा हुए। सात स्रोतों का मैंने तुम्हें दूध पिलाया। मेरे दूध का ऋण तुम कैसे चुकता करोगे?"

पुत्र उत्तर देता है—"माँ, आकाश के तारों को भला कौन गिन सकता है? माँ के दूध से भला कौन उऋण हो सकता है?

"मैं सीता को ब्याह लाऊँगा। वह सुबह और शाम दोनों समय तुम्हारा पैर धोया करेगी, दिन-रात तुम्हारी सेवा किया करेगी!"

(१३७)

अनमोल हैं दुधवा रस से भरे।
मेरी मइया बचन हैं रस से भरे,
सात समुन्दर मइया दूध पिऊँ रे,
तबहूँ न मइया बुझइ पियास।
गंगा तोर आँचल, जमुना गइरहया,
सरसुति धार मइया बैन भरे।
सात सोत मइया जो पिऊँ दुधवा,
तबहूँ उरिन नहिं होत बने।
सरग तरइया मइँ गिनउँ रे माता,
तबहूँ न दुधवा क मोल चुके।
जननी दुधवा पिये रामचन्द्र राजा,
पुरुषोत्तम होइ के उरिन ना भये।

माता द्वारा दूध का मूल्य माँगने पर पुत्र उत्तर दे रहा है--"माँ, तुम्हारा मीठा दूध अनमोल है। तुम्हारी मधुर मीठी बातें अनमोल हैं।"

"माँ, सात समुद्रों का जल पीने पर भी, बिना तुम्हारा दूध पिये, मैं प्यासे का प्यासा ही रह जाता हूँ।"

"माँ, तुम्हारे आँचल में गंगा की शुभ्रता है, यमुना की गहराई है। तुम्हारी बातें सरस्वती की धारा के समान निर्मल और पुनीत हैं। सात स्रोतों का दूध पीने पर भी तुम्हारे दूध से मैं उऋण नहीं हो सकता! आकाश के तारों की गणना कर लेने पर भी मैं तुम्हारे दूध का दाम नहीं चुका सकता।"

"राम ने भी माँ का दूध पिया। वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहे जाते हैं, फिर भी अपनी माँ के दूध से उऋण नहीं हो सके।"

(१३८)

अँचरा ओढ़ावत माया कवनि देइं, नयना चुवत ढुरहरि आँसु,
दुधवा तउ बखसउ हो मोरि माता, तोर पूत चलइ ससुरारि।

कइसे क दुधवा बखसउँ बेटा, नयना चुवइ आँसू धार,
आठ महीना नउ कोखिया में राखेउँ, दसयें दिहेउँ अवतार।

बखसत दुधवा जिया घबराइ रे, तुहुँ पूत होबेउ फराक,
हाँथ जोरि पइयाँ लागउँ रे माई, नहिं हम होबइ फराक,

चन्द्र सुरुज अस छिटकउ जगत में, अब मोरि कोखिया जुड़ानि,
चाखउ अनन्द फल निति मोरे बेटा, बहुवा कइ भरी रहइ माँग।

पुत्र को दूल्हा बना कर विदा करते समय माँ अपना आँचल उसके सिर पर डाल रही है। उसकी आँखों से मोह और ममता के अविरल आँसू बह रहे हैं। पुत्र निवेदन करता है—"माँ, तुम्हारा पुत्र आज ससुराल जा रहा है। अपने दूध के ऋण से उसे मुक्त कर दो!"

माँ उत्तर देती है—"बेटा, अपने दूध के ऋण से तुम्हें किस प्रकार मुक्त करूँ? मेरे नेत्रों से अश्रुधार बरस रही है। नौ महीने मैंने तुम्हें अपने गर्भ में रखा। दसवें महीने में मैंने तुम्हें जन्म दिया। दूध से उऋण करते समय मेरे प्राण काँप रहे हैं। तुम मुझसे दूर हो जाओगे। आज से तुम पराई कन्या के वश में हो जाओगे!"

पुत्र क्षमा माँगता है—"माँ, मैं हाथ जोड़ कर तुम्हारे चरणों का स्पर्श कर रहा हूँ। मैं पराई कन्या के वशीभूत नहीं बनूँगा!"

माँ आशीर्वाद देती है—"बेटा, चन्द्रमा और सूर्य की भांति तुम्हारे यश की किरणों का संसार में विस्तार हो। मेरी कोख आज शीतल हो गई। तुम्हारी बहू की माँग का सिन्दूर अमर हो, वह सदा सुहागिन बनी रहे और तुम नित्य आनन्द के फल का आस्वादन करो।"

बेटी का ब्याह

(१३९)

काहें क मोर बाबा, पुतरी उरेहेउ, काहें क खोजउ दमाद,
काहें क मोरे बाबा पोखरा खनाएउ, काहे क निरधन दमाद?
भीति लागि बेटी पुतरी उरेहेउँ, तोहईं के निरधन दमाद,
चउवा के खातिर बेटी पोखरा खनायेउँ, भागहीन निरधन दमाद।

अगिया लगावउँ बाबा पण्डित के बेदवा रे, फँसिया लगउबइ फन्दा डारि,
जनमत बाबा मोहिं पथरा दबउतेउ, काहें क जियरा बिरोग ?
काहें क मोरि बेटी फँसिया लगावउँ, काहें क जियरा बिरोग,
सात समुन्दर रतन हम देबइ, बिलसइ राज दमाद ।

पिता और पुत्री का सम्वाद है। पुत्री पूछती है--"पिता जी, आपने पुतली क्यों चित्रित कराई ? दामाद क्यों खोजा ? तालाब किस लिये बनवाया ? और निर्धन दामाद लेकर क्या होगा ?"

पिता उत्तर देता है--"बेटी, दीवार की शोभा के लिये पुतली चित्रित कराई गई। तुम्हारे लिये दामाद खोजा। पशुओं के पानी पीने के लिये तालाब बनवाया। और भाग्यहीनता थी, इसीलिये निर्धन जामाता मिला।"

"पिता जी, पंडित का मैं सब पोथो-पत्रा जला दूँगी और स्वयं गले में फन्दा डाल कर फाँसी लगा लूँगी। जन्म के समय ही आप पत्थर से दबा कर मुझे मार डालते। आप क्यों मुझे इतना दुःख दे रहे हैं ?"

"बेटी, तुम फाँसी क्यों लगाओगी ? तुम्हारा हृदय इतना दुखी क्यों है ? मैं (दहेज में) सात समुद्र (अपार) का रत्न दूँगा और मेरा दामाद राज-सुख का भोग करेगा !"

(१४०)

एक ओरि गंगा, दुसर ओरि जमुना, बिचवा में सरसुति धार,
ओहवइँ रुकुमिनि कोहबर सजावइँ, परि गइ क्रिस्न जी कई दीठि।

तँहवइँ दुलहे राम सेजिया बिछावइँ, कुचइँ महोबे क पान,
काहें क धन तूँ पलँग चढ़ि बइठिउ, काहें क भरलिउ गुमान ?

आजु की रतिया सोहाग की रतिया, मिलउ न अन्तर खोलि,
हम तउ अही धन जग कर नायक, दूजे दिन रहबिउ अकेलि।

अंग लगावउँ स्वामी रखिया-भभुतिया, मन में बसेउ बयराग,
नयना बसेउ स्वामी तोहरी सुरतिया, मुखवा में हरि जिउ क नाउँ।

एतनी बचन जब सुनेनि क्रिस्न जी, कोंछवाँ में लिहेनि उठाइ,
काहें क धन तूँ बिरोग करउ रे, हम अही कन्त तोहार।

एक ओर से गंगा बह रही हैं। दूसरी ओर से यमुना। बीच में सरस्वती की धारा है। उसी स्थान पर रुक्मिणी कोहबर सजा कर बैठी हैं। अचानक कृष्ण जी की दृष्टि उधर पड़ गई।

दूल्हे कृष्ण ने वहीं सेज बिछा दी। मुँह में महोबे का पान कूँचते हुए रुक्मिणी से बोले--"प्रिये, तुम क्यों पलँग पर उदास बैठी हो? क्यों तुमने इतना मान कर रखा है? आज हमारी सुहाग-रात है। अन्तःकरण खोलकर मुझसे मिलो। मैं सम्पूर्ण संसार का पालन करने वाला हूँ। दूसरे दिन तुम अकेली ही रह जाओगी!"

रुक्मिणी ने प्रीति पूर्ण उत्तर दिया--"प्रियतम, तुम्हारे लिये मैंने अपने अंग में राख-भभूत लगा रक्खी है। मन में वैराग्य धारण किये हूँ। नेत्रों में तुम्हारा रूप बसा हुआ है और मुख से तुम्हारे नाम का उच्चारण कर रही हूँ।"

कृष्ण ने इतना सुनते ही रुक्मिणी को गोद में उठा लिया--"प्राण, तुम क्यों इतना दुःख मान रही हो। मैं ही तुम्हारा स्वामी हूँ।"

(१४१)

ऊँची बखरिया राजा जनक की, झालरि लगी है दुवार,
सेइ चढ़ि बोलइ एक लाल परेवना, लेत राम कर नाउँ।
बखरी की आरी आरी फिरइँ दुलहे राम, परि गइ परेवना प दीठि,
ना हम लेबइ बाबा अँचहड़ पँचहड़, ना हम लेबइ राज,
हम तउ लेबइ बाबा लाल परेवना, लेत राम जी क नाउँ।
देबइ मँइ अँचहड़, देबइ मँइ पँचहड़, देबइ सोरहउ भण्डार,
एक नहिं देबइ लाल परेवना, लेत राम जी क नाउँ,
छोड़ि देबइ अँचहड़, छोड़ि देबइ पँचहड़, छोड़ि देबइ सोरहउ भण्डार,
छोड़ि देबइ बाबा तोहरी दुलारी रे, जाबइ झारिखण्ड देस।
भितरा से निसरें हइँ सरवा कवन राम, बोलत बचन सँभारि,
पान अस पातरि बहिनि सँकलपेउँ, परेवना कइ कवनि बिसाति?

राजा जनक का ऊँचा महल है। द्वार पर बन्दनवार लगे हैं। महल (के छज्जे) पर बैठा हुआ एक लाल पक्षी (राम-राम) बोल रहा है।

दूल्हे राम महल के निकट घूम रहे थे। पच्छी पर उनकी दृष्टि पड़ गयी। मचल कर ससुर से बोले—"बाबा, मैं इधर-उधर की चीजें नहीं लूँगा। राज-पाट की भी मुझे अभिलाषा नहीं है। अन्न, धन और स्वर्ण भी नहीं लूँगा। सोलहों भंडार लेने की भी मेरी इच्छा नहीं है। मैं तो बस यही लाल पच्छी लूँगा जो 'राम-राम' बोल रहा है।"

ससुर ने उत्तर दिया—"मैं इधर-उधर की सारी वस्तुयें दूँगा। सोलहो भंडार दूँगा, किन्तु 'राम-राम' बोलने वाला लाल पच्छी नहीं दूँगा।"

दूल्हा रुष्ट हो उठा—"मैं इधर-उधर की वस्तुयें नहीं ग्रहण करूँगा। सोलहों भंडारों पर भी आँख नहीं उठाऊँगा, और बाबा, तुम्हारी दुलारी बेटी को भी छोड़ कर मैं झारखंड वन में चला जाऊँगा।"

घर के भीतर से अमुक नाम का बधू का भाई निकला। विनीत वाणी में बोला—"भाई, मैंने जब तुम्हें पान जैसी अपनी तन्वंगी बहन सौंप दी तो उसके सामने भला इस पच्छी की कौन-सी बिसात है!"

(१४२)

अँगना में ठाढ़ि हें माया कवनि देई, नयना चुवत दुइनउ आँसु,
के मोरे रोपइ अब रे बरतिया, के मोरे पूजइ दुवार ?

पियवा तउ गयें मोर पुरबू बनिजिया, पुतवा खेलइ अहेर,
गउवाँ कें लोगवा दुवरवा न अइहइँ, एक पुरुख बिनु मोर।

वन बीच बोले हें बनदेउ बाबा, सुनउ तिरिया बचन हमारि,
हम तोरे द्वारे पूजन करउबइ, हम रोपबइ अगवानी जाइ।

तोहरी जे धेरिया धरम की धेरिया, जिनि करउ जियरा बिरोग,
कुस-करिना लइ दान करब हम, सब फल लेबइ छीनि।

गाँउ कइ धेरिया कुंवारी न रइहइँ, बिनु धन अरु बिनु बाप।
मँड़ए बइठि हम बहिनी बियाहब, धरम कइ बहिनि हमारि।

द्वार पर दामाद की बारात आते समय, बेटी की माँ की मार्मिक और कातर मनःस्थिति का चित्रण है—

आँगन में अमुक नाम की माँ खड़ी है। उनके दोनों नेत्रों में आँसू बह

रहे हैं। मन में चिन्ता हो रही है—"मेरा कौन अपना है जो कि बारात का स्वागत करे, जो कि द्वार पूजा का उत्सव सम्पन्न करे? मेरे स्वामी पूर्व दिशा में व्यापार करने गये हैं। पुत्र शिकार खेलने गया है। गाँव के लोग मेरे दरवाजे पर आयेंगे नहीं। हाय! मेरे स्वामी के बिना कितना अकाज हो रहा है!"

गृहिणी की व्यथा से द्रवित होकर जंगल के बीच से वनदेवता सहानुभूति पूर्ण स्वर में बोले—"स्त्री, तुम मेरी बात सुनो। मैं स्वयं तुम्हारे द्वार पर आकर द्वार पूजा कराऊँगा। मैं जाकर बारात की अगवानी करूँगा। तुम्हारी बेटी मेरी धर्मपुत्री है। तुम अपना मन छोटा मत करो। हाथ में कुश लेकर मैं कन्यादान करूँगा और इस पुण्य का सम्पूर्ण फल तुमसे बाँट लूँगा। गाँव की यह बेटी पिता और धन न रहने के कारण क्वाँरी नहीं रहने पायेगी। मंडप के मध्य मैं बहन का ब्याह रचाऊँगा। वह मेरी धर्म की बहन लगती है।

(१४३)

जबर बरतिया दुवरवइ आयी, चेरिया कलस लिहे ठाढ़ि,
हाँथे क कलसा भुइयाँ धरत भई, धाइ के कोहबर भइ ठाढ़ि।
सुनउ सीतल देई वर तोर लरिका, का विधि लिखेउ लिलार,
जनमत काहें न मुइ गइउ बेटी, छोटइ कन्त तोहार।
सुनउ रे चेरिया, सुनउ लउँड़िया, सुनउ नगरवा के लोग,
हमरे करम बर इहइ लिख्यो है, का करइँ बाप हमार?
छोटइ बर जिनि जानउ मोरि चेरिया, हैं जग पालनहार,
इहइ बर संग लइ बन-बन घुमिहउँ, देइहइँ रवनवा मारि।
राम की खातिर जनम भयेउ मोर, रामहिं अंग लगि खियाउँ,
जनम सुफल मोर भयउ रे चेरिया, रामहिं सीता परेउ नाउँ।

एक परिचारिका वस्तुतः सीता जी से विनोद कर रही है—

जिस समय बारात दरवाजे पर आई, एक परिचारिका मंगल-कलश लेकर खड़ी थी। हाथ का कलसा जमीन पर रख कर वह दौड़ती हुई कोहबर घर में पहुँची। सीता जी से (वास्तव में उन्हें चिढ़ाने के लिये) बोली—"रानी, तनिक मेरी बात सुनो! क्या ब्रह्मा ने तुम्हारे भाग्य में यही लिखा है? जन्म

होते ही तुमने क्यों नहीं प्राण त्याग कर दिया ? भला देखो, तुम्हारा दूल्हा कितना छोटा है !"

सीता जी ने उत्तर दिया--"चेरी तू मेरी बात सुन ! नगर के सारे लोग भी मेरी बात सुनें। मेरे भाग्य में विधाता ने यही वर लिखा था। इसमें मेरे पिता का क्या दोष है !"

"चेरी, तू मेरे दूल्हे को छोटा मत समझ ! मेरे राम सम्पूर्ण जगत के पालनकर्त्ता हैं। इन्हीं के साथ मैं वन-वन घूमूँगी। यही रावण का बध करेंगे।"

"राम के लिए ही तो मेरा जन्म हुआ है। उनकी देह के साथ ही मेरी देह क्षीण होगी। मेरा जन्म सफल हो गया। अब संसार में एक साथ राम और सीता का नाम प्रसिद्ध होगा।"

(१४४)

डगरा चलत एक राही पुकारइ, सुनउ पंचउ बात हमारि,
कुस-करिना मोंसे लेउ मोरे साहेब, मँइ देबेउँ चरन पखारि।
एक बन गइले, दुसर बन गइले, तिसरे में किहेउ हाहाकार,
की मोरि बेटी के बर नाहीं जोग रे, की हम धनहीन बाप।
एतनी बचन जब सुनेनि हइ बेटी, भई हइँ ओसरवा में ठाढ़ि,
काहें क मोरे बाबा भीजइ पटुकवा, काहें क चुवइ नैन आँस ?
काहें क मोरे बाबा मुख तोर धूमिल, काहें क जियरा बिरोग।
चुटकी भर सेन्हुरा नाहीं लेवइ बाबा, हम बरु रहबइ कुवाँरि ?
माई के कोंछवा सीस धइ सोउब, भउजी गोहनवाँ रहबइ लागि,
बिरना कइ छतरी तरे नाहीं होइहइ, नाहीं धूमिल पगिया तोहारि।

एक निर्धन पिता की मनोव्यथा का चित्र है—

रास्ता चलता हुआ एक राही पुकार-पुकार कर कह रहा है—पँचो, मेरी बात सुनो ! (मेरे पास दहेज में देने के लिये कुछ भी नही है।) केवल कुश और कन्या के साथ मैं वर का चरण प्रक्षालित कर देना चाहता हूँ। क्या इस दशा में कोई मेरी बेटी का ब्याह करने के लिये तैयार हो जायगा ?"

उसने एक जंगल पार किया। दूसरा जंगल पार किया। तीसरे में पहुँच

कर हाहाकार कर उठा—"क्या मेरी बेटी किसी वर के योग्य नहीं है अथवा मैं निर्धन पिता हूँ, इसीलिये कोई वर नहीं मिल रहा है?"

इतनी बात सुन कर बेटी ओसारे में आकर खड़ी हो गयी। बोली—"बाबा, तुम्हारा अंगौछा क्यों भीग रहा है? तुम क्यों आँसू बहा रहे हो? तुम्हारा मुख धूमिल क्यों है? हृदय में इतना दुःख क्यों मान रहे हो? मैं अपनी माँग में चुटकी भर सिन्दूर नहीं भराऊँगी। अब मैं क्वाँरी ही रहूँगी। चुटकी भर सिन्दूर के लिये तुम पंचों के चरण पखारोगे? इससे तो अच्छा है कि मैं क्वाँरी ही रहूँगी अथवा जोग रमा लूँगी। अपने भाई की गोद में सिर रख कर सोऊँगी। भाभी की सेवा-टहल करूँगी। न तो अपने भाई का छत्र नीचा होने दूँगी और न तुम्हारी पगड़ी को ही धूमिल होती देख सकूँगी।"

(१४५)

माया जे दीहेनि सोने क घइलवा, बाबा तरेरेनि आँख,
सागर पनियाँ न जाउ मोरि बेटी, मसत हथिया है उहां ठाढ़।
घइला धरेनि बेटी घाट किनारे, चीर छोरि बइठीं नहाइ,
केकर हौ तुहुँ उलरू रे दुलरू, कवनी बहिनिया के भाइ?
आपनि हथिया पाछे बहोरउ, हम पहिरी चीर सँभारि,
अपने बबा कर उलरू रे दुलरू, अपनी बहिनिया क भाइ,
आपन हँथिया मँइ सौंहे धँसउबइ, तोहऊँ क लेबइ बइठाइ।
भइया भइया जिनि करउ धनिया, तूँ लागउ धनिया हमारि।
धोबिया त धोवत झीना कपड़वा, अहिरा चरावत गाय,
अइसी नगरिया के गभरू हैं लोगवा, केउनहिं लागइँ गोहारि।
काउ करइँ भइया रे काउ करइँ बाबा, का करइँ गवना के लोग,
जेकरि बेटी तुहुँ बारी - बियाही, सेइ लियाये जाइ।

माँ ने बेटी के हाथ में सोने का घड़ा देकर उसे तालाब से पानी लाने की आज्ञा दी। ज्योंही वह चलने को हुई, पिता ने आँख टेढ़ी की—"मेरी बेटी, तालाब पर पानी भरने मत जाओ। वहाँ एक मस्त हाथी खड़ा है।"

बेटी ने कलसा घाट पर रख दिया। वस्त्र उतार कर (सरोवर में) नहाने लगी। तट पर खड़े एक युवक को देख कर बोली—"तुम किस माँ के दुलारे

बेटे हो ? किस बहन के भाई हो ? अपना हाथी पीछे हटा लो, ताकि मैं कपड़े पहन लूँ।"

युवक ने उत्तर दिया--"अपने पिता का मैं दुलारा बेटा हूँ। अपनी बहन का भाई हूँ। अपना हाथी मैं सामने बैठा दूँगा और तुम्हें भी उस पर बिठा लूँगा। प्रिये, तुम मुझे अपना भाई मत कहो। तुम मेरी पत्नी लगती हो।"

लड़की इधर-उधर ताकती हुई बोली--"धोबी झीने कपड़े धो रहा है। अहीर गायें चरा रहा है। इस नगर के निवासी बड़े मूर्ख हैं। कोई मेरी पुकार नहीं सुन रहा है।"

लड़की को जवाब मिला--"भाई क्या करे ? पिता क्या करे ? गाँव के लोगों का भी कोई वश नहीं। बेटी, जिसके साथ तुम्हारा ब्याह हुआ है, वही तो तुम्हें लिये जा रहा है।"

(१४६)

मोरे पिछवरवा लवँगिया क पेड़वा, लवँग चुवइ आधी राति,
लवँग कटाइ बाबा पलँग बिनायनि, रेसम डोर लगाइ।
सेहि पौढ़ि सोवत दुलही रे दुलहा, कसमस सहि नहिं जाइ,
ओतइ चलु, ओतइ चलु, ससुरु की धेरिया, जोड़वा धुमिल होइ जाइ।
एतनी बचन जब सुनेनि दुलहिना देई, उठी हैं पिछौरा छरिहाइ,
अब सुख सोवउ ससूरु के पुतवा, हम धन नइहर जाब !
कोटवा धरे कोतवाल पुकारइ, घाट धरे घटवार,
नदिया किनारे एक तिरिया पुकारइ, केवटा नेवरिया लइ आउ।
आजु की रतिया बसउ मोरी नगरी, भोर उतारउँ पार।
भउजी भउजी जिनि करउ केवटा, तुहँ लागउ भइया हमार,
सोवत पियवा सेजरिया प छोड़ेउँ, एक बचन, एक बोल।
नदिया के तीरे एक गुलरी क पेड़वा, डरिया छिछिड़ि गइ पार,
डरिया पकरि गोरी पार उतरि गईं, केवटा मलइ दुनउ हाँथ।

मेरे पिछवाड़े लौंग का पेड़ है। आधी रात लौंग के फूल झड़ते हैं। लौंग का पेड़ कटा कर बाबा ने पलँग बनवाया। उसमें रेशम की डोर लगवाई।

दूल्हा-दूल्हन एक साथ उसी पर शयन कर रहे हैं। गरम के मारे रहा नहीं जाता। दूल्हा बोला—"मेरे ससुर जी की बेटी, तनिक खिसककर सोओ। मेरा जोड़ा मैला हो जायगा।"

इतनी बात सुनते ही बेटी रानी पल्ला झिटकती हुई खड़ी हो गई—"अब तुम सुख की नींद सोओ। मैं नैहर चली जाऊँगी।"

कोट से कोतवाल बोला। घाट से घटवार बोला—"नदी के किनारे कोई स्त्री पुकार रही है। हे केवट, तू नाव इधर ले आ।"

केवट स्त्री से बोला—"तुम आज रात मेरी बस्ती में ही निवास करो। सुबह तुम्हें पार उतार दूँगा।"

"केवट, तुम मुझे भौजी कह कर मत सम्बोधित करो। तुम मेरे भाई लगते हो। केवल एक कड़ी बात के कारण मैंने अपने साथ शयन करते हुए प्रियतम का परित्याग कर दिया।"

नदी के किनारे गूलर का एक पेड़ था। उसकी डाल नदी के पार तक फैली थी। वही डाल पकड़ कर गोरी पार उतर गई। केवट अपने दोनों हाथ मलता रह गया।

(१४७)

चुटकी भइ सेन्हुरा के कारन बाबा, बटी क दिहउ बिदस,
माई कइ कोखिया छोड़ायउ बाबा, बिरना कइ सूनि ओसार।
की बाबा तोरि रे पगिया झुकायउँ, की मँइ डाँकेउँ बेद बात,
की बाबा तोंहसे किहेउँ बरजोरी, कवने गुन किहेउ बिछोह?
एतनी बचन जब सुनेनि हइँ बाबा, अँसुवन चुवइ भुइयाँ धार,
पगिया के छोरे नहिं आवउ मोरी बेटी, देखत लागइ पहाड़।
राम रमइया की आई है बेरिया, केका थमावउँ हाँथ,
जग कइ रितिया निवाहउ मोरी बेटी, काहें मन किहिउ उदास?
सोने रूप डँड़िया फनावउ मोरे कँहरा, ओहरा तनावउ रतनार
साज - समान करउ मोरे बेटा, आजु बेटी जइहइँ ससुरारि।
मँड़ए के ओट होइ बोली हैं माया देई, सुनउ स्वामी बात हमारि।

गुड़िया खेलन्ती है मेरी बेटी, बजरे कइ छतिया तोहारि ।
केंहि दइ अँचरा सोवउबइ मोरे स्वामी, केंहि देखि जियरा जुड़ाइ,
अँगना नओसरवा नागिनि बनि डँसिहइँ, मरि जइहइँ बछरू - बछेर ।
निमिया की डरिया चिरइया न बसिहइँ, सून होइ जइहइँ हिंडोर ।
थर - थर काँपइ माई क हँथवा, देत कुँवारी क दान,
नैनन अँसुवा चुवइ जग मण्डप, जे देखन आये बियाह ।

"बाबा, चुटकी भर सिन्दूर की खातिर तुमने अपनी बेटी को दूसरे देश में भेज दिया । माँ की गोद छुड़ा दी । भाई का चौबारा सूना करा दिया ।"

"बाबा, क्या मैंने तुम्हारी पगड़ी नीची की थी, अथवा वेदवाक्य का उल्लंघन किया था ? अथवा, क्या मैंने तुमसे कोई बरजोरी की थी ? किस गुनाह की खातिर तुमने मेरा बिछोह कर दिया ?"

बेटी की इतनी बात सुन कर पिता के आँसुओं की धारा जमीन पर गिरने लगी—"बेटी, पगड़ी उतार देने पर भी तुम्हें लौटा नहीं सकूँगा । मेरे सामने दुःख का पहाड़ नजर आ रहा है । मेरी चलाचली की बेला आ गई है । मैं किसके हाथ में तुम्हारा हाथ दूँ ? मेरी बेटी, संसार की रीति का निर्वाह करो । तुम क्यों उदास हो रही हो ?"

पिता कहारों को आदेश देते हुए बोले—"कहारों, सोने की पालकी सजाओ । पालकी में रत्न जड़ित परदा लगाओ । सब साज-सामान ठीक करो । आज मेरी बेटी ससुराल जायेगी ।"

मंडप की ओट से माता बोलीं—"स्वामी, मेरी बात सुनो । मेरी बेटी अभी तक तो गुड़ियों का खेल खेल रही थी । (अभी उसका बहुत बचपना था) तुम्हारा हृदय बहुत कठोर है । स्वामी, मैं किसे अपने आँचल की ओट देकर सुलाऊँगी ? किसे देख कर मेरा हृदय शीतल होगा ? आँगन और ओसारा (बेटी के न रहने से) नागिन बन कर डसेंगे । (इनके सूनेपन से हृदय को बहुत पीड़ा होगी), पशु और बछड़े (बेटी के वियोग के कारण) प्राण त्याग देंगे । नीम की डाल पर चिड़ियाँ नहीं बैठेंगी । मेरा झूला भी सूना हो जायगा ।"

क्वाँरी बेटी का दान करते समय माँ का हाथ थर-थर काँप रहा है । मंडप में जो लोग ब्याह देखने आये हैं, उनके नेत्रों से आँसू बह रहे हैं ।

ऐपन निगुरी लाइ बेटी सीतल देई, भई हैं मँड़वना बिच ठाढ़ि,
सुरुज किरनियाँ बाबा मोरे मुख लागइ, गोरा बदन कुम्हिलाइ।

कहउ त मोरी बेटी तमुवा तनावउँ, कहउ त छत्र - बितान,
कहउ त मोरी बेटी सुरुज अलोपउँ, गोरा बदन रहि जाइ।

काहें क मोरे बाबा सुरुज अलोपउ, काहें क छत्र - बितान,
आजु रइनिया बाबा तोहरे मँड़वना, भोर होत जाबइ बिदेस।

मँड़ए के ओट होइके बोली हैं माया रानी, सुनउ बेटी बात हमारि,
आठ महीना नउ कोखिया में राखेउँ, दसयें दिहेउँ अवतार।

सात स्रोत बेटी दुधवा पियाएउँ, दहिया खियाएउँ साढ़ीदार,
एकउ गुन नाहीं मानिउ मोरी बेटी, चलिउ हइ बिदेसिया के साथ।

सीता देवी मंडप के मध्य में खड़ी हैं। उनके अंग पर निगुरी का ऐपन लगा है। पिता से कहती हैं—"बाबा, मेरे मुँह पर सूर्य की किरणें पड़ रही हैं। मेरा गोरा मुँह धूमिल हुआ जा रहा है।"

पिता बोले—"बेटी, कहो तो तम्बू तनवा दूँ! कहो तो छत्र लगवा दूँ। कहो तो सूर्य को ही ओझल कर दूँ, ताकि तुम्हारा गोरा मुँह कुम्हलाने न पाये।"

"बाबा, सूर्य को क्यों ओझल करोगे? क्यों छत्र तनाओगे? बस आज की ही रात तुम्हारे मंडप में हूँ, भोर होते ही दूसरे देश चली जाऊँगी।"

मंडप की ओट से माँ बोलीं—"बेटी, मेरी बात सुन। मैंने तुम्हें आठ-नौ महीने कोख में रक्खा। दसवें महीने तुम्हारा जन्म हुआ। सात स्रोतों का तुम्हें दूध पिलाया। साढ़ीदार दही खिलाया। तुमने एक भी उपकार नहीं माना। (नाता तोड़कर) परदेसी के साथ चली जा रही हो!"

मोती

अरी मोतियन माँग सँवारिए,
मेरी बेटी की माँग सँवारिए।
यह मोती बन्ना अरब से आया,
दादी रानी वाकी मँगाइये।
यह मोती बन्ना सूरत से आया,
अम्मा रानी वाको मँगाइये।
यह मोती हिन्द सागर से आया,
बुवा रानी वाको मँगाइए।
यह मोती महा सागर से आया,
बहन रानी वाको मँगाइए।
यह मोती काला सागर से आया,
नानी रानी ने वाको मँगाइए।
यह मोती लाल सागर से आया;
मामी चाची ने वाको मँगाइए।
यह मोती सात समुन्दर से आया,
भाभी रानी ने वाको मँगाइए;
यह मोती पूरे भारत से आया,
वीरन राजा ने वाको मँगाइए।
मैहर जाके बन्ने सिन्दूर लाओ,
मेरी बेटी की माँग भराइए;
हिमचल जाके बन्ने गंगाजल लाओ,
मेरी बेटी के लट को धुलाइए।
विन्ध्याचल जाके बन्ने सिन्दूर लाओ,
बन्नी रानी की माँग भराइए;
शीतलन जाके बन्ने सिन्दूर लाओ,
अपने नाजो की माँग भराइए।

कड़े जाके बन्ने सिन्दूर लाओ,
अपनी दूल्हन की माँग भराइए;
सातों बहिनी का बन्ने सिन्दूर लाओ,
अपनी नाजो की माँग भराइए।

माँ अपनी बेटी का श्रृङ्गार करती, उसे दूल्हन के रूप में सजाती हुई कह रही है--"अरी सखियो, मेरी बेटी की माँग सजाओ, मेरी लाडली बन्नी की माँग में मोती गूँथो !"

इसकी माँग में गूँथा जाने वाला मोती जानती हो कहाँ से आया है ? इसकी दादी ने उसे अरब से मँगाया है। इसकी माँ ने उसे सूरत से मँगाया है।

यह मोती बेटी की बुआ द्वारा हिन्दसागर से मँगाया गया है। बेटी की बहन द्वारा महासागर से मँगाया गया है।

नहीं, नहीं, यह मोती काला सागर से आया है। बेटी की नानी द्वारा मँगाया गया है। यह मोती लाल सागर से आया है। बेटी की मामी द्वारा वहाँ से मँगाया गया है !

अजी नहीं, यह मोती सात समुन्दर से लाया गया है, पूरे भारत से लाया गया है। जानती हो, किसके द्वारा ? बेटी की भाभी और भाई के द्वारा !

अरे बन्ने, तुम मैहर जाकर वहाँ का सिन्दूर ले आओ। मेरी बेटी की माँग में मैहर का सिन्दूर भरा जायगा। हिमालय से गंगाजल ले आओ ! मेरी बेटी अपने केश गंगा जल में धोयेगी !

बन्ने, तुम विन्ध्याचल और शीतलन का मांगलिक सिन्दूर ले आओ ! वही मेरी बेटी की माँग में भरा जायगा !

बन्ने, इतना ही नहीं, तू कड़े का सिन्दूर ले आ, दुर्गा की सातों बहनों के माथे में लगाया जाने वाला सिन्दूर ले आ और उससे अपनी दूल्हन की माँग पूरित कर !

जोग

(१५०)

सखी सैयाँ पै जोग चलाऊँ मैं,
सखी कैसे चलाऊँ ?

काले काग का डखना मँगाऊँ,
काली बिलरिया के सीस पै दिया जलाऊँ
उरहुर चिड़िया की चोंच मँगाऊँ,
कोरे कागज भेंड़े का खून कैसे लिखाऊँ?
मुल्ला बेटवना शहर से बुलाऊँ,
पाँच मुहर दे जन्तर लिखाऊँ,
पहला जन्तर बन्ने के बाँधू,
दूसरा बाँधूँ पूरे घर के गले।

हे सखी, मैं अपने प्रियतम पर जोग चला कर उन्हें अपने वश में करना चाहती हूँ! तू ही बता, मैं किस उपाय से यह प्रयोग सम्पन्न करूँ?

काले कौवे का मैं पंख मँगाऊँगी और काली बिल्ली के सिर पर दीप जलाऊँगी! उदहुद पक्षी की चोंच मँगाऊँगी। उसी की कलम बना कर भेंड़े के खून से कोरे कागज पर यंत्र लिखवाऊँगी। किससे? शहर से मुल्ले के लड़के को बुलाऊँगी। पाँच मुहर देकर उसी से यंत्र लिखाऊँगी।

पहला यंत्र मैं बन्ने के गले में बाँधूँगी। दूसरा यंत्र पूरे घर के लोगों के गले में बाँधूँगी!

(१५१)

जोग न जानइ, जुगुतिया न जानइ,
आजु मेरी बेटी सासुर चली।
सिखि लेउ जोग बेटी, सिखि लेउ जुगुतिया,
सिखि लेउ सब जोग-मरम की बात,
सासु पैयाँ लागेउ, ननद के रिझायौ,
देवरा के लियो अपनाइ,
जेठ जेठानी का आदर करिके,
लियो देवरानी अपनाइ।

पर पूरुख कबहूँ जिनि देखेउ,
सैयाँ के नित उठि लागेउ पाँय ।
लौंड़ी चेरी बहिन जस मानेउ,
उनहूँ कर करिहउ आदर मान !

आज मेरी बेटी ससुराल जा रही है। किन्तु वह कोई योग-युक्ति नहीं जानती।

बेटी, सारी योग-युक्तियाँ सीख लो। शिष्टाचार की सारी बातें समझ लो!

नित्य सवेरे उठकर अपनी सास के पैर छूना। अपनी ननद को हमेशा खुश रखना। देवर से अत्यन्त ममत्व और स्नेह का व्यवहार करना। जेठ और जेठानी का सदैव आदर करना। देवरानी को अपनी बहन बना लेना। पराये पुरुष की ओर कभी भी अपनी आँख मत उठाना और अपने स्वामी के चरणों की सेवा करना। घर की परिचारिकाओं और दासियों को अपनी बहन की भांति मानना, उनका भी उचित आदर और सम्मान करना!

(१५२)

जोग जुगुतिया न जानेउँ,
सैयाँ मैं तो असली जोगिनिया रे।
काले कौवा का डखना मँगायौं,
भुवरी बिलरिया की अँखिया रे;
उरहुर चिड़िया की जिभिया मँगायौं,
काले भेड़वा की मँसुइया रे।
इन चारिउ से तबीज बनायों,
दुलहे राम बँहियाँ बाँध्यौं रे।
आँख बाँधे पर तिरिया न देखिहैं,
मुँहना बाँधे पर भोजन न करिहैं,
पाँव बाँधे पर डेहरी न डँकिहैं,
पीठ बाँधे पर सेज न सोइहैं।

बाँध - बूंध ड्योढ़ी बैठायों,
झुकि - झुकि दूल्हा करे सलाम।

पहिला सलाम मेरे मनहीं न भावे,
दुसरा सलाम मेरे बाबा के गुलाम।

तिसरा सलाम मेरे मनहीं न भावे,
चौथे सलाम मेरी दादी के गुलाम।

पँचवें सलाम मेरे बीरन के चाकर,
छठवें सलाम मेरी भाभी के गुलाम।

सतवें सलाम बन्ना मेरा गुलाम है,
धोतिया पखारे, सँवारे सीस।

सेजिया लगावे, हार मँगावे,
बिरवा जुड़ावे, लगावे फुलेल।

प्रियतम, मैं कोई योग युक्ति नहीं जानती। फिर भी मैं बड़ी पक्की जोगन हूँ।

काले कौवे का पंख, भूरी बिल्ली की आँख, उरहुर चिड़िया की जीभ और काले मेंड़े का मांस मँगा कर मैंने एक तावीज तैयार की। उसे अपने दूल्हे की बाँह में बाँध दिया।

आँख बाँध देने से मेरा प्रियतम पर नारी की ओर नहीं देख सकेगा। मुँह बाँध देने पर वह भोजन नहीं कर सकेगा। पाँव बाँध देने पर वह ड्योढ़ी नहीं पार कर सकेगा। और पीठ बाँध देने पर मेरी शैया पर नहीं सो सकेगा।

अपने प्रियतम को बाँध कर मैंने ड्योढ़ी पर बिठा दिया। मेरा दूल्हा झुक-झुककर मुझे सलाम करने लगा। उसकी पहली बन्दगी मुझे जरा भी अच्छी नहीं लगी। दूसरी बन्दगी करने पर वह मेरे बाप का गुलाम बन गया। तीसरा सलाम भी मुझे अच्छा नहीं लगा। चौथे सलाम पर वह मेरी दादी का गुलाम बन गया। पाँचवें सलाम पर मेरे भाई का, छठें सलाम पर मेरी भाभी का और सातवें सलाम पर वह खुद मेरा ही गुलाम बन गया। वह मेरी धोती साफ़ करने लगा। मेरे सिर का सिंगार करने लगा। अपने हाथ से मेरी सेज लगाने लगा। मुझे पान खिलाने लगा और मेरे अंगों में इत्र लगाने लगा।

जोग न जानेउँ, जुगुति नहिं जानेउँ,
जोग सिखाएसि, मैया, जोग सिखाएसि रे ।

गोंइड़े आवत मोहिं बैल बनाएसि
नाथ नथाएसि अरी मैया नाथ नथाएसि रे ।

द्वारे आवत मोहिं मुरगा बनाएसि,
चउरा चुनवाएसि रे, अरी मैया चउरा चुनवाएसि ।

मँड़ए आवत मोहिं पण्डित बनाएसि,
बेद पढ़ाएसि रे, अरी मैया बेद पढ़ाएसि ।

अँगना आवत मोहिं जोगिया बनाएसि,
दान लेवाएसि रे, अरी मैया दान लेवाएसि ।

चौके आवत मोहिं बनरा बनाएसि,
नाच नचाएसि रे, अरी मैया नाच नचाएसि ।

कोहबर आवत मोहिं बिल्ली बनाएसि,
दहिया चटाएसि रे, अरी मैया दहिया चटाएसि ।

महल आवत मोहिं भेंड़ा बनाएसि,
गरवा लगाएसि रे, अरी मैया गरवा लगाएसि ।

माँ, मैं कोई योग-युक्ति नहीं जानता था। उसने मुझे जोग सिखा दिया, मेरे ऊपर जादू-टोना कर दिया।

घर के निकट पहुँचते ही, उसने मुझे बैल बना कर मेरी नाक में नथ पहना दी। दरवाजे पर पहुँचने पर मुझे मुर्गा बना दिया और दाने चुगाने लगी। मण्डप में पहुँचने पर मुझे पण्डित बना कर वेद पढ़ाने लगी। आँगन में पहुँचने पर मुझे जोगी बनाया और दान ग्रहण करने के लिये विवश किया। चौके में पहुँचने पर मुझे बन्दर बना कर नाच नचाया। कोहबर में जाने पर मुझे बिल्ली बना दिया और मुझे दही चटाया। जब मैं महल में गया तो मुझे भेंड़ा बना दिया और मुझे अपने गले से लिपटा लिया।

(१५४)

काबुल का टोना मोरी बारी बुआ जानें,
चलो बुआ जी बनिजा के घर जाना,
वहिके बेटौना से कोरा कागज लाना।
चलो बुआ जी मुल्ला के घर जाना,
मुल्ला के बेटवना से ताबीज लिखवाना।
चलो बुआ जी सोनरा के घर जाना,
सोनरा बेटवना से ताबीज भरवाना।
चलो बुआ जी पटहार-घर जाना,
पटहरवा बेटवना से ताबीज गुहवाना।
चलो बुआ जी ससरू के घर जाना
ससुरु के बेटवना को ताबीज बँधवाना।

मेरी बुआ जी काबुल का टोना जानती हैं।

बुआ जी, चलिये, कागज वाले के घर चलें। उसके लड़के से कागज ले आयें। मुल्ला के घर जाकर उसके बेटे से ताबीज ले आयें। सोनार के लड़के के पास से ताबीज ले आयें। पटहार के घर से ताबीज गुंथा लें। ससुर जी के घर जाकर उनके लड़के से ताबीज बँधवा लें।

(१५५)

हमारे हाथ अनगिन टोना।
बन्नी हमारी नहाएगी जब,
बन्ना धोती पखारेगा।
बन्नी चूंदर पहनेगी जब,
बन्ना चूंदर पहनाएगा।

बन्नी शीश गुंथाएगी जब,
बन्ना शीशा दिखाएगा ।

बन्नी जेवर पहनेगी जब,
बन्ना जेवर पिन्हाएगा ।

बन्नी लेंड़ुवा फोड़ेगी जब,
बन्ना लेंड़ुवा खिलाएगा ।

बन्नी गेंड़ुवा घूँटेगी जब,
बन्ना गेंड़ुवा घुँटाएगा ।

बन्नी बीड़ा चाभेगी जब,
बन्ना बीड़ा खिलाएगा ।

बन्नी सेज सजाएगी जब,
बन्ना गरवा लगाएगा ।

हमारे हाथ में अगणित टोने हैं ।

हमारी बन्नी स्नान करेगी और साँवला सलोना बन्ना उसकी धोती साफ़ करेगा !

बन्नी चूँदर पहनेगी । सुन्दर सलोना बन्ना उसे चूँदर पहनायेगा ।

बन्नी जब चोटी गुंथाने लगेगी तो बन्ना उसे शीशा दिखायेगा । गहने पहनते समय बन्ना उसे गहने पहनायेगा । बन्नी लड्डू फोड़ेगी और बन्ना उसे लड्डू खिलायेगा । बन्ना हमारी बन्नी को गेंड़ुवा घुंटायेगा । वह उसे पान के बीड़े खिलायेगा । सेज पर बन्नी के साथ शयन करते समय उसका आलिंगन करेगा ।

(१५६)

अरी मया तेलिया बेटवना बोलाइए,
पीली सरसों का तेल पेराओ,
वा तेलवा से मशाल जलवाइए,
दादी, अम्मा, बुआ ने टोना चलाइए ।
सौ साठ बराती हैं द्वारे खड़े,

टोनवा के माते मूँड़ झुकाए खड़े।
बिनती करत हैं बन्नी के ससुर जी,
बहुवा आपन टोना उतारिए।
तुम्हरी दुहाई मोरे ससुर जी,
हम टोनवा के मरम नहिं जानिए,
हमरी दादी बुआ ने टोनवा सिखाइए।

अरी माँ, तेली के लड़के को बुलाओ! पीली सरसों का तेल मँगाओ। उस तेल की मशाल जलाओ। मेरी दादी ने टोना चला दिया है। मेरी अम्मा और बुआ ने टोना चला दिया है।

दरवाजे पर टोने से सम्मोहित साठ सौ बराती खड़े हैं। सब सर झुकाये और गूँगे बने खड़े हुए हैं।

बन्ना के ससुर निवेदन कर रहे हैं—"बहू, अपना टोना उतार लो। मेरे लड़के और बरातियों पर जादू-टोना मत डालो।"

बहू सविनय कहती है—"ससुर जी, आपकी दुहाई देकर कह रही हूँ, मैं टोने का मर्म नहीं जानती। वास्तव में मेरी दादी और बुआ ने टोना चलाया है।"

सुहाग

(१५७)

ऊँची महलिया सोना धोबिनिया, ओही के अँगना सोहाग के बिरवा,
गयी हैं बिटिया देई धोबिनिया की बगिया, सोहाग की रतिया।
देउ न धोबिनिया सोहाग का बिरवा, हमके जे चाही सोहाग क बिरवा,
कइसे क देउँ बेटी आपन सुहगवा, धोबिया न देइ सोहाग क बिरवा।
पूजउ न मोरी बेटी गउरी गनेस हो, पूजउ न मोरी बेटी कातिक की चउथि हो,
होइ अमर तोर सोहाग का बिरवा, पावउ नीक सोहाग क बिरवा।
घाटे के पाट बेटी गंगा जुड़ पानी, अँचरा चोराइ बेटी मँगिया से देबेउँ,
परदा कराइ बेटी फुफुती से देबेउँ, लेउ न लेउ सोहाग क बिरवा।

सोना धोबिन के ऊँची महल के आँगन में सोहाग का बिरवा है। अमुक बेटी उसके बाग में सुहाग की रात में जाकर कह रही है—"धोबिन, मुझे सुहाग बिरवा दे दो!"

धोबिन उत्तर देती है—"बेटी, मैं कैसे तुम्हें अपना सुहाग दूँ? सुहाग-बिरवा दे देने से मेरा धोबी नहीं रह जायगा।"

धोबिन उसे समझाती हुई आगे कहती है—"मेरी बेटी, तुम पार्वती और गणेश की पूजा करो। कार्तिक मास की चौथ का व्रत रहो। तुम्हारा सुहाग-बिरवा अमर हो जायगा।"

"घाट के पाटे के निकट गंगा जी का शीतल पानी है। मैं आँचल में छिपा कर अपनी माँग का सुहाग तुम्हें दे दूँगी। परदे के भीतर लँहगे से निकाल कर तुम्हें अपना सुहाग दे दूँगी!"

(१५८)

कवन सगुन लइ आइउ धोबिन रानी,
झालर पड़ा है सुहाग।
घाटे के पाट बेटी गंगा जुड़ पानी,
गौरी का लाईं हूँ सिंधौरा।
आवउ धोबिनि रानी, बइठउ मोरे अँगना,
भरि मुख देउ असीस।
सब का तउ देउँ बेटी सात-पाँच चुटकी,
तोंहके तउ देऊँ छकड़ा लदाइ।
पहिनि थोढ़ि जब ठाढ़ि धोबिनि रानी,
भरि मुख देत असीस।
बाढ़इ बिटिया तोर घर परिवरवा,
अचल होइ तोहरा सोहाग।

"धोबिन रानी, तुम कौन-सा शकुन लेकर आई हो!........."

धोबिन उत्तर देती है—"बेटी, घाट के पाटे के निकट गंगा जल बहता है। मैं पार्वती का सिंधोरा तुम्हारे पास ले आई हूँ!"

"धोबिन रानी, मेरे आँगन में आकर बैठो! मुझे मुक्त कण्ठ से आशीर्वाद दो।"

धोबिन कहती है—"बेटी, और सब को तो मैं पाँच-सात चुटकियाँ ही सुहाग का सिन्दूर देती हूँ, किन्तु तुम्हें छकड़ों पर लदा कर ढेर का ढेर सिन्दूर दूँगी!"

पहन-ओढ़ कर धोबिन चलने के लिये तैयार हुई और मुक्त कण्ठ से आशीर्वाद देने लगी—"बेटी, तुम्हारा सुहाग अचल हो, अमर हो!"

(१५९)

कौने बन ऊगे सोहाग क बिरवा, कौनी दिसि ऊगे चाँद सुरुजवा ?
तुलसी बन ऊगे सोहाग के बिरवा, पुरुब दिसि ऊगे चाँद सुरुजवा ।
पहिला सुहगवा गौरा ने दीन्हा, दुसरा सुहगवा धोबिनि रानी हँथवा ।
तिसरा सुहगवा बुवा ने दीन्हा, चौथा सुहगवा बहिनी के हँथवा ।
पँचवाँ सुहगवा भाभी ने दीन्हा, छठवाँ सुहगवा, कुल के हँथवा ।
सतवाँ सुगहवा दूल्हे ने दीन्हा, बेटी भई हैं पराए के हँथवा ।

"किस वन में सुहाग का बिरवा उत्पन्न होता है ? किस दिशा में चन्द्रमा और सूर्य उदित होते हैं ?"

"पूर्व दिशा में चन्द्रमा और सूर्य उदित होते हैं। तुलसी वन में सुहाग का बिरवा उत्पन्न होता है!"

पहला सुहाग पार्वती ने दिया। दूसरा सुहाग धोबिन ने दिया। तीसरा बुआ ने, चौथा बहन ने, पाँचवाँ भाभी ने, छठा अपने कुल के लोगों ने और सातवाँ सुहाग दूल्हे ने दिया। अब बेटी पराये पुरुष के हाथ में चली गई।

(१६०)

हँथवा जोरि के पइयाँ मँइ लागउँ,
देउ देउ महादेउ गौरा क सुहगवा ।
बोली हैं गौरा देई, लिहले सुहगवा,
लेउ न बेटी रानी अँचरा पसारि के ।

कइसे क लेउँ माता अँचरा पसारि के,
झीना अँचर मोर झरिहै सुहगवा ।
लेउ न दुलहे राम जमवा पसारि के,
अचल, अमर तोर होइ हैं सुहगवा ।
कइसे क लेउँ माता जमवा पसारि के,
झीना मोरा जमवा झरिहै सुहगवा ।
देइहउँ सुहगवा मँइ बैला लदाइ के,
देइहउँ सुहगवा मँइ हथिया लदाइ के ।
गंगा के सुहगवा, जमुना के सुहगवा,
देउँ मँइ बेटी के सुहाग का बिरवा ।

"हाथ जोड़ कर आपके चरणों में शीश झुका रही हूँ। हे शंकर जी, आप पार्वती का सुहाग मुझे भी दे दें !"

हाथ में सुहाग लिए हुए पार्वती जी बोलीं--"बेटी रानी, आँचल फैला कर तुम सुहाग ले लो !"

बहू अपनी नम्रता व्यक्त करती हुई कहती है--"माँ, मैं किस प्रकार सुहाग ग्रहण करूँ ? मेरा आँचल बहुत झीना है। सुहाग उसमें थामा नहीं जा सकेगा !"

पार्वती जी दूल्हे से कहती हैं--"दूल्हे, अपना जामा पसार कर तुम सुहाग ग्रहण करो। तुम्हारा सुहाग अचल और अमर हो जायगा !"

दूल्हा भी वैसा ही उत्तर देता है--"माँ, मेरा जामा बहुत झीना है। सुहाग इसमें से गिर पड़ेगा।"

पार्वती जी पुनः दूल्हन से कहती हैं--"दूल्हन, माँग फैला कर तुम सुहाग लो ! मैं बैलों और हाथियों पर लदा कर तुम्हें गंगा और यमुना का सुहाग दूँगी। तुम प्रीतिपूर्वक सुहाग का बिरवा ग्रहण करो।"

(१६१)

घुमड़त आवे सुहाग मोरे अँगने,
गरजत आवे सुहाग मोरे अँगने,

बाबा के अँगने सुहाग क बिरवा,
दादी ने भरी मोरी माँग मोतिन से।

नाना की बगिया सुहाग क बिरवा,
नानी ने भरी माँग लाल कनी से।

फूफा के द्वारे सुहाग का बिरवा,
बुवा ने भरी माँग हीर - कनी से।

बीरन के आँगन सुहाग क बिरवा,
भाभी ने भरी माँग फूल कली से।

जीजा की सेजों सुहाग क बिरवा,
बहन भरी माँग गुलाब - कली से।

महादेव अँगने सुहाग क बिरवा,
गौरा भरी माँग लाल सिन्दूर से।

धोबिया के घरवा सुहाग क बिरवा,
धोबिन ने भरी माँग लाल सिन्दूर से।

मेरे आँगन में सुहाग घुमड़ता और गरजता हुआ आ रहा है।

बाबा के आँगन में सुहाग का बिरवा है। दादी ने मोतियों से मेरी माँग भर दी है!

नाना के बाग में सुहाग का बिरवा है। नानी ने लाल कनी से मेरी माँग भर दी है।

फ़ूफा के दरवाजे पर सुहाग का बिरवा है। बुआ ने हीरे से मेरी माँग भर दी है।

भाई के आँगन में सुहाग का बिरवा है। भाभी ने फूलों की कलियों से मेरी माँग सँवार दी है।

जीजा जी की सेजों पर सुहाग का बिरवा है। बहन ने गुलाब की कली से मेरी माँग सजा दी है।

महादेव के आँगन में सुहाग का बिरवा है। पार्वती जी ने लाल सिन्दूर से मेरी माँग भर दी है।

धोबी के घाट पर सुहाग का बिरवा है। धोबिन ने लाल सिन्दूर से मेरी माँग भर दी है।

(१६२)

बरसो दइया सुहाग की बगिया,
बरसो मेहा सुहाग की बगिया,
दूल्हन की माँग में, दूल्हे के पाग में,
दूल्हन के बिछुवा सजे करधनिया।
दूल्हन की चूँदर में, दूल्हे के जोड़े में,
माथे पै बिंदिया सजी रे नथुनिया।
दूल्हन के जेवर में, दूल्हे के सिर में
अँगुरी में चमके हीरे की मुँदरिया,
दूल्हे के अंग सँग, दूल्हे की सेज पै,
बसेगी रैन मेरी गुजरिया।

भगवान् इन्द्र, सुहाग के बाग में जल की वर्षा करो ! काले बादलों, सुहाग की फुलवारी में पानी बरसो !

दूल्हन की माँग, दूल्हे की पगिया, दूल्हन के बिछुवे और उसकी करधनी पर पानी बरसो !

दूल्हन की चूँदर, दूल्हे के जोड़े, दूल्हन के माथे की बिन्दी और उसकी नथुनी पर पानी बरसो !

दूल्हन के जेवरों, दूल्हे के सिर और उसकी उँगली की हीरे की अँगूठी पर पानी बरसो !

बाँकी दूल्हन रात्रि के समय दूल्हे की सेज पर, उसके अंगों से लग कर शयन करेगा।

अगवानी

(१६३)

मँड़ए के बिच होइ ठाढ़ी हैं माया देई, सुनउ साहेब अरज हमारि,
बगिया के बीच ठाढ़ी धिया कइ बरतिया, लेउ अगुवानी जाइ।

हँथवा में लेउ कंचन की थरिया, पान फूल लेउ सजाइ,
पाँउ पखारि माथे तिलक सँवारेउ, गरवा मिलेउ खोलि बाँह ।

खाँड़ चिरौंजी क भोजन साहेब, घुँटइ के गंगा जुड़ नीर,
मघई पनवा क बिरवा कुँचाएउ, गजरा दिहेउ गरे डारि ।

आगे-आगे आवइँ समधी सजन मोरे, पछवाँ दुलरू दमाद,
सेहि पाछे आवइ धिया कइ बरतिया, सोरहउ बाजन बाजइ साथ ।

समधी के देउँ मोहर की माला, दुलरू दमाद देबइ राज,
मोतियन माल देवइ सबं रे बरतिहन, सुनउ साहेब अरज हमारि ।

मण्डप के बीच में खड़ी होकर माँ अपने पति से कह रही है—"स्वामी, मेरी बात सुनो ! बेटी की बारात बाग के बीच में खड़ी है। जाकर उसकी अगवानी करो !"

"हाथ में सोने की थाली लो। उसमें पान और फूल सजाओ। सब के पैर धोकर उनके माथे में तिलक लगाना और दोनों हाथ फैला कर सब का आलिंगन करना !"

"खाँड़ और चिरौंजी का सब को जलपान कराना। पीने के लिये उन्हें शुद्ध और शीतल गंगा जल देना। सब को मघई पान के बीड़े देना और सब के गले में एक-एक हार पहना देना !"

आगे-आगे समधी और उनके स्वजन आ रहे हैं। पीछे-पीछे दुलारा दामाद आ रहा है। उसके पीछे बेटी की बारात आ रही है। साथ में सोलहों प्रकार के बाजे बज रहे।

"प्रियतम, दुलारे दामाद को मैं अपना सारा राजपाट अर्पित कर दूँगी ! सभी बरातियों के गले में मोतियों की माला पहनाऊँगी !"

(१६४)

बाजत आवइ करइली क बाजा, हुमकत आवइ निसान रे,
बिहँसत आवइ पतरंग समधी, कुलकत दुलरू दमाद।

कँहवाँ बैठावउँ अजनिया-वजनिया, कँहवाँ गड़ावउँ निसान,
कँहवाँ बैठावउँ पतरंग समधी, कँहवइँ दुलरू दमाद रे ?

बगिया बैठावउ अजनिया - बजनिया, दुवारे गड़ावउ निसान रे,
सभवइ बैठावउ पतरंग समधी, मँड़ए में दुलरू दमाद।
का दै समझावउँ अजनिया-बजनियाँ, का दै हनावउँ निसान रे,
का दै समझावउँ पतरंग समधी, का दै दुलरू दमाद ?
भात दै समझावउ अजनिया-बजनिया, घिउ गुर हनावउ निसान,
दैजा दइ समझावउ पतरंग समधी, धिया दै दुलरू दमाद।

करइली का बाजा बजता हुआ आ रहा है। हुमकता हुआ निशान आ रहा है। हँसता हुआ छरहरा समधी और किलकारियाँ मारता हुआ दुलारा दामाद आ रहा है।

"कहाँ बाजे वालों को बिठाऊँ ? कहाँ निशान गड़वाऊँ ? कहाँ छरहरे समधी और कहाँ प्रिय दामाद को बिठाऊँ ?"

"बाग में बाजे वालों को स्थान दो ! दरवाजे पर निशान गड़वाओ। सभा में पतले समधी और मंडप में प्रिय दामाद को बिठाओ !"

"क्या देकर बाजे वालों को प्रसन्न करूँ ? क्या देकर निशान बजवाऊँ ? क्या देकर पतले समधी को और क्या देकर दुलारे दामाद को प्रसन्न करूँ ?"

"भात खिला कर बाजे वालों को प्रसन्न करो। घी और गुड़ देकर निशान बजवाओ। दहेज देकर पतले समधी को और कन्या देकर दुलारे दामाद को प्रसन्न करो।"

(१६५)

पछिउँ देस से आयी बरतिया,
बाबा दुवारे ठाढ़ि बरतिया,
बीरन दुवारे ठाढ़ि बरतिया,
चाचा दुवारे ठाढ़ि बरतिया।

कंचन थार, थार भरि मोती,
रनिया कपूर क दियना बराउ,
आरति उतारउँ अपने दमाद कइ,
मइया कपूर क दियना बराउ।

सभवा से आये हइँ बेटी के भइया,
बहिनी बोलाइ बगल बइठावइँ,
बहिनी, ऊँचि किहिउ तुहुँ मोरि छतरी,
निति तोरि बलइया लेउँ।
सभवा से आये हैं बेटी के बाबा,
बेटी बइठावइँ लइ गोद,
दुनउ कुल की लजिया कइ रे गठरिया,
बेटी धरी तोरे सीस।
अँगना में बइठी हैं बेटी की माया,
बेटी समुझावइँ बोलाइ,
सासु कइ बोलिया, ननद कर ताना,
लिहिउ बेटी अँचरा पसारि।
ओबरी से निसरी हैं बेटी की भउजी,
ननद समुझावइँ छोहाइ,
निति हँसि डासेउ सजन कइ सेजिया,
हँसि - हँसि बोलिउ बात।
अँगना से बोलइँ बेटी कइ बहिनी,
कसि बहिनी बान्हेउ कुफुत कइ गठरिया,
कबहुँ न खोलेउ कबहुँ जिनि छोरेउ,
नहि माया रोवइँ, भउजी देइँ बाँटि।

पश्चिम देश से बारात आई है। बाबा के दरवाजे पर, भाई के दरवाजे पर, चाचा के दरवाजे पर बारात खड़ी है।

सखियो, सोने की थाली में मोती भर कर कपूर का दीपक जलाओ! मैं अपने दामाद की आरती उतारूँगी!

सभा से बेटी का भाई आया। बहन को बगल में बिठाकर निवेदन करने लगा--"बहन, अपने शिष्ट और सुन्दर आचरण से मेरा नाम ऊँचा करना। मैं तुम्हारी बलायें ले रहा हूँ!"

सभा से उठ कर कन्या का पिता आया। बेटी को गोद में बिठा कर उसे

समझाने लगा--"बेटी, दोनों कुलों के सम्मान की गठरी तुम्हारे ही सिर पर है। आशा है, दोनों कुलों की मर्यादा की तुम भलीभांति रक्षा करोगी!"

आँगन में बैठ कर बेटी की माँ साश्रु नेत्रों से उसे समझा रही है--"बेटी, आँचल फैला कर सास की बातों को और ननद के तानों को ग्रहण कर लेना। कभी भी उन्हें उत्तर मत देना, कभी भी उनका अपमान मत होने देना!"

ओबरी से निकलकर कन्या की भाभी उसे शिक्षा देने लगी--"ननद, हँसकर अपने स्वामी की सेज बिछाना। कभी भी अपने मुँह पर उदासी मत आने देना। हमेशा हँस-हँस कर अपने प्रियतम से मीठी-मीठी बातें करना!"

आँगन से कन्या की बहन कह रही है—"बहन, अपने दुखों और कष्टों की गठरी को हमेशा मजबूती के साथ बाँध रखना। अपनी पीड़ा और क्लेश के समाचार कभी अपने नैहर में मत भेजना, नहीं तो माँ रोने लगेगो और भाभी बहुत खुश होकर उसे चारों ओर फैला देगी!"

(१६६)

खोरिया बटोरउ कवन राम, आवत जेकरे दुवारे बरात,
पनिया छिरकउ कवने लाल, आवत जेकरे दुवारे बरात।
घोड़वा सजावउ बिरन भइया, आवत तोर बहनोइ,
हथिया सजावउ बपवा कवने राम, आवत समधी तोहरे दुवार।
हँकरउ न नगर के लोगवा रे, द्वारे आवत पाहुन आजु,
दल बादर लइ आवइ बरतिया, तिलक सँजोवइ धिया कर बाप।

हे अमुक लाल, गली में झाड़ू लगाओ, तुम्हारे दरवाजे पर बारात आ रही है। हे अमुक लाल, रास्ते पर पानी का छिड़काव करो, तुम्हारे दरवाजे पर बारात आ रही है। हे कन्या के अमुक भाई, तुम्हारा जीजा आ रहा है। उसकी अगवानी करने के लिये अपना घोड़ा तैयार करो।

हे कन्या के अमुक पिता, तुम्हारा समधी आ रहा है। उसके स्वागत के लिये अपना हाथी तैयार करो।

नगर वासियो, आओ, एक साथ मिल कर अगवानी करो। तुम्हारे द्वार पर आज एक नये अतिथि का आगमन हो रहा है।

दल-बादल से सजी बारात आ रही है। कन्या का पिता तिलक की सामग्री सँजो रहा है।

(१६७)

गोबर गोंठि के चउक पुरावउ, तोहरे आवइ दुलरू दमाद !
पण्डित बोलाइ के बेद पढ़ावउ, तोहरे आवइ दुलरू दमाद।
सोने क कलस, कलस भरि पानी, अमवा कइ पतिया मँगाउ,
पान फूल अच्छत अउ रोरी लइ, मानिक दियना जराउ।
आरति उतारइँ आजा - बाबा, द्वारे आयेउ दुलरु दमाद,
हाँथ जोरत बीरन भइया, मोर बहनोइया बड़ नीक।

गोबर से गोंठ कर चौक पुराओ। तुम्हारे द्वार पर सुन्दर दामाद आया है।

पंडित बुलाकर वेद-मंत्रों का उच्चारण कराओ। तुम्हारे द्वार पर सुन्दर दामाद आया है।

सोने के घड़े में पानी भरो। उसमें आम के पल्लव डालो। पान, फूल, अक्षत और रोरी के साथ माणिक दीप जलाओ।

आजा और बाबा द्वार पर आए हुए अपने प्रिय दामाद की आरती उतार रहे हैं। कन्या का भाई सब से हाथ जोड़कर कह रहा है--"मेरा बहनोई सचमुच बहुत सुन्दर है, बहुत रूपवान् है।

बन्नी

आज तेरी बन्ने मैं बन्नी बनूँगी !
आज तेरी नौशे मैं दूल्हन बनूँगी !

हँस हँस के पूछे बन्नी हमारी,
मेरे लिये क्या-क्या लाया रे बन्ने ?

माथे का टीका, कानों का झुमका,
माथे की बिंदिया लाया रे बन्नी।

हँस हँस के पूछे बन्नी हमारी,
खाने को क्या लाया रे बन्ने ?
मोतीचूर लड्डू, गरी की बरफी,
पिस्ते की कतरी लाया रे बन्नी !
हँस हँस के पूछे बन्नी हमारी,
घूँटन को क्या तू लाया रे बन्ने ?
झांझर गेंड़ुवा गंगा जल पानी,
केवड़े का शरबत लाया रे बन्नी !
हँस हँस के पूछे बन्नी हमारी,
रचने को क्या तू लाया रे बन्ने ?
लौंग इलाइची, तम्बोल का बीड़ा,
नागर का पान मैं लाया रे बन्नी !
हँस हँस के पूछे बन्नी हमारी,
चढ़ने को क्या तू लाया रे बन्ने ?
सोलह घोड़ा की बग्घी मैं लाया,
चँवर डुलाने को दासी रे बन्नी !

दूल्हा-दूल्हन के पारस्परिक हास्य-विनोद का वर्णन है। बन्नी (दूल्हन) कहती है—"बन्ने, आज मैं तेरी बहू बनूँगी। नौशे, आज मैं तेरी दूल्हन बनूँगी।"

हमारी बन्नी, हंस-हंस कर पूछ रही है--"बन्ने, तू मेरे पहनने के लिये क्या-क्या (आभूषण) ले आया है ?"

"बन्नी, मैं तेरे माथे के लिये टीका, कानों के लिये झुमका और ललाट के लिए बिंदिया लाया हूँ।"

हमारी बन्नी हंस-हंस कर पूछ रही है--"बन्ने, तू खाने लिए कौन-कौन सा सामान ले आया है ?"

"बन्नी, तेरे लिए मोतीचूर का लड्डू, गरी की बर्फ़ी और पिस्ते की कतरी ले आया हूँ।"

"बन्ने, अच्छा बता, स्नान-मंजन के लिए क्या ले आया है ?"

"बन्ने, स्नान मंजन के लिए शीतल कलश में गंगा जल और केवड़े का शरबत ले आया हूँ।"

"बन्ने, मुख-श्रृङ्गार के लिए क्या लाया है?"

"मेरी प्यारी बन्नी, तेरी मुख-रचना के लिए लौंग, इलायची, ताम्बूल का बीड़ा और नागर पान ले आया हूँ।"

"प्यारे बन्ने, अच्छा बता, मेरी सवारी के लिये क्या है?"

"ओह! तू नहीं जानती? तेरी सवारी के लिए सोलह घोड़ों की बग्घी लाया हूँ। तुझे चँवर डुलाने के लिए दासियाँ लाया हूँ।"

(१६६)

आँगन सजी आज बन्नी हमारी।
चमन में खिली आज बन्नी हमारी।
बन्नी के अंग पर अतलस का लँहगा,
आबेरवाँ की चूँदर है डाली।
हाँथों में कंगन, माथे पर टीका,
नूपुर की झनकारी है भारी।
आँखों में काजल, माथे पै बिंदिया,
इँगुर भरी माँग सोहे तुम्हारी।
पाँवों में बिछुवा, नाक में नथिया,
फूलों सजी आज बन्नी हमारी।
बन्नी का डोला द्वारे पै आया,
झटपट चढ़ गई बन्नी हमारी।

दूल्हन के आभूषणों और उसके सम्पूर्ण श्रृङ्गार का वर्णन किया गया है—

मेरी बन्नी आज सज-बज कर आँगन में खड़ी है। बाग में आज वह फूल की तरह खिल रही है।

उसके शरीर पर अतलस का घाँघरा है। आबेरवाँ की चूँदर पहने है। हाथों में कंगन है। माथे पर टीका। पैरों में नूपुरों की मधुर ध्वनि हो रही

है। उसकी आँखें काजल से अँजी हैं। माथे पर बिंदिया है। माँग में सिन्दूर भरा है। पैरों में बिछुवे हैं और नाक में नथिया। जूड़े में फूल गुथे हैं। ज्यों ही बन्नी की पालकी दरवाजे पर आई, वह उसमें तुरन्त बैठ गई।

(१७०)

बन्नी का डोला सजाओ मेरे बन्ने।
नाजो का डोला सजाओ मेरे बन्ने।

सुन रे बन्ने तू बन्नी को लेगा,
बन्नी का नखरा सँभालो मेरे बन्ने।

एक लाख लहँगा, सवा लाख चूँदर,
माँथे का टीका लाना मेरे बन्ने।

सुन रे बन्ने, तू बन्नी को देखेगा,
शीशा जड़े डोला लाओ रे बन्ने।

सुन रे दूल्हे तू दूल्हन को लेगा,
साज बराती घर लाओ मेरे बन्ने।

सुन रे बन्ने तू बँदरा बनेगा,
बन्नी को बँदरी बनाओ मेरे बन्ने।

मेरे बन्ने, तू बन्नी की पालकी सजा, नाजो का डोला सजा।

अरे बन्ने, अगर तू बन्नी को लेना चाहता है, तो तुझे उसके नखरे सँभालने पड़ेंगे।

एक लाख का लँहगा, सवा लाख की चूँदर और माथे का टीका तुझे लाना होगा।

बन्ने, अगर तू बन्नी को देखना चाहता है तो उसके लिए तुझे शीशा से जड़ा हुआ डोला लाना होगा।

बन्ने, अगर तू दूल्हन लेना चाहता है तो तुझे दरवाजे पर बारात सजा कर लानी होगी।

बन्ने, अगर तू बँदरा बनना चाहता है तो पहले बन्नी को बँदरी बना।

(१७१)

खेलेगी गुड़िया बन्नी हमारी।

बन्नी के द्वारे आये बराती,
सेंदुर सोपारी, बजे शहनाई।

घोड़े पै देवर, हाथी पर दूल्हा,
खच्चर चढ़े वह तो हैं ननदोई।

नौबत के पीछे ससुर जी आवें,
जेवर की थाली लिये है नाई।

मण्डप के बीच मेरी बन्नी खड़ी है,
साजन भरे माँग सेन्दुर तुम्हारी।

हमारी बन्नी गुड्डी खेलेगी।

बन्नी के दरवाजे पर बराती आये हैं। सिन्दूर और सुपारी आ गई है। दरवाजे पर शहनाई बज रही है।

बन्नी का देवर घोड़े पर सवार है। दूल्हा हाथी पर बैठा है। लेकिन उसका गभड़ू ननदोई खच्चर पर बैठा है।

नौबत के पीछे ससुर जी आ रहे हैं। नाई जेवरों की थाली लिये है।

मंडप के बीच मेरी बन्नी खड़ी है। साजन उसकी माँग में सिन्दूर भर रहा है।

(१७२)

रखूँगी नैनों के बीच तुम्हें,
बन्नी जाने न दूँगी।

बेना भी दूँगी, टीका भी दूँगी,
झूमर भी दूँगी जड़ाऊ तुम्हें।

झुमका भी दूँगी, कुण्डल भी दूँगी,
दूँगी अँगूठी जड़ाऊ तुम्हें।

झाँझ भी दूंगी, पायल भी दूंगी,
छागल भी दूंगी बजाऊ तुम्हें।
हार भी दूंगी, माला भी दूंगी,
तिलरी भी दूंगी गुँथाई तुम्हें।
लँहगा भी दूंगी, चूंदर भी दूंगी,
अँगिया भी दूंगी जड़ाऊ तुम्हें।
सैर करन को पीनस दूंगी,
परदा भी दूंगी जड़ाऊ तुम्हें।
देवर भी दूंगी, दूल्हा भी दूंगी,
ननदी भी दूंगी बुलाई तुम्हें।

बन्नी, तुझे अपनी आँखों में बसा कर रक्खूँगी। कहीं जाने नहीं दूंगी।
तुम्हें वेना, टीका और जड़ाऊ झूमर दूँगी।
झुमका, कुण्डल और जड़ाऊ अंगूठी भी दूँगी।
झाँझ दूँगी। पायल दूँगी। बजने वाली छागल भी दूँगी।
हार दूँगी। माला दूँगी। तिलरी भी गुंथवा कर दूँगी।
लँहगा, चूँदर और जड़ाऊ अँगिया दूँगी।
सैर करने के लिये पालकी दूँगी। जड़ाऊ परदा भी दूँगी।
देवर दूँगी। दूल्हा दूँगी और तुम्हारे लिए ननद भी बुला दूँगी।

पाणिग्रहण

(१७३)

खोलउ पटुक गाँठि जोरि बइठउ, लेउ बहिनि कर दान,
नगर पइठि बहनोइया मँइ खोजेउँ, देन बहिनि कर दान।
कुस, करिना अउ गंगा जुड़ पानी, दोनवा में करबइ दान,
दुइजि कइ चाँद असि बहिनि हम देबइ, जोड़बइ दुइनउँ हाँथ।

भँवरी फिरत मोरा छतिया फाटइ, बहिनि पराई होइ।
जग कइ रितिया निमाहउ मोरि बहिनी, पथरा से छतिया दबाइ।

पाणिग्रहण के समय कन्या का भाई अपने जीजा को संबोधित कर कहता है--"भाई दूल्हे, पटुका खोलो, गाँठ जोड़कर बैठो और मेरी बहन का दान स्वीकार करो। बहन का दान देने के लिये मैंने नगर में प्रविष्ट होकर बहनोई की खोज की।

"कुश, कन्या और गंगा जल लेकर मैं पत्तल के दोने में दान करूँगा। दूज के चन्द्रमा जैसी अपनी बहन समर्पित करूँगा और हाथ जोड़ कर त्रुटियों के लिये क्षमा माँगूँगा।

"भाँवर होते समय मेरा हृदय विदीर्ण होता जा रहा है। आज मेरी बहन पराई हो रही है। बहिन मेरे कुल से अलग होकर दूसरे कुल से अपना संबंध स्थापित कर रही है!"

भाई अपनी बहन से निवेदन करता है—"बहन, अपना हृदय कठोर बना कर संसार की रीति का निर्वाह करो!"

(१७४)

गेंड़ुवा उठावत भइया हँथवा न काँपइ, टुटइ न पनिया कइ धार,
दान करत बीरन छतिया न काँपइ, जून धरम कइ लागि।
काँपत झारी तोरि, काँपत गेंड़ुवा, काँपत कुस कइ डोभ,
धार न टूटइ गेंड़ुवा कइ बीरन, देत कुँवारी क दान।
चाँद सुरुज गहन जग पर लागइ, बहिनि गहन अब लाग,
दान करत बहिनी छतिया जे फाटइ, कइसे करउँ तोर दान?
गुलरी क फुलवा बहिनि मोरि होइहँइँ, लेत आजु मोंसे दान,
सोरह बरिस रहिउ हमरे भवन में, अब छूटत साथ तोहार।

पाणिग्रहण के समय सहेलियाँ कन्या के भाई को सम्बोधित कर गाती हैं—"भाई, जल का पात्र उठाते समय तुम्हारे हाथ काँपने न पायें, जल की धारा टूटने न पाये। बहन का दान करते समय तुम्हारा हृदय विचलित न होने पाये। यह धर्म की बेला है, पुण्य की घड़ी है।

"तुम्हारी झारी काँप रही है, पात्र काँप रहा है। कुश की डोभ काँप रही

है। भाई, झारी के पानी की धार टूटने न पाये, तुम अपनी बहन का दान दे रहे हो!"

भाई कहता है—"चन्द्र और सूर्य ग्रहण सारे संसार पर लगता है, किन्तु इस समय मंडप में मेरी बहन के ऊपर विवाह का ग्रहण लगा है। बहन, तुम्हारा दान करते समय, मेरा हृदय विदीर्ण होता जा रहा है। मैं किस प्रकार तुम्हारा दान करूँ!

"आज से मेरी बहन गूलर का फूल बन जायगी। उसका दर्शन दुर्लभ हो जायगा। बहन मुझसे अपना दान करा रही है।

"बहन, तुम सोलह साल तक मेरे घर में रही। किन्तु अब तुम मुझसे अलग हो रही हो। अब मुझसे तुम्हारा साथ छूटा जा रहा है।"

(१७५)

कवन गहन दिन दुपहर लागइ, कवन गहन आधी रात,
कवन गहन बेटी मँड़ये में लागइ, धन बिनु धिया कर बाप?

सुरुज गहन दिन दुपहर लागइ, चन्द्र गहन आधी राति,
बेटी गहन लागइ माँझ मँड़वना, धन बिनु धिया कर बाप।

सुरुज गहन परइ घरी एक पहरिया, चन्द्र गहन दुइ चारि,
धिया गहन लागइ जउनी समय रे, ब्याह बिना नहिं जाइ।

धिया क ससुर माँगइ भात भतइला, दुलरु दमाद हासिल घोड़,
कंचन थार हम पाँउ पखारब, मोरे बूते दिहा नहिं जाइ।

"कौन-सा ग्रहण दिन में दोपहर के समय लगता है? कौन-सा ग्रहण आधी रात के समय लगता है? कौन-सा ग्रहण मंडप में लगता है और बेटी का पिता निर्धन हो जाता है?"

सूर्य-ग्रहण दिन में दोपहर के समय लगता है। चन्द्र ग्रहण आधी रात के समय लगता है। पिता निर्धन होता है तो मण्डप में बैठी कन्या को ग्रहण लगता है।

सूर्य-ग्रहण एकाध घड़ी-पहर के लिये ही लगता है। चन्द्र ग्रहण भी दो चार घड़ी के लिये ही लगता है। किन्तु जब कन्या-ग्रहण लगता है, तो बिना बेटी का ब्याह हुए उसका उग्रहं नहीं होता।

कन्या का पिता कहता है—"बेटी का ससुर भात माँग रहा है। दामाद हासिल घोड़ा माँग रहा है। किन्तु मैं इतना देने में असमर्थ हूँ। मैं तो केवल सोने की थाली में अपने दामाद का पैर धोकर उसे अपनी लड़की समर्पित कर दूँगा।"

(१७६)

हरियर बँसवा कइ हरियरि डँड़िया, कास-कुस माँड़उ छवाउ,
नउवा बोलाइ के अँगना लिपावउ, आजु मोरी बेटी क बियाह।
मँड़ए के बीचे बइठे बपवा कवन राम, बगले में माया महरानि,
कोंछवा में बइठीं बेटी कवनि देई, चउके में दुलरू दमाद।
पण्डित बोलाइ के बेद पढ़ावउ, समधी क अँगने लियाउ,
अगिनि पवन कइ साखी देवावउ, करउ बेटी कर दान।
सोने कइ थार, थार भरि पानी, कुस पल्लउ लेउ हाँथ,
ऐपन गदोरिया, तिलक सँवारउ, आजु धरम कइ जून।
नील गगन पर काँपत सुरुज रे, तरे काँपत धरती मातु,
बिचवा में काँपत थर थर पवन देउ, काँपत सभवा के लोग।
थर थर काँपत माई कइ कोखिया, काँपइ बाप कर हाँथ,
थर - थर काँपइ झारी क पानी, भैया क काँपइ हाँथ।

हरे बाँस की हरी बल्लियाँ ले आओ। कास और कुश का मंडप छवाओ। नाई बुला कर आँगन लिपाओ। ब्राह्मण बुला कर चौक पुराओ। आज मेरी बेटी का विवाह होने जा रहा है।

मंडप के बीच में अमुक पिता बैठा है। बगल में अमुक माँ बैठी है। गोद में अमुक बेटी बैठी है। चौके पर दुलारा दामाद बैठा है। आज मेरी बेटी का ब्याह होने जा रहा है।

पुरोहित बुलाकर वेद मन्त्रों का उच्चारण कराओ। समधी को बुलाकर उसे मंडप में बिठाओ। अग्नि और पवन को साक्षी देकर कन्या-दान करो!

सोने की थाली में पानी भरो। हाथ में जौ की लोई और कुश का पल्लव लो। हथेली में ऐपन लेकर दूल्हे के माथे में तिलक लगाओ। आज मेरी बेटी का विवाह होने जा रहा है।

ऊपर आकाश में भगवान् सूर्य नारायण काँप रहे हैं। नीचे धरती माता थर-थर काँप रही हैं। बीच में पवन देवता काँप रहे हैं और सारी सभा के लोग भी थर-थर काँप रहे हैं।

माँ की कोख काँप रही है। पिता का हाथ काँप रहा है। कलसे का पानी थर-थर काँप रहा है और क्वाँरी बहिन का दान देते समय भाई का हाथ भी काँप रहा है।

सिन्दूर दान

(१७७)

मचियइ बइठीं बेटी कइ माया, सुनउ स्वामी अरज हमारि,
नगर पइठि के सुघर बर खोजउ, बेटी भई हैं सयानि।
पूरुब खोजेउँ, पच्छिम खोजेउँ, खोजेउँ देस मँइ चारि,
तोहरी बिटियवा के बर नहीं जोगु रे, अब बेटी रइहइँ कुँवारि।
एतनी बचन जब सुनेनि सितल देई, सुनउ बाबा अरज हमारि,
देस अजोधिया, सरजू के तिरवा, दसरथ राज दुवार,
ओनहीं के बाटेनि चारि बेटवना, चारिउ बार-कुँवार,
अइसन बर बाबा हमरे जोग रे, काहें न करतेउ बिचार।
हँथवा धनुक, करिहइयाँ में तरकस, तिलक दिहे चन्द्र भाल,
अइसन बर बाबा हमरे जोग रे, काहें मन करउ उदास ?
एतनी बचन जब सुनेनि जनक जी, लिखि भेजइँ पतिया बिचारि,
हमरी सीतल रानी राम बर जोगु रे, सुनउ समधी अरज हमार।
साजि समाज लइ आवउ बरतिया, हम करबइ कन्या-दान,
पाँच पंच तुँहुँ होउ मोरे साच्छी, देत कुँवारी क दान।
मँड़ए के बीच में ठाढ़े हैं रामचन्द्र, देत सिन्दूर कर दान,
सेंधुरा पहिरि सीता भई हैं पराई, अँखिया चुवइ दूनउँ आँसु।

कन्या की माँ मचिया पर बैठी हुई अपने पति से निवेदन कर रही है—

"स्वामी, मेरी प्रार्थना सुनो! नगर-नगर जाकर बेटी के लिये वर खोजो, वह अब सयानी हो गई है।"

पति कहता है—"मैंने पूर्व दिशा की यात्रा की। पश्चिम दिशा में भी गया। चारों देशों में मैं ढूँढता रहा, किन्तु तुम्हारी बेटी के योग्य कोई वर नहीं मिला। अब वह क्वाँरी ही रहेगी!"

सीता जी यह बात सुनकर पिता से निवेदन करने लगीं—"बाबा, मेरा कहना मानो! सरयू के नदी के किनारे अयोध्या नगर में राजा दशरथ निवास करते हैं। उनके चार लड़के हैं। चारों अभी क्वाँरे हैं। उन्हीं का एक पुत्र मेरे योग्य है। तुम इस पर विचार क्यों नहीं करते?"

"जिसके हाथ में धनुष है। कमर में तरकस है। माथे पर तिलक है। वही वर मेरे योग्य है। फिर तुम अपने मन में क्यों उदास हो रहे हो?"

यह बात सुन कर राजा जनक ने महाराज दशरथ को पत्र लिखा—"हे समधी! मेरा निवेदन सुनिये। मेरी सीता तुम्हारे राम जैसे वर के योग्य है!"

राजा जनक घोषणा करते हैं—"हमारे समधी साज-बाज के साथ बारात लेकर आ रहे हैं। मैं कन्या-दान करूँगा। नगर के सम्भ्रान्त जन क्वाँरी कन्या के दान के समय हमारे साक्षी बनें।"

मंडप के बीच में खड़े होकर रामचन्द्र सीता की माँग में सिन्दूर डाल रहे हैं। सिन्दूर पहन कर सीता पराई हो गई। उनके नेत्रों से आँसुओं की धारा बह रही है।

भाँवर

(१७८)

अगिनि के साखी दइ भाँवरि घूमउँ, बाबा, अब धिया नाहिं तोहारि।
पहिली भँवरिया के घूमत, बाबा अबइ तोहारि,
अँउठा न छुवउ समधी पूत रे, ऊ तउ लागइ धनिया तोहारि।
दुसरी भँवरिया के घूमत, बाबा अबइ तोहारि,
अँउठा न छुवउ समधी पूत, ऊ तउ लागइ धनिया तोहारि।
तिसरी भँवरिया के घूमत, बाबा अबइ तोहारि,
अँउठा न छुवउ समधी पूत, ऊ तउ लागइ धनिया तोहारि।

चउथी भँवरिया के घूमत, बाबा अबइ तोहारि,
अँउठा न छुवउ समधी पूत, ऊ तउ लागइ धनिया तोहारि।
पँचईं भँवरिया के घूमत, बाबा अबइ तोहारि,
अँउठा न छुवउ समधी पूत, ऊ तउ लागइ धनिया तोहारि।
छठईं भँवरिया के घूमत, बाबा अबइ तोहारि,
अँउठा न छुवउ समधी पूत, ऊ तउ लागइ धनिया तोहारि।
सतईं भँवरिया के घूमत, बाबा अब मँइ भयउँ पराइ,
बँहिया पकड़ि बइठावइँ दुलहे राम, धन अब लागउ रनिया हमारि।

दूल्हे के साथ गाँठ जोड़कर अग्नि के चारों ओर भाँवर घूमते समय कन्या अपने पिता को सम्बोधित कर कहती है—"बाबा, अब बेटी तुम्हारी नहीं रह जायेगी !"

"बाबा, पहली भाँवर घूमते समय तक अभी मैं तुम्हारी ही हूँ।"

सहेलियाँ दूल्हे को सम्बोधित करती हुई गाती हैं—"समधिन के लड़के, दूल्हन का अँगूठा मत छुओ, वह तो तुम्हारी पत्नी लगती है।"

इसी प्रकार छठीं भाँवर तक बेटी अपने पिता से कहती रहती है—"बाबा, अभी तक मैं तुम्हारी ही हूँ।" सातवीं भाँवर पूरी कर लेने पर वह अपने रोम-रोम से रोती हुई कहती है—"बाबा, अब तो मैं पराई हो गई, तुमसे हमेशा-हमेशा के लिये अलग हो गई !"

दूल्हा उसकी बाँह पकड़ कर उसे अपनी बगल में बिठाता हुआ कहता है—"प्राण, अब तुम मेरी रानी हो गईं।"

(१७९)

कइसे क भाँवरि फिरउँ मोरे साजन, माँझ मँड़वना बाबुल ठाढ़,
नैनन अँसुवा चुवइ मोरे वीरन, माईं क जिया कँहराइ।
जमवा क ओट दइ भाँवरि घूमउ, बिरना क देवइ समुझाइ,
सासु के चरन सीस हमँ धरबइ, बाबुल के लेबइ समुझाइ।

सातउ भँवरिया फिरउँ जब साहेब, दुनउ कुलदवा बोलाइ,
अगिनि क साखी दइ भाँवरि घूमउँ, देखइ सब जग आइ।

कन्या भाँवर घूमते समय अपनी लज्जा प्रकट करती हुई कहती है—"स्वामी, मैं तुम्हारे साथ किस प्रकार भाँवर घूमूँ? मंडप के बीच मेरे पिता जी खड़े हैं। मेरे भाई के नेत्रों से आँसू गिर रहे हैं। भाई का हृदय विदीर्ण होता जा रहा है।"

दूल्हा उसे समझाता है—"प्रिये, मेरे जामे की आड़ में होकर भाँवर घूमो! तुम्हारे भाई को मैं समझा लूँगा। सास के चरणों पर अपना सिर रख दूँगा और ससुर जी को भी राज़ी कर लूँगा!"

दूल्हन आगे कहती है—"स्वामी, दोनों कुल के देवताओं को साक्षी देकर मैं सातों भाँवर पूरी कर रही हूँ। अग्नि को साक्षी देकर मैं भाँवर घूम रही हूँ। सब लोग हमें ही देखने के लिये एकत्रित हुए हैं।"

कोहबर

(१८०)

काँस पितरिया क इहइ नोन कोहबर, सात सोहागिनि उरेहेनि हो,
मानिक धिया कर ब्याह रचाएउँ, बाजन बाजइ घहराइ।
गंग, जमुन, सरसुति धार उरेहेउँ, चन्द्र, सुरुज धरती खींचेउँ,
तँहवइँ सोवत दुलहे कवन राम, दुलहिनि अँचरा डोलावइँ हो।
मानिक दियना बरत सारी रतिया, मइया तोहरी जगावइँ हो,
उठउ पूत त्यागउ सुख कइ सेजरिया, भोर भये मुरगा जे बोलइ हो।
अइसनि मइया के कउन बउराएउ, राति अँधेरिया के भोर बतावइ हो।

काँसे और पीतल का यही सुन्दर कोहबर है। सात सुहागिन स्त्रियों ने मिल कर इसे चित्रित किया है। माणिक जैसी उज्ज्वल और रूपवती स्त्री का इस कोहबर में ब्याह रचाया गया है। वाजे बजते हुए आ रहे हैं।

इस कोहबर में गंगा, यमुना और सरस्वती की धारायें चित्रित की गई हैं। चन्द्रमा, सूर्य और पृथ्वी माता को अंकित किया गया है। यहाँ अमुक दूल्हा

शयन कर रहा है। दूल्हन अपने आँचल से उसे हवा दे रही है। रात भर कोहबर में माणिक दीप जलता रहा है।

माँ दूल्हे को जगाती हुई कहती है—"मेरे बेटे, उठो! सुख की सेज का परित्याग करो। मुर्गा बोल रहा है। भोर होने लगी है।"

दूल्हा ऊँघता हुआ जवाब देता है—"मेरी माँ को भला किसने पागल कर दिया! अभी तो अँधेरी रात है, लेकिन वह कहती है कि सुबह हो गई!"

जेवनार

(१८१)

एक सूघरि ग्वालिनि, दधि बेंचन जात रही।
ठाढ़े कन्हइया हुवाँ ठाढ़े, अँचरा पकरि के रारि करी।
कँहवाँ की तुँहुँ ग्वालिनि, बेंचउ कँहवाँ दही रे दही?
मथुरा की मँइ ग्वालिनि, गोकुल बेंचउ दही रे दही।
तोरउ पात कदम कर, चाखउ टटकी दही रे दही,
पात लागि गए झाँझा, अँचरन चाखउँ दही रे दही।
अँचरा मोर जूठ, लरिकन लार बही रे बही।
मचियइ बइठी जसोदा, ग्वालिनि ओरहन देन गई,
बरजउ मातु अपने ललन के, गलियन रारि करी रे करी।
ग्वालिनि तोहरे धरम से, घर ही में नारि नयी रे नयी
ग्वालिनि तोहरे धरम से, घर ही में दूध दही रे दही।
अइसन ढीठ कन्हइया, मोंसे बरजो न जाइ रही रे रही।

एक सुन्दर ग्वालिन दही बेंचने जा रही थी। कृष्ण जी उसी गली में खड़े थे। उसका आँचल पकड़ कर पूछने लगे—"तुम कहाँ की ग्वालिन हो? कहाँ अपना दही बेंचने जा रही हो?"

उसने उत्तर दिया—"मथुरा की मैं ग्वालिन हूँ और गोकुल में दही बेंचने जा रही हूँ।"

कृष्ण बोले—"पहले मुझे अपना दही चखा दो !"

"कदम का पत्ता तोड़ लो और उसी में लेकर ताजा दही चख लो !"

कृष्ण ने बहाना किया--"पत्ते में धूल लगी है। मैं तुम्हारे आँचल में ही दही चखना चाहता हूँ।"

"मेरा आँचल जूठा है। उस पर लड़कों की लार गिरी है।"

कृष्ण अपनी जिद पर अड़े रहे। यशोदा जी मचिया पर बैठी थीं। ग्वालिन उनके पास उलाहना लेकर गई--"माँ, अपने लड़के को रोको! यह मुझसे गलियों में झगड़ा करता है!"

माँ यशोदा उसे समझाती हुई बोलीं--"ग्वालिन, तुम्हारे धर्म से घर में ही दूध और दही का भण्डार है। लेकिन क्या करूँ! कृष्ण बड़ा नटखट है, मेरा कहना नहीं मानता।"

(१८२)

राजा जनक एक ब्याह रच्यौ है, जेंवन आए चारिउ भाई जी, हाँ जी !
माँझ मँड़वना पान पतरिया, ओरियन ओर बिछाई जी, हाँ जी !
साठी कर चाउर नागर कइ मूँग रे, बकसर से घियना मँगाई जी, हाँ जी !
सोंठ सोंठानी, परवर भाजी, ऊपर से घियना सुबासी जी, हाँ जी !

झुकि-झुकि परसत राजा जनक जी, समधी के देत हैं गारी जी, हाँ जी।
गेंड़ुवन पनिया परोसइँ सब नारी, बिछुवन की झनकारी जी, हाँ जी!

पाँति-पाँति सब बइठे बराती, अँगन बीच समधी कइ थारी जी, हाँ जी!
हँसि हँसि पूँछइँ मातु जानकी की, काहें न लाल भात जुठारी जी, हाँ जी!

आजु क भात, भात नहिं सासू, मान भरी मोरि थारी जी, हाँ जी !
लेउ न लालन अभरन सोनवाँ, रतन जड़ाऊ फुलवारी जी, हाँ जी !

सात सोहागिनि पूछइँ दुलहे राम, काहें नजर कियो नीची जी, हाँ जी!
की तोहरी बहिनी हमरी नगरिया, की मातु तोहरी भागी जी, हाँ जी!

तिरछे नयन बोलइँ राजा रामचन्द्र, हमरी-तुम्हरी कस गारी जी, हाँ जी!
यहि गारी की माख न मानउ, निति रे भोजन, निति गारी जी, हाँ जी,

सब सरहज हैं चन्द्र गोन्हइया, सार बड़े अभिमानी जी, हाँ जी !
ससुरु तुमारे पूरे हैं तपसी, सासु गंगा जुड़ पानी जी, हाँ जी !
पनवन बीरा लेत राम जी, अँगुरी धरत सब नारी जी, हाँ जी !
नैनन बिहँसत चारिउ भइया, तुँहुँ सब लागउ हमरी नारी जी, हाँ जी!

राजा जनक ने एक ब्याह रचाया है। भगवान् राम चारों भाइयों के साथ भोजन करने आये हैं। मंडप में छज्जों के नीचे-नीचे पान की पतरियाँ बिछाई गई हैं। साठी का चावल, नागर की मूँग और बक्सर का घी मँगाया गया है। सोंधी-सोंधी परवल की भाजी बनी है। उसे घी से सुवासित किया गया है। राजा जनक झुक-झुककर परस रहे हैं और समधी को गालियाँ दे रहे हैं। स्त्रियाँ कलसों से पानी परस रही हैं। उनके नूपुरों की मन्द-मधुर ध्वनि निनादित हो रही है। पंक्तियों में बराती बैठे हैं। आँगन में समधी की थाली है।

जानकी की माता हँस-हँस कर राम से पूछ रही हैं--"बेटा, भात का कौर क्यों नहीं उठा रहे हो ?"

"सास जी, आज का भात साधारण ढंग का नहीं है। आपको मेरे भोजन का पुरस्कार देना पड़ेगा !"

"बेटा, सोने के आभरण लो, रत्न जटित फुलवारी लो और भोजन आरम्भ करो !"

सात सुहागिनें पूछ रही हैं--"दूल्हे जी, तुम्हारी निगाह नीची क्यों है ? क्या तुम्हारी बहन मेरी नगरी में चली आई है, अथवा तुम्हारी माता जी कहीं भाग गई हैं ?"

तिरछी निगाहों से राम बोले--"भला मेरा और तुम्हारा मज़ाक कैसा ?"

स्त्रियाँ बोलीं--"इन गालियों को बुरा मत मानो। यहाँ तुम हमेशा भोजन करोगे और हमेशा गालियाँ सुनोगे।

"तुम्हारी सभी सरहजें चन्द्रमा की चाँदनी के समान हैं। साले बहुत अभिमानी हैं। तुम्हारे ससुर जी तो पूरे तपस्वी हैं और सास गंगा जल की भाँति निर्मल और शीतल हैं।"

भोजन के पश्चात् श्रीराम पान का बीड़ा लेने लगे तो सभी स्त्रियाँ उनकी उँगली पकड़ने लगीं। चारों भाई आँखों में हँसते हुए कहने लगे--"तुम सब हमारी पत्नियाँ लगती हो !"

(१८३)

शिव शंकर चले ससुरारी जी, भोले बाबा चले ससुरारी जी।
जाइ के पहुँचे हिमांचल नगरी, सासु उतारैं आरती जी।
मेवा मिठाई मनहीं न भावै, भोले बाबा माँगत धतूरा जी।
छप्पन भोजन परसत सखियाँ, गेंड़ुवन घियना उड़ेरी जी।
हँसि-हँसि पूँछत गंगा रे जमुना, काहें चले ससुरारी जी ?
की मइया तुमरी घर मोरे आयीं, खोरियन बहिनि सिधारीं जी !

भगवान् शंकर ससुराल चले। भोले बाबा ससुराल चले।

वे हिमांचल नगरी में पहुँचे। सास उनकी आरती उतारने लगीं।

मेवा और मिठाई उन्हें अच्छा नहीं लगता। वे धतूरा माँगते हैं।

सखियाँ उन्हें छप्पनों प्रकार का भोजन परस रही हैं। कलसों में घी परसा जा रहा है।

गंगा और यमुना हस-हँस कर पूछ रही हैं--"तुम क्यों ससुराल जा रहे हो ! क्या तुम्हारी माँ मेरे घर में आई हैं अथवा तुम्हारी बहन गलियों में घूम रही है !"

(१८४)

कंचन पात की पतरी सजाई, लौंगन डोभ डुभाई जी,
जेंवन बइठें हैं क्रिस्न कन्हाई, संग लिए बलदाऊ जी।
छप्पन भाँति कर भोजन परसा, भाँति-भाँति की तरकारी जी।
झाँझर गेंड़ुवा गंगा जुड़ पानी, भरि-भरि देत हैं साली जी।
थारिन हाँथ न देउ रे नटवर, काहें करत अनखानी जी !
आजु क भोजन खिचड़ी माँगउँ, काहें न देत हो नारी जी !
खिचड़ी खात ननद नेग माँगत, नारि चलेंगी संग लागी जी !

स्वर्ण-पात्रों की पत्तलें बनी हैं। उनमें लौंगों की डोभ लगी है।

बलदाऊ को साथ लेकर कृष्ण जी भोजन करने बैठे हैं। छप्पनों प्रकार

का भोजन और भाँति-भाँति की तरकारियाँ परसी गई हैं। सालियाँ झीने कलसों में भर-भर कर गंगा जल दे रही हैं।

सखियाँ कृष्ण से परिहास करती हुई कहती हैं—"नटवर कृष्ण, थाली में हाँथ मत लगाओ! तुम इतना गुमान क्यों कर रहे हो?"

कृष्ण कहते हैं—"आज मुझे खाने के लिये खिचड़ी मिलनी चाहिये। नायिकाओं, तुम मुझे खिचड़ी क्यों नहीं दे रही हो?"

सखियाँ उत्तर देती हैं—"खिचड़ी खाते समय ननद तुमसे नेग माँगेगी और यहाँ की सभी स्त्रियाँ तुम्हारे साथ डोलियों पर चलने के लिये तैयार हो जायेंगी!"

(१८५)

षटरस भोजन न खाउँ सखी, मैं तो खिचड़ी खाने आया यहाँ।
हँसि-हँसि पूँछें रुकुमिनि की मइया, खिचड़ी का नेग क्या लोगे लला?

एक लाख घोड़ा, सवा लाख हाथी, नाजो का डोला सजाय माँगूँ।
हँसि - हँसि पूँछें साली, सरहज, खिचड़ी का नेग क्या लोगे लला?

चन्द्र, सुरुज ऐसी सरहज माँगूँ, साले का रथ मैं जुताय माँगूँ।
इतनी माँग न तुम माँगो मोहन, सासु की धेरिया उठाय भागो।

कृष्ण जी अपनी ससुराल में खिचड़ी के समय कहते हैं—"सखियो, मैं षट्-रस भोजन नहीं करूँगा। मैं तो यहाँ खिचड़ी खाने आया हूँ!"

रुक्मिणी की माँ हँसती हुई पूछती हैं—"बेटा, खिचड़ी खाने का क्या नेग लोगे?"

"एक लाख घोड़ा, सवा लाख हाथी और साथ में दूल्हन का डोला लूँगा!"

सालियाँ हँसती हुई पूछती हैं—"लाला, खिचड़ी खाने का क्या नेग लोगे?"

"मैं चन्द्रमा और सूर्य जैसी रूपवती साली और साले का रथ लूँगा!"

सालियाँ कहती हैं—"मोहन, तुम इतनी वस्तुयें माँग रहे हो, किन्तु यह सब नहीं पाओगे। चुपचाप अपनी सास की लड़की को लेकर भाग जाओ!"

बेटी की बिदाई

कइसे क डँड़िया चढ़उँ मोरे बीरन, माई क कोंछवा छुटत दुख लागइ,
सोरह बरिस रहेउँ तोहरे भवन में, माई कइ गोदिया सयन नहि छोड़ेउँ,

खोरवन दूध पियाएनि मोरे बाबुल, पटुका से निति मुख मोर पोंछिनि।
छोटी से बड़ी भएउँ, घुटुरुवन चलन लागेउँ, मोतियन अंग सजैं मोरे बीरन।

माई के रोए से छतिया फटत हैं, बपई के रोए से ओरी चुवत हैं।

"मेरे भाई, मैं किस प्रकार पालकी में बैठूँ ? माँ की गोद छोड़ते समय मुझे बहुत दुःख हो रहा है। सोलह वर्षों तक मैं तुम्हारे घर में रही। स्वप्न में भी माँ की गोद नहीं छूटने पाई।

"मेरे बापू मुझे कटोरे में भर कर दूध पिलाया करते थे। अपने अंगौछे से मेरा मुँह पोंछा करते थे। छोटी से मैं बड़ी हुई और घुटनों के बल चलने लगी। अब मोतियों से मेरा शरीर सुसज्जित होगा।

"माँ रोती है तो उसकी छाती फटी जाती है। बापू के रोने से उनके नेत्रों से आँसू बह रहे हैं वैसे ही, जैसे ओरी से पानी चूता रहता है।"

(१८७)

आजु नगर भयो सून, धिया चलीं पिय की नगरिया।

दादी हमारी ऐसी पालैं, जैसे घी की गगरिया।
बाबा हमारे ऐसे निकालैं, जैसे जल की मछरिया।

अम्मा हमारी ऐसी पालैं, जैसे खेलन की गुजरिया,
भइया हमारे ऐसे निकालैं, जैसे जल की मछरिया।

आज माँ की नगरी सूनी हो रही है। बेटी अपने प्रीतम की नगरी में जा रही है।

दादी ने घी से भरे हुए घड़े की भांति मेरा पालन किया। बाबा पानी की मछली की तरह मुझे बाहर निकाल दे रहे हैं।"

माँ ने खिलौने की नायिका की भांति मेरा पालन किया। भइया जल की मछली की भांति मुझे अलग कर दे रहे हैं।

(१८८)

खोलउ पटुक, गाँठि मोरि जोरउ, अब धिया भई हैं पराई रे!
कइके सिंगरवा सजन सँग चलीहैं, बाबुल खड़े हाँथ जोरे रे।
बिनती करत बाबुल समधी के आगे, सुनउ न बिनती हमारी रे।
आपनि धेरिया तोहइँ मँइ दीन्हेउँ, किहेउ भली बिधि प्रतिपाल रे!
हाँथ जोरि के बिरन भइया ठाढ़े, सुनउ जीजा अरज हमारी रे,
आपनि बहिनियाँ तोहइँ मँइ दीन्हेउ, किहेउ भली बिधि प्रतिपाल रे।
माई के रोये अँचर भरि भीजइ, बाबुल के रोए चउपाल रे,
भइया के रोए पटुकवा भीजइ, सखियाँ रोवइँ सब ठाढ़ रे।

आँचल खोल कर गाँठ जोड़ो। बेटी अब पराई बन गयी है।

बेटी शृङ्गार करके अपने स्वामी के साथ जा रही है। बापू हाथ बाँधे हुए खड़े हैं। वे अपने जामाता से निवेदन कर रहे हैं--"बेटा, मैंने तुम्हें अपनी कन्या समर्पित की है। इसका अच्छी तरह पालन करना!"

हाँथ जोड़ कर भाई खड़ा है। अपने जीजा से विनय कर रहा है--"जीजा, मैंने तुम्हारे हाथ में अपनी बहन सौंपी है। मेरी बहन का अच्छी तरह पालन करना!"

माँ के रोने से आँचल भींग रहा है। बापू के रोने से चौपाल भींग रहा है। भाई के रोने से उसका अँगौछा भींग रहा है। बाहर सभी सखियाँ खड़ी होकर रो रही हैं।

(१८९)

बारह बरिस कइ बेटी हमारी रे, अबहीं अलभ सुकुवारि,
बजन बजाइ सजन मोरे आये, लइ गए धेरिया हमारि।

साजेउँ मँइ अँचहँड़, साजेउँ मँइ पँचहँड़, साजेउँ मँइ धन भण्डार,
बारह वरिस कइ करिना साजेउँ, लइ गए वजना वजाइ।
सूनि भईं माया कइ झाँझरि कोखिया, सून भये अँगना - दुवार,
हाँथ जोरि बाबा अरज करत हैं, राखेउ साजन लाज हमारि।
हाँथ जोरि भइया बिनती करत हैं, राखेउ जीजा मोरि मरजाद।
हँसि - हँसि बोलइँ समधी कवन राम, सुनउ न बिनती हमारि,
तोहरी धेरिया के अस मँइ रखबेउँ, जस बेलहरि कर पान।

बारह साल की मेरी बेटी है। वह अत्यन्त कोमल और सुकुमारी है। दामाद बाजे बजवाता हुआ आया और मेरी बेटी को अपने साथ ले गया।

मैंने भांति-भांति की सामग्री सज्जित की। धन और भण्डार इकट्ठा किया। बारह साल की अपनी कन्या को साज-सँवार कर तैयार किया। जामाता बाजे बजा कर उसे उठा ले गया।

माँ की झीनी कोख रिक्त हो गई। आँगन और द्वार सूने हो गए। बापू हाथ जोड़ कर निवेदन कर रहे हैं—"बेटा, मेरी लाज तुम्हारे ही हाथ में है। उसकी रक्षा करना, भली-भांति उसका निर्वाह करना!"

हाथ जोड़ कर भाई निवेदन कर रहा है—"जीजा, मेरी मर्यादा की रक्षा करना!"

अमुक समधी आश्वासन दे रहा है—"समधी भाई, मेरी प्रार्थना सुनो! तुम्हारी पुत्री का बेलहरी के पान की भांति मैं पालन-पोषण करूँगा!"

(१६०)

कँहवाँ कऽ हंस कहाँ उड़ि जाइ रे, कँहवाँ कइ धेरिया कहाँ चलि जाइ रे?
पुरूबू कऽ हंसा पछिउँ उड़ि जाइ रे, नइहर कइ धेरिया सजन घर जाइ रे।

केके बरे करउँ पूरी - पकवान रे, के के बरे जोरउँ बेलहरी क पान रे?
सजना बरे करउँ पूरी - पकवान रे, दुलहे के जोरउँ बेलहरी क पान रे।

उठउ बेटी, उठउ बेटी, करउ सिंगार रे, तोहरा चलावा बड़े भिनुसार रे,
खाइ लेउ खाइ बेटी, आजु दूध-भात रे, आजु से कलेवना दुलभ होइ जाइ रे।

भइया मोर खइहइँ दुधवा अउ भात रे, हमरा कलेवना दिहिउ बिसराइ रे,
पालि-पोखि बेटी किहेउँ सयानि रे, चलत की बेरिया दिहिउ समुझाइ रे।
लइ जाइउ बेटी दउरी, चँगेरी रे, जातइ दिहिउ गुनवा पसारि रे,
जतिया के बेटी नीच चमार रे, उनहूँ से बोलिउ मथवा नवाइ रे।

कहाँ का हंस कहाँ उड़ जाता है ! कहाँ की कन्या कहाँ बस जाती है !

पूरब का हंस पश्चिम चला जाता है। नैहर की कन्या अपने स्वामी के घर चली जाती है।

किसके लिये मैं मिठाई और पकवान तैयार करूँ ! किसके लिए मैं बेलहरी का पान साजूँ ?

समधी के लिए मैं मिठाई और पकवान तैयार करूँगी। दूल्हे के लिए बेलहरी का पान साजूँगी !

माँ अपनी पुत्री से कह रही है—"मेरी बेटी, उठो ! अपना साज-सिंगार करो। बड़े भोर में ही तुम्हें चला जाना होगा ! दूध, भात और रोटी खा लो। आज से मेरे घर का कलेवा तुम्हारे लिये दुर्लभ हो जायगा !"

पुत्री कहती है—"माँ, मेरा भाई दूध-भात खायेगा। मेरा कलेवा तुम भुला दिया करना।"

"बेटी, मैंने पाल-पोस कर तुम्हें सज्ञान किया। चलते समय तुमने मुझे सभी बातों का बोध करा दिया ! तुम दौरी और चँगेरी लेकर जाना और ससुराल में पहुँचते ही अपने सारे गुण फैला देना। जो जाति के निम्न चमार हों, उनसे भी सिर झुका कर बातें करना !"

(१६१)

लागे हैं मास अगहनवाँ मोरी बेटी, आयो है सुदिन तोहार,
सुदिन देखत बेटी मन पछितायीं, छुटि जइहैं नइहर हमार।
एतना जिनि पछिताउ मोरी बेटी, तोहइँ आनब होत भिनुसार,
भइया तोहरे बोलावन जइहइँ, लइ अइहइँ डोलिया फँदाइ।
भइया-बहिनि दूनउ एकइ कोखी जनमेउ, एकइ सँग पिएउँ दूध,
भइया के लिखेउ बाबा लालि चउपरिया, बेटी के लिखेउ बनबास।

एतना बिरोग जिनि मानउ बेटी, समधी सजन अइहैं द्वार,
साजि - तूलि बेटी करबइ बिदाई, लइ जइहैं बजना बजाइ,
जइसे बाग की कोइलिया रे माया, ओइसे दिहिउ उड़ाइ,
जइसे सरिया कइ गइया रे माया, ओइसे दिहिउ लहराइ।
माया के रोए अँगन मोर भीजइ, बाबा के रोए चौपाल,
भइया के रोए पटुकवा भीजइ, सून भये अँगना - दुवार।
हाँथ जोरि समधी अरज करतु हैं, सुनउ बचनिया हमारि,
बेटा बियहि के घर लइ आएउ, भरि जइहैं अँगना - दुवार।

माँ अपनी पुत्री से कह रही है—"बेटी, अगहन का महीना लग गया। तुम्हारा सुदिन आ गया है !"

सुदिन देखते ही बेटी अपने मन में पश्चाताप करने लगी—"मेरे बाबुल का देश अब मुझसे छूट जायगा !"

माँ उसे आश्वासन देती है—"बेटी, इतना पश्चाताप मत करो। मैं सुबह ही तुम्हें बुला लूँगी। तुम्हारा भाई तुम्हें लेने जायगा और पालकी सजा कर तुम्हें विदा करा लायेगा।"

बेटी माँ से उलाहना करती है—"माँ, हम भाई और बहन दोनों एक ही कोख से उत्पन्न हुए। एक ही छाती का हम दोनों ने दूध पिया, किन्तु भाई को तो तुमने लाल चौपाल दी और मुझे बनवास दे रही हो।"

माँ समझाती है—"बेटी, इतना दुःख मत करो ! दामाद दरवाज़े पर आयेगा। साज-सँवार कर मैं तुम्हें बिदा कर दूँगी। वह बाजे बजा कर तुम्हें अपने साथ ले जायगा।"

बेटी शिकायत करती है—"माँ, बाग की कोयल की तरह तुमने मुझे उड़ा दिया। गौशाले के गाय की भांति मुझे बाहर निकाल दिया।"

"माँ के रोने से मेरा आँगन भींग रहा है। बाबा के रोने से चौपाल भींग रही है। भाई के रोने से अंगोछा भींग रहा है। आँगन और द्वार सूने हो गये।"

हाँथ जोड़ कर दूल्हे का पिता निवेदन कर रहा है—"समधी, मेरी बात सुनो ! अपने बेटे का ब्याह कर तुम भी नई दूल्हन घर में लाना। आँगन और द्वार फिर से भर जायेंगे।"

महरानी का गीत

(कन्या की बिदाई के बाद)

मैं पाँव पियादन आइयूँ रे, माता के मन्दिरवा ।
मैं चँवरी डुलाऊँ दिन-रैन रे, माता के मन्दिरवा ।।

हाँथ जोड़ माता अरज करत हौं
पूरन कियो मोरी काज रे, माता के मन्दिरवा ।

फूल-पान देबी कछु नहिं लाई हौं,
अँसुवन पखारौं पाँव हो, देबी के मन्दिरवा ।

धिया के ब्याहि माई, उरगिन भईं हौं,
लेईं सातों बहिनी क नाम हो, देबी के मन्दिरवा ।

धान पान देबी तुमका चढ़ौउबै,
हृदय में सुमिरन तुम्हार हो, देबी के मन्दिरवा ।

मइया के द्वारे अति भीढ़ भई है,
गावत पँचरा तुम्हार हो, देबी के मन्दिरवा ।

गितिया सुनत मइया मगन भईं हैं
बाजत घंटा - घड़ियाल हो, देबी के मन्दिरवा ।

चनन काठ के बने हैं हिंडोलना,
रेशम के हैं बंदनवार हो, देबी के मन्दिरवा ।

जो जस गावे मइया सो फल पावे,
भर-मुख पायों आशिर्वाद हो, देबी के मन्दिरवा ।।

जग - जननी माता को नहीं जानत,
सबही के धिया जुड़ायँ हों, देबी के मन्दिरवा ।।

मैं नंगे पाँव माँ का दर्शन करने के लिये आयी हूँ ।
माता के मन्दिर में मैं रात दिन चँवर डोलाती हूँ !

माता, मैं हाथ जोड़कर तुमसे प्रार्थना कर रही हूँ, तुम मेरी कामना, मेरा मनोरथ अवश्य पूरा करना ।

माँ, मैं ग़रीब हूँ। तुम्हारे लिये पान-फूल भी नहीं लाई हूँ। मेरी आँखों के आँसू ही तुम्हारे चरणों को पखार रहे हैं।

मैं बेटी का ब्याह करके उऋण हुई हूँ। माँ, मैंने तुम सातों का नाम लेकर ही कन्यादान किया है।

माँ, मैं तुमको धान-पान चढ़ाऊँगी और हृदय में तुम्हें स्मरण करूँगी।

माँ के द्वार पर बहुत बड़ी भीड़ लगी है। सभी तुम्हारा गीत गा रहे हैं।

गीत सुन करके माँ प्रसन्न हो गयी हैं। चारो ओर घण्टा घड़ियाल का स्वर गूँज रहा है।

माँ का हिंडोला चन्दन के काठ का बना है और उसमें रेशम का बन्दनवार लगा है।

जो भी माँ का यश गाता है, वही फल पाता है। मुझे तो भर-मुँह आशीर्वाद मिला है।

जगत-जननी माँ को कौन नहीं जानता ?

माँ, आशीर्वाद दो कि सब की बेटियाँ सदा-सर्वदा सुखी रहें।

(१९३)

खोलो केवड़िया, दरस देओ माई,
मैं तो ठाढ़ी दुअरिया।
सिंह चढ़ी देवी, आँगन ठाढ़ी
पूरन कियो मोरा काज।
मैं तो ठाढ़ि दुअरिया।
लाल घँघरिया माई, लाल ओढ़नियाँ,
लाल फूलन का हार।
मैं तो ठाढ़ी दुअरिया।
अँबवा की टेरी माता, दही की दहेड़िया,
हाथन लिये जलधार।
मैं तो ठाढ़ी दुअरिया।
पान - फूल माई, डाली सजी है,
लऊँगिया से दिह्यों मैं बास।
देबी के सेजरिया।

गंगा - जमुना माई, सुरसति पूज्यों
पूज्यों अलोपिन का, द्वार ।
मैं तो ठाढ़ी दुअरिया ।

तुम्हरे भरोसे माई, कन्या बियाह्यों
मनसा फलित भई आज ।
मैं तो ठाढ़ि दुअरिया ।

गहबर पियरी माता, गहबर चुँदरी
गर्भा - भरी तूने माँग ।
धिया गयी ससुररिया ।

दूध - पूत धिया सब रे दिह्यो माई
बंस बढ़ें दिनरात ।
मैं तो ठाढ़ी दुअरिया ।

माँ, आशीर्वाद दो कि सबकी बेटियाँ सदा-सर्वदा सुखी रहें ।

माँ, द्वार खोलो, मुझे दर्शन दो । मैं तुम्हारे दरवाज़े पर खड़ी हूँ ।

सिंहवाहिनी माँ (मेरी पुकार सुनते ही) आँगन में आकर खड़ी हो गयीं । उन्होंने मेरा मनोरथ पूरा कर दिया ।

माँ लाल घाँघरा और लाल ओढ़नी पहिने हुए हैं । माँ के गले में लाल फूलों का हार पड़ा हुआ है ।

आम की टहनी और दही की दहेड़ी और हाँथ में जलधार लिये मैं खड़ी हूँ ।

माँ की डाली पान-फूल आदि से सजी है और लौंग की सुगन्ध से माँ की सेज बसी हुई है ।

माँ, मैंने गंगा, जमुना, सरस्वती सब की पूजा की है । मैंने अलोपी देवी के द्वार पर जाकर माथा टेका है ।

माँ, मैंने तुम्हारे ही भरोसे बेटी का ब्याह किया है । आज मेरी मनोकामना पूरी हुई है ।

माँ, मेरी बेटी गाढ़े रंग की पियरी और गाढ़े रंग की चुनरी पहिन कर, माँग में सिन्दूर भर कर ससुराल गयी है ।

माँ, तुम मेरी बेटी को दूध-पूत सब देना । माँ, तुम आशीर्वाद देना कि दिन रात उसका वंश बढ़े ।

गीतों की प्रथम पंक्ति

पंक्ति		पृष्ठ
बाँसे करिल होइके निकरी हैं गोरी	...	३७
फुलझरिया मन लागे	...	४०
ललना गनेश जी की, सरन मनाइये	...	४४
पहला मास रुकुमिन, कुँवर सच पायो	...	४६
काहे की पलंग, काहे का लगे पावा	...	४९
खट्टा न भावे मिट्ठा न भावे	...	५२
ननद पूँछइ ठाढ़ि आँगन में	...	५३
डगरा बहारत एक मोती जो पाया	...	५५
अब गढ़ले नगर का सोनार	...	५९
कौन मास फूली करैली, कौने मास बहुआ गरभ से	...	६३
लागत मास असाढ़ पिंडुलिया मोरि काँपइ हो	...	६६
अँगने में तुलसा लगायेऊँ माँगन एक माँगेऊँ	...	६८
जौ मैं जनतिऊँ तहिया की बहुआ गरभ से	...	६९
चलो न सखिया सहेली जमुना जल भर लाई	...	७०
चन्दना काटौं मैं पलँगा बिनायेऊँ	...	७१
जनमउ न जनमउ होरिलवा मोरे दुखिया घर	...	७३
नन्द महल आज बहुत अनन्द	...	७३
गोकुल बाजत बधइया तो नंद घर सोहर हो	...	७४
केकरि ऊँची महलिया तउ मानिक दीप बरइ हो	...	७६
भँगिया के अमली महादेव भँगिया-भँगिया करैं	...	७७
बन बीच बैठी मोरि सीता, चुवत ढुरहुर आँसू रे	...	७८
नदिया तउ गहबरि भरि गयी सीता के रोये से हो	...	७९
सरिया खेलन्ते कवन रामा, रानी के कवन रामा	...	८०
शिव चले झारिखण्ड तो आगे मधुबन	...	८७
पीपरि मैं ना पिऊँ कड़ुवी लगे	...	८९
ऊँचे नगर पुरपाटन, आले बाँस छाजनि हो	...	९०
केकरि ऊँची महलिया तउ मानिक दीप बरइ हो	...	९२

पंक्ति		पृष्ठ

पंक्ति		पृष्ठ
जौ पूत रहि हैं बार और गभुवार	...	१३५
सरग भवन्तुलि चिरई, सरब गुन आगरि	...	१३६
ऐपन कर अस लेड़ुवा, ननदिया के पठयऊँ	...	१३७
सोने के खड़उवाँ बिरन भइया चुटुर-चुटुर चलइँ हो	...	१३८
झबरे-झबरे बाल होरिलवा के	...	१३९
माया बहिनि मोरि कतहूँ देखिउ	...	१४०
अरे अरे नउवा बढ़इते, आँगन मोरं आवउ	...	१४०
झालरि आम अमिलिया, झलरिया जवा कर खेत	...	१४१
अरे अरे दादी सेतुआ करउ, चाची गठरी करउ	...	१४२
माघइ बरुआ सेइ चले, बइसाख पहुँचे	...	१४३
तीरेनि तीरे बरुआ फिरइं, केउ पार लगावउ हो	...	१४४
ऊँच ओसार नवल घर, जहाँ खम्भ खोदावल हो	...	१४५
जेहि बनं सिकिया न डोलइ, बघवा न गरजइ हो	...	१४५
कुइयां जगत पर मुंजिया क थनवा	...	१४६
जेठ तपइ दुपहरिया	...	१४६
अरे अरे आजी सेतुआ करउ	...	१४७
सभवइ से आये हैं दसरथ, रनियाँ अरज करैं हो	...	१४७
गलियइ गलिया फिरइं भवानी खोरिया-खोरिया पूछइँ बात	...	१४९
गावउँ माता रे गावउँ भवानी	...	१४९
चारि चउक मँइ देखेऊँ, चारिउ सोहावनि	...	१५०
सभवइ बइठे राजा दसरथ, सीता अरज करइँ हो	...	१५०
पहिली चउक के अवसर, पियरिया नहिं भेजइँ	...	१५१
के मोरे नेवतइ अरिगन, राज दुवरिया रे	...	१५२
अरे अरे कारी कोइलिया, आँगन मोरे आवउ	...	१५४
सोने क फरुहा रुपे क बेंट लाग रे	...	१५६
लीपि लेउ चौपरिया दुल्हन देयी	...	१५७
आधे तलवना में नाग बइठे, आध्रे में नागिनि बइठीं	...	१५७

पंक्ति		पृष्ठ


State Museum Library
Lucknow

आग्रह !

'...आग्रह है कि हमारी बहू-बेटियाँ अवश्य ही इस संग्रह के गीतों को पढ़ें और इनके रस एवं सौन्दर्य का आनन्द लें। इनसे उन्हें प्रेरणा मिलेगी, अपने जीवन को सजाने-सँवारने का एक साधन मिलेगा।

'हमारी पीढ़ी का जीवन तो विदेशी सत्ता एवं उसके अशुभ प्रभावों से जूझने में ही कट गया। मगर हमारी वर्तमान और आगामी पीढ़ियों को निरभ्र आकाश के तले, मुक्त वातावरण में, स्वस्थ वायु-मण्डल में जीने, फलने-फूलने का अवसर मिलेगा।

'ये गीत उनके जीवन को अधिक मधुमय, अधिक मोहक, अधिक सार्थक बनायेंगे ! ये गीत उनके पलकों को भिगो देंगे, हृदय को आन्दोलित कर देंगे !'

मूल्य ७.५० न० पै०

पद्मावत में लोकतत्व

डा० रवीन्द्र भ्रमर ने प्रस्तुत पुस्तक में 'पद्मावत' के लोकतात्विक स्वरूप का गम्भीर विश्लेषण किया है, उसके आधारों, स्रोतों एवं प्रेरणाओं का अत्यन्त सहज एवं सरल रूप में अध्ययन प्रस्तुत किया है और इस बात की स्थापना की है कि मलिक मुहम्मद जायसी सत्यमेव लोककवि थे, लोकसंग्रही कवि थे। शास्त्रीय मान्यताओं के आधार पर 'पद्मावत' का जो अनुशीलन हुआ उससे उसकी महत्ता एवं उत्कृष्टता पर तो प्रकाश पड़ा ही, परन्तु 'पद्मावत' में निहित लोक-तत्वों का जो विवेचनात्मक विश्लेषण इस प्रबन्ध में किया गया है उससे 'पद्मावत' के उस पक्ष पर प्रकाश पड़ा है जिसे हम 'लोकपक्ष' कह सकते हैं।

'पद्मावत' में पग-पग पर, पंक्ति-पंक्ति में अवध का लोक जीवन अपनी समस्त विविधताओं एवं विशेषताओं के साथ मुखर हो उठा है, उद्भासित हो उठा है! उस जीवन में एक रंगीनी है, एक सरसता है, एक प्राणवत्ता है, एक ओज है जो 'पद्मावत' को भी शोभा-संपन्न करने, चारुता प्रदान करने में सफल हुआ है।

'पद्मावत' का प्रत्येक अध्येयता, प्रत्येक विद्यार्थी प्रस्तुत ग्रंथ से प्रेरणा ग्रहण करेगा, प्रभावित होगा!



मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद